ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५० म अंक १५ मई २०१८ (वर्ष ११ मास १२५ अंक २५०)

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान*: सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. गद्य

२.१.१.शिवशंकर:लघुकथा- कंबल २.रबीन्द नारायण मिश्र:२ टा आलेख ; २ टा लघुकथा आ एकटा यात्रा वृत्तान्त

२.२.१.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: परिचर्चा: परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे २. नन्द विलास राय: लघुकथा- कठही साइकिल

२.३.जगदीश प्रसाद मण्डलक तीनटा लघु कथा

२.४.१.मिथिलेश कुमार सिन्हा- "चुप्पी" (बीहनि कथा) २.प्रणव झा- एकटा संस्मरण आ एकटा खिस्सा

१.शिवशंकर:लघुकथा- कंबल २.रबीन्द नारायण मिश्र:२ टा आलेख ; २ टा लघुकथा आ एकटा यात्रा वृत्तान्त

१

शिवशंकर

लघुकथा

कंबल

उमाकांत बाबू बैंकक अधिकारी छथि, गरीब घरसँ। मुदा श्रीमतीजी पैघ घरक बेटी छथिन्ह। अपने मिथिलाक संस्कृतिक पोषक मुदा श्रीमतीजी विदेशी संस्कृतिक अनुगामी। श्रीमतीजी फैशनेबल, हवामे उड़ए बाली तितली, विदेशी जकाँ ओहिरन पहिरन, जींस पैंट, हाफ शर्ट, हेयर कट, कटिंग, आइ ब्रो, करिक्का चश्मा, फेशियल चेहरा, हील बला चप्पल, टच स्क्रीन मोबाइल, ई थिक श्रीमतीजीक परिभाषा। देशी मुर्गी बिलायती बोल। एहि सभक विपरीप उमाकामत बाबू सिंपल पैंट शर्टमे नजरि आबथि। दूनू गोटेमे आकाश पतालक फर्क।

उमाकांत बाबूकँ एकटा कंबल रहनि. सिंगल बेडक, धरि रहैक नीमन। जे हुनका भाइजी बहुत पहिने देने रहथिन्ह। ओ कंबल बड बेसी पुरान भ' गेल रहै। फाटल नै रहैक परंच आउट आफ फैशन जरूर भ' गेल रहै। हुनका घरमे आर कंबल रहै मुदा ओहिमे खास बात रहै। उमाकांत बाबू आबथि आ छतपर ओकरा सुखाबथि आ कहियो काल खीचथि। ओहि कंबलसँ हुनका बड़ सिनेह रहनि।

हमरा मोनमे कतेक बेर जिज्ञासा भेल जे ओहि कंबलमे कोन बात छै। एक दिन हुनकासँ पुछिए देलियनि। ओ अपन कथा बतबए लगलाह...."ई बात ओहि समयक अछि जखन कि बेरोजगारीमे परीक्षा देबए लेल एक शहरसँ दोसर शहर जाइत रही तखन हम एहि कंबलकँ संगमे लेने जाइ। ई हमर परमानेंट साथी छल। खास क' सर्दीमे ई हमर रक्षा कवच छल। ई खाली कंबल नै हमर अभिन्न अंग अछि। एकर की महत्त्व अछि से हमरा छोड़ि कियो नै बूझि सकैए।

उमाकांत बाबूक छत आ हमर छत सटले अछि। शहरी सेक्टर बला मोहल्लामे जमीनक कमी रहै छै तँइ छत सटब स्वाभाविक। ई बुझाइत अछि जेना बिंल्डिंग सभ आदमीक उपहास करैत हो जे हम अपना कोरामे कतेक परिवारकँ आश्रय देने छियै। मुदा मनुख हमरा कतेक वर्गमे विभाजित क' देने अछि। फर्स्ट फ्लोर जेठक, सेकेंड फ्लोर मँझिला भाइजीक, थर्ड फ्लोर देवरक, आ ग्रांउड फ्लोर माँ बाबू जीक। कतेक भेद अछि मनुखमे।

ओहि कंबलसँ श्रीमतीजीकेँ घिन्न छलै। फैशनक दौरमे ओ कंबल बूढ़ भ' गेल छल। पछुआ गेल छल आ अपन किस्मतपर कानि रहल छल। एहि मायावी संसारमे कत्तौ भुतला गेल छल। ओकर भविष्य गेल छलै। समाज हेय दृष्टिकोणसँ ओहि कंबलकेँ परिभाषित क' देने छल। मनुख अपन इतिहास कतेक जल्दी बिसरि जाइत अछि एकर कल्पना करब कठिन अछि। एहि कंबलसँ मुक्ति पेबाक उपाय श्रीमतीजी कतेक दिनसँ ताकि रहल छलीह। आइ उमाकांत बाबू दू दिन लेल शहरसँ बाहर जा रहल छलाह, ओ घरसँ निकलि चुकल छलाह। कबाड़ी बला गलीमे अवाज लगा रहल छल। श्रीमतीजी लेल सुअवसर छल। ओ ओहि कंबलकेँ बेचि देलखिन। कंबल नहि उमाकांत बाबूक आत्मा आइ घरसँ विदा भ' गेल।

शिवशंकर

बल्लभगढ़, फरीदाबाद, हरियाणा

२

रबीन्द नारायण मिश्र

२ टा आलेख; २ टा लघुकथा आ एकटा यात्रा वृत्तान्त

रबीन्द नारायण मिश्र

२ टा आलेख

१

बिधवा विवाह

समाजक मान्यता, विधि-विधान एवम् लोक व्यवहार समय साक्षेप अछि। जे बात-विचार पचास सय साल पहिने अनिवार्य चलैत छल से आइ-काल्हि जँ लोक करय तऽ हस्यास्पद भय जायत। पहिने बाल विवाह आम बात छल। बेटीकेँ जनमिते जँ माय-बापकेँ कथुक चिन्ता होइक तऽ ओकर विवाहक। कहुना कऽ विवाह भऽ जाइक आ माय-बाप गंगा नहा लेथि। सोचल जा सकैत अछि जे समाजमे बेटीक स्थिति कतेक दायनीय छल..!

ई बात सभ जनैत छैथ जे स्त्रीक बिना पुरुष कतयसँ आयत। जे आइ ककरो बेटी छैक सैह काल्हि ककरो स्त्री, केकरो माय बनतै। तथपि लोकमे अखनहुँ बेटाक प्रति मोह कम नहि भय रहल अछि। पहिने

कतेको गोटा बेटाक चक्करमे आठ-नौ सन्तान कय लैत छलाह। लिंग आधारित एहि भेद-भावकेँ कम करबाक किंवा जड़िसँ दुरुस्त करबाक निरन्तर प्रयास होइत रहल।

एक समय छल जखन पतिकेँ मरलाक बाद ओकर पत्नीकेँ ओकरे संगे जरा देल जाइत छल किंवा वो स्वयं जरि जाइत छल। समाज ओकरा सतीक रूपमे महिमा मण्डित करैत छल। ओकर चितापर सती मन्दिर बना देल जाइ छल। सोचल जा सकैत अछि जे वो कतेक क्रूड़ प्रथा छल। एकटा स्वस्थ जीबन्त व्यक्तिकेँ जरा कऽ एहि लेल मारि देल जाइत छल वा वो स्वयं मरि जाइत छल जे ओकर पतिक देहावसान भय गेल, जाहि लेल वो कोनो प्रकारसँ दोषी नहि छल। मरनाइ,जिलाइ ककरो हाथमे नहि छैक। ई एकटा संयोग होइत अछि मुदा तकर एतेक दुखद् परिणाम होइत छल से सोचियो कऽ रोंआ ठाढ़ भय जाइत अछि।

एकटा विदेशी पर्यटक जखन अपन देश घुमैत रहथि तऽ संयोगसँ श्मसान घाटपर एकटा मुर्दाकेँ लऽ जाइत देखलथि। मुर्दा संगे ओकर पत्नी चिकरैत-भोकरैत श्मसान धरि संगे गेल। लोक सभ तमासा देखैत रहल आर वो पतिक लाशक संगे जारनिसँ लादि देल गेल। जोर-जोरसँ ढोल बजा-बजा कीर्तन करय लागल जाहिमे ओहि जीवित महिलाक करूण क्रंदन दबि कऽ गुम रहि गेलैक आ थोड़बेकालमे ओहो पतिक लाशक संगे छाउर भय गेल। (ई सैंकड़ो साल पूर्वक थिक एवम् एकर वर्णन Beyond the seas माइकल एच. फीसर द्वारा सम्पादित पुस्तकमे अछि) एहि तरहक घटना ओहि समयमे आम बात छल। स्त्रीगण सभ अपन नियति बुझि एकरा स्वीकार करैत छलीह। प्रसिद्ध समाज सुधारक राजाराम मोहन रायक एहिपर ध्यान गेल आ वो ब्रिटिश सरकारसँ गोहार कय एहि सामाजिक कुरुतिकेँ बन्द करौलाह।

समाजमे विधवाक स्थिति बेटीक स्थितिसँ जुड़ल अछि। जँ बेटी पढ़तै, लिखतै, बेटा जकाँ ओकरो अवसर भेटतै तऽ ओहो ककरोसँ पाछा नहि रहत। आइ-काल्हि एहिमे किछु परिवर्तन भेल अछि। लोक बेटीकेँ स्कूल-कालेज पठा रहल अछि। डाक्टर, इन्जिनीयर, अफसर सभ किछु बेटीओ बनि रहल अछि। कानूनमे परिबर्तन भेल अछि। पैत्रिक सम्पत्तिमे बेटा ओ बेटीक हक बरोबरि भय गेल अछि। घरेलू हिंसा कानूनक तहक कोनो महिलाकेँ शारीरिक, मानसिक यातना नहि देल जाय सकैत अछि। दहेज लेब देब गैर कानूनी भय गेल अछि। प्रश्न ई उठैत अछि जे एतेक रास कानूनसँ लैस भारतीय महिला की सभ तरहेँ अधिकार सम्पन्न, सुरक्षित ओ प्रतिष्ठिापूर्ण जीवन-यापन करबाक स्थितिमे आबि गेल छैथ? ई सोचिये कऽ कलम ठाढ़ भय जाइत अछि।

समाजमे बेटीक स्थितिमे सुधारसँ मूलत: शहरी क्षेत्रटाक सीमित अछि। गाम-घरक हालक मोटा-मोटी ओहने अछि। अपना ओहिठाम शिक्षाक स्तर तेहन गड़बड़ायल अछि जे जँ क्यो स्कूल-कालेज जाइतो छथि, किंवा डिग्रीओ हासिल कऽ लैत छथि तैयो हुनका कोनो रोजगार भेटि सकत नहि से संदेहास्पद। जँ आर्थिक निर्भरता बनल रहत, सम्पत्तिक अधिकार मात्र कानूनक किताबे तक सीमित रहि गेल तऽ बेटी कोना बढ़त?

जाहि समाजमे बेटीकेँ शिक्षाक समान अवसर भेटल, पैत्रिक सम्पत्तिमे अधिकार भेटल ओहिठामक महिला निश्चित रूपसँ सभ तरहेँ आगा भऽ गेलीह। एहिमे केरल राज्यक चर्चा कयल जा सकैत अछि। पुरना समयमे

(आ किछु हद तक अखनहुँ) विधवा होइते जेना ओकरापर विपत्तिक पहाड़ टुटि जाइत छल। तत्कालीन समाजक समस्त मान्यता, बिध, व्यवहार ओकरा अपमानिते नहि करैत छल, अपितु अशुभ बुझैत छल। केस कटा लिय, नीक नीकुत खाउ नहि, साधारण कपड़ा पहिरू, उपास-पर-उपास करैत रहू। तेतबे नहि, कोनो शुभकाजमे आगा नहि रहू। आखिर ओकर की दोष रहैक जकर दण्ड ओकरा समाज दैत छलैक?

लगैत अछि, समाजक पुरोधा सभ असुरक्षा भावसँ ततेक ग्रस्त रहथि जे हुनका आगा-पाछा किछु आओर सोचेबे नहि करन्हि। कतेको ठाम तऽ नवलिग बिधवा भय जाइत छलि आ आजीवन धोर कष्ट एवम् विपत्तिमे जीवन-यापन करैत छलीह। गरीबी, सामाजिक प्रताड़नासँ तंग भय कतेको बिधवा गाम-घर छोड़ि वृन्दावन किंवा आन-आन तीर्थ शरण धय लैत छलीह। अखनो हजारोक संख्यामे वृन्दावनमे बिधवा सभ पड़ल छथि। भारतक उच्चतम न्यायालय हुनका सभक स्थितिपर विचार केने छल। सुलभ इन्टरनेशनल द्वारा हुनका सभ लेल किछु कल्याणकारी योजना सभ सुनबामे आयल छल। मुदा ई सभ ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन थिक। जरूरी तऽ ई अछि जे समस्याक जड़िमे जाय ओकरा समूल नष्ट कयल जाय। आखिर पुरुषबिधुर भेलापर विवाह करैत छथि की नहि? तहिना महिलोकेँ ई अधिकार समाज स्वीकृत हेबाक चाही।

यद्यपि यत्र, तत्र सर्वत्र महिला सशक्तीकरणक चर्च होइत रहैत अछि, तथापि व्यवहारिकतामे संकट अछिए। जँ दुर्भाग्यवस क्यो बिधवा भय जाइत छथि तऽ अखनो हुनका नाना प्रकारक यातना सामाजिक प्रताड़नासँ गुजरय पड़ैछ। अस्तु ई विचारणीय थिक जे बिधवा लोकनिक स्थितिमे गुणात्मक सुधार हेतु हुनकर पुनर्विवाहक व्यवस्था हो। एहिमे सभसँ बाधक विवाहसँ जुड़ल खर्चा एवम् जातीय स्वाभिमान अछि। मुदा ई विचारणीय प्रश्न थिक जे समाजक कोनो व्यवस्था जँ एक विदो्रष जीवनकेँ कष्टमय केने रहैत अछि तऽ ओकरामे संशोधन किएक नहि हेबाक चाही?

ओना, कतेको जातिमे बिधवा विवाह पहिनहिसँ चलनमे अछि। कतेको महिला एहिसँ एकटा नूतन जीवन जीबाक अवसर प्राप्त करैत छथि। मुदा किछु जाति विशेषमे अखनो एकरा पारिवारिक प्रतिष्ठासँ जोड़ि कय देखल जाइत अछि। आखिर, ओ प्रतिष्ठाक जे गति होइत अछि, ताहिपर चर्चाक आवश्यकता नहि अछि। एहन बिधवा जकरा सन्तानो नहि छैक, एकरा व्यर्थ निष्ठाक नामपर लगातार कष्ट सहैत रहय, जीवनक समस्त सुख, सम्पदासँ वंचित रहय से कहाँ तक जायज अछि?

कतेको समाजमे ई व्यवस्था अछि जे बिधवाकेँ ओही परिवारक अविवाहित भाए किंवा समव्यस्क सम्बन्धीसँ विवाह कय देल जाइत अछि। निश्चित रूपसँ वो सभ बेसी व्यवहारिक एवम् वुधिआर लोक छथि। मुदा जँ सेहो सम्भव नहि होइक तखन तऽ परिवारक वयस्क सदस्यकेँ सव्यं आगा आबि ओहि महिलाक जीवनमे पुन: स्थापित करबामे सहयोग करथि आ सुयोग्य, सही व्यक्तिसँ विवाह करबामे सहयोग करथि।

जँ बिधवाकेँ सन्तान छैक तखन पुनर्विवाहसँ दिक्कति भय सकैत छैक मुदा एहनो परिस्थितिमे ओहि बच्चा सभक संगे बिधवाकेँ स्वीकार करब सर्वोत्तम समाधान भय सकैत अछि। हम एकबेर यूरोप गेल रही तऽ हमर सभक ड्राइभर अपन परिवारक चर्चा करैत कहय लगलाह जे हुनकर स्त्रीक ई दोसर विवाह छन्हि। पहिल विवाहसँ दूटा सन्तान छन्हि। हुनकासँ विवादक बाद एकटा सन्तान छन्हि। एवम् प्रकारेण वो तीनटा सन्तानक

पिता छथि आ सभक भरण-पोषण सहर्ष एवम् समान्य रूपसँ करैत छथि। विदेशमे ई आम बात अछि। ओहिठाम विवाह विच्छेद जहिना होइत अछि तहिना पुनर्विवाह सेहो भय जाइत अछि। फेर अधिकांश महिला पुरुष ओहि स्थिति हेतु तैयारो एहि मानेमे रहैत छथि जे आर्थिक निर्भरता सामान्यत: नहि रहैत अछि। ईहो बुझय जोगर गप्प अछि जे ओकर सभक सामाजक मूल्य अछि जे ओकर सभक समाजक एवम् पारिवारिक संरचना अलग अछि।

अपन भारतीय मूल्यक रक्षा करैत एवम् परिवारक संरचनाकेँ कोनो तरहें बिना दूबर केने विशेष परिस्थितिमे सामाजिक सामंजस्यक व्यबस्था जरूरी अछि जाहिसँ संयोगवश जँ क्यो बिधवा भय जाइत अछि तऽ हुनका तरह तरहक कष्टसँ बचाऔल जा सकय आ हुनक भावी जीवनकेँ सुखद कयल जा सकय।

ओना अपने देशक कतेको राज्यमे बिधवा विवाह आम बात भय गेल अछि। अपनो समाजमे किछु जाति विशेषमे एकरा लोक अखनो ढो रहल अछि जखन कि कतेको जातिमे पहिनहुँसँ ई व्यबस्था रहल अछि। अस्तु एहि कुप्रथाक कोनो मजगूत धार्मिक पक्ष नहि लगैत अछि। ई एकटा जाति विशेषक किंवा वर्ग विशेषक अहंसँ पोषित सामाजिक अभिशाप थिक जकर सुधारपर सभक ध्यान जा रहल अछि, मुदा व्यबहारमे अखनो स्वीकार्य नहि अछि। एहन नहि अछि जे बिधवा विवाह होइते नहि अछि, गाहे-वगाहे उच्च वर्गीय मैथिलोमे ई भय जाइत अछि मुदा अखनो ई एकटा स्वभाविक, सर्वमान्य चलनक रूप नहि लेने अछि, जाहि कारणें कतेको कम व्यसक कन्या जीवनक समस्त सुख, सुबिधासँ वंचित रहि दुखमय जीवन बीतेबाक हेतु विवस छथि।

किछु एहन घटना सभ देखयमे आयल जतय परिस्थितिवश पतिक देहान्त भय गेलाक बाद हुनके परिवारक लोक विवाहक व्यबस्था केलाह आ आइ वो एकटा सुखी परिवारिक जीवन जीबि रहल छथि। पूर्व पतिसँ जे सन्तान छलैक ओकरो नीकसँ पालन-पोषण भय रहल अछि। नव विवाहमे सेहो सन्तान भेलैक। हमर कहबाक तात्पर्य अछि जे सभ किछुकेँ हठाते धर्म-कर्मसँ जोड़ि कय मनुक्खक जीबन नर्क कऽ देब कतहुँसँ उचित नहि अछि।

गाम-गाममे एहन दृश्य देखयमे अबैत रहल अछि जे अपने लोक बिधवाक शोषण करैत छथि। कतेकठाम तऽ ओकर हत्या तक भऽ गेल। ओकर सम्पत्ति अपने लोक लूटि लेलक वा ठगि लेलक आ जखन ओकरा प्रयोजन भेलैक तऽ सभ कात भऽ गेल। तथाकथित मर्यादाक उल्लंघन जखन आम बात भऽ गेल हो, ताहि मर्यादाकेँ व्यर्थ होइत रहब सर्वथा अनुचित।

पारिवारिक जीवन हेतु, भारतीय मूल्यक रक्षा हेतु, वैवाहिक जीवनक महत्वकेँ कमतर नहि आँकल जाय सकैत अछि। परन्तु ओकर आधार मजगूत बनल रहैक ताहि हेतु सोचमे परिवर्तन जरूरी अछि। पूरा दुनियाँ बदलि रहल अछि। इन्टरनेट, मोबाइल, टेलीवीजन, फूसबुक, ह्वाट्सअप सौंसे दुनियाँकेँ एक आँगन (Global Village) मे परिवर्तित कय देलक अछि। एहि परिवर्तनसँ क्यो बाँचल नहि रहि सकैत अछि। गाम-गाम वैह टेलीवीजन, वैह गीत नाद, वैह सीनेमा चलैत अछि। स्वाभाविक अछि जे गामोक धिया-पुतामे आधुनिकताक मानसिकता उत्पन्न होइक। एकरा एकदमसँ छोड़लो नहि जा सकैत अछि। अस्तु आधुनिकताक बिहाड़िमे

सभटा उड़िया जाय ओहिसँ पूर्वे हमरा लोकनि स्वत: स्वभाविक रूपसँ परिस्थितिजन्य कारणसँ बिधवा भेल महिलाकेँ पुनर्वास हेतु ओकर सम्मानपूर्ण जीवन-यापन हेतु सोचबाक चाही।

समाज जे गतिशील होइत अछि, जे बदलैत परिवेशसँ सामंजस्य स्थापित करबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत अछि, सैह टिकैत अछि। ओकरे विकास होइत अछि। जँ से नहि भेल तऽ अपने बनाओल नियम, कानून वो मर्यादाक बोझसँ स्वत: चरमरा जाइत अछि। तँए जरूरी अछि जे समयक संग तादाम्य स्थापित कय हम सभ नूतन विचारकेँ सहर्ष स्वीकार करी ओ प्रगतिक पथपर आगा बढ़ी।

२

आगाँ के देखलक अछि?

जखन मनुक्खक जन्म होइत अछि तखन ओकरा संग 'साँस' रहैत अछि परन्तु कोनो 'नाम' नहि, मुदा जखन ओकर मृत्यु होइ छै तखन ओकरा संग 'नाम' रहैत अछि परन्तु 'साँस' नहि। 'साँस' आ 'नाम'क बीचक एहि यात्राक नाम 'जीवन' थिक। आब सबाल अछि जे एहि जिनगीकेँ अहाँ केना जीबै छी, एकर की उपयोग करै छी...।

कतेको गोटे स्वनिर्मित अभावमे जीबैत रहै छथि आ ताजन्म ओकर प्राप्ति हेतु सफल, असफल चेष्टा करैत रहै छथि। कतेको गोटे ककरो चेला भऽ जाइ छथि, ककरो समर्थक किंवा अनुरागी भऽ जाइ छथि, आ आँखि मुनिकऽ पाछाँ-पाछाँ चलैत रहै छथि। जाबे होश होइ छै ताबे बहुत देर भए गेल रहैत अछि।

समस्त जीव-जन्तुकेँ प्रकृतिक वरदान स्वरूप जीवन भेटैत अछि। छोट वा पैघ जिनगी जकर जे छै से जीवैत अछि आ चलि जाइत अछि। एकटा मनुक्खे अछि जे नाना प्रकारक फसादमे पड़ि जीवनक आनन्दसँ कएक बेर वञ्चित रहि जाइत अछि।

जीवनक प्रादुर्भाव एवम् ओकर विकास यात्रा एकटा आश्चर्यजनक प्रक्रिया अछि। छोटसँ छोट मच्छर सँ लऽ कऽ हाथी-मगरमच्छ सन-सन विशालकाय जीव सब एहि निर्माण एवम् विकासक प्रक्रियामे सहयोगी अछि। नान्हिटा चुट्टीकेँ देखियौ- अनवरत चलैत रहैत अछि। ओकर रस्तामे व्यवधान करबै तऽ, रस्ता बदलि लेत मुदा ठाढ़ नहि होएत। पंक्ति वद्ध हजारक हजार चुट्टी चलिते जाइत अछि। कतए जा रहल अछि? प्राय:

ejournal 'विदेह' २५० म अंक १५ मई २०१८ (वर्ष ११ मास १२५ अंक २५०) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

जीवनक खोजमे निरन्तर प्रयत्नशील रहैत अछि। प्रकृतिमे स्वत: स्वभाविक रूपसँ जीव मात्रक जीवन रक्षा एवम् आवश्यकता पूर्तिक वैज्ञानिक व्यवस्था अछि। जाहि जीवकेँ जेहेन आवश्यकता अछि, ताहि प्रकारक शरीरक रचना भेल अछि। ककरो पैघ दाँत अछि तऽ ककरो पैघ सूढ़। ककरो शरीरपर काँट सन-सन रौंआँ लागल रहैत अछि। प्रकृति माता अपन समस्त सन्तानक जीवन-रक्षाक गजब व्यवस्था केने छथि।

एहि संसारमे निरन्तर किछु-किछु घटित होइत रहैत अछि। सामान्यत: हमरा लोकनि निरपेक्ष रहैत छी। जे होइ छै से होइ छइ। बात तखन बदलि जाइत अछि, जखन ओहि घटनाक सम्बन्ध अपनासँ होइत अछि।

नाना प्रकारक जीव-जन्तु जन्मैत अछि, मरैत अछि, मुदा हमरा लेल धन- सन। मुदा जौं परिवारमे खास कऽ अपन लोककेँ सन्तानक जन्म होइछ तऽ लोक उत्साहित भऽ जाइत अछि। आनन्द मनबए लगैत अछि। नाच-गान करैत अछि। वैह हाल मृत्युक संगे होइत अछि। दिन-राति लोक मरैत अछि। कोनो चर्चा नहि होइत अछि। जे मरलै से मरलै, हम थोड़े मरब। सबकेँ मरितो देखि लोककेँ अपन मृत्युक अन्दाज नहि भऽ पबैत छइ। ताहि मानसिकताक कारण जँ निकटक व्यक्तिक मृत्यु भऽ जाइत अछि तऽ लोक हतप्रभ भऽ जाइत अछि। लोक भगवानकेँ दोष देबए लगैत अछि।

एकबेर हम डॉ. सुभद्र झाजीक संगे इलाहावाद पएरे कतौ जाइत रही। रस्तामे पुछलियनि-

"अहाँक हिसाबे भगवान छथि कि नहि?"

ओ कहला-

"हमरा हिसाबे तऽ भगवान नहि छथि आ जौं छथि तऽ बड़ बइमान छथि।"

पुछलियनि-

"से किएक?"

ओ आगू कहला-

"पेटमे जे बच्चा मरि जाइत अछि, तकर कोन दोष? आ जँ दोष रहिते छै तऽ ओकर जन्म होबए दितथिन आ तखन ओ अपन कर्मक फल भोगैत। पेटेमे मरि जेबाक की औचित्य?"

मुदा मृत्यु तऽ होइते रहै छइ। ओहिपर ककरो बस नहि रहल ।

लोक कतए-सँ आएल, कतए जाएत? ई शाश्वत प्रश्न अछि। लोक नित्य-प्रति उठैत अछि, एहि उमीदमे जे ओ अहिना रहत, मुदा सत्य तऽ यएह अछि जे साँझ धरि जीवनक एक दिन कम भऽ गेल रहैत अछि।

मृत्यु एक दुखद प्रसंग अछि। निकट सम्बन्धीसँ समाजिक, परिबारिक सम्पर्कक एकाएक पूर्ण विराम लागि जाइत अछि। कएक बेर मृत्युक भयसँ चिन्ता,अवषाद वा निराशाक भाव पसरि जाइत अछि। किछु लोककेँ मृत्युक बाद पूर्व कर्मक अनुसार स्वर्ग वा नर्क जेबाक चिन्ता सेहो ग्रसित केने रहैत अछि।

मृत्युक कारण अनेको भऽ सकैत अछि। दुर्घटना, विमारी, हत्या, आत्महत्या आ से सब नहि तऽ वृद्धावस्था। उम्रक संग-संग जीवन रक्षक तत्व सब घटि जाइत अछि। विमारीसँ प्रतिरोधक क्षमता क्षीण भऽ जाइत अछि। शरीरक अंग प्रत्यंग क्रमशः काज केनाइ छोड़ि दैत अछि, जकर परिणति मृत्युमे भऽ जाइत अछि।

कहबी छै जे 'टिटही टेकल पर्वत।' चिड़ै अपन टाँग उन्टा आकाश दिशि कऽ कऽ सुतैत अछि, जे जँ आकाश खसत तऽ ओ रोकि लेत। यएह हाल मनुक्खक अछि। सौंसे जिनगी अपसियाँत रहैत अछि जे ओकरा बिना दुनियाँक काज नहि चलत ओ रहत तखने कोनो काज होएत अन्यथा दुनियाँ ठामहि धँसि जाएत। मुदा जीवनक सत्य किछु आर अछि।

ककरो लेल ई दुनियाँ ठाढ़ नहि रहैत अछि। जखन जवाहर लाल नेहरू प्रधान मंत्री छलाह तऽ लोकमे चर्चा होइक जे नेहरूजीक बाद देश केना चलत? मुदा ई चिन्ता व्यर्थ साबित भेल। देश चलि रहल अछि।

लोक अबैत अछि, जाइत अछि, परन्तु संसारक चक्र निरन्तर गतिमान रहैत अछि। समय ककरो प्रतीक्षा नहि करैत अछि। भोर, साँझ, इजोरिया, अन्हरिया अनवरत होइत रहैत अछि। जीवन-यात्राक अन्त तऽ भेनाइए अछि। कतेक बेर लोक स्वयं थाकि जाइ छथि, ओ विश्रामक निरन्तरता हेतु स्वतः मृत्युकेँ आलिंगन कए लैत छथि। उदाहरण स्वरूप आ. विनोव भावे अनशन कए प्राणक त्याग कए देलनि

स्वामी विवेकानन्द, आदि शंकराचार्य सन-सन महान अध्यात्मिक व्यक्ति सब कमे बयसमे चलि जाइत रहलाह। महात्मा गाँधी सन त्यागी ओ निष्ठावान व्यक्तिक हत्या कऽ देल गेल। तीन-तीन गोली लगलाक बाबजूद ओ 'राम-राम' कहैत प्राणक त्याग केलनि। अस्तु मृत्यु कखन, ककरा केना होएत एवम् कोन परिस्थितिमे होएत तकर कोनो ठेकान नहि अछि मुदा ई बात पक्का अछि जे मृत्यु होएत, जखन हो, जेना हो, जतए हो। गीतामे तऽ कहल गेल अछि जे मृत्युक समय ओ स्थान पूर्व निर्धारित अछि।

विज्ञान एवम् तकनीकीक विकाससँ जीवन एवम् मृत्यु सेहो प्रभावित भेल अछि। पहिने मामूली विमारीसँ लोक मरि जाइत छल। सुलबाई, मलेरियाक कोनो इलाज नहि छल। हैजा, तपेदिक सन संक्रामक विमारीसँ गामक-गाम सुडाह भऽ जाइत छल। क्रमशः तरह-तरह केर दबाइक अविष्कार भेल। लोकक आयुमे इजाफा भेल। लेकिन नव-नव आर कतेको घातक विमारी सब बाहर भऽ गेल, जकर तोड़ विज्ञानक पास नहि अछि।

अस्पतालक सुविधा एवम् चिकित्साक बेहतर उपलब्धिसँ लोक कएबेर स्वस्थ भऽ दीर्घ जीवनकेँ प्राप्त केलक मुदा कतेको मामलामे विमार व्यक्ति अस्पतालेमे घिसियौर कटैत रहै छथि। अत्यन्त बेमार व्यक्तिकेँ

इच्छा मृत्युक मांगक चर्चा होइत रहैत अछि। कहक मतलब जे विज्ञानक पराकाष्ठा मृत्युक पुरुषार्थकेँ कम नहि कऽ सकल।

समयक चपेट तेहन निरन्तर ओ प्रवल अछि जे एकर परिणामक कल्पनो नहि कएल जा सकैत अछि। जहिना परमाणु बमसँ विध्वंस होइत, आ गामक-गाम लुप्त भऽ जाइत, तहिना समयक अचूक आघात/प्रतिघात कोनो बमसँ कम नहि अछि। सौंसे गामसँ घरे-धरे लोक बिला गेल। गनि कऽ देखल जाए तऽ साइदे क्यो पुरान लोक भेटता, कतए गेलाह सब गोटे? मुदा परमाणु बमक विध्वंस मात्र अनिष्टकारी होइत अछि, बाल-बच्चा, वृद्धमे कोनो विभेद नहि कऽ पबैत अछि। विनाशक बाद दूर दूर धरि श्रृजनक सम्भावना नहि रहि जाइत अछि।

प्रकृति प्रदत्त विनाशक संगे श्रृजन भाए-बहिन जकाँ संगे चलैत अछि। जँ एकटा पात झड़ैत अछि तऽ दसटा हरियर कंचन पल्लवसँ गाछ समृद्ध भऽ जाइत अछि। लोक बीतल बातकेँ बिसरि आगाँक तैयारीमे लागि जाइत अछि।

अद्वैतवादीक अनुसार आस्तित्व केवल अनन्तक अछि, शेष सब माया थिक। कोनो जड़ वस्तुक यथार्थ वृह्म छथि, एवम् प्रकारेण जीवन रहए नहि रहए,ओकर आस्तित्वपर अन्तर नहि होइत अछि।

समं पश्यन् सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।

न हिनस्त्यात्मनात्यानं ततो याति परांगतिम्।।

(गीता १३/१८)

जे सर्वत्र ईश्वरकेँ सब भावसँ सर्वत्र अवस्थित देखि ओ आत्मा द्वारा आत्माक हिंसा नहि करै छथि, से मुक्त भऽ जाइ छथि।

कहक माने जे मोनेक ऊपर सब बात निर्भर करैत अछि। घटनासँ बेसी ओहिपर हमर दृष्टिकोणसँ ओकर महत्व कम बेसी भऽ जाइत अछि। जीवनमे जहिना तरह-तरहक घटना घटित होइत रहैत अछि, तहिना जन्म ओ मृत्यु सेहो होइते रहैत अछि। समस्या घटनासँ नहि अपितु घटना विशेषक लगावसँ होइत अछि।

"इहैब तैर्जित सर्गो येषां साम्ये स्थितं मन:

निर्दोष हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थित:"

गीता ५/१९

जिनकर मन साम्यभावमे अवस्थित अछि, ओ एहि ठाम जीवन मृत्युक संसार चक्रकेँ जीत लेलाह अछि, चूँकि ब्रह्म निर्दोष ओ सर्वत्र सम छथि, अस्तु ओ ब्रह्ममे अवस्थित छथि। कहक माने जे मोनमे नीक भाव होइ तऽ मनुक्खे जीवन-मरणक प्रभावसँ हटि ब्रह्मलीन भऽ जाइत अछि। जीवनमे प्रतिपल परिवर्तन होइत रहैत अछि। लोकक सोच समयक संगे बदलैत रहैत अछि। जाहि बातकेँ लोक बच्चाक समयमे नीक कहैत अछि, मुदा पैघ भऽ ओही बातपर ओकर विचार बदलि जाइत अछि।

वृद्धकेँ युवावस्थाक गप्प-सप्प सोचि हँसी लागि जाइत छइ। कहक माने जे मनुक्खक निरन्तर बदलिते रहैत अछि। जँ कोनो उपायसँ मृत्युपर बस चलितै तऽ कोनो बड़का आदमी नहि मरैत। धन्ना सेठ सब अमर बुटी खा-खा कऽ अमर भऽ जाइत आ गरीब, गुरबा सब नहि जीबैत। मुदा मृत्यु एकटा एहन प्रश्न चिन्ह अछि जकर जवाब ककरो लग नहि अछि। राजा, रंक ,फकीर सब हतप्रभ भऽ एकरा स्वीकार करैत अछि, कोनो विकल्पो नहि छइ।

हम सब बच्चामे सुनि -पुरान घर खसे, नव घर उठे। ई फकरा जीवन-मरणक चक्रपर पूर्णत: लागू होइत अछि। जहिना बुढ़-पुरान लोक सब चलि जाइ छथि,ओहिना किंवा ओहूसँ बेसी तेजीसँ नव जीवनक सृजन होइत अछि। जहिना पतझड़क बाद नव पल्लवसँ गाछ वृक्ष हरियर भऽ जाइत अछि, ओहिना गाम-घर नवजात शिशुक जन्मसँ हरल-भरल रहैत अछि।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। जे हेबाक छैक से होइत अछि। एहिपर माथा-पच्ची व्यर्थ। क्यो जीविते सुसम्पन्न परिवारक अंग भऽ जाइत अछि, तऽ क्यो रस्ता कातमे जन्मेसँ समय बितबै लेल मजबूर भऽ जाइत अछि। रामकृष्ण परमहंश सन महात्मा कैंसरसँ पीड़ित भऽ असाध्य कष्ट भोगलथि। महात्मा गाँधी सन शान्तिक समर्थक हिंसाक शिकार भऽ गेलाह आ हत्याराक गोलीसँ हुनक मृत्यु भेल।

ई सब देखि-सुनि मानए पड़त जे एक्के जन्मक नहि अपितु अनेकानेक जन्मक कर्मफल मनुक्खे पछोर केने रहैत अछि। कतेक मनुक्ख साधारण प्रयास करितहि लक्ष्य प्राप्त कए लइ छथि तऽ क्यो जीवन भरि कष्टमे रहि कऽ दुनियासँ चलि जाइ छथि। ई सब केना आ किएक होइत अछि, तकर सटीक उत्तर देब कठिन अछि। मुदा भाग्यक कोनो जवाब नहि ।

भाग्यं फलति सर्वत्र, न विद्या न च पौरुष:।

पछिला-अगिला जन्म क्यो देखलक नहि, मात्र अनुमाने लगाओल जा सकैत अछि मुदा वर्तमान जीवनमे जे किछु देखि-सुनि रहल छी से आश्चर्यसँ भरल अछि।

जन्मसँ प्रारम्भ आ मृत्युसँ अन्त होइत एहि जीवन-यात्राक पुनरावृति होएत, नहि होएत...। ताहि पर तरह-तरहक मत अछि। मुदा ई तय अछि जे एहि जीवनमे बहुत किछु देखबा-सुनबामे अबैत अछि, जाहिसँ वर्तमान जीवनकेँ सुखी ओ शान्त कएल जा सकैत अछि। अशान्तस्य कुतो सुखम्!

अस्तु हमर पूर्वज लोकनि शान्तिक हेतु प्रार्थना करैत रहलाह।

जे किछु एहि जीवनमे प्राप्त अछि, से अपना आपमे अद्भुत अछि, अद्वितीय अछि। आगाँ के देखलक अछि?

रबीन्द्र नारायण मिश्र

२ टा लघु कथा

१

एकसरि

पण्डितजी बेश कर्मकाण्डी छलाह। भोरसँ साँझ धरि जतेक काज करितथि सभमे भबानकेँ स्मरण अवश्य करितथि। मंत्रोच्चार करैत उठितथि आ मंत्रेच्चारेक संग सुतितथि। बेश त्रिपुण्ड आ ताहिपर लाल ठोप हुनक ललाटकेँ शुशोभित केने रहैत छल। ताहिपर सँ हरदम मुँहमे पान कचरैत, लाल-लाल पानक पीक फेकैत ओ साक्षात् कालीक अवतार लगैत छलाह। कारी चामपर ललका वस्त्र धारण कय जखन वो भवतीक बन्दना करय पहुँचैत छलाह तँ वातावरणमे एकटा अपूर्व सनसनी पसरि जाइत छल।

पण्डितजीक उम्र करीब ४५ बर्ष होयतन्हि। दूआ बेटी आ एक बेटा छलन्हि। घरवालीक स्वर्गवास आइसँ दस साल पहिने भय गेल छलन्हि। पण्डितजीक दुनू बेटा वेश सुन्नरि आ लुड़िगर छलन्हि। मुदा हुनका पासमे टाकाक अभाव छलन्हि तँ कतहु कन्यादान पटैत नहि छलन्हि। बेटा भिन्न भय गेल छलखिन्ह आ पण्डितजी अपन दुनू बेटीक संग एकठाम छलाह।

पण्डितजीक घरक आस-पासमे बेश सम्पन्न परिवार सभ छलैक। पण्डितजीक गुजरो हुनके सभहक माध्यमसँ होइत छलन्हि। बेटा अपन घरवालीक संग दरिभंगामे रहैत छलखिन्ह। ओहिठाम डिस्ट्रीक्ट बोर्डमे कैसियरक काज करैत छलाह। मुदा पण्डितजीकेँ किछु मदति नहि करैत छलखिन्ह। वो अखनो पण्डिताइक बले जीवैत छलाह। दुनू बेटी समर्थ छलखिन्ह। गामेक हाइ स्कूलसँ मैट्रिक धरि सभकेँ पढ़ौलखिन्ह। आगा पढेबाक सामर्थ्य नहि रहन्हि। वियाहक लेल घटपटायल छलाह मुदा कतहु टाका नहि भेटैत छलन्हि। बिना टकाक कोनो लड़का वियाह करय हेतु तैयार नहि छलन्हि। यैह सभ चिन्तामे वो चिन्तित रहैत छलाह।

ओना पण्डितजीक सम्बन्ध पूरा गाममे सँ मधुर छलन्हि। मुदा दू-तीन परिवारक लोक हुनका बेशी आदर करैत छलखिन्ह। हीरा बाबूक ओतय तँ भोर-साँझ दू घन्टा जरूर बैसार होइत छलन्हि। मुदा पण्डितजी ककरो कहियो अपना हेतु किछु कहलखिन्ह नहि। हीरा बाबूकेँ चारिटा बेटा छलखिन्ह। दूटा तँ बाहर रहैत छलखिन्ह मुदा छोटका दुनू पालिमे मैट्रिक पास केने छलखिन्ह आ बससँ रोज मधुबनी जाइत छलैन्ह किलास करय। सरोज ओ मीरा सेहो ओकरे सभहक संगे मैट्रिक पास केने छल। एक दिन साँसे गाम सुतल आ

सुति कऽ उठल तँ गुम्मे रहि गेल। सरोज चुपचाप घरसँ निपत्ता भय गेल छलैक। घरे-घर तका-हेरी भेलैक मुदा कोनो पता नहि। आन्हर हीराबाबूक दोसर बेटा सेहो काल्हियेसँ गायबछलैक। सौंसे गाममे कनाफुसी होमय लगलैक। पण्डितजी गरीब जरूर छलाहमुदा हुनका अपन प्रतिष्ठाक पूरा ख्याल छलन्हि। ओ अहि गम्भीर चोटकेँ नहि सहि सकलाह आ रातिमे सुतलाह से सुतले रहि गेलाह। मीरा एकसर भय गेलीह। गुम्म, सुम्म आश्चर्यचकित ओ सोचि नहि पाबि रहल छलीह जे की करथि।

मीरा आब एकसरिछल। आगू-पाछू क्यो नहि। बापक मरला चारि दिन भय गेल छलै। भातिज आगि देने छलन्हि।

सौंसे गाममे सरोजक भगबाक समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल रहैक। मीराक तँ बकारे नहि फुटैत छलैक। की करए। पाँचम दिन सभ दियाद-बादक बैसार भेलन्हि। तय भेल जे गाम लऽ कऽ श्राद्ध भय जाय। पैसा-कौरी हीराबाबू गछलखिन्ह। मीरासँ मात्र एतबा गछबा लेल गेलैक जे काज भेलाक बाद घर-घराड़ी जे पण्डितजीक एक मात्र सम्पत्ति छलन्हि जे हीराबाबूक नाम कय देल जयतन्हि। बैसार खतम भेल मीरा गुमसुम एकचारीदिस देखि रहल छल। पण्डितजीक श्राद्ध नीक जकाँ समपन्न भेल। हीराबाबू रजिष्टारकेँ गामेपर बजा अनलाह। लिखयी सम्पन्नभय गेल। हीराबाबू मीराकेँ कहलखिन्ह-

"मीरा, मास दू मास अही घरमे रह। तोरे घर छौक ने।"

मीरा चुपचाप सुनैत रहल जेना ठकबिदरो लागि गेल हो।

अपने गाममे, अपने घरमे मीरा बेघर भऽ गेल छल। गामक लोक ओकरा प्रति सहानुभूतितँ देखबैत छलैक मुदा महज फार्मेल्टी। धीरे-धीरे ओहो खतम। पन्द्रह दिन भय गेल छलैक घरक रजिष्ट्रीक। मीराकेँ आब ओहि घरमे एक पल बितायब असम्भव लगैत छलैक। एक दिन सैह सभ सोचि रहल छल कि लगलैक जेना दरबाजापर क्यो ठाढ़ होइक।

"हीराबाबू, अपने एतेक रातिमे..?"

हीराबाबू किछु बजबाक हिम्मति नहि कय पाबि रहला छलाह। मीराक तामस अतिपर पहुँच गेलैक। ओ चिचियैल-

"चोर! चोर!"

हीराबाबू भगलाह। अगल-बगलक लोकक ओहिठाम भीड़ एकट्ठा भय गेल छलैक। मीरा भोकासि पाड़ि कऽ कानि रहल छल। दाइ-माइ सभ दस रंगक गप-सप्प करैत पहुँचि गेल छलैक। जकरा जे मोन होइक से बजैक। मीरा चुपचाप सभ किछु सुनैत रहल। धीरे-धीरे भीड़ ओहिठामसँ हटैत गेलैक। राति गम्भीर भेल जाइत छलैक। सौंसे गामक लोक सुति रहल छलैक। मीरा चुपचाप गामसँ बाहर भऽ गेल। ओकराकिछु नहि बुझल छलैक जे वो कतय जा रहल अछि मुदा कोनो दोसर बिकल्पो नहि रहि गेल छलैक।

मीरा बड़ड पढ़लो नहि छल। शहरमे कहियो रहल नहि छल। मुदा तकर बादो ओकरा कोनो गम नहि छलैक। टीशनपर गाड़ी आबि गेल छलैक आ आर अधिक सोच-विचार करबाक अवसरो नहि छलैक। ओ तरदय टीकट कीनलक आ गाड़ीपर चढ़ि गेल। ट्रेनमे बेश भी छलैक। किछुकाल तँ वो ठाढ़े रहल मुदा ताबते ओकरा चिर-परिचित अमित सेहो ओकर सामनेक सीटपर बैसल भेटलैक। हीरा बाबूक ज्येष्ठ पुत्र अमित। मीराकेँ ट्रेनमे धक्कम-धुक्की करैत देखि ओ तुरन्त उठि गेलैक।

"मीरा तूँ कतय जा रहल छेँ?"

पुछलकै अमित। मीरा ओकरा देखि कय अवाक् रहि गेल। किछु बजबे नहि करैक। अमित ओकरा अपना सीटपर बैसा देलकै। अगिला टीशनपर किछु यात्री उतरलैक। अमित सेहो ओहिठाम उतरय चाहैत छल मुदा मीराकेँ एकसर छोड़ि देब ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक। ओ मीरासँ ओकर गन्तव्य पुछय चाहलकै। मुदा मीरा किछु बजबे नहि करैक। बड़ मुश्किलसँ मीरा ओकर कहब मानि ओतहि उतैर गेल। आखिर ओकर कोनो गन्तव्य नहि छलैक। गाड़ी सीटी दैत ओहिठामसँ आगा बढ़ि गेलैक।

ट्रेनपर सँ उतरि कय मीरा कानय लागल। अविरल अश्रुक प्रवाह देख अमितक मोन करूणासँ भरि गेलैक। ओ मोनहि मोन निश्चय केलक जे मीराकेँ ओकर घर आपस दिआ कऽ रहत चाहे ओकरा कतबो संघर्ष कियैक नहि करय पड़ैक। ओ बड़ मुश्किलसँ मीराकेँ चुप केलक आ अपना संगे गाम आपस नेने अयलैक।

ओहि दिन पूरा गामक बैसारी भेलैक। सभ हीराबाबूकेँ 'छिया-छिया' कहलकन्हि। ताबतमे अमिकत कतहुसँ आयल आ साफ-साफ घोषणा कय देलक जे वो मकान मीराक छैक ओओकरे रहतैक। सौंसे गौंवा प्रसन्न भय ओकर गुणगाण करय लागल। मुदा हीराबाबूकेँ जेना नअ मोन पानि पानि पड़ि गेलन्हि। बैसारीसँ लौटि ओ छटपटायल रहथि। साँझमे बाप-बेटामे बेश विवाद पसरि गेलन्हि। मुदा अमित हुनकर गप सुनबाक हेतु तैयार नहि छल आ एकबेर फेर साफ-साफ कहि देलकन्हि जे एहि अन्यायमे ओ हिनकर संग नहि देतन्हि। बाद-विवाद बढ़िते गेल। अन्ततोगत्वा हीराबाबू कम्बल, बिछाओन आदि सरिओलन्हि आ गामसँ विदा भय गेलाह। क्यो टोकलकन्हि नहि। अमित मोने-मोन सोचैत रहल- भने ई आफद टरि रहल छथि।

हीराबाबू तँ गमसँ चलि गेलाह मुदा मीराकेँ तैयो चैन नहि भेटलन्हि। सौंसे गाममे दुष्ट लोक सभ मीरा आ अमितक बारेमे नाना प्रकारक कुप्रचार करय लगलैक। रोज एकटा नव अफवाह गामक एक कोणसँ निकलैत आ दोसर कोण धरि पसरि जाइत। मीराकेँ ई सभ गप्प क्यो-ने-क्यो आबि कय कहि दैक। ओ बड़ संवेदनशील छल, भावुक छल, तँए एहन-एहन गप-सप्प सुनि कय कानय लगैत छल। एक दिन अहिना एसगरे अँगनामे कनैत रहय। अमित कतहुसँ आबि गेलै। ओकरा एना कनैत देखि बड़ तकलीफ भेलै अमितकेँ।

"मीरा नहि कान!"

जेना कि सभ बात ओकरा बुझले होइक।

"सुन! हमर बात मानि ले। हमरासँ बियाह कऽ ले। बाज सही, जकरा जे मोन होइक।"

मीरा आर जोरसँ कानय लगल। अमित ई सभ नहि देखि सकल आ चुप्पे ओतयसँ सरकि गेल।

तकर बाद अमित दोबारा घुरि कय नहि अयलैक ओकरा लग। पूरा गाममे हल्ला भय गेलैक जे अमित कतहु चल गेल। मीरा ओतेकटा गाममे फेर एकसर भय गेल छल। गाममे कोनो थाहपता नहि छलैक।

बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कऽ गुजर करैत छल। मुदा अमितक एकदम गामसँ निपात भय गेलाक बाद ओ अत्यधिक दुखी छल। ककरोसँ किछु गप करबाक इच्छा नहि रहैक। एतबेमे ककरो गरजब सुनेलैक। हीराबाबूक पितियौत अगिया बेताल छलाह।

"कहाँ गेल पण्डितक बेटी...!" इत्यादि-इत्यादि।

मीराकेँ ई सभ गप नहि सहि भेलैक। मुदा ओ किछु बाजियो नहि सकल। असोरापर करोट भऽ गेल। चारूकातसँ लोक सभ दौड़लै। हल्ला भऽ गेलैक जे 'मीराक हार्ट फेल कऽ गेलैक। एक बेर फेर ओ घराड़ी सुन्न भय गेलैक।'

२

असगुन

गाम-घरमे कतेको प्रकारक असगुन सभ प्रसिद्ध अछि। जेना क्यो यात्रापर विदा हो आ नढ़िया रास्ता वायासँ दायाँ काटि दियै, किंवा क्यो विदा होइतकाल पाछासँ टोकि दियै। बुढ़बा बाबाकेँ एहि सभहक बेश विचार छलन्हि। जँ घरक क्यो विदा होइत आ कतहु क्यो छीक दैत तँ वो 'चिरंजीवी भव:' अवश्य कहितथि। तहिना आर-आर अपशकुन जँ होइतैक तँ ओकर विवारण कय लितथि।

ओहि दिन गाममे हाट लागल रहैक। तीमन-तरकारी सभटा हाटेपर सँ कीनल जाइत छलन्हि। ओहुना हाट दिनक ओ नियमसँ ओतय पहुँचैत छलाह।

रविक दिन छलैक। हाट जयबाक तैयारी ओ दुइए बजेसँ प्रारम्भ कय देने छलाह। जहाँ चारि डेग आगा बढ़ैत कि एक ने एकटा अपसगुन भय जान्हि। एवम् प्रकारेण चारि बाजि गेल। सूर्यास्त करीब छल। हारि कय वो बेंत घुमबैत विदा भेलाह।

कनिके आगा बढ़लाह कि मुनेसरा सामनेमे पड़ि गेलन्हि।

"प्रणाम पंडीतजी!" बाजल मुनेसरा।

"नीके रह"- मुनेसराकेँ आर्शीवाद दैत पडितजी आगा बढ़लाह। मोने-मोन कहि नहि की की घुनघुना रहल छलाह। मुनेसराकेँ एकेटा आँखि छलैक। गाममे दाहाक दिन मारि भय गेल रहैक। बेस फनैत छल ओ। लाठी लेने फानि गेल छल। ताबतमे क्योओकरे निशाना बना कय एकटा सीसाक बोतल फेकलकै। ओकर सौंसे आँखि लहु-लुहाम भय गेल रहैक। ओही घटनाक बाद ओ असगुन भय छल। प्राय: सैह सभ सोचैत पंडितजी आगा बढ़लाह।

हाटपर बेश भीड़ छलैक। तीमन-तरकारीक भरमार छल। मुदा पंडितजीक आदति छलन्हि जे कोनो चीज ओ ठोकि-ठोकि कऽ करितथि। बीच बजारमे सजमनिक दाम मोलबति-मोलबति पहुँचलाह कि चारि गोटेमे एक दिससँ धुक्का मारैक आ चारि गोटे दोसर दिससँ। सामनेसँ दू-तीन गोटे हाँ-हाँ करैत पण्डितजीक रक्षा करय आबि गेलाह। धक्का-धुक्की खतम भेल तँ पण्डितजी आगा बढ़लाह। सजमनिक दाम मोलेलन्हि आ भाव पटि गेलापर जेबीसँ पैसा निकालय लगलाह कि अबाक रहि गेलाह। जेबी नदारद। पण्डितजी ठोह पारि कय कानय लगलाह। सौंसे ई खबरि बिजलौका जकाँ पसरि गेल। पण्डितजी माथा हाथ देने घर आपस अयलाह। तहियासँ वो असगुनक डरे छाँह कटने फिरथि।

पण्डितजीकेँ तीनटा कन्या छलन्हि। प्रथम कन्याक कन्यादान तय भय गेल छलन्हि। नीक कुल-शीलक लड़का रहैक। अगहनक पुर्णिमाक बियाह तय भेलन्हि। बरक हाथ उठयबाक हेतु विदा होइत छलाह कि कियो तराक दय छींकनने। छींक...छींक...छीक...। हुनकर माथामे ई छींक घूमय लगलन्हि। पण्डितजीक टांग एकाएक गतिहीन भय गेलन्हि। ओ आगा बढ़य हेतु एकदम तैयार नहि छलाह। सौंसे गामक लोक करमान लागि गेल छल। पण्डितजी गुम। किछु बजबे नहि करथि। तेहन शुभ मुहुर्त्त छल जे छींकक चर्चो करब असगुन लगन्हि। लोक सभकेँ किछु फुराइक नहि जे आखिर बात की भेल। अखने तँ पण्डितजी टप-टप बजैत छलाह..!

गाम भरिक लोक पण्डितजीकेँ घेरि लेलकन्हि।

"पण्डितजी की भेल?"

मुदा ओ तैयो गुम्म। अन्ततोगत्वा लोक हुनका उठा-पुठा कय डाक्टरक ओहिठाम लय गेल। ओतय डाक्टर हुनकरअवस्था देखि बेश सीरियस भय गेलाह आ कहलखिन्ह जे हुनका गम्भीर भावनात्मक अवधात भेलन्हि अछि। तात्कालिक उपचारक हेतु जहाँ वो सूई देबय लगलाह कि पण्डितजीकेँ नहि रहि भेलन्हि। ओ गरियबैत ओहिठामसँ गामपर भगलाह। ताबत भोरक चारि बाजि गेल छल। आ बरक ओहिठाम जयबाक कार्यक्रम रद्द भय गेल। ठीके असगुन भय गेलन्हि।

ताहि दिनसँ पण्डितजी असगुनसँ बड्ड डराथि। ओहि दिन हुनकर मझिली बेटीक तहिना आँखि बड़ फरकय लगलन्हि। पण्डितजी एकदम अपसियाँत भय गेलाह। अबश्य कोनो गड़बड़ी होमयजा रहल अछि।

ओ अपन अपन बेटीकेँ तुरन्त अपना लग बैसा लेलथि कि ताबतेमे एकटा गिरगिटहुनकर बायाँ हाथपर खसल। पण्डितजी ठामहि फानलाह। पैरमे खराम छलन्हि। दरबज्जा बेस ऊँच छलैक। दलानपर ठामहि

चितंग भय गेलाह। बायाँ पैरक हड्डी टुटि गेल छलन्हि। सौंसे गाम! पण्डितजी बाप-बाप चिचिआय लगलाह। सभ गोटे हुनका लादि कय अस्पताल लय गेल। लाख कोशिशक बाबजूद ओ हड्डी नहि जुटल। पण्डितजी जन्म भरिक हेतु नाँगर भय गेलाह।

तहियासँ पण्डितजी रोज भोरे उठैत देरी भगवानकेँ गुहारि देथि-

"हे भगवान! असुगनसँ जान बचायब।"

मुदा भावी प्रवल होइत छैक। होइत वैह छैक जे हेबाक रहैत छैक।

एकादशीक दिन छलैक। महादेवक दर्शन करय जाइत छलाह। झलफल होइत छलैक। ताबतमे एकटा नढ़िया वामाकातसँआयल आसामने बाटे दायाँकात जुजरि गेल। पण्डितजी ठामहि खसलाह।

"हे महादेव! आब अहीं प्राणक रखा करू।"

कहैत-कहैत पण्डितजी वेहोश जकाँ भय गेलाह। तारा सभ एकाएकी हुनकर ई दुर्दशा देखबाक हेतु अपस्याँत छल। बो बेचारे एकहुँ डेग घुसकय हेतु तैयाक नहि छलाह। आ ने घुसकबाक हुनकामे तागति रहि गेल छलन्हि।

पण्डितजीकेँ फेर कहि नहि कहाँसँ हिम्मत अयलन्हि। ओ चोटे पाछा घुमलाह। तैबीच एकबेर फेर वैह नढ़िया वायाँसँ दहिना भेल। पण्डितजी ओहि नढ़ियाकेँ गरियबैत, नाँगर टाँगे दौड़ैत, खसैत-पड़ैत घर दिस बढ़य लगलाह। बीच-बीचमे ओहि नढ़ियाकेँ कहैत-

"ई सरबा, नहि जीबय देत। एकर हम की बिगारने छलियैक से नहि जानि!"

ताबतेमे मुखियाजी पोखरि दिसिसँ आपस अबैत छलाह। पुछि बैसलखिन-

"की भेल पण्डितजी?"

"की कहू की भेल। कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कर्म गेल संगे। सैह परि अछि हमर। एकादशीक दिन छलैक। सोचलहुँ जे महादेवक दर्शन करी। आधा रास्तासँ जहाँ आगा बढ़लहुँ कि औ बाबू! ई चण्डाल नढ़िया रास्ता काटि देलक।"

ओहिसँ पहिने की मुखियाजी किछु बजितथि, पण्डितजी धराम दय खसलाह।

मुखियाजी चिकरलाह। पासेमे पण्डितजीक भातिज पनिछोआ करैत छलखिन्ह। ओ दौड़लाह। अगल-बगलसँ सेहो लोक सभ दौड़ल। पण्डितजीकेँ उठा-पुठा कय दरबाजापर राखि देलक। लोक सभ पुछन्हि-

"की भेल?"

मुदा ओअपस्याँत आकाश दिसि तकैत रहि गेलाह।

असगुन, असगुने होइत अछि। तेँ ने लोक सगुन करैत फिरैत रहैत अछि। पण्डितजी भोर होइतहि पनिभरनीकेँ बजौलखिन्हि आ आदेश देलखिन्ह जे आइसँ नित्य प्रात: काल ओ एक घैल पानि भरि कय दरबाजापर राखि देल करय, जाहिसँ हुनक दिन नीक जेना कटि जान्हि। पनिभरनी हुनकर आज्ञाकेँ सिरोधार्य कयलक आ रोज हुनकर सामनेमे बेश बड़का घैलमे पानि भरि-भरि राखय लागल।

एक दिन अन्हरोखे पनिभरनी पानि भरि कय राखि गेल। ओकरा गहुँमक कटनी करबाक छलैक।

पण्डितजी उठि जहाँ चारि डेग आगा बढ़लाह कि वोहि घैलसँ टकरा चारूनाल चित्त भय खसि पड़लाह।

चारू कातसँ लोक सभ दौड़ल। मुदा मण्डितजी किछु नहि बजलाह। आब ओ सभ दिन चुप्पे रहबाक सपथ खा लेने छलाह। समय विपरीत भय गेल छलन्हि आ सगुनो असगुन भय गेल छलन्हि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

अमृतसर यात्रा

पंजावक पैघ शहरमे अमृतसरक गणना अछि। ऐठाम पहिने तुँग नामक गाम छल। सिखक चारिम गुरु रामदास १५७४ मे ७०० रूपैआमे तुँग गामक लोकसँ जमीन किनलैथ। ओइ साल गुरु रामदास ओतए घर बना कऽ रहए लगला। ओइ समयमे ओकरा 'गुरु दा चक्क' कहल जाइत छल। बादमे एकर नाम 'चक्क राम दास'भऽ गेल।

अमृतसर पहिने 'गुरुरामदासपुर'क नाओंसँ जानल जाइत अछि। पंजावक राजधानी चण्डीगढ़सँ ई २१७ किलोमीटर दूरीपर एवम् लाहौरसँ मात्र ५० किलोमीटर दूरीपर अवस्थित अछि। भारत-पाकिस्तानक वाधा वोर्डर ऐठामसँ मात्र २८ किलोमीटर अछि।

कहल जाइत अछि वाल्मिकी ऋृषिक आश्रम अमृतसरक रामतीर्थमे छल। लवकुश अश्वमेघ यज्ञक घोड़ाकेँ ओतइ पकैड़ लेने छला आ हनुमानकेँ एकटा गाछसँ बान्हि देने रहैथ। ओही स्थानपर दुर्गिआना मन्दिर बनल अछि।

तेसर सिख गुरु अमरदास जीक परामर्शपर चारिम सिख गुरुरामदासजी अमृत सरोवरक खुनाइ प्रारम्भ केलाह। ऐमे चारूकात पजेबाक घाटक निर्माण पाँचम सिख गुरु अर्जन देवजी द्वारा १५ दिसम्बर १५८८ क पूरा कएल गेल। वएह हरमन्दर साहेबक निर्माण प्रारम्भ केलैथ। १६ अगस्त १६०४ क ओइमे गुरु ग्रन्थ साहेबक स्थापना भेल। सिख भक्त बाबा बुधाजी ओइ मन्दरक प्रथम पुजेगरी नियुक्त भेल रहैथ।

हरर्मान्दर साहेबक निर्माणमे सर्व धर्म सभ भावक विशेष धियान राखल गेल। सिख धर्मक ऐ भावनाक अनुरुप गुरु अर्जन देव मुस्लिम सूफी सन्त हजरत मिआँ मीरकेँ ऐ मन्दिरक शिलान्यासक हेतु आमंत्रित केने छला। सन् १७६४ ई.मे जस्सा सिंह अहलुवालिया आन-आन लोक सबहक सहयोगसँ एकर जीर्णोद्धार

केलाह। उन्तीसमी शताब्दीमे महाराजा रणजीत सिंह ७५० किलोग्राम सोनासँ ऐ मन्दिरक ऊपरी भागकेँ पाटि देलाह जैपर एकर नाओं 'स्वर्ण मन्दिर' माने 'गोल्डेन टेम्पल' पड़ि गेल।

हरमन्दि साहेबक स्वर्ण मन्दिरमे पएर रखैत गजब आनन्दक अनुभूति भेल। साफ-सुथरा चक-चक करैत परिसर। सुरम्य वातावरणमे भजन कीर्तनक संगीतमय मधुर ध्वनि। चारूकात पसरल सैंकड़ोक तादादमे सेवादारक जत्था सभकेँ देखैत बनैत छल।

समूहमे जीव, सेवा करब ओ समन्व्य पूर्वक सबहक स्वागत करब, ऐ वस्तुक प्रत्यक्ष उदाहरण हरमन्दर साहिवमे भेटैत अछि। मन्दरमे प्रवेशसँ पूर्व जूता निकालब आ माथ झाँपब अनिवार्य अछि। माथ झाँपबाक हेतु मन्दिर प्रवन्धक केर तरफसँ वस्त्र देल जाइत अछि।

विशाल तलाव स्वच्छ जलसँ भरल अछि। ऐ तालावक नाओं अमृत सरोवर अछि। सरोवरक चारूकात लोक परिभ्रमण करैत अछि। सरोवरसँ जुड़ल अछि हरमन्दिर साहेब।

मन्दिरमे निरन्तर गुणवाणीक पाठ होइत रहैत अछि। चारूकातसँ मन्दिरक दरबाजा खूजल अछि। तात्पर्य जे ओइठाम सबहक स्वागत अछि। हरमन्दिर साहेबमे कोनो धर्मक लोक जा सकैत अछि। ऐ मामलामे ई अद्भुत अछि। ऐठाम निरन्तर लंगर चलैत रहैत अछि। अनुमानत: प्रति दिन एक लाखसँ तीन लाख लोक तककेँ मुफ्तमे लंगर खुआबक बेवस्था ऐठाम रहैत अछि।

हरमन्दिर साहेब हम दू बेर गेल छी। एकबेर अधिकारीक प्रतिनिधि मण्डलक संग आ दोसर बेर श्रीमतीजीक संग। दुनू बेर नीकसँ दर्शन भेल। स्थानीय प्रशासनक सहयोग रहबाक कारण मन्दिरमे हमरा सभकेँ सरोपा देल गेल। सरोपा देबक माने बहुत इज्जत देब भेल।

अमृतसरक प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिरक दर्शनक बाद हमरा लोकनि ओइठामसँ सटले जालियावाला बाग गेलौं। ओइ वागक इतिहास केकरो नहि बुझल छइ। ब्रिटिश साम्राज्यक भारतमे कएल गेल ई क्रुड़तम घटना अछि। १३ अप्रैल १९१९ क ब्रिटिस हुकुमतक विरोधमे स्वर उठाबक हेतु जमा भेल हजारो लोकपर १० मिनट धरि धुँआधार गेली चलौल गेल, जइमे एक हजार लोक मारल गेला आ १५ साए लोक घायल भेला। सरकारी आँकड़ामे मृतक एवम् घायलक संख्या बहुत कम क्रमश: ३६९ एवम् २०० मात्र देखौल गेल मुदा ओ कोनो हिसावसँ सही नहि लगैत अछि। गोली काण्डक बाद ओइ मैदानमे लाश उठौनिहार कियो नहि छल। सैकड़ो आदमी जान बँचेबाक हेतु ओइठाम स्थित एकटा इनारमे कुदि गेल। बादमे १२० टा लाश ओइ इनारसँ निकालल गेल। धुँआधार चलल गोली सबहक निशान अखनौं ओइठामक देवाल सभपर देखल जा सकैत अछि।

ओइ दिन बारहे बजेसँ लोक सभ बैसारमे भाग लेबाक हेतु ओइ मैदानमे जमा होमए लागल छल। बहुत रास निर्दोस लोक उत्सुकतावश सेहो ओइठाम जमा भऽ गेल छल। मुदा केकरो ई अन्दाज नइ छेलै जे ब्रिटिश हुकुमत एतेक वर्वरतापूर्ण काज करत! मुदा से भेल। ब्रिटिश हुकुमतक खिलाफ केतेको प्रकारक दुर्घटनाक पछाइत राज्यमे मार्शल लॉ लागू छल।

१३ अप्रैल १९१९ क भोरे ब्रिटिश हुकुमत घोषणा कए लोककेँ चेतौलक जे पाँच आदमीसँ बेसी लोकक एकठाम जमा होएब गैरकानूनी अछि। मुदा बहुत लोककेँ एकर जानकारी नहि भेलै आ जेकरा भेबो केलै से नहि सोचि सकल जे आदेशक उल्लंघनक एहेन विनासकारी हएत!

स्थानीय फौजी एवम् असैनिक अधिकारीकेँ जालियावाला बागमे जमा होइत भीड़क जानकारी १२ बजे भऽ चूकल छल। ओ सभ चाहैत तँ ओइ बैसारक शुरूए-मे विरोध कए सकैत छल, मुदा एकटा सुनिश्चित योजनाक तहत भीड़केँ जमा होमए देल गेल आ बिना कोनो पूर्व उद्घोषणाक भीड़पर अन्धाधून गोली चलेबाक आदेश जनरल द्वारा दए देल गेल।

सभसँ दुखद तँ ई भेल जे गोलीक बौछारमे घायल लोक सभ तरपैत-तरपैत मरि गेल आ कियो ओकरा सभकेँ असपताल उठा कऽ नहि लऽ गेल। ऐ घटनाक अंजाम देनिहार जेनरल डायरेक्टरकेँ जखन हंटर कमीशन पुछलक जे 'अहाँ घायल लोक सबहक इलाजक की बन्दोवस्त केलौं?' तँ ओ निर्लज्ज भऽ कहलक जे अस्पताल सभ खूजल छल। सही स्थिति तँ ई छल जे बाहरमे कर्फ्यू लागल छल तँए कियो केतौ घुसकियो नहि सकैत छल। जनरल डायर उपरोक्त कमीशनक समक्ष स्वीकार केलक जे ओ सोचि-समैझ कऽ जालियावाला वागमे गोली चलबौलैथ। ओ चाहितैथ तँ डरा-धमका कऽ भीड़केँ भगा दितैथ, मुदा फेर ओ सभ एकत्र भऽ जाइत, आ ब्रिटिश हुकुमतक वर्चस्वपर हँसैत।

एहेन वर्वर घटनाक चश्मदीद गवाह देबाल सभपर पड़ल गेली सबहक निशान अखनौं देखल जा सकैत अछि।

हम सभ चारूकात देबाल सभपर पड़ल एहेन निशान सभकेँ सद्य: देखलौं गोलीक निशान सभकेँ चिन्हित कए देल गेल अछि। आ जइ इनारमे सैकड़ो आदमी कुदि गेला आ जानसँ हाथ धो लेलैथ, सेहो 'शहीदी कुआँ'क नाओंसँ स्मारक भऽ गेल अछि। ऐ काण्डमे शहीद भेल सैकड़ो लोकक यादगारमे ओतए स्मारक बनल अछि जेकर उद्घाटन भारक प्रथम राष्ट्रपति स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सन् १९६३ मे केलाह।

अमृतसरक दर्शनीय स्थानमे दुर्गिआना मन्दिर प्रमुख स्थान रखैत अछि। मूलत: दुर्गामाताक मन्दिर हेबाक कारण एकर नाओं दुर्गियाना मन्दिर पड़ल मुदा ऐ मन्दिरमे आनो-आनो भगवान सबहक भव्य मूर्ति विराजित अछि। ई मन्दिर अपन भव्यता एवम् अध्यात्मिक वातावरण हेतु सम्पूर्ण विश्वमे प्रसिद्ध अछि। देश-विदेशसँ हजारो तीर्थयात्री ऐठाम अबैत रहै छैथ। मन्दिर बहुत पुरान अछि। मूल मन्दिर सोलहम शताब्दीमे बनल छल। तेकर बाद सन् १९२१ ई.मे स्थानीय लोकनिक मदैतसँ एकर जीर्णोद्धार कएल गेल। नव निर्मित मन्दिरक उद्घाटन सन् १९२५ ई.मे पं. मदन मोहन मालवीय केने रहैथ। मन्दिरक द्वार थानीसँ बनल अछि।

पूरा मन्दिर चारूकातसँ सिमटल अछि। मूख्यत: मन्दिरक प्रागणमे पहुँचबाक हेतु पूल बनौल गेल अछि।

मन्दिरक बनाबट ओ साज-सज्जा स्वर्ण मन्दिरसँ मिलैत अछि।

मन्दिरक प्रागणमे सीतामाता ओ हनुमानजीक मन्दिर अछि। सन् २०१३ सँ मन्दिर एवम् मन्दिरक आसपासक परिसरक जीर्णोद्धारक कार्यक्रम चलि रहल अछि जेकर पूर्णतापर मन्दिरक भव्यता ओ सौन्दर्य पराकाष्ठापर पहुँच जाएत।

कहल जाइत अछि जे लवकुश हनुमानजीकेँ अहीठाम बान्हि देने रहैथ। अश्वमेध यज्ञक घोड़ाकेँ बान्हि देने रहैथ। लक्षमण, भरत, शत्रुध्न सभ एतइ पराजित भऽ गेल रहैथ। हुनका सभकेँ जीएबाक हेतु देवता सभ अमृत अनने रहैथ ओ शेष अमृतकेँ माटिमे गाड़ि देल गेल छल। जहूसँ ऐ शहरक नाओं अमृतसर पड़ल।

हम सभ अमृतसरक प्रसिद्ध दुर्गिआना मन्दिरमे घन्टो घुमैत रहलौं। पूजा-पाठ केलौं ओ एकर भव्यताक आनन्द उठेलौं। पं. मदन मोहन मालवीयजीक बारम्बार धियान अबैत रहल जे ऐ मन्दिरकेँ वर्तमान स्वरुपक नायक रहैथ।

घुमैत-घुमैत हम सभ थाकि गेल रही। रौद बहुत करगर रहइ। हमर श्रमतीजी सेहो बहुत थाकि गेल छेली। अस्तु हम सभ ओइठामसँ सोझे सीपीडब्ल्यूडी गेष्ट हाउस स्थित अपन डेरा पहुँच गेलौं।

घर घुमैत काल रस्ता भरि सोचैत रहलौं जे एतेक भारी तीर्थ स्थानमे जालियावाला वाग सन क्रूड, वर्वर, नरसंहार केना भेल? सही कहल जाइत अछि जे सत्ताक नशामे मनुख पिशाच भऽ जाइत अछि। ओकर मानवीय संवेदना नष्ट भऽ जाइ छइ। मनुख ओकरा लेल मात्र एकटा मशीन रहि जाइत अछि जे आदेशक पालन करैत-करैत अपनहि बन्धु-बान्धवक खूनक धार बहा सकैत अछि। जेना कि जालियावाला वागमे अंग्रेजी हुकुमत केलक। हिन्दू, मुसलमान, सिख आदि सभ धर्मक लोक लोकक खून एक भऽ गेल छल, जालियावाला वाग चिकैर-चिकैर कऽ कहि रहल छल-

"ऐ अत्याचारी निकृष्ट अंग्रेजी हुकुमत, आब बर्दास्त जोग नहि रहल। आब आर जुलुम नहि सहल जाएत..!"

जालियावाला वागक काण्ड सम्पूर्ण देशक आत्माकेँ झकझोरि देलक। एकर बदलामे उधम सिंह विलायत जा कऽ माइकल डायरक[1] हत्या कऽ देलक आ स्वयं फाँसी चढ़ि गेल।

दोसर दिन साँझमे हमरा लोकनि बाधा वोर्डरपर होमएबला झण्डा उतारबाक कार्यक्रम देखए गेलौं। ओइ कार्यक्रमक आकर्षण अमृतसर गेनिहार प्रत्येक पर्यटककेँ रहैत छइ।

भारत ओ पाकिस्तानक सीमा सुरक्षा बलक जवान सभ नाना प्रकारक करतब करैत आगू-पाछू बढ़ैत रहै छैथ। कखनो टाँगकेँ धराम-दे आगाँ तँ कखनो हाथकेँ फरकबैत पाछाँ करैत ओ सभ एक-दोसरकेँ कखनो सिनेह करैत तँ कखनो आक्रमण मुद्रामे आबि जाइ छैथ। अपना देशक लोक जेतेक बेर हिन्दूस्तान जिन्दावाद कहैत तेतेक बेर सटले सीमापर सँ ओइ देशक नारा सभ लगैत रहैत अछि।

कुल मिला कऽ सम्पूर्ण वातावरण देश-भक्तिसँ भरल रहैत अछि। उत्तेजक ओ भावुक महौलक वावजूद सैनिक सभ संयत रहै छैथ आ क्रमश: अपन-अपन देशक झण्डा उतारि कऽ वधा बोर्डरक गेटकेँ बन्द कऽ लइ छैथ।

विशेष अवसर जेना ईद, दिवाली आ दुनू देशक स्वतंत्रता दिवस आदिपर एक-दोसरकेँ मिठाइक डिब्बाक आदान-प्रदान सेहो होइत अछि। कुल मिला कऽ ई कार्यक्रम दुनू देशक नागरिकक वर्तमान परिस्थितिपर सोचबाक हेतु मजबूर कए दैत अछि।

दुनू देशक लोक हजारोक तादादमे आमने-सामने बैसए आ शान्तिपूर्ण महौलमे मनोरंजक कार्यक्रम देखए से अपना-आपमे एकटा मिसाल अछि। भऽ सकैए एकर सकारात्मक प्रभाव दुनू देशक जनता ओ सरकारपर पड़इ।

एवम् प्रकारेण अमृतसरक संक्षिप्त प्रवासक अन्त भऽ रहल छल। हमरा लोकनि प्रात भेने अमृतसर दिल्ली शताब्दी एक्सप्रेस पकैड़ कऽ दिल्ली विदा भऽ गेल रही। सुविधा सम्पन्न द्रुतगामी ई गाड़ी जल्दीए घर पहुँच गेल आ हम सभ अपन यात्राक आनन्दक चर्च करैत केतेको दिन धरि आनन्दमे रहलौं।

तिथि : ०१ अगस्त २०१७, शब्द संख्या : १५१६

---

[1] माइकल डायर जालियावाला वाग काण्डक समय पंजावक लेफ्टिनेन्ट जेनरल छल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: परिचर्चा: परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे २. **नन्द विलास राय: लघुकथा- कठही साइकिल**

१

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

परिचर्चा

परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे

वैधव्यअभिशाप अछि आ कोनो महिला कें परित्यक्ता बनेनाइ महा-दुष्कर्म। ई दुष्कर्मपितृसत्तात्मक समाज निर्लज्जता सँ, क्रूरता सँ ऐतिहासिक समय सँ करैत आबिरहल अछि। स्त्री शोषणक एहि सँ घृणित उदाहरण भेटब दुर्लभ। आश्चर्य तखन होइतअछि जखन जाहि पुरुषक कारणे हुनक पत्नी परित्यक्ता बनलथिन तिनका समाज हुनकरआर्थिक संपन्नता, सामाजिक गरिमा (नाम), उच्च शिक्षा आ ओहदा, व्यवसायकिसफलता आदिक कारणे सम्मानित करैत अछि, मर्यादाक चद्दरि ओढ़बैत अछि, वक्ता बनबैत अछि। सबसँ अधिक दुःख तखन होइत अछि जखन तथाकथित आधुनिक महिला जेपढ़ल-लिखल छथि, सब बात बुझैत छथि,नारी स्वतंत्रताक दम्भ भरैत छथि, नारिवादक झण्डा हाथ मे लेने कोनो ऑलयम्पिकक धाविका जकाँ सनसन करैत दौड़ैतरहैत छथि; लेकिन समय एला पर अपन व्यक्तिगत हितक कारणे शोषक पुरुषक सङ्गदेमए लगैत छथि। जखन रक्षके भक्षक भ' जाए त' ककर आश? एहि विषयकँ बुझबाक लेलएकर तह मे घुस'पडत। इतिहास सँ वर्तमानक जे बहुत विशाल दूरी एकपेड़ियाउबड़-खाबड़ बाट अछि ताहि पर यात्रा सहभागी अवलोकनार्थी बनि करए पड़त। यथार्थकनजदिक जयबा लेल लिङ्ग भेदक भावकँ त्याग करए पड़त। कागद की लेखी आ आँखन कीदेखी दुनू साक्ष्य कें बेर-बेर ख़रोंच मार' पड़त। जखन ई सब काज पूर्ण निष्ठा आईमानदारी सँ समय लगाक' क' लेब त' बातक गह मे पहुँच सकैत छी। नारी सँसम्बन्धित ई विषय अछि ताहिं जौं कियोक गुनमति गम्भीर मैथिलानी एहि पर काजकरथि त' सजातीयताक भाव एहि मे स्वतः आबि सकैत अछि।

हमश्रीमती अपर्णा झाक जिज्ञासक निराकरण अथवा हुनका द्वारे ठाढ़ कएल समस्या परविचार करबा लेल एहि विषय पर अपन कलम उठाओल अछि। अपर्णा पुछैत छथि "परित्यक्ता अथवा पथ बाट जोहैत स्त्री या प्रतीक्षारत स्त्री?

अपर्णा झाक कहबाक शैली आ हुनका द्वारा उद्धरित कएल किछु लोकजीवनक घटित दृष्टान्त हमरा झकझोडि देलक।

सबसँपहिने ई स्थापित क' ली जे परित्यक्ता किनका कही? हमरा जनैत आ लोकजीवनकजीवन्त उदाहरण देखैत परित्यक्ता ओहेन स्त्री भेलीह जिनका विवाहक बादकोनो-ने-कोनो कारणे हुनकर पति त्यागि देने छथिन। बहुत दृष्टान्त मे पतिदोसर स्त्रीगण कें घोषित आ अघोषित रूपेँ आनि लैत छथि। बाट जोहए बालीस्त्रीगण ओ

होइत छथि जिनकर पति कतौ गेल छथिन मुदा हुनका नहि बूझल छनि जे कतएगेल छथि, की क' रहल छथि। सब बिदेसिया गीत एहेन स्त्री पर लिखल गेल अछि।

"*परदेसिया कें चिट्ठी लिखै छै बहुरिया*

पड़लै अकाल पिया कटै छी अहुरियाँ"।

या फेरो:

"*कियेक दुईए दिनक छुट्टी मे गाम एलयै*

भरि दिन घुमिते रहलियै ने आराम केलियै"।।

एहि गीत सब मे प्रतीक्षा छैक। एहेन प्रतीक्षा जाकर अंत सुखांत हेतैक। ई एहेन बाट जोहब छैक जाहि मे सब किछु मधुर-मधुर हेतैक।

मुदाओहि महिलाक की हेतैक जकर पति ओकरा विवाहक बाद छोड़ि देलथिन, परित्यक्ता बनादेलथिन? जकर श्रृंगार, टिकुली, काजर, पाउडर, गहना, वस्त्र,सब बेकार भ' गेलैक। जकरा पति त' छोड़िये देलकैक समाज सेहो नीक भाव सँ नहि देखैत छैक।ओकरा सँ नीक त' विधबा जकरा लेल समाज एक निश्चित बात,वस्त्र, खान-पान, व्यवहार आ आचरण तय करैत ओकरा समाजक मुख्यधारा मे किछु हद धरि जुड़बाक अवसरप्रदान करैत छैक।

पित्रिसत्तात्मक समाज समाजक संरचना मे बहुत चालाकी सँ परित्यक्ताक स्थान निर्धारित करैत अछि। विध-बेभार आ देवता पितर मे एहि प्रथा कें जोड़ैत अछि। एकर उदेश्य कहीं ई त नहि जे स्त्रिग्न समाज मानशिक रूप सँ परित्यक्ता बनबा लेल तैयार भ' जाथि? चलू लोक परम्परा मे चलैत छी। मधुश्रावणी कथा मे एक प्रसंग सन्ध्याक विवाहक अबैत छैक।सन्ध्या के छथि? सन्ध्या शिवानी गौरीक छोट बहिन छथि। अपन सुन्नरि सारि सन्ध्या सँ महादेब कें प्रेम भ' जाइत छनि। सन्ध्या सेहो अपन बहिनोई महादेब सँ प्रेमक आदान-प्रदान केनाई शुरू केलनि। परिणाम ई भेल जे जखन सन्ध्या विवाह योग्य भेलीह त' महादेब गौरी सँ चोराक सन्ध्या सँ विवाह करबा लेल चल गेलाह। एम्हर गौरी महादेब कें तकने फिरथि मुदा ओ कतहु नहि भेटथिन्ह। बहुत खोज कएला पर गौरी कें महादेबक विषय मे जानकारी भेटि गेलनि जे महादेब सन्ध्या सँ विवाह करए गेल छथि। गौरी कें बड़ दुःख भेलनि ओ कानय लगलीह। कनैत-कनैत देह सँ घाम चललनि

आओर मैल छुटए लगलनि-गौरी मैल छोड़ा कए जमा कएलनि आओर ओकर एकटा साँप गढि कए बाट पर राखि देलथिन-महादेब जखन सन्ध्या कैँ विवाह क' ल' अनलनि त' गौरी कैँ कनैत देखल संगहि बाट पर मैलक साँप सेहो।महादेब ओहि साँप मे प्राण दए देलाह ओ लह-लहाए लागल। महादेब आओर सन्ध्या कैँ देखि गौरी कानए आओर गारि-शाप देमए लगलीह:

"की ए हम आहे शिब चोरनी की चटनी

की ए हम कोखिया विहूत

की हम आहे शिब सेवा मे चुकलहुँ

केलहुँ दोसर विवाहे'

तखन महादेब कहलथिन:

"*नहि अहाँ आहे गौरी चोरनी चटनी*

नहि अहाँ कोखिया विहूत

नहि अहाँ आहे गौरी सेवा मे चुकलहुँ

हमरा कर' परल दोसर विवाहे'

तखन गौरी कहलनि:

"*मरिहौ गे सन्ध्या तोरो जेठ भइया*

होएबे मे कोखिया विहूते'

तखन महादेब पुनः समझाबैत कहलनि:

"*जनु गारी दिअ गौरी अपनो जेठ भइया*

जनु कहिओ कोखिया विहूत

तोरहि सन गौरी पातरि छितरि

तोरहि सन सुकुमारी

बतिसो दाँत बिजुली छिटकनि

सन्ध्या हुनकर नामें'

बहुत अधिक विनम्रता स सन्ध्या कहैत छथिन:

"*कार्तिक गणपति गोद खेलाएब*

होएब चेरिया तोहारे'

आब महादेब निष्कर्ष दैत बजला: "अहाँ अनेरे कानि रहल छी। अहाँकेँ ई साँप बेटी भ' क' जन्म लेने अछि। अही नन्हिकीरबी केँ खेलाएबा लए हम एकटा कनियाँ आनि देल अछि।

कथा अतहिं अंत भ' जाइत छैक। आश्चर्यक बात ई जे गौरीक एहि प्रश्न आ शंका पर कहियो कोनो स्वर नहि उठल। पुरुख कथिलेल उठेता? स्त्रीगन सब सेहो मौन छथि। परित्यक्ता एहि कथा मे गौरी आ सन्ध्या दुनू छथि __पार्टटाइम या आंशिक परित्यक्ता। पतिक 100 प्रतिशत प्रेम सँ गौरी आ सन्ध्या दुनू जेना वंचित भ' जाइत छथि! परित्यक्ता शब्द सँ जेना दुनू विभूषित भ' जाइत छथि।

बात आगा बढ़बैत छी। हमरा लगैत अछि महर्षि गौतमक पत्नी अहिल्या मिथिलाक पहिल परित्यक्ता छथि। इन्द्र गौतमक अनुपस्थिति मे आबि गेला। हुनका लग चलि गेलीह। फेर ताहि लेल अतेक पैघ आ दुर्दान्तक दण्ड! अपने विवाह केलाक बादो तप, तपस्या। पत्नी लेल सभ बन्धन? कोना चलत काज? आ फेर ओहि बन्धन अथवा श्राप सँ मुक्त के करतनि हुनका? एकर निर्णय सेहो श्राप देमय बला पति रूपक पुरुष करताह। गौतम कहैत छथिन जे जखन राम त्रेता युग मे अतए अऔताह तखन शिला मे परिणत अहिल्या हुनक चरणक स्पर्श सँ फेरो मनुख-योनि मे वापस लौटती।

दोसर परित्यक्ता सीता छथि। सीता अपन पत्नी धर्मक पालन करैत राम संगे कत'-कत' नहि जाइत छथि। वैह राम गर्भवती सीता केँ असगरे जंगल भेज दैत छथि। मर्यादा उत्तम भ' जैतनि अगर सीता संगे राम सेहो फेर सँ जंगल चल जैतथि? से कहाँ करैत छथि? आर त आर अश्वमेध यज्ञ काल सेहो हुनका सीता कहाँ स्मरण अबैत छथिन? सोनाक सीता बना यज्ञ-वेदी पर बैस जाइत छथि। जखन लव-कुश भेट जाइत छथिन तखन सीताक स्मरण अबैत छनि। वियोग आ दर्द सँ छटपटाइत सीता धरतीक कोखि मे विलीन हेबाक लेल निवेदन करैत छथिन __"फाटू हे धरती!" धरती अपन पुत्रीक बात सुनैत देरी फाटिजाइत छथि आ सीता ओहि मे विलीन भ' जाइत छथि।

मिथिलाक तेसर परित्यक्ता भामती छथि. उद्भट विद्वान आचार्य वाचस्पति अपन गहन ज्ञान, परिश्रमक क्षमता आ हठयोगक कारणे उत्तर सं दक्षिण धरि ख्याति अर्जित कएने रहथि। आचार्य प्रवर अनेक ग्रंथक रचना कएलनि ताहिमे प्रमुख अछि: (1) न्यायणिका, (2) ब्रह्मतत्व समीक्षा, (3) तत्व विन्दु, (4) न्यायवार्तिका तात्पर्य टीका, (5) न्यायसूची निबंध, (6) सांख्यतत्व कौमदी, (7) तत्ववैशारदी। एकरा अतिरिक्त तत्कालीन पाचम नवम शताब्दी मे शंकराचार्यक आग्रह पर "अठारह वर्ष स्वगृह मे साधनारत भए सांसारिक सुख त्यागि 6 भागमे मंडन मिश्रक ब्रह्मसूत्रक शंकरभाष्यक टीकाक रचना कएलनि। आ ताहि मे भामती मूक योगदान दैत रहलथिन। तैँ हेतु ताहि मूक अवदान केँ अमर करए लए टीकाक नाम भामती संज्ञा सँ जोड़ि देलनि। ई मूक अवदान बड़ड कठिन शब्द अछि। अगर वाचस्पति केँ साधने करक छलनि त' विवाह कथिलेल केलाह? एहि लेल जे पत्नी रूप मे भामती बिना ढउआ केँ आ बिना भावनाक संचार केँ सेविका बनल रहथि? वाचास्पतिक विद्वताकेँ नमन मुदा भामतीक प्रति हुनक प्रयोग हुनका द्वारे जानि-बुझि क' भामती केँ परित्यक्ता बनाएब थिक।

मैथिली लोक व्यवहारक गीत मे अनेक गीत भेटत जाहि मे सौतिन शब्दक प्रयोग अछि। सौतिन लेल कुबजो, कुब्जा शब्दक प्रयोग अछि जे हमरा जानैत घृणा सूचक अछि।

बात परित्यक्ताक क रहल छी त' उदाहरण समाज स लेमए पड़त। समाज दिस आँखि उठाबय पड़त। समाज केँ निहारए पड़त। नारी मनोदशा आ दर्दक, टीसक अनुभूति करए पड़त।

एक बहुत स्थापित साहित्यकार अपन इच्छा सँ बिपरीत माता-पिता केँ मन आ मान रखबाक चक्कर मे एहेन परम्परागत आ अति सामान्य लड़की सँविवाह क' लेलाह जे कोनो रूप सँ हुनका संग साम्य नहि रखैत छलि नहि दैहिक सौन्दर्य मे आ ने विद्या मे। विद्वान आ दैहिक सौन्दर्य आ सौष्ठव सँ परिपूर्ण साहित्यकार मन बना लेलाह जे विवाह क' लेताह मुदा ओहि लड़की सँ कोनो तरहक कोनो सम्बन्ध नहि रखता। सैह भेल। विवाह भ'गेलनि। चतुर्थी धरि सासुर मे रहला। संपन्न सासुरक लोक पाहुनक स्वागत मे कोनो कमी नहि रखलक। उपर सँ बिधकरी अति चातुरि। नीत-नूतन बात कहनि। सृंगार, मनुहार, प्रेमक बात मे ओझराबए लगलथिन। दियासलाई आ काठी एक ठाम रहतैक त' आगि लगबे करतैक। सैह भेलैक। जाहि पत्नी सँ कहियो कोनो सम्बन्ध नहि रखबाक उदेश्य सँ विवाह केने छलाह ओकर प्रेम मे फँसि गेलाह। मन भले नहि मिलल होनि देह मिल गेलनि।15 दिन रहला। बहुत रंगक बात भेलनि। कतेक बेर केलि केला। 15 दिनक बाद घर आबि गेला।

घर वापस अएला पर पुनः अपन वैदुश्य आ सौन्दर्य पर दंभ भेलनि। भेलनि, आहि रे बाप, विवाह त' गलत परिवेश, गलत परिवार आ गलत लड़की सँ भ' गेल। अविकसित, बैकवर्ड सँ भ' गेल! आब की हो? नहि-नहि, एहेन लड़की संग जीवन कोना कटत? असंभव। महानगरक सभ्य समाज लग कोना रहब? मर्यादा आ इज्जत नीलाम भ' जाएत। फेर की उपाय? यैह जे त्यागि दी। परित्याग करी। परित्यक्ता बना दी। परित्यक्ता कोना बनत? अपमान सँ, शोषण सँ, दैहिक-मानशिक उत्पीड़न देला सँ। से केँ देत? हम स्वयम देब। ई निर्णय अन्तिम? एकदम अन्तिम। बिना एकर दोसर कोन उपाय?" यैह सब सोचैत भविष्यक महान साहित्यकार आ कलामा नारी उत्पीड़नक ठीका ल' लेलाह। एक दुखद, तर्कहीन, अनर्गल आ अमानवीय

घटनाक बीया बाउग़ भ' गेल छल। ओ अपन वीभत्स रूप लेल तैयार छल।एक विद्वान एक चांडाल बनि गेल छल।

साहित्यकार महोदय कँ सासुर सँ अएबाक हेतु बेर-बेर समाद अबनि। ई एहेन निष्ठुर जे जेबे ने करथि। सासुरक लोक हिनक प्लाट सँ अनजान। अंत मे ससुर महोदय स्वयम हिनकर दरबज्जा पर आबि गेल्थिन। आब की करताह? कोनो उपाय नहि बचलनि। लाचार भय सासुर गेला। खूब मान-दान भेलनि। नाना तरहक सचार लागल। खूब मन सँ भोजन केलाह। राति मे पत्नी एल्थिन। आबिते कामिनी मानिनी बनैत कहलथिन:

"जाऊ! कतेक निष्ठुर लोक छी अहाँ? नहिअएलहुँ आ ने चिट्ठियो भेजलहुँ? एहेन कतौं मनुख भेलैक अछि? हम रुसल छी अहाँ स।" से कहैत कनिया मुँह बिपरीत अवस्था मे करैत झुट्ठे सुतबाक भगल केलनि।

विद्वान साहित्यकार चुप रहला। गंभीर रहला। किछु नहि बजला। की बजितथि? मन त कोनो धराने अपन व्याहत धर्मपत्नी सँ मुक्तिक कामना आ ब्योंत मे बाझल छलनि।पत्नी दिस देखबो ने केलनि।

तुरते पत्नी कँ बुझा गेलनि जे किछु त' गडबड अछि। झट दनि विचार केलनि: "आखिर ई किछु प्रतिक्रिया कियैक नहि देला? हे भगबती! किछु अनिष्ट बुझना जा रहल अछि हमरा। कहीं कोनो निर्दय मनुखक संग त' हमर हाथ विधाता नहि लगा देलनि? की करी? ककरा पर मानिनी बनी हम? जे मनुहार करत से त' कोनो ध्याने-बात नहि द' रहल अछि। फेर की करी? अहिना सुति रही? से कोना हएत? भले बाबा बिद्यापति कहि गेला 'पुरुखक नहि बिस्वासे'। कोनो स्थिति मे पुरुख पर विश्वास नहि करी। फेर की करी? एहि ह्रदयहिन पुरुख कँ ह्रदय-वान पुरुख बनाबी। से कोना? एकरा अपन प्रेमक जाल मे गछानी।" यैह सब सोचैत बेचारी नव ब्याहल कनिया अपन जीवनक नैया कँ डूबए सँ बचेबाक उक्ति सोचय लगलीह। करबट अपन पति महोदय दिस बदलैत बजलनि: "की बात पाहुन! रुसल छी की? किछु गलती भ' गेल हमरा सँ की? अगर गलती भेल त' कहू। हम माफ़ी मांगि लैत छी"।

अतेक बात कनिया कहलथिन मुदा पाहुन पर कोनो प्रभाव नहि परलनि। गुम-सुम-गंभीर बनल रहलाह। कनिया कँ अशुभक अशंका भेलनि। हिनकर आँखि मे कनि बिकराल, बिकट स्वरुप देखली। कनि कसाई कनि निर्दयातक भाव लगलनि। कनि ज्ञानक व्यर्थ घमण्डक अनुभूति भेलनि।लेकिन दोसर कोन उपाय? पैघ जाति आ कुलक मर्यादा सँ छेकएल छी। दोसर विवाह त' आब सपनो मे नहि देखल जा सकैत अछि। तखन की करक चाही? किछु नहि अतबे जे येन-केन-प्रभावेन हिनका मना ली। से कोना मनाबी? प्रेम सँ आ अपन मनुहार सँ। देखैत छी, भगबती सफलता दैत छथि की नहि? अहि तरहक अंतर्द्वंद सँ जुझैत कनियाँ पाहूनकँ अपना छाती सँ जकरबाक यत्न शुरू केलनि। आहि रे बा! ई की? पाहुन त' एक क्षण मे बज्र उग्र भ' गेलाह।हाथ झकझोरि देलथिन। अपन बलक प्रदर्शन करैत कर्कश ध्वनि मे बजला: "खबरदार जे आई के बाद हमरा सँ कोनो तरहक सम्बन्ध रखलहुँ। हमरा अहाँ सँ कोनो तरहक सम्बन्ध नहि रखबाक अछि। हम आई सँ अहाँक शरीर नहि छुब। अहुँ अपन मर्यादा मे रहू। अगर से मर्यादा कँ तोरबाक चेष्टा करब त' हमरा सन खराप लोक नहि भेटत"।

कनिया आब पूर्ण साकांक्ष भ' गेल छलीह। भेलनि साहित्यकारक नाम पर राक्षस सँ विवाह भ' गेल। आब की करी? कनि दृढ़ भेलीह। कहलथिन: "देखू, हम अहाँक व्याहता छी। हमर सम्बन्ध मे हमर पिता अपनेक पिता सँ सब किछु स्पष्ट क' देने छलाह। अहेन समस्या छल त' नहि कहि दितहुँ? हम आब कत' जा सकैत छी? अहीं कहू? आ फेर विवाहक यात्रा मे त' अहाँ हमरा संग सब किछु कएल जे एक स्त्री-पुरुष करैत अछि?"

अहि बात सँ बेफ़िक्र मद मे चूर साहित्यकार अपन राग अलापैत रहला: "हमरा से सब किछु ने बुझल अछि। हमरा अहाँ सन जाहिल स्त्री संग कोनो सम्बन्ध नहि राखक अछि। अहाँक रस्ता अलग, हमर रस्ता अलग। नदीक दू स्वतन्त्र कछेड़। ककरो सँ ककरो मिलन संभव नहि अछि। ख़बरदार जे हमर देह मे सटबो केलहुँ।"

पत्नी पाछा कोना होइतथि? लागल रहली। किछु मनुहार, किछु क्रंदन, किछु नोरक धार चुएलनि। किछु अपन माता-पिताक विवशताक भान करेलनि। कनि गिदरभभकी सेहो देलथिन। मुदा साहित्यकार महोदय त' अडिग रहला। अपना कें लंठ-साहित्यकार मानैत छला। एहि पत्नी सँ कोनो सम्बन्ध नहि रखता से ब्रह्मवाक्य छलनि।

तथापि पत्नी हिम्मत करैत अर्ध वस्त्र मे एकबेर साहित्यकार महोदय कें अपन बाहुपाश मे लेबाक प्रयाश केली। एहि बेर क्रोध सँ बताह भेल साहित्यकार अपन पत्नी कें उपर प्रहार क' देलाह। बेचारी लाचार भेल मारि खाइत रहली। बंद घर मे विचित्र स्वर सुनि लड़कीक माए आ भाऊज जागि गेल्थिन। घर खोलबाक आदेश देलथिन। लड़की घर खोलैत माएकें गर लागि कानए लागली। कनैत रहली आ बजैत रहली: "सब अनर्थ भ' गेल। हमर कपार फुटि गेल। मनुखक बदला हैवानक संग भ' गेल।"

माए आ भाऊज पुछैत रह्ल्थिन: "की भेल बुच्ची?" मुदा हिनकर मुँह सँ बकारे ने निकलनि। कतेक काल धरि कनैत रहली। लोक सब बोसैत रह्लनि। उम्हर साहित्यकार महोदय काल-नाग आ यमक अवतार बनल क्रोध मे मातल घर मे क्रोधक ज्वाला मे धू-धू जरि रहल छला। हुनका सँ लोक पुछनि: "पाहुन! की भेलैक? किछु बकझक भेलनि की?" पाहुन पहिने त' चुप रहला। फेर कर्कश स्वर मे उत्तर देलाह: "हमरा की पुछैत छी? अपन बेटी के पुछू। ओ जे कहती हमहुँ सैह कहब।" बहुत देर धरि वातावरण शांत रहल।

जखन कनियाँ भरि इच्छे कानि अपन मनक दर्दबहा लेलथि त' कहलनि: "हिनका हमरा सँ कोनो सिनेह नहि छनि। ई माता-पिताकइज्जत हेतु विवाहक स्वांग केने छथि। हिनका हमरा सन सामान्य नहि आधुनिकाचाही जे हिनका सँग महानगर मे हाथ-मे-हाथ थामने स्वच्छन्द घुमि सकए। ई हमरासँ कोनो तरहक सम्बन्ध नहि राखय चाहैत छथि। उलटे हमरा सँ जतेक जल्दी होमुक्ति पाबै चाहैत छथि। वेदमंत्रक उच्चारण सँग जेपत्नी बनेलनि तकरा पालन करैत अपन अधिकारक भाव जगबैत हम किछुए क्षण पूर्वहिनका देह दिस जएबाक अनर्गल प्रयास कएल तकर परिणाम देखू।" ई कहैत अपन छातीकओ हिस्सा देखा देलथिन जतए आदरणीय साहित्यकार अपन घुसाक निर्दय प्रहार केनेछलाह। निलाह-स्याह ओहिना देखा रहल छलनि। एक क्षण मे साहित्यकार महोदयकअसली रूप बाहर आबि गेल छलनि। ओतय उपस्थित महिला सभक हृदय काँपि

गेलनि।अनर्थ भ' चुकल छल। एकर कतेक बिकट रुप भ' सकैत अछि एहि पर कियोक निश्चितनहि छली।

अंत मे कन्याक माए थोड़ेक गम्भीर होइत अपन जमाय लग नहुँ-नहुँ गेलिह। स्थिरे सँ कान लग फुसफुसा क' बाजय लगली:

"पाहुन!सब किछु ठीक ने? ई छौरी कोनो गलत बात त' नहि कहि देलकन्हि? चारि भाई मेअसगरि छैक ने, ताहिं कनि छिड़िया गेल छैक। ओना मनक बड़ शुद्ध छैक। जे रहल सेमुहँ पर कहि दैत छैक।"

साहित्यकार निराकार भेल सबबात सुनैत रहला। अंत मे सासु पुछलथिन: "अगर कोनो त्रुटि छनि त' बाजथि? हमसब हिनकर सब माँगक पूर्ति अपन हैसियत हिसाबे करक प्रयास करबनि।"

गहीर सांस लैत साहित्यकार ठाईं-पठाईं बजला:

"देखू! ई विवाह नहि चलत। हिनका सँग नहि हम खुश रहि सकैत छी आ ने यैह रहि सकैत छथि। हिनकर सोच आ हमर सोच मे कोनो साम्य नहि अछि"।

सब बात जेना एकहिं सांस मे साहित्यकार महोदय बाजि गेलाह।

सासुअपन मायक ममत्वक कारणे गुम सधने रहली। फेर बजनाई शुरू केलनि: "देखथुपाहुन! ई ब्राह्मणक बेटी छैक। एना कोना हेतनि? विवाह एक कें कहैत अछिसात-सात जन्मक सम्बन्ध छैक। उठथु आ दुनू मिल क' रहथु।"

बेटीदिस तकैत माए बजली: "सोना, एना नहि चलैत छैक जीवन। दुनू गोटे हिल-मिल रहू।सब चीज़ नीक रहत। जाउ घर।" ई कहैत माय बलपूर्वक बेटी कें पाहुन सङ्गे घरदिस ल' गेलिह। आब सब किछु सामान्य भ' चुकल छल। घर मे आगि आ घी केर समिधाएकत्रित छल। केवल होम करबाक मंत्र फुकक प्रयोजन छल। ई प्रयोजन कन्याक माएपूरा केलनि। अग्नि सुगंधित भ' धू-धू पजरए लागल। दू देह एक भ' गेल।साहित्यकार महोदय कें एहि व्याहता मे आधुनिका देखाय लगलनि। दुनू मस्त भ' गेलाह। ओहि दिन एक आर बात भेल। प्रेमक अग्नि ततेक प्रबल छलनि दुनूक जे ओहीराति आ क्षण नायिका कें गर्भ ठहरि गेलनि। विवाहक, अहि तरहें एक उद्देश्यपूरा भ' गेलनि।

सोझे सालद्विरागमन भ' गेलनि। जहिया सँ नायिका अपन सासुर अएलिह तहिया सँ साहित्यकारफेरो अपन उग्र रूप मे आबि गेलाह। मारि-पिट शुरू भेल। कखनो डंडा सँ त कखनोबेल्ट सँ। कहियो-कहियों आनो चीज़ सँ प्रहार करैत रहला। संगति साफे बन्द।पूर्ण विराम। यातना अबाध गति सँ चलैत रहलनि। एक साहित्यकार अपन कुकृत्य सँदोसर साहित्यकार लेल सामग्रीक ओरिओन करैत रहला। नारीक शोषण होइत

रहल।शोषिताक गर्भ मे शोषितक बीज पनपैत रहल। विनाशक क्रिया मे निर्माणकप्रक्रिया अपन स्वरूप पकरैत रहल।

कोनहुना अपन सासुरमे रहैत नायिका एक पुत्रीक जन्म देलीह। पति सँग स्थिति नर्क जकाँ भ' गेलनि।बहुत यत्न केलीह मुदा असफलता हाथ लगलनि। यातना सहैत-सहैत तन -मन जबाब द' देलकनि। सासुर सँ नैहर आबि गेलीह। केश चललैक।

अहिबीच साहित्यकार अपना सँ 18 वर्षक छोट लड़की सँ चुपे-चाप विवाह क' लेलाह।ककरो कानो ने लागय देलाह। डर छलनि नौकरी चलि जेतनि। नाम बदनाम भ' जेतनि।

बादमे विधिवत तलाक भ' गेलनि। आर जे केला से केलाह। एक नीक काज जरूर केलनि जेअपन जन्मल बेटीक विवाह अपन अरजल पाई सँ नीक जकाँ करा देलथिन।

हुनकपत्नी सेहो अपन जीवन अपने जकाँ जिबक कोशिश करैत छथि त' लोक हुनका नीक-अधलाहकहैत छनि। यैह थिक सामाजिक मर्यादा। यैह थिक महानता। साहित्यकार महान भेलछथि। नारी चेतना, साहित्य आ सृंगार केर बात करैत छथि। एक दू आधुनिक आतथाकथित विदुषि हुनकर सब कृत्य आ कुकृत्य बुझैतो हुनका हँ मे हँ मिलबैतछथि। वरिष्ठ साहित्यकार लोकनि क्षणिक लोभे हुनका सङ्गे घुमरैत रहैत छथि।हुनक यशक झंडा फहरबैत रहैत छथि।

हालहिंमे एक नवोदित साहित्यकार कें एहि तथाकथित महान साहित्यकारक पूर्व पत्नी जेआब तलाक शुदा आ परित्यक्ताक टैग सँ जानल जाइत छथि,भेटलथिन्ह। नवोदितसाहित्यकार हुनका लग गेलाह। अपन परिचय एक साहित्यकारक रूप मे देलनि। परित्यक्ताक दर्द साहित्यकारक प्रति घृणा बनि ज्वार-भटा जकाँ फुइट पड़लनि।अपन ब्लाउज खोलि एक-एक दागक प्रदर्शन करैत बजली: "कहीं एहेन साहित्यकार त' नहि छी अहुँ जे अपन पत्नी सँग जलाल जकाँ व्यवहार करैत छी।" जखन ज्वालाफुटले रहनि त' अनेक तरहक नीक अधलाह बात सेहो कहि देलथिन, जे कोनो नाजायज नहिरहैक।

बात एतहुँ कहाँसमाप्त होइत अछि। साहित्यकार अपन दोसर पत्नी कें सेहो यातना मे रखने रहैतछथि। मारैत-पीटैत छथि। आधुनिका सब सङ्गे घुमरैत छथि। खूब साहित्य लिखैतछथि, खूब भाषण करैत छथि। समाजक एक तबका एहि महापतितकें आइकॉन बना रखने अछि। हुनक प्रथम पत्नी कें परित्यक्ता आ कुलक्षणा कहैतअछि। एकरा की कही? ई बात पाठक पर छोड़ि दैत छी।

परित्यक्ताकलिखल आ ऐतिहासिक स्वरूपक की बात करी, अपन आँखि सँ अनेक स्वरूप देखने छी।कतौ परित्यक्ता सम्बन्धी रहलि छथि त' कतौ परित्यक्ता बनबै बला। कतौपरित्यक्ता त' कतौ दुर्दैवक मारलि परित्यक्ता।

एकउदाहरण विचित्र अछि जे समाजक मानशिकता कँ आईना देखबैत अछि। से की? ई कथाप्रारम्भ होइत अछि एक अति सामान्य परिवारक युवक सँ जे अपन माता-पिताक एसगरसंतान छला। B. Com करैत देरी दक्षिण मे कतौ चाय बागान मे डेप्युटी मैनेजर'कनौकरी लागि गेलनि।

हुनका गामक बगले कँ गामक एककन्यागत जिनका 4 लड़की मात्र छलनि, नीक पैसा दहेज दए अपन जेठ बेटी सँ विवाहकरा देलथिन। कन्यागत किछु नहि अपितु बहुत रास फुइस बाजल छला। लड़की पढ़लिनहिये जकाँ रहैक। साकांक्ष सेहो नहि, बल्कि कनि अकान जकाँ। देखबा सुनबा मेमुदा अपूर्व। रंग-विरंगक गहना, वस्त्र, प्रसाधन सँ सजलि। बर कानियाँ कँदेखैत दंग। चतुर्थी कोना बितलै से बुझबे नहि केलाह। चतुर्थी प्रात अपनेसङ्गे कोयंबटूर हनीमून लेल बिदा भेला। जखन ओतए गेलाह त' ज्ञात भेलनि जेलड़की साफे साकांक्ष नहि छैक। नित्यकर्म तक करबाक नीक सँ चेष्टा नहि छैक। आब कीहो? तेसरे दिन वापस आबि गेलाह। सासुर आबि सासु आ ससुर कँ सब खेरहाकहलथिन्ह। ससुर उत्तर देलथिन्ह: "अपने उदास नहि होउ पाहुन, अहाँक सासु सबबात बुझा देतीह।" ई कहैत ससुर दरबज्जा दिस चलि गेलाह।

सासुलग अबैत नहुँ-नहुँ कहलथिन्ह: "पाहुन! ई मन छोट नहि करथु। हम सब हिनकरविवाह अपन दोसर बेटी सँ करा देबनि। दोसर एकरा सँ 2 बरखक छोट अछि।सर्वगुणसम्पन्न छनि हिनकर सारि।

श्रीमानमैनेजर साहेबक चानी। दिने सँ सारि पाहुन लग आबि गेलिह। सब किछु नार्मल।बहिनोई सँग सब किछु करए लगलि जे एक पति-पत्नीक बीच बन्द घर मे अन्हार मेहोइत छैक। अहि क्रम मे 7 मास बीत गेल। 7 मास मे सोझे साल द्विरागमन भेलनि।द्विरागमन मे सारि कोना अबितथिन? उपाय नहि छलनि। ताहिं पत्नी एलथिन। गामअबिते देरी नव पुतोहुक असलियत सबकेँ लागि गेलैक। आब की हौक?

परिवारेमे किनको सरबेटी गरीब मुदा अतीव सुन्नरि। तुरत लड़कीक पिता विवाहक निवेदनभेज देलथिन। श्रीमान मैनेजर साहेब बिसरि गेलाह जे ओ सात मास धरि अपन सारिसँग गुलछर्रा उड़ेने छला। सब वचन बिसरि गेला। सब मर्यादा धो-पोछिक चाटिगेलाह। अपन दुखड़ा गबैत रहला। माए-पितियाइन सब अतबे कहथिन्ह: "धन कही एकराजे सात मास धरि एहि अकान आ बकलेल कानियाँ सँग कोना बितेलक! एकरा आब शीघ्रअहि जंजाल सँ मुक्ति भेटक चाही।"

अपना प्रति एहि तरहकसहानुभूति पाबि श्रीमान मैनेजर साहेब मने-मन गदगद छलाह। विवाह तय भ' गेलनि। प्रथम पत्नीक सब सामान, वस्त्र, गहना, द्रव्य-जात राखि राते-रातीमारि पीट क' सासु भगा देलथिन्ह। कानियाँ थोड़ेक निवेदन अवश्य केल्थिन जेहुनको रह' देल जानि। मुदा कँ सुनैत अछि?

आबश्रीमान मैनेजर साहेबक दोसर पत्नी हुनका ई आदेश, निर्देश द' देलथिन्ह : "जाहि दिन अहाँ पहिल पत्नी कँ अपन घर घुसा लेब ताहिये दिन हम माहुर खाआत्महत्या क' लेब।"

मैनेजर साहेब एकाएक एक परमपत्नीभक्त पति बनैत बजला: "राम-राम! अहाँ की बजैत छी? विवाह सँ आई धरि हमएकर शरीर नहि छूल। आब घर घुसेबाक कोन प्रयोजन?"

मैनेजरसाहेब कँ वंश वृक्ष दोसर पत्नीक संतान सँ होमय लगलनि। बेटी-बेटा-बेटी। सबहरेक छह मास पर गाम आबथि। गाम अबितहिं नहि जानि कोना प्रथम पत्नी जकराअड़ोस-पड़ौसी सब बियहुती कहैक बुझि जाइक। राति क' आबि जाइक। मुदा, भोजन त दूरमैनेजर साहेब केर माय पितियाइन सब समान छीन मारि-पिट क' भगा दैत छलथिन्ह।बेचारी रस्ताक भिखमंगी बनल अछि। मुदा कियोक मैनेजर साहेब कँ इहो नहि कहिसकलनि जे ओकरा अपना घर पर कम सँ कम अन्न-वस्त्र दियौक। आसरा दियौक। ऊपर सँ बाप-संबंधी सब सेहो ओहि अभगली परित्यक्ता कँ मारैत पीटैत छैक। जीवन नर्क बनल छैक।

एहिप्रकरणक जड़ि मे अगर चली त' एहि परित्यक्ता कँ परित्यक्ता बनेबै मे प्रथमदोख ओकर पिता कँ छनि। जखन हुनका बुझल छलनि जे हमर बेटी एहेन अछि त' विवाहकथिलेल करा देलथिन्ह? ओहि पैसा सँ ओकरा लेल कोनो रिहैबिलिटेशन सेन्टर अथवाकिछु आरो क' सकैत छला। से नहि केलनि। जखन जमाय बेटी कँ छोड़ि देलथिन्ह त' ओकरा जीवन लेल कोनो इंतज़ाम करक छलनि।

दोसर दोखमैनेजर साहेब कँ? अगर सारि सँ विवाह नहि करबाक छलनि त' संबंध कोन कारणेसात मास धरि रखला? पुनःश्च, अगर दोसर विवाह केलाह त'प्रथम पत्नीक सब किछुवापस कथिलेल नहि क' देलथिन्ह?

एहि प्रकरण मे दुनू पक्षक समाज सेहो ओहिना पातकी अछि।

अनुभवक कथा अनंत अछि। ककरा कही ककरा छोड़ी? कहब तखने बात फरिछायेत। बिना कहने कोना बुझबैक?

एक दृष्टान्त हाले कँ अछि। से की? एक व्यक्ति विवाह केलाह। विवाहक एक वर्षक बाद कतौं नौकरी लेल गेलाह। जे गेलाह से 3 वर्ष धरि एबे नहि केलाह। सब उपाय भेल। जगह-जगह लोक पहुचल। थाना-पुलिस मे रपट लिखा देल गेल। मुदा किछु ने भेल।अंत मे ओहि युवक कँ माता-पिता हुनक पत्नीक विवाह

ओहि युवक सँ छोट भाई सँ करा देलथिन। परिवार चलए लगलैक। स्त्री मानि लेलक जे हमर प्रथम पति आब एहि संसार मे नहि छथि, त देओर संग विवाह कर' मे कोनो हर्ज नहि। पहिल पति सँ एक लड़की रहैक। दोसर पति सँ एक बालक। सब किछु पटरी पर निक सँ चलय लगलैक। करीब 9 वर्षक बाद एकाएक ओहि महिलाक जीवन मे भूचाल आबि गेलैक। पहिल पति कहि नहि कोना कतए सँ वापस घर आबि गेलैक। अपन पत्नी लग गेल। बाद मे पता चललैक जे ओकर अनुपस्थिति मे ओकर छोट भाई सँ विवाह भ' गेल छैक पहिल पत्नी कैं। बेचारी महिला दू नाव मे कोना पैर रखत? बड़का समस्या। पहिल पति ओकरा पर अपन अधिकार जतबैक। दोसर पति कहैक जे हम त' सब चीज़ अवधारि क' विवाह केने रही।दुनू भाई मे द्वन्द चलैत रहलैक। अन्तिम निर्णय ई भेलैक जे महिलाक प्रथम पति दोसर कोनो लड़की सँ विवाह करथु। जखन से भ' गेलैक त' मामला सुलझि गेलैक।

मिथिला मे एहनो विधान रहल अछि जे जाति-मूलक नाम पर एक आदमी 20-25 टा विवाह क' लैत छलाह। एक दू छोडि अधिकांश पत्नी परित्यक्ताक जीवन जीबैत छली।परित्यक्ताक अर्थ केवल अन्न-वस्त्र-स्थानक तकलीफ अथवा सामाजिक मर्यादे नहि अपितु शारीरिक, मानशिक सुख स वंचित हएब सेहो भेल। जखन लाचार भेल अहि तरहक स्त्रिग्न किछु दोसर पुरुष दिस देखैत छथि त' समाज हुनका कुलटा, निर्लज्ज, अपवित्र, भ्रष्ट, दुश्चरित्र आ ने जानि की-की कहैत आबि रहल अछि? किनको डाईन त' किनको डाहि कहि टार्चर कैल जाइत छनि। समाज बौक बनल रहैत अछि।धनक इच्छाक पूर्ति भ' सकैत अछि, तनक इच्छाक पूर्ति कोना हएत?

खादी आ मिथिला/मधुबनी पेन्टिंग केर शुरुआत भेला सँ बहुत परित्यक्ता अपन आर्थिक मर्यादाक रक्षा करबा मे सफलं रहलि छथि। पेंटिंग मे पद्मश्री गंगा देवी, गोदावरी दत्ताक कथा सबके बूझल अछि। खादीक आगमन सँ कतेको परित्यक्ता अपन अन्न, वस्त्रक उपार्जन करबा मे सफल भेली। अपन सोच, अरमान, सपना, सृंगार सब किछु खादीक ताग मे देखनाई शुरू केलनि। कलात्मकता अपन पराकाष्टा पर पहुँच गेल। मिथिलाक सूती खादी देखैत-देखैत समस्त भारत मे अपन महिनी, कलाकारी आदि गुणक कारणे प्रसिद्द भ' गेल।

हम मानवशास्त्र, कला-इतिहास आ मानवाधिकारक छात्र रहल छी।आदिवासी आ ग्रामीण समाज मे काज करैत आबि रहल छी। आदिवासी समाज मेकोनो कारणे अगर पति-पत्नी मे नहि पट्लैक त' पति-पत्नी दुनू कैं ई स्वतंत्रता छैक जे अपन जीवनसाथी कैं छोडि दोसर ताकि लए। एहि सँ परित्यक्ता प्रथाएहि तरहे ओहि समाज मे प्रभावी नहि छैक जाहि तरहे अपना समाज मे।

एक बात आरो हमरा अचरज मे डालैत अछि। लोक जाहि मे स्त्रिग्न सेहो सम्मिलित छथि, सभ कियोक अहि तरहक विधानक परिचालन लेल पुरुख सँ अधिक दोष स्त्री कँ दैत छथि। जखन की सत्य ई अछि जे पितृसत्तात्मक समाज अपन जाल ऐना ने बिछेने अछि जाहि मे सामान्य कँ कँ पुछैत अछि आधुनिका आ पढलि महिला सेहो फंसि जाइत छथि। अंत मे अतबे कहब जे परित्यक्ता स्त्री समाजक समस्या नहि अछि। ई मानवक समस्या अछि। एहि पर गंभीर बनक जरूरत अछि। सबकँ एक संग आबि संगोर करैत अहि समस्याक निदान निकलबाक अछि। अहि अभिशाप कँ समाप्त करक अछि। से भेल तखने हम सब गर्व सँ कहि सकैत छी जे हम सब प्रगतिक पथ पर बढ़ि रहल छी।

२

नन्द विलास राय

लघुकथा

कठही साइकिल

"कतेक दिन ऐ पुरनका कठही साइकिलपर चढ़बह। कहह दुनियाँ केतए-सँ-केतए चलि गेल आ तूँ बीस-बाइस बर्खक ऐ पुरनका साइकिलपर चढ़ै छह!" -गेनालाल जियालालकँ कहलकैन।

जियालाल हँसैत बजला-

"हौ भाय, तोहर बेटा सभ जे कमाइ छह ने, तँए तोरा हरियरी सुझै छह।"

तैपर गेनालाल बजला-

"आ तोरा जे कोचिंग सेन्टर आ चटिया सभकँ टीशन पढ़ेलासँ आठ-दस हजारक महिनवारी आमदनी होइ छह से की करै छहक। कमतीमे एकटा सकेण्डो हेण्ड फटफटिया कीनि कऽ चढ़ह। हौ मरबह तँ किछ लऽ कऽ दुनियासँ नै जेबह। जेतबे सुख-मौज ऐ धरतीपर करबह ओतबे संग जेतह।"

जियालाल बजला-

"हौ भाय, अखन हमरा बड़ समस्या अछि तँए अखन हमरा अही साइकिलपर चढ़ह दएह।"

चाहक दोकानदारो दुनू संगीक गप सुनैत रहए ओ बाजल-

"मर्र! ऐ लोहाक साइकिलकँ कठही साइकिल किए कहै छिऐ?"

तैपर गेनालाल बजला-

ejournal 'विदेह' २५० म अंक १५ मई २०१८ (वर्ष ११ मास १२५ अंक २५०) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

"ऐ साइकिलमे पाइडिल देखै छिऐ, काठक छी आ ऐ साइकिलपर जखन चढ़बै तँ जहिना कठही बैलगाड़ीक धुरामे सोन-तेल नै रहलापर चलैकाल कों-काँए, पों-पाँएक अबाज निकलै छै तेनाहिये ऐ साइकिलसँ अबाज निकलै छइ।"

चाहक दोकनदार पुछलकैन-

"से अहाँ केना बुझलिऐ?"

गेनालाल जवाब देलखिन-

"एक दिन हम निर्मली बसेसँ गेल रही। एक बोरा नोन कीनि अही साइकिलपर राखि बस स्टैण्डपर गेल रही। बस स्टैण्डपर नोन रखि जखन साइकिल पहुँचाबए जियालालक कोचिंग सेन्टरपर गेलौं तँ बुझाएल जे ई लोहाक नहि, काठक साइकिल छी। तहियेसँ हम एकरा कठही साइकिल कहै छिऐ।"

जियालाल बजला-

"हौ भाय कनेको पलखैत नै भेटए जे साइकिलकेँ भंगठियो करा लेब। दू दिन भंगठी करैले मिस्त्री ओतए साइकिल छोड़ि देलिऐ मुदा साँझमे जखन साइकिल लाबए गेलौ तँ साइकिल ओहिनाक-ओहिना राखल।"

तैपर गेनालाल हँसैत कहलकैन-

"धुर्र बुड़ि, तोरा कपारमे सुख लिखले ने छौ। कमा-कमा पाइ बैंकमे जमा कर मुदा भोग तँ तोरा बेटाकेँ लिखल छौ।"

जियालाल हँसैत जवाब देलखिन-

"ठीके कहलीही भाय, हमरा भागमे सुख नै लिखल अछि।"

ई गप-सप्प गेनालाल आ जियालालक बीच भूतहा चौकपर चाहक दोकानमे होइत रहइ।

गेनालाल आ जियालाल हाइ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक संगी। गेनालालक घर झिटकी गाममे जखैन कि जियालालक घर नवटोली गाममे। दुनू गोरेक छठा किलाससँ एगारहम किलास धरि बनगामा हाइ स्कूलमे संगे पढ़लैथ। संगे मैट्रिक पास केलैन। मैट्रिक पास केला पछाइत दुनू गोरे निर्मली कौलेजमे इन्टरमे नाओं लिखौलैन। निर्मली कौलेजमे बी.ए. धरि दुनू गोरे संगे पढ़ला। गेनालाल पास कोर्सक विद्यार्थी छला जखैन कि जियालाल अंग्रेजी आनर्सक छात्र।

बी.ए. पास केला पछाइत गेनालाल नौकरीक लेल परियास करए लगला।मुदा तीन बर्ख धरि परियास केला बादो जखन नौकरी नहि भेलैन तँ खेती-गृहस्तीमे भीर गेला। ओ अपना बापक एकलौता बेटा। पाँच बिघा जोतसीम जमीनक मालिक। ऊपरसँ गाछ-कलम-बाँस-पोखैर सभ किछु। नौकरी नहियोँ भेलापर गुजर-

बसरमे कोनो दिक्कत नहि होइन। गेनालालकेँ दूटा बेटेटा। जे मैट्रिक केला पछाइत दिल्लीमे काज करै छैन आ दरमाहा भेटलापर अपन खर्चा राखि बापक बैंक-खातामे पठा दइ छैन। बेटा सबहक कमाइ आ खेतक उपजासँ गेनालाल आनदपूर्वक जिनगी बितबै छैथ। सुखक जिनगी बितबैक कारण ई जे परिवार छोट छैन। दुनू बेटा अखन अविवाहिते छैन जे दिल्ली खटै छैन। घरपर मात्र अपने आ पत्नी। खेतो सभ मनकूतपर लगौने छैथ। हँ, दूध खाइ वास्ते एकटा दोगला गाए जरूर पोसने छैथ।

गेनालाल अपना बेटा सभकेँ मैट्रिकसँ आगाँ ऐ दुआरे ने पढ़ौलखिन जे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नौकरी नै भेटलापर समाजमे जे दुरगैत होइए से देखैत छथिन। जखन कि कम्मो पढ़ल-लिखल लोक दिल्ली, मुम्बइ, कलकत्तामे प्राइवेटो नौकरी कऽ शानसँ अपन जिनगी बितबैत अछि। मुदा जियालालक सोच ऐसँ बिलकुल भिन्न छैन। हुनकर कहब ई जे जइ पढ़ल-लिखल बेकतीमे टाइलेन्ट रहत ओ विद्यार्थीके ट्यूशनो पढ़ा अपन जिनगी शानसँ चलौत। पटनामे एकसँ एक कोचिंग संस्था अछि जेकर आमदनी लाखोमे अछि।

जियालाल सीमान्त किसानक बेटा। हुनका बाबूजीकेँ मात्रअढ़ाइ बीघा खेत। जियालाल दू भाँइ। जेठ जियालाल अपने आ छोट पन्नालाल। पन्नालाल जखन मैट्रिकमे पढ़ैत रहैथ तखने हुनकर पिताजी परलोक चल गेला। मुदा पन्नालालकेँ पिताजीक स्वर्गवासक बादो हुनका पढ़ाइ-लिखाइमे कोनो दिक्कत नै भेलैन। जेठ भाय जियालाल ट्यूशन पढ़ा छोट भाएकेँ माने पन्नालालकेँ एम.ए. धरि पढ़ौलकैन। एम.ए. पास केलाक तीनियेँ मासक पेसतर पन्नालालक बहाली शिक्षा मित्रक पदपर भऽ गेलैन।शिक्षा मित्रमे बहाल भेलाक दू मासक भीतर पन्नालालक बिआह एकटा डीलरक बेटीसँ भेलैन।

जियालाल अंगेजी आनर्सक संग बी.ए. केला पछाइत नौकरीक लेल काफी परियास केलखिन मुदा सफलता नइ भेटलैन। जइ समैमे सरकार शिक्षा मित्रक बहाली केलक ओइ समैमे जियालालक उमेर चालीस पार कऽ गेल रहैन। तँए शिक्षा मित्रमे बहाली होइसँ वंचित रहि गेला।

जखन सरकार शिक्षा-मित्रकेँ मानदेय पनरह साएसँ बढ़ा कऽ चारि हजार कऽ देलकैन आ एगारह मासक नौकरीकेँ साठि बर्खक उमर धरि स्थायी कऽ देलकैन तँ पन्नालालक पत्नी अपना दुल्हाकेँ सिखा-पढ़ा परिवारमे भीन-भिनौज करा देलकैन।

जखैन जियालाल आ पन्नालालमे भीन-भिनौजीभऽ गेलैन तँ जियालालकेँ एक बिघा जोतसीम खेत आर घराड़ी आ कलम-गाछी मिला कऽ पाँच कट्ठा हिसा भेल रहैन। हुनकर पाँच गोरेक परिवार। जेठ दूटा बेटी तैपर सँ एकटा बेटा आ दू परानी अपने। एक बिघा जोतसीम खेतसँ जखन परिवारक गुजर-बसरमे कठिनाइ होमए लगलैन तँ जियालाल ट्यूशन पढ़ाबैपर बेसी जोर देलखिन। ओना तँ दस बर्ख पहिनहिसँ निर्मलीमे एकटा कोचिंग संस्थामे अंग्रेजी पढ़बैत रहैथ। कोंचिग आ ट्यूशनक कमाइसँ जियालाल अपन दुनू बेटीकेँ पढ़ा-लिखा कऽ बिआह कऽ देलखिन। दुनू बेटियो आ जमाइयो टी.इ.टी. पास कऽ शिक्षकमे बहाल छैन। एकटा बेटाकेँ नीक पढ़ाइ खातिर पटना बी.एन.कौलेजमे नाओं लिखौने छेलखिन। बेटो विवेक पढ़ैमे चन्सगर। ओ पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीमे एम.ए. कऽ प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे लागल छथिन।

आइ फेर गेनालालक भेँट भूतहा चौकपर चाहक दोकानपर जियालालसँ भऽ गेल। गेनालाल चाहक दोकानपर पहिनेसँ बैसल रहैथ। जखन जियालाल निर्मलीसँ टीशन पढ़ा भूतहा चौकपर एला तँ चाह पीबैले चाहक दोकानक आगूमे साइकिल ठाढ़ करिते रहैथ कि गेनालालक नजैर जियालालपर पड़लैन, ओ बजला-

"कह भाय, समाचार। आबो धरि वएह पुरनका साइकिलपर चढ़ै छेँ। रौ पूरा दुनियाँ सुधैर जेतै मुदा तूँ नहि सुधरबेँ। हे मरिहेँ ने तँ सभ किछ लाधि कऽ नेने जइहेँ। पचपन-छप्पनक उमेरमे ऐ कठही साइकिलपर चढ़ै छेँ। रौ तोरा बुझाएब आ दिल्ली पएरे जाएब बरबैर अछि। आ-आ चाह पीब ले।"

जियालाल हँसैत कहलकैन-

"तोहर जे बेटा कमा-कमा पाइ पठा दइ छौ ने तँए तोँ मोछमे घी लगबै छेँ।"

तैपर गेनालाल बजला-

"आब तँ तोरो बेटाक तँ पढ़ाइ खतम भऽ गेल छौ। तोँ तँ तेसरे साल कहने रहँ जे विवेक पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए.मे फस्ट क्लाससँ उतीर्ण भेल हेन।"

ई गप-सप्प होइते रहए कि एकटा स्कारपियो गाड़ी आबि चाह दोकानक बगलमे रूकल। ड्राइवर गाड़ीसँ निकैल बीचला गेट खोललक। एकटा युवक गाड़ीसँ निच्चाँ उतरल। ओ पैन्ट-कार्ट-टाइ लगौने रहए। जखने ओइ युवकक नजैर जियालालपर गेलैन ओ दुनू हाथे पएर छुबि हुनका गोर लगलकैन।

"बौआ विवेक! अच्छा काकाकेँ गोर लगहुन।" गेनालाल दिस इशारा करैत जियालाल बजला।

विवेक गेनालालोकेँ पएर छुबि गोर लगलकैन आ बजला-

"बाबूजी, हमर चौथे दिन ट्रेनिंग खतम भऽ गेल। परसू बीरपुर डी.एस.पी. पदपर योगदान केलौं हेन। काल्हि पटनामे मीटिंग छल। अखन पटनेसँ बीरपुर जा रहल छी। ऐ ठाम एलौं तँ मनमे भेल भऽ सकैए बाबूजी निर्मलीसँ घूमल हेता।"

गेनालालक बोलती बन्द। ओ कखनो जियालालकेँ देखैथ तँ कखनो विवेककेँ आ कखनो ओइ स्कारपियो गाड़ीकेँ।

जियालाल विवेकसँ पुछलखिन-

"माएसँ असिरबाद लेबए कहिया अबै छहक।"

तैपर विवेक कहलकैन-

“मनमे तँ रहए जे पटनासँ घुमतीमे अहाँ सभसँ आर्शीवाद लऽ लेब मुदा दरभंगेमे रही तँ बीरपुरक एस.डी.ओ. साहैब फोन केलैन। ओ कहलैन जेतेक जल्दी बीरपुर पहुँच सकी पहुँचू। तँए बीरपुर जल्दी पहुँचब जरूरी भऽ गेल। रबि दिन गाम आबि रहल छी।”

ई कहि ओ जियालाल आ गेनालालकेँ गोर लागि गाड़ीमे बसि कऽ चलि गेला।

गेनालाल बजला-

“भाय जियालाल, तोहर कठही साइकिलक मान रहि गेलौं। तोहर बेटा पढ़ि-लिख कऽ डी.एस.पी. भऽ गेलौ। वाह भाइ वाह!”

तैपर जियालाल बजला-

“भाय हमर बेटा कि तोहर बेटा नइ छियौ।”

ई सुनि गेनालाल, जियालालकेँ भरि पाँज कऽ पकैड़ छातीसँ लगा लेलखिन।

शब्दसंख्या : 1130

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

जगदीश प्रसाद मण्डलक तीनटा लघु कथा

1

पुरान साड़ी

जेठ मासक अमरस्साक नीन तँए सुति कऽ उठैमे कनी देरी भाइये गेल। ओना, नीन केतबो मोटाएल आकि भरियाएल किएक ने हुअए मुदा पत्नी उठा कऽ तोड़िये सकै छैथ। मुदा छैथ तँ सोलहन्नी पतिवरते, कखनौं सुखमे बाधा उपस्थित नहि करए चाहै छैथ। सुतबकेँ सुख बुझि अपने केतबो काल धरि सुतल रहब तैयो ओ उठेती नहि, जइसँ नीन सुरक्षित बँचल रहिये जाइए। तहिना खेबाकाल सेहो बिनु पुछनौं पत्नी बजलोरी थाड़ीमे तरूआ-तरकारी आ छलिगर दही आगूए-सँ फेकैत रहै छैथ, भलेँ मनमे एहनो आशा किए ने होनि जे थारीमे जँ बँचल रहत ओ अपने हिस्सा ने भेल जइसँ डेढ़िया-दोबर पबैक आशा पत्नीकेँ बनियेँ जाइ छैन। खाएर जे छैथ, मुदा जिनगी भरि संग तँ वएह रहती तँए दोसराक सिहन्तो केने कोनो लाभ नहियेँ अछि।

ओछाइनपर सँ उठि आँखि मीड़िते दलानसँ निच्चाँ भेलौं कि मिरचाइ-धनियाँ, हरदी-लसुन बेचैबला वेपारी मखन क अवाज कानमे आएल-

"धनियाँ..., मिरचाइ..., हरदी..., लसुन... लइ जाएब यै...?"

अवाजेसँ बुझि गेलौं मखन छी। मनमे भेल चनौरागंजसँ, माने चारि किलोमीटरसँ वेपारी ऐठाम पहुँच गेल आ अपने ओछाइनपर सँ उठि दलानक निच्चाँ भेलौं!मन लजा गेल। जइसँ वेपारीपर नजैर नहि अँटका धरती दिस गाड़ि लेलौं। मुदा वेपारी जेतेक रेहल अछि तइसँ बेसी खेहल सेहो अछिए। केना ओ अपन शिकार छोड़त। नजैर पड़िते टोकलक-

"भाय साहैब, एकटा समाचार भेटल किने?"

मखनक बात सुनि चौंकलौं। केहेन समाचार? गामक आकि अमेरिकाक? किएक तँ देखते छी जे दरभंगा रेडियो स्टेशन जखन सुतले रहैए तइसँ पहिनहि आन-आन देशक अकासवाणी सभ जागि-जागि अपन-अपन समाचारक हल्ला मचा दइए। फेर भेल जे जँ कहीं गाम-घरक समाचार हुअए तखन? मनमे अबिते दोहरौनी लाज जागि गेल। जागि ई गेल जे जँ गामेक समाचार हएत आकि टोले-पड़ोसक हएत तखन केना एहेन लोक लगमे मुँह उठाएब जे चारि किलोमीटरसँ आबि घर लग अपन कारोबार पसारने अछि आ अपने अखन ओछाइने छोड़लौं हेन! मुदा समाचारो तँ समाचार छी। जिनगियोक भऽ सकैए, जिनगी जीबैक लूरियोक भऽ सकैए। माने, जिनगी जीबैक कलो भेट सकैए आ जीवन-मृत्युक संघर्षोक दर्शन भऽ सकैए। तँए समाचारकेँ बुझब जरूरी अछिए। मुदा रच्छ रहल जे मखन बिनु पुछनहि अपने बजैत आगू बढ़ि गेल-

"सुभद्र भाइक माए चारि बजे भोरमे मरि गेलखिन।"

मखनक सुनौल समाचारकेँ दू टुकड़ी कऽ देखिऐ तँ एक टुकड़ी तँ साफ देखाए जे सुभद्र भाइक माए माने सुधनी काकी मरि गेली। मुदा दोसर टुकड़ीपर नजैर पड़िते बुझि पड़ए जे अमरस्साक चारि बजे भोर तँ सभसँ सुखद समय होइए, तखन केना काकी मरली? माने ई जे बारहो मास आ चौबीसो घन्टाक दिन-रातिमे जेठ मासक भोर सभसँ सुखद होइए, तइमे केना यमदूत आएल जे काकीक प्राणे लऽ कऽ उड़ि गेलैन! मुदा लगले मनमे उठि गेल जे अखन चाह-पानक समय अछि,मुइल काकीक जिगेसा करए जँ अखने जाएब आ एहेन समयमे चाहो-पान सुभद्रे भायपर लादि दिऐन से उचित नहि। कोनो कि सुभद्र भाय टोलेक छैथ जे कन्नो-खिजी सुनि लगले विदा हएब। आन टोलमे घर छैन, समाचार सुनैत-सुनैत ने सुनब, तइमे किछु समय तँ लगबे करत। तहूमे गाम-गाममे तेहेन लॉडस्पीकर-बाजा सभ परमानेन्ट लटका देल गेल अछि जे मोबाइलोमे गप-सप्प करब कठिन भऽ गेल अछि। तखन एहेन-एहेन समाचार की प्रभावित नहि हएत? हेबे करत। जहिना प्रदुषणकेँ दूर करैले एक दिस नमहर-नमहर योजनामे खर्च भऽ रहल अछि तहिना प्रदूषणकेँ बढ़बैयो-ले नहि भऽ रहल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे आन प्रदूषणसँ बड़ बेसी तँ देहमे हौहैठ-कलकैल हएत, देह चुलचुलाएत। मुदा ध्वनि प्रदूषण तँ लोकक मत्थे चाटि बताह बनाएत..!

दरबज्जापर सँ चोटे आँगन जा पत्नीकेँ कहलयैन-

"झब-दे चाह बनाउ। सुभद्र भाइक ऐठाम जाएब जरूरी भऽ गेल।"

ओना पत्नीकेँ सुभद्र भाइक समाचार भेट गेल छेलैन तँए नाकर-नुकर नहि केलीह। जाबे मुँह-कान धोलौं ताबे पत्नियोँ चाह बना लेलैन। कलपर सँ आबि चाह पीलौं। चाह पीला पछाइत पानपर नजैर पहुँचल। मुदा नजैर अँटकल नहि, उड़ि कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू ई बढ़ि गेल जे हरण-मरणमे पान नइ खेबा चाही। तहूमे सुभद्र भायसँ दियादीक सम्बन्ध सेहो अछि..!

पानक फसादमे मन तेना फँसि गेल जे सुभद्र भाइक ऐठाम जेबाक विचारे मनसँ उतैर गेल। मुदा चाह पीबैत-पीबैत किछुए काल बीतल कि सुधनी काकी आगूमे झमैक कऽ कुदि पड़ली। काकीक कुदब देख मनमे उठल- नबे बर्खक जिनगीक टपानमे कहियो सुधनी काकी अपन नवपनक तियाग नहि केलैन! समाजो आ परिवारोक संग काकीक सम्बन्ध सभ दिन एकरंगोहे बनल रहलैन। ओना, कहियो काल सम्बन्धमे घटी-बढ़ी सेहो होइत रहलैन मुदा अपना मने काकी जेहने शुरूमे छेली तेहने काल्हियो धरि रहबे केलीह। तहूमे राति नअ बजे तक एकेठाम बैस काकी संगे घर-परिवारक गप-सप्प करबे केलौं अछि, सुभद्रो भाय छला..!

सुधनी काकीपर सँ मन सुभद्र भायपर पहुँच गेल। जखने सुभद्र भाय मन पड़ला कि जिगेसा करब सेहो मन पड़ल। चाह पीब नेने छेलौं मुदा पान पछुआएल छल। पानपर नजैर पड़िते मनमे मटाउ हुअ लगल जे पान खा कऽ जाइ आकि बिनु पान खेने? अगदिगमे पड़ि गेलौं। मनमे उठल- जखनसँ ककीक मृत्युक समाचार सुनलौं तखनसँ आँखियो कहाँ अपना मने नोर बहौलक आ मुहोँ कहाँ कानल? मुदा मनमे ईहो उठल- कानत किए? सुधनी काकी सन-सन धरमी जँ गाम पीछु पाँचो-सातटा रहत तँ ओ अपन विचार कर्मसँ बिचड़ैत कर्मकार जकाँ कर्मी-धर्मी धार बहैबते रहत। भलेँ इलाहाबादक त्रिवेणी घाटपर वृन्दावनसँ बहैत आएल यमुना धार किए ने पतराइत-पतराइत पतरखेप खेपैत हुअए, मुदा धारक धारा तँ मानल जेबे ने करत किने? ओना, देखनिहारो आ ओइमे डुबकी लगा नहेनिहारो मानए वा नहि मानए...।

मन आगू बढ़ल। आगू बढ़ैत मनमे फुड़फुड़ा कऽ एकटा विचार खसल। विचार ई खसल जे एक तँ पान, तैपर ओकर पातकेँ अशुद्ध केना बुझल जाएत..?

'शुद्ध' 'अशुद्ध'क बीच मन घुरियाए लगल। फेर भेल जे भरिसक मरल लोकक ने तँ बरस-गाँठ मनबै दुआरे अशुद्ध भेल? मुदा अखन से तँ नहि, अखन तँ सुधनी काकीक जिगेसा करए जा रहल छी..! तैबीच काकी अपन डोर[1]मे बान्हि विचार देली-

'बेटा, जखन तोरे सभले जिनगी गलेलौं तखन तोरा मुँह पान नहि! हँसैत खाइत खेलाइत आबह। आब कि हमरा कोनो अगुताइ अछि। जखन मन हुअ तखन जरबिहह आकि केतौ माइटिक तरमे गाड़ि दिहह।'

सुधनी काकीक विचार मनमे जगिते नजैर फुन-फुना उठल। फुनफुनाइत नजैर पानपर उतरल। अन्दाजए लगलौं जे जेतेक कालमे घुमि कऽ घरपर आएब तेतेक कालक हिसाब जोड़ि पान लऽ ली। पाँच खिल्ली पानक पात बिछेलौं। पान तँ बिछा देलिऐ मुदा चुनक कोही हाथमे लइते मन पनपनाए लगल। मुदा तैबीच सुधनी काकी फेर घुमि कऽ आबि कहली-

"चुनक कोही-तोही फेकैक काज नइ छह! जाबे तोरा सबहक बीच छेलौं पान-तमाकुल खेलौं। ओ भोग-पारस आब हमर थोड़े रहल, तँए तूँ हमरा-ले कोही नइ फेकिहह। चुनक कोहिये फेक देबहक तखन आगू पान केना खेबह?"

सुधनी काकीक विचारमे तेना ने बिचड़ए लगलौं जे पाँचोटा बिछौल पातमे कोनमे चुन कम पड़ल आ कोनमे बेसी से ठेकाने ने रहल। तहिना खएरो बेरमे सएह भेल। मुदा जे भेल से भेल, कोनो कि संगीतक उत्सवमे जाएब अछि जे चुन मुँह काटत आकि जर्दा हुचकी उठौत तँ...। हाँइ-हाँइ कऽ एक खिल्ली पान खा बाँकी चारू खिल्लीकेँ समेट प्लाष्टिकमे लटपटा गमछाक खूटमे बान्हि विदा भेलौं। जेठ मास छीहे तँए गंजी-कुरताक जरूरते की। तहूमे ओहन लोकक कृत्यमे जा रहल छी जे हँसैत-हँसबैत चारि पीढ़ी धरि नब्बे बर्खक उम्र गुजारलैन..!

दरबज्जापर सँ हेट होइत गामक रस्तापर जखन पएर पड़ल कि अनायास पैरक गति तेज हुअ लगल, मुदा जहिना पैरक गति तेज भेल तहिना मन लजा उठल,लाज हुअ लगल। जइ सुभद्र भायसँ एतेक लगीची सम्बन्ध अछि, तिनकर माए चारि बजे भोरेमे मुइली आ जिगेसा करए आठ बजे भिनसरमे जा रहल छी! सुभद्र भाइक नजरिक सोझ पड़ब तँ की कहता! मुहेँ बाजैथ वा नहि मुदा मने तँ जरूर मनमनेबे करता किने जे 'वाह रे बेर परक खलीफा, बेरेपर दिशा-मैदान सभटा उतरए लगै छैन..!'

मुदा मन जागल, जगिते विचार देलक-

"जहिना स्कूल, कौलेज आकि कोनो कार्यालयमे कर्मचारी एगारह बजेसँ ड्यूटी करए जाइ छैथ, परिवारिक लोक रहने जँ कोनो कारणे पाँच मिनट पहिने नहि पहुँच पेने अपन उपस्थिति ऑफिसमे नहि दर्ज कऽ सकला आ रस्ते-रस्ते आबि अपन काजमे जुटि गेला, पछाइत जँ ओ अपन उपस्थिति दर्ज करता, ओकरा की मानल जाए?"

विचार जगिते अपनो गर अँटल। गर ई अँटल जे चारि बजे भोरमे काकी मुइली, अखन आठ बजैए, आँगनसँ असमसान तक भरि दिनक काज भेल, तैठाम जँ नित्य-निवृत्तिमे कनी-मनी आगू-पाछू भेल तँ ओकरा काजेसँ ने पुरौल जाएत। सुभद्र भाय ओहेन लोक थोड़े छैथ जे काकी लग बैस सोझे कैनते हेता। हुनको नजैर कहिते हेतैन ने जे के केहेन लोक अछि। तँए अनेरे मनमे शंको करब नीक नहियेँ छी। फेर भेल जखन सुधनी काकीक अन्तिम विदाइ दइले जाइये रहलौं अछि आ जँ हमरो बहन्ने सुधनी काकी दू-चारि आँगनमे बैस किछुकाल गुजारि लेती, ईहो कम थोड़े भेल?

काजक लोक बनिते मनमे भेल जे एक मुट्ठी मूज किए ने कर्त्ताक डोराडोरि-ले नेने चली? सएह केलौं, भाय जेकर डोराडोरि जेतेक सक्कत रहत ओकरेमे ने ओतेक सक्कतपन रहत।

हाथमे मूज नेने जखन सुभद्र भाइक घरपर पहुँचलौं कि समाजक मजमा देख अपने हेरा गेलौं। हेरा ई गेलौं जे असगरूआ सुभद्र भाय एतेक लोककेँ नौत-हकार केना दऽ एलखिन? छोट भाए जे छैन ओ तँ सुधनी काकीक कोड़ैला बेटा भेलखिन, वेचाराक छठिहारक छाती छुटि रहलै हेन, तँए ओकरा कानैसँ मनाहियो तँ सुभद्र भाय नहियेँ कऽ सकै छैथ। तहूमे जेठ रहू कि छोट, माए तँ दुनू भाँइक मुइली हेन, अपन-अपन हिस्सा तँ सभकेँ कानबो तँ हेबे करतैन। सुभद्र भाय अपनो तहूमे बरदाएल हेता। तैसंग माए माइये छथिन। अनका जकाँ सुभद्र भाय थोड़े छैथ जे आँखिक सोझमे माइक शरीरकेँ आगिमे बिसरजन नहि करैथ। भाय! दुनियाँ बड़ीटा छै, अपन-अपन आँट-पेट देख ने अपन आँट-पेट बनाएब? गामसँ अहाँ काज करए बाहर गेलौं। काज केला पछाइत जखन बैसारी भेल, बुढ़ भेलौं तखन बाप-पुरखा मोन पड़ला, गाम मोन पड़ल! खाली मरैले गाम

आएब तँ जरौत के सेहो ने विचारि लिअ पड़त जे जँ हम केकरो माए-बापकेँ नहि जरौने छी तँ अपन माए-बापकेँ जरबए के औत? तँए मरैबेर जँ घीच्चम-तीड़ा लहासक हएत तइसँ नीक नहियेँ ने हएत!

माए मुइने असगरे सुभद्र भायपर बिपैतक बोझ खसिये पड़लैन। असगरे कनता कि बजारसँ कपड़ा आनए जेता आकि कान्हपर उठा माएकेँ असमसान लऽ जेथिन आकि अहरी-अछिया खुनता..?

मुदा, जेना गामक लोक ई बुझैत होथि तहिना एकाएकी सभ आबए लगला। मुदा बुझैक पाछू किछु कारणो तँ जरूर हेबे करत। ओना, समाजेक मनचोभिया नाचबला सभ सेहो अपन नाच दरबज्जापर ठाढ़ केने छल। रंग-रंगक नाच-गानसँ सुभद्र भाइक दरबज्जा गनगनाइत रहैन। मनमे भेल जे सुभद्र भाय तँ काकीकेँ ओगरने आँगनमे हेता तँए काजक पछातिये अपन उपस्थिति दर्ज कराएब। चोटगर नाच रहबे करै, बीचमे जा कऽ बैसलौं। चारूकातक लोक जे नचितो छला आ गबितो छला, ओ अपना मने खूब चोटियेबो केलैन आ चोटो खेलैन। तहिना जे गरियबै छला ओ गारियो तँ सुनिते रहैथ। सुधनी काकीक ने विदाइ समारोह छिऐन तँए समाजक लोक सभ अपन-अपन भागीदारी दर्ज तँ करबे करता किने...।

उठि कऽ कनियेँ आगू बढ़लौं कि दोसर ठाम निर्गुण सम्प्रदायक प्रवचन चलैत देखलौं। दूटा बबाजी अपनामे खट-समाद करैत रहैथ। एकक कहब रहैन-

"अपनामे लागि जाउ।"

आ दोसरक कहब रहैन-

"राम धुइनमे लागि जाउ।"

दुनूक खट-समादसँ परहेज करैत कतवाहि देने निकैल थोड़ेक आगू बढ़लौं तँ ओतए देखलिऐ जे कियो बाँस अनलक, कियो बाँस फाड़ैए, कियो खड़ौआ जौड़ बाँटैए, कियो कुरहैर-टेंगारी लऽ लकड़ीक ओरियानमे लागल अछि आ कियो बाँसक फट्ठाकेँ बिछा मचान बनबैक सुरसार कऽ रहल अछि जैपर सुधनी काकीकेँ सुता असमसान घाट पहुँचौल जाएत। जेना बिजली चालित कोनो मशीन गनगनाइत चलैत रहैए तहिना समाजक बीचक सौम्यपनसँ सुधनी काकीक मृत्युक पछातिक प्रक्रिया चलि रहल छल..!

सभ काजकेँ नीक जकाँ संचालित होइत देख मनमे भेल जे सुभद्र भायकेँ अपन आँखिक देखल सभ बात सुनाइयो देबैन आ मुइल माए लग बैसल हुनका सन बेटाक रंगो-रूप देख लेब। आँगन गेलौं। ओना, सुधनी काकीक मुँह माछी दुआरे झाँपल रहैन मुदा जिज्ञासुकेँ पहुँचते सुभद्र भाइक बहिन मुँह उघाइर कऽ दर्शन करा दैत आ पुन: ओहिना झाँपि दैन। काकीक दर्शन केला पछाइत जखन सुभद्र भायपर नजैर पहुँचल कि हुनका हँसैत देखलयैन। सुभद्र भायकेँ हँसैत देख अकबका गेलौं। कहाँसँ सुभद्र भाय दुनू परानी एकठाम बैस हबो-ढकार भऽ कनितैथ, तँ देखै छिऐन मकैक लाबा जकाँ मुँहक दाँत देखा-देखा हँसि रहला अछि! फेर मनमे भेल जे जहिना राजाक मंत्री मुँह-मिलानी करैत मिलल मुहेँ वातावरणकेँ अनुकूल बनबैत तहिना सुभद्र भाय बना रहला अछि। हुनकर हँसीकेँ हँसोइथ-हँसोइथ अपनो मुँहमे लिअ लगलौं जे ओहने रूप अपनो बनि गेलापर अन्तिम संस्कारक विचार करब।

जहिना नाटकक मंचपर जाइसँ पहिने नटुआ अपन रूप-रंग बदैल लइए तहिना अपनो रंग-रूप बदलैत सुभद्र भाय लग पहुँच हुनका पजरा दबा कऽ बैसलौं। बैसला पछाइत मनमे उठल जे केतए-सँ गप

उठाबी? सुभद्र भाय तँ हँसि रहला अछि, तँए अखन काजक गप उठाएब बुड़िबकी हएत। विपरीत परिस्थिति अछि,मृत माइक आगू बेटा हँसैत अछि..! मने-मन लाख कछमछेलौं मुदा बजैक कोनो गर नइ लागल। थोड़ेकालक पछाइत एकटा गर लागल। गर ई लागल जे जहिना विद्वतजन दोसरक बात बेसी सुनै छैथ आ ओकरा अपन मनक मथानीमे मक्खन जकाँ मोहि घी बना उत्तर देबकेँ नीक बुझै छैथ, तहिना सोचलौं। तहूमे एकटा आरो गर सुतरल जे अखन काकीक जिज्ञासा ने कऽ रहल छिऐन, तँए थोड़ेकाल आँखि-मुँह बन्न कऽ सुमिरन नहि करबैन सेहो केहेन हएत। तइ बिच्चेमे सुभद्र भाय बजला-

"गौरी, अपना आँखिये हम कहियो माएकेँ नइ देखलयैन जे नव साड़ीकेँ देहमे लगौने हेती। अभावमे नहि, बेटी-पुतोहुक विचारमे।"

सुभद्र भाइक बात सुनि अकबका गेलौं। किछु फुरबे ने कएल जे की बाजी? मुदा मन कहलक- बाजि नइ सकै छी, मुदा पुछि तँ सकिते छी। पुछलयैन-

"से की भाय साहैब?"

सुभद्र भाय बजला-

"दूटा पुतोहु छैन जे दुनू अखन मुहेँ लग बैसलो छैन्हे, जहिया कहियो माएकेँ नव साड़ी कोनो कुटुम-परिवार देने हेतैन वा अपनो बजारसँ कीनि आनि देने हेबैन, तँ ओ साड़ी माए ओतबे काल नवमे पहिरै छेली जेतेक काल आन गामसँ अपना गाम अबैमे लगैत रहैन। भलेँ पुतोहुक देहक साड़ी पनरहे दिनक किए ने पहिरल हुअए, मुदा तेकरासँ ओ बदैल अपन नव साड़ी पुतोहुकेँ दऽ दइ छेली।"

सुभद्र भाइक विचार पहिने तँ सहरगंजा जकाँ बुझि पड़ल मुदा पछाइत बुझलौं जे सचमुच सुधनी काकी तियागक प्रतिमूर्ति छेली। जे देहक वस्त्र फेक सकैए ओ पेटक अन्न नहि फेक सकैए!

अपन मन भकरार भऽ कऽ फुला गेल। बजलौं-

"भाय साहैब! मासेक धक हएत, बाध दिससँ काकी अबैत रहैथ, रस्ता कातक लतामक गाछ लगसँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे कोनो टोल दिससँ आबि रहली अछि। फरिक्केसँ काकीकेँ कहलयैन-

"काकी, गोड़ लगै छी!"

झटकल अबिते रहैथ, असीरवाद दैत-दैत ओहो लतामक गाछ लग पहुँच पुछलैन-

"अखने सुति कऽ उठलह हेन?"

ओना, काकी असथिरसँ बजली मुदा बुझि पड़ल जे जँ कहीं अपना उकैतिये कहि दैथ जे 'तोरे सन-सन जुआन-जहान हिमालय पहाड़पर चढ़त!' मुदा से काकी किछु ने बजली। अपन जान बँचैत देख हमहीं पुछलयैन-

"काकी, अनका पुतोहु जकाँ ने ते अहूँक पुतोहु सभ ताल-मात्रा देखबै छैथ?"

जेना सभ दिन बरी बनौनिहारि बरीवाहिनीकेँ ठोरेपर बरी पकैए तहिना काकी बजली-

"पुतोहु जे ताल-मात्रा देखौती से कि कोनो हम बिनु परिछौने आँगन अनने छी।"

अदहा-छिदहा बात काकीक बुझबो केलौं आ अदहा-छिदहा नहियोँ बुझलौं। पुछलयैन-

"से केना काकी?"

बच्चा जकाँ पढ़बैत काकी कहलैन-

"परिछन भेल, लूरिक नाप-जोख।"

काकीक बात फेर मनमे लटपटाएले रहल। अपन आँखि बिआह-दुरागमन होइकालक परिछन देखने छल। जइमे दसटा स्त्रीगणकेँ गीत गबैत, फोटो खिचबैत देखने छल, तँए परिछनकेँ ओतबे बुझैत रही। बजलौं-

"से केना काकी?"

गम्भीर होइत कहलैन-

"जखने जेठकी कनियाँ डेढ़िया टपल कि आने स्त्रीगण जकाँ फुसफुसा कऽ पुछलिऐ- 'कनियाँ, भत-उसना बनौल होइए? बिना किछु उत्तर देने पुतोहु चुपेचाप आँखि मिला नजैर निच्चाँ कऽ लेली। अपन परिवार तँ ओहन ऐछे जइमे समए-कुसमए भत-उसना होइते अछि। बुझि गेलौं। बड़ बेसी तँ एतबे ने कहि सकै छेलिऐन जे बकलेल माए-बाप बकलेले बना पठौलक। मुदा तइसँ की होएत।"

तैबीच जेठकी पुतोहु माने सुभद्र भाइक पत्नी कबुल करैत बजली-

"सोलहन्नी सत् कहने छेली!"

जेठकी पुतोहुकेँ कबुल करिते पुछलयैन-

"आ छोटकी पुतोहुकेँ केना परिछन केलिऐन?"

मुस्की दैत बजली-

"डेढ़ियापर ढेर स्त्रीगण सभ कुटिचाल करैत रहए, तैबीच मे जा असथिरसँ पुछलयैन- 'कनियाँ, जइ घर एलौं हेन तइमे अल्लूक संग ओलोक तरकारी चलैए, से ओल उखाड़ल होइए किने?"

ओना बजली गीतक लयमे मुदा ओल उखाड़ब ओतेक असान तँ नहियेँ अछि। कारण, एक तँ माइटिक तरक तरकारी छी ओल, तैपर गाछसँ कन्द धरि कब-कबाह सेहो होइते अछि।

पुछलयैन-

"ओ की कहलैन?"

बजली-

"ओहो मुड़ी गाड़ि लेली..!"

अपना बेटीकेँ पालैक लूरि जइ माएकेँ रहत ओ आनोक बेटीकेँ तँ पालिये सकैए! तखन एते विषमता किए?"

तैबीच दरबज्जापर हल्ला भेल-

"आब ऐठाम देरी नहि करू, असमसानोक रस्ता नमहर अछि।"

शब्द संख्या : 2553, तिथि : 24 अक्टुबर 2017

2

गाम बिसैर गेल

पैछला रबिकेँ गौरीकान्त गाम आएल। एलाक दसे मिनटक पछाइत भाँज लगि गेल जे बेटाक संग गौरीकान्त अमेरिकासँ दिल्ली आ दिल्लीसँ पटना हवाइ जहाजसँ उतैर रिजर्व गाड़ी पटनासँ केने गाम पहुँचल। गौरीकान्तक घराड़ी तँ बँचल छै मुदा ओ मराड़ी बनि गेल अछि। ने पुरना इनारक पानि चालू आ ने घरे-दुआर एकोटा ठाढ़। इनारक ऊपरका लहरा सभ तेना खसि पड़ल जे पानिसँ निच्चाँ जमीन पकैड़ लेलक। बिनु नौतल जहिना बर, पीपर आ पाखैर चलि अबैए तहिना भाँगो-धथुर नइ औत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, मुदा से रच्छ रहल जे गौरीकान्तक बेटा पानिक दसटा बोतल संगे नेने आएल छेलइ। बोन-झाड़ भेल घराड़ी गौरीकान्तक। भाय मिथिलाक ने माटि छी, बिनु केनौं-धेनौं किछु-ने-किछु होइते अछि। कोनो कि राजस्थान आकि गुजरातक थोड़े छी जे बलुआएल रहने किछु जनमबे ने करत।

चारि बजे बेरूपहरमे गौरीकान्त गाम पहुँचल छल। बेटाकेँ पहिल भेँट गामक रहइ, ओना जन्म अखुनका झाड़खण्डेमे भेल छेलै, जइसँ दू-तीन खेप बच्चामे गाम आएल छल, मुदा ओ पाँच बर्खक अवस्थासँ पहिनहि। गाम अबिते गौरीकान्त जखन हिया कऽ गाम दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे जहिना गामक भूगोल बदैल गेल अछि, भरिसक तहिना लोकक गणितो तँ बदलिये गेल अछि! ओना, अपन इतिहास की अछि से तँ अपने जानब। मुदा लाख मनक बोझ मनपर पड़िते गौरीकान्तक मन अखनो ओइ विचारसँ सक्कत ऐछे जे विचारि आएल छल- जिनगीक शेष भाग समाजमे बिता समाजक हाथे संस्कार लेब।

गौरीकान्त हमर लंगोटिया संगी छी, जहिना गाममे एकठाम घर तहिना एक उमेरक सेहो ऐछे आ संगे-संग केजरीवाल हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पासो केने छी। गामक हम दुइये गोरे एक किलासक संगी रही। गौरीकान्त हमरासँ नीक रिजल्टो आनए आ पढ़ैयोमे तेज रहए, तँए ओ साईंस रखने छल आ हम कनी दब माने भुसकौल रही तँए आर्ट रखने छेलौं। तहूमे ओहेन विषय सभ, जेकरा चूड़ा-दही-चीनीक भोज बुझि सभ मैथिल बैस-बैस खाइत रहल। ओना, हाइ स्कूलमे एकटा बात ईहो छल जे पढ़ाइक क्रममे विषयवार घेरा-घेरी सेहो छल आ से किछु जानियोँ कऽ छल आ किछु अनजानोमे। माने ई जे सम्पन्न हाइ स्कूल रहितो झंझारपुरमे जहिना वायोलॉजीक पढ़ाइ नइ छल तहिना तमुरिया हाइ स्कूलमे कॉमर्सक पढ़ाइ नइ छल। हँ! जे नव-धव विद्यालय छल, अर्थक अभावमे जे शिक्षकक जोग नइ बना सकल छल, ओकर तँ बाते भिन्न भेल। खाएर जे भेल, मुदा झंझारपुर जहिना डॉक्टरकेँ पैदा करैमे नपुंशक रहल तहिना तमुरियो वेपारीकेँ पैदा करैमे नपुंशके रहल।

अमेरिकाक माटि-पानिमे रमल गौरीकान्त अपन रहैक अपना जनैत बेवस्था केनहि आएल छल। एते तँ समय आगू बढ़िये गेल अछि जे एकटा वैगमे पाँच हाथक रहैक घरसँ लऽ कऽ कुर्सी-टेबुल आ कोंच-पलंग तक आनि हवा भरि बनाइये सकै छी।

तीन दिनक रूटिंगमे सुनील आएल अछि जइमे माए-बापकेँ माने दुनू परानी गौरीकान्तकेँ रहैक असथाय बेवस्था करैत, चारिम दिन अमेरिका विदा भऽ जाएत। ओना, गाम पहुँचैमे गौरीकान्तकेँ सीमाकातमे पुछए पड़ल छल। किएक तँ गामक मुँह-कान जहिना नहर-सड़क बनौलक तहिना उजाड़बो तँ करबे केलक। तँए गाम देख गौरीकान्त भकचकाएल जरूर, मुदा अपना धराड़ीक कोणपर जे तहियेसँ ताड़क गाछ छल ओ छेलैहे, जेकरा ठेकना गौरीकान्त अपन घराड़ी चीन्हि पएर रोपलक। गाड़ी-सवारीक झमारल तीनू गोरे दुनू परानी गौरीकान्त आ सुनील रहबे करए, तँए सुतै-बैसैक बेवस्था अबिते कऽ लेलक। पर-पैखाना तँ धड़फड़मे नहि बनौल जा सकैए, आ ने तेकर कोनो तेहेन हलतलबीए बुझि पड़लै, किएक तँ सौंसे घराड़ी बोन-झाड़ लगले अछि। खाइ-पीबैक सेहो बेसी तरद्दुत करैक जरूरते नहि। आठ दिनक खेनाइक पैकेटे बनौल अनने अछि।

दोसर दिन भोरमे चाह-ताह पीला पछाति तीनू गोरे सुतै-बैसैक वस्तु छोड़ि, बाँकी सभ किछुकेँ समेट पीठपर लादि गामक अपन खेत-पथार टोहियाबए विदा भेल। दूटा खेत पुरना सड़कक कातमे जे रहै ओ लगले भेट गेलै मुदा तीनटा जे बाधमे छेलै ओइ बाधेमे पानि पसरल देख घुमि कऽ चलि आएल। अबिते नहाइक इच्छा तीनू गोरेकेँ भेल, पियास तँ बोतलक पानिसँ ससाइर लेलक मुदा नहाइक तृष्णाकेँ तँ पोखैर, इनार आकि चापाकलेसँ ससाइर सकैए। ओना, एक्के घन्टामे खेत घुमि कऽ माने खेत देख कऽ तीनू गोरे डेरापर डन्टा नेने आबि चुकल छल। तैबीच एकटा संजोग बनल। संजोग ई बनल जे अही गामक एक गोरे, जेकर उमेर करीब पैंतालीस बर्खक अछि, ओ अमेरिकासँ आएल दोसर संगी पौलक, तँए बिनु बजौले गौरीकान्तक ऐठाम पहुँच गेल। ओकर नाओं छिऐ- ठकनलाल।

जिनगीक सोल्हम बर्खमे ठकनलाल गामसँ बम्बै नोकरी करए गेल, शुरूमे एकटा कारखानामे लेबरक श्रेणीमे काज करए लगल। मुदा ओ बेसी दिन नहि केलक, किछुए दिनक पछाइत लेबरक ठीकेदारी करए लगल। माने गाम-घरसँ आएल छुट्टा श्रमीक सभ जे भोरू-पहरमे चौक-चौराहापर मौजूद रहैए आ उट्ठा काज गछैए, ओकरे ठीकेदारी करए लगल। बम्बै शहरमे रहैत रहैत ठकनलालकेँ कनी-मनी पाँखि जनमए लगल। साल भरिक पछाइत ठकनलाल गाम-घरसँ लोककेँ बझा-बझा कारखानामे लगबए लगल। आमदनी बढ़लै। मुदा जहिना अकासमे उड़ैत गोटे चिड़ै अपन जेरसँ हजारो किस्मक दोसर चिड़ैक जेरमे वौआइत पहुँच जाइए आ पहुँचला पछाइत ओइ चिड़ैक की गति होइ छै, ओ तँ चिड़ै-चिड़ैपर निर्भर अछि। ओना रेंगिग सिस्टम नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि आ जेतए अछि से तेतइ रहह...।

पाँखि भेला पछाइत ठकनलाल सेहो एकटा अमेरिकन ठीकेदारक हाथे अमेरिका पहुँच गेल। केतए की भेलै से तँ अखन तक ठकनलाल केकरो लग नहि बाजल तँए हमहूँ नइ बुझै छी। मुदा एकरो तँ झूठ नहियेँ कहल जा सकै छै जे ममियौतो भाय आ पिसियौतो भाय अपन-अपन रूपैया खर्च कऽ कऽ जहलसँ निकालि कऽ नहि अनने छल। ओना, दुनू मसियौत-ममियौत भाय ठकनक दुनू बेटाकेँ अपने लग रखि कमाइक गर धड़ा देने अछि। जेलसँ एला पछाइत ठकनलालकेँ परिवारक सभजन बैस निर्णय कऽ लेलक जे ठकन गाममे

रहत। ओकरा हजार रूपैया महिना गाममे देब। ओही कारावासक पड़ल ठकनलाल गौरीकान्तक ऐठाम पहुँचल।

भाषाक मिलानी होइमे गौरीकान्तकेँ मिसियो भरि परेशानी नइ भेल। किएक तँ दुनू गोरेकेँ गामक भाषासँ लऽ कऽ अमेरिकन भाषा तकक मिलानी रहबे करइ। दुनूकेँ अमेरिकासँ लऽ कऽ गाम धरिक एक-कनिहा संगी भेबे कएल। मुदा तइमे कनी फेंट-फाँट भेल। फेंट-फाँट ई भेल जे गौरीकान्त दुनू परानी अमेरिकाक खाएल-पीअल- रमल-बसल, मुदा ठकनलाल से नहि, असगरे खाएल-पीअल-रमल-बसल आ घरवाली सोलहन्नी गामेवाली रहलै ओना, धरतीपर जे जिनगी पौलक ओकरा सभकेँ धरतीक सुख पबैक आ जीबैक इच्छा छइहे, मुदा ओइमे ओझरी लागल अछि। खाएर जे अछि, ओझरीक पोझरीकेँ पछाइत सोझराएब। जखने दू आदमीक बीच काज करैक एक-शैली आबि गेल तखने गामक काजमे धक्का लगबे करत। दुनू गोरेक बीच दसे मिनटमे काजक दौड़ शुरू भेल। गाम-गाममे दस-बीसटा गाड़ी-सवारी भाइये गेल अछि। ठकनलालक संग सुनील रमकल। दुइये किलोमीटरपर बजार, जैठाम चापाकलक समानसँ मिस्त्री धरि भेटैए। चापाकलक मिस्त्रीकेँ बुझल जे ऐठाम तीस-पैंतीस फुट निच्चाँमे पानि भेट जाइए। केहेन पानि औत आ नइ औत तेकर ठिक्काक भार तँ नइ अछि। सोझे पानिक ठिक्का-पट्टा पटि गेल। ठकनक संग सुनीलो अमेरिकन चालि पकैड़ लगले कलक मिस्त्रीकेँ हुण्डे काज सुमझा आगू बढ़ि ईंटा-सिमटी-लोहा इत्यादि घरक समानक सभ जोगार बैसबऽ चलि गेल। जाबे ठकनक संग सुनील डेरापर पहुँचल ताबे कलक मिस्त्री, बिनु नापक कल जकाँ तीस फुट पाइपक जगह साए फुट पाइपक हिसाब लगा, कलसँ पानि निकालि दरबज्जापर बैस गेल। सभ हिसाबक मुँह-मिलानी करैत पचास रूपैआ बकशीश पबैत मिस्त्री खुशी-खुशी गाम गेल। काजक शैली दू रंगक होइए। पहिल तँ सभकेँ बुझल अछिए जे ऑफिसक टेबुलक फीस बनल छै, दैत चलियौ आ काजकेँ तेज गतिये करैत चलू। मुदा दोसर शैली लिखित-अलिखितक बीच ओझरा गेल अछि,जेकर प्रभाव गाम-गाममे केहेन अछि ई तँ गौंवे ने बुझि सकै छैथ।

तेसर दिन गौरीकान्त बैंक सबहक मुँह-मिलानी करता। तेकर समय बनल। तेसर दिनक काज करैत सुनील अमेरिकाक बाट तीन दिन पहिने जहिना चारि बजेमे पहुँचल तहिना पकैड़ लेलक। गामक लोक आड़ि-मारिबला अछिए, कियो अमेरिकासँ आबैथ आकि लंकासँ, समाजमे जेहने जिनगी रहल छैन तेहने ने भोग भोगता। ओइमे गामक लोक केतौ नहि रहत। मुदा तँए की लोकक आवाजाही घटल सेहो बात नहियेँ अछि।

चारि कोठरीक घरक संग कीचेन, बाथ रूम सबहक बेवस्था संगे बनबैक विचार गौरीकान्तक भेलैन। ओना, दलान बनौत कि नहि, से थोड़ेक लटपटाएल अछि। किएक तँ गौरीकान्तक आगू धर्म संकट फँसि गेल। धर्म संकट ई जे दलान पुरुखकेँ बैसैक छिऐ, गामक लोकक आबा-जाही नहि, तैठाम दुनू परानी सड़कक कातक दरबज्जापर केना बैसब। भाय, गाम जखन गौरीकान्त आबि गेल तखन पुरनो गप-सप्प तँ किछु उखड़बे करत किने? जखने पुरना गप-सप्प उखड़त तखने लंगोटिया संगीमे अपनो हिसाब हेबे करत। जँ से हएत तँ ओकरा हिसाबक बहीमे नाम दर्ज भऽ जाएत। मुदा अपनो तँ समाज छी जैठाम जीबैक विचार होइए तैठाम जँ एक जुगक समाजक जीवन्त बेकती जँ श्रद्धासँ अन्तिम संस्कार पबैले गाम आएल, तखन जँ से नइ भेटै ओहो तँ समाजक कलंके भेल। तइ कलंकक भागी तँ हमरा छोड़ि कियो दोसर हएत नहि। किएक तँ

धरमराजक दरबार जखन अन्तिम बेरिया पहुँचब, तखन जिनगी भरिक ने हिसाब-बारी हएत जे जे समाज अहाँकेँ स्वतंत्र जीबैक अधिकार देने अछि तेकरा अहाँ की देलिऐ?

गौरीकान्तसँ भेँट करैक विचार मनमे रोपि लेलौं। ओना, गौरीकान्तक तीनू दिनक जिनगीक हिसाब बुझिये रहल छी जे महाकाल जकाँ समझ रहलै। तँए जखने महाकालीक पूजा हएत तखने छोट-छीन देव-देवी पछुआ जेबे करत। अपनो तँ एते सोन्हि भेटिये गेल अछि जे काने-कान ने सुनैत सुनब- गौरीकान्त गाम आएल। तैबीच तँ हजारो कान बीचमे अछिए। तहूमे तीन दिन बेसी नइ भेल, पचि सकैए। तँए दोखी बनैक बाट नइ देखलौं। चारि-छह मास जन्मक अन्तर दुनू गोरेक बीच अछि। दुनू गोरे संगे-संग हाइ स्कूल तक पढ़लौं। गौरीकान्त साइंस पढ़ि इंजीनियर भेल। पिता मेहनती लोक, मेहनतक उपारजनमे पढ़ब-लिखब दिस खर्च करबकेँ नीक बुझै छेलखिन, तँए खर्चक कोताही कहियो ने हुअ देलखिन। गौरीकान्तो प्रतिभाशील, असानीसँ इंजीनियर भेल। प्रतियोगितो ओझ्रुका जकाँ नहि छल। जे आइ झारखण्ड राज्य छी ओ बिहारे छल। इंजीनियर बनि टाटानगरमे नोकरी शुरू केलक। बिआह नइ भेल छेलइ। इंजीनियर बनिते सुभ्यस्त परिवार सभसँ घटक सभ पहुँचल। अन्तो-अन्त अंग्रेजी ऑनर्सक कन्याँक संग बिआह भेल। इंजीनियर बनिते गौरीकान्तक अपन मन जेते अमेरिका जा नोकरी करैक भेलै तइसँ बेसी पत्नी आ सासुरक भेल। किएक तँ सासुरमे एकटा ओहन बेकती रहैथ जे नोकरी करैले अमेरिका गेला आ दसे बर्खक कमाइसँ गाम आबि अपन इंजीनियरिंग कॉलेज चला रहला अछि। से बुझल-देखल रहबे करैन, तँए बेसी जोर देलखिन। तैसंग पत्नियोँकेँ जेठुआ टुकलीकेँ जहिना धिया-पुता नाँगैरमे काठी खोंसि उड़बैए तहिना तेतेक उड़ौलकैन जे दिन-राति जागलो-सुतलमे अमेरिके देखैत। अमेरिकाक नाओं सुनिते कियो कहैन-

"बहिन, स्वर्गक भोग तोरेटा कपारमे विधाता लिखलखुन!"

तँ किम्हरोसँ पत्र अबैत-

"बहिन, आब तों बहिने जकाँ भरि जिनगी बहिने बनल रहि जेबह!"

एक तँ बिनु बोझ पड़ल महिला गौरीकान्तक पत्नी कनछुटू रहबे करइ। खाएर जे रहइ, जेहेन रहइ.., मुदा पाँच सालक पछाइत टाटानगरक नोकरी छोड़ि गौरीकान्त अमेरिका चलि गेल।

तीस साल नोकरी केला पछाइत, इंजनक बीच इंजन बनल गौरीकान्त चारि साल पहिने सेवा मुक्त भेल। व्यस्त जीवन अमेरिकाक ऐछे, पत्नी छोड़ि दोसर लगमे कियो ने बैसनिहार आ ने हबे-गब केनिहार। तइमे मात्र दुइये परानी, कखनो बेटा नजैर पड़ैत तँ पुतोहु नहि, कखनो पुतोहु तँ बेटा नहि। अपने दुनू परानी काजसँ अकाज भाइये गेल अछि। जइसँ जीवन्ता जिनगीसँ हटिये गेल छइ। पहाड़पर सँ ढरकल जिनगी भाइये गेल छइ। मुदा किछु छै, एते तँ जीबठगर गौरीकान्तकेँ मानले ने जाएत जे जिनगी भरिक हेराएल-भोथियाएल जँ अन्तिम संस्कार धरि आबि गेल तँ ओकर उद्धार होइते अछि।

चारि बजे बेरू पहर गौरीकान्तसँ भेँट करए विदा भेलौं। बीघा डेढ़ेक दूरीपर घर। घर मरने घराड़ी कनी बोनाह भाइये गेल छइ। मुर्दघटी जकाँ तँ नहि, मुदा मरण-हरणक नुआँ-बिस्तर आ टुटल-फुटल तौलो-कराहीक कान-खापट तँ फेकल जाइते अछि। इनार भथा गेल। पुरना माने पैछला जिनगीक देखल मात्र एकटा ताड़क गाछ ठेकानपर, बाँकी सभ बेठेकना गेल। जे आमक गाछ, पाँच बर्खक छल ओ चालीस बर्खक

भऽ गेल। गामक पाँचटा पोखैरमे तीनटा कमला-बाढ़िमे भथाइये गेल आ बँचल जे दूटा अछि ओकरो मुँह-कान तेना ने झड़ल-झुड़ल अछि जे ओहो अपन पुरना चिन्ह बिसैर गेल।

दुनू परानी गौरीकान्त टेन्टमे बैसल अपन ढहैत जिनगीक गर-गुर लगबैक सोंगर-सबहक विचार करैत छल। आगूमे मकानक काज चलैत रहइ। माने चारि कोठरीक पक्का मकानमे हाथ लागल छेलइ।

टेन्टसँ आगू बढ़िते रही कि आगूए-सँ ठकनलाल दुनू हाथे पकैड़ आगू देखबए लगल। अपनो मनमे भेल जे जाबे काज कृत्ति कें आँखिसँ देख नइ लेब, ताबे काजक बात बुझब केना? जँ गपो-सप्प करब तँ ओ काजोक भऽ सकैए आ अकाजकोक। तँए पहिने काजेकेँ माने मकानक नींवक खुनाइकेँ किए ने अगुआ ली। ठकनो लाल गामसँ अमेरिका तकक खेलाड़ी अछिए। मकानक नींवक कोण लग पहुँचा ठकनलाल खाइ-पीबैक जोगारमे टेन्ट पहुँच गेल। गौरीकान्तसँ कोनो वस्तु पुछैक जरूरत ठकनलालकेँ रहबे ने करइ, तँए गौरीकान्त किछु बजबे किए करत। सभ जोगार-पाती माने खाइ-पीबैक वस्तु टेबुलपर लगा ठकनलाल फेर लग पहुँच गेल। ओना, एतेक जरूर भेल जे ठकनलालकेँ संग छोड़ने नींवकेँ हिया कऽ देखैक समय भेट गेल। शहरी स्टाइलक घर। जेहने घर-घराड़ी बनाएब तेहने ने सरो-समाज देखब...।

तैबीच ठकनलाल बाजल-

"काका, दुइये गौरेमे केते घर की करता।"

आन सभसँ कनी हटलो रही आ कनी अपनो बोलीकेँ दबलौं, तँए फुस-फुसा कऽ नइ बुझू, मध्यम स्वरे बुझू। बजलौं-

"ठकन, जखन मनेजरी लेलह तखन अपनो परिवारक ने जोगार बैसैबतह। एतबो नइ बुझै छहक जे सड़ल-पाकल दुनू परानी गौरीकान्त आबि गेल। माथो दुखैते ते कहतह मुम्बैये हॉसपीटल लऽ चलैले। पाँच दिन आकि दस दिन, जे समय लगतह तैबीच दुनूठाम माने अहूठाम आ अपनो ऐठाम, ओगरवाही केना करबह?"

ओना, ठकनलालक अपन सोच रहै जे पाँच सालसँ कममे नीक जकाँ घर नहियेँ सजत तैबीच सभतुर लागल रहबे करब, जँ कहीं तइ बिच्चेमे दुनू परानी मरली तँ अपन सजौल-बनौल घर अपने सभ परानी ने भोगब। जहिना अपन परिवार शहरसँ गामक जहलखानामे पठा देलक तहिना ओकरो सभकेँ देखा देबै जे हमर माए-बाप बड़ बुद्ध नइ छल जे ठकना नाम रखलक..! मुस्की दइते ठकनलाल टेन्टक भीतर हवादार कुरसी-टेबुल लगा अरियातए आएल छल, बाँहि पकड़ने लऽ जा कऽ गौरीकान्त लग बैसौलक।

अपना मनमे नचैत छल जे हाइ स्कूल तकक जिनगीक संगी दुनू गोरे रहि चुकल छी। ओतबे संगपनामे ने अखन धरिक संग पुरल अछि। मुदा ओ तँ अपना समयमे निमहल। आब तँ दुनू परानी गौरीकान्त सड़ि-गलि-पकि आएल अछि। बेटा-पुतोहु अमेरिकामे रहतै। जे दोहरा कऽ गाम औत कि नहि। अमेरिकेमे ओ सभ रहत आ माए-बापक श्राद्धो-कर्म ओतैसँ सुनि मानत। मुदा गाम तँ से नहि छी। गामक धरतीपर पहुँच गेल अछि। श्राद्ध केनिहार खरचा दुआरे कियो भलँ नइ तैयार हुअए मुदा मरैक जगह लग, चारि हाथ खाधि खुनि ओइमे नइ मटिया देत, एहनो अबिसवास तँ नहियेँ कएल जा सकैए। मटियेबे करत। ओना, जहिना अपना मनमे होइ छल तहिना गौरीकान्तक मनमे सेहो छेलैहे। तैबीच ठकनलाल चौहद्दी बान्हि चुकल छल, तँए कान्ही मिलानमे देरी किए लगैत। की कहाँ, पान-सातटा पुड़िया आनि ठकनलाल

टेबुलपर पहिनहि पसाइर चुकल छल। मनमे हुअए जे एते जे खेला पछाइत गप-सप्प शुरू करब आ टटके खेलहा बिसैर जाएब सेहो केहेन हएत। बजलौं-

“ठकन, जहिना अबै बेरक जलखै होइए तहिना ने जाइ बेरक पनपिआइ सेहो हएत, तँए आपस होइकाल ई सभ खेबह। अखन चाह टा पीबह।”

ईहो तँ अमेरिकन गुण अछिए जे खाइकाल जखने कहत ‘नहि’ आ जँ थारीमे दऽ देलिऐ तँ लगले मारि बैसत। ठकनलाल अपन चालि पकैड़ मानि लेलक। दुनू परानी गौरीकान्तक संग गप-सप्प शुरू भेल। सुहरदे मुहेँ गौरीकान्त बाजल-

“गाम बिसैर गेल हएत।”

गौरीकान्तक प्रश्नक भीतर नीक-बेजाए अनेको प्रश्न छिपले अछि, ओ केना लगले बाजल जा सकैए आकि तत्काल टारले जा सकैए..? बजलौं-

“गाम केकरा बिसरल जे तोरा बिसरतह?”

ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे जँ पाइ बेसी हेतै तँ एहेन स्कीम धरा समाजक एकटा बास स्थल किए ने बनैक विचार देब। ओना, अपन आँखिक ज्योति जेहेन गौरीकान्तक हेतइ, तेहन देखत। मुदा अपन नजैर गौरीकान्तक पत्नीक निच्चाँ-ऊपर घुमि रहल छेलए जे आब केहेन विचार मनमे उठि रहल छैन। सेवा दुआरे बेटा-पुतोहु गाम अबैक विचारमे मिसियो भरि देरी नइ केलक..!

गौरीकान्त अपन जुगक जिनगीक जखन समीक्षा करैत तँ पबैत जे जइ अवस्थामे अखन पहुँच गेल छी, तेकर निमरजना केना हएत, ई परिवारक मिलल धारक ऐगला छोर छी, जँ बीचमे सुखा जाएत वा भथन भऽ जाएत तखन तँ जिनगीक धारे अवरूद्ध भऽ जाएत..!

खसल मने गौरीकान्त अपनाकेँ समर्पित करैत बाजल-

“भगवाने दरबार जकाँ समाजोक दरबारकेँ बुझिये रहल छी, तँए अपनाकेँ ओइ समर-भूमिमे समर्पित करबे करब।”

आगू बजैक सभ रस्ता बन्द देख, बिना किछु बजने प्रणाम-पाती करैत ओतए-सँ विदा भऽ अपना ऐठाम चलि एलौं।

शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017

3

ऐँठ साड़ी

आइ छठिक खरना पाबैन छी। साढ़े सात-पौने आठ बजे भिनसुरका बात छी। ओना नीन समैयेपर टुटि गेल छल मुदा पाबैनक उछाही नीन टुटिते आगूमे खसि पड़ल। आगूमे खसल, माने जखने आइक प्रभात दिस तकलौं कि छठिक खरना नजैरपर आएल। जहिना छठिक खरना नजैरपर आएल तहिना सूर्यक अर्घ सेहो आएल,मुदा तैसंग ईहो आएल जे अर्घ देल जाइए सूर्यकेँ मुदा पाबैनक नाओं छी छठि परमेसरी..!

अखन तक ऐ प्रश्न दिस नजैर कहियो उठले ने छल जे एकेबेर बोझ जकाँ तेना माथमे चढ़ि गेल जे नीन टुटला पछातियो ओछाइन छोड़ैक साहसे ने हुअए। तैबीच किसनी काकीकेँ पुतोहुक संग कहो-कही आ ललको-ललकी शुरू भेल। सेटले आँगन अछि, ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सुनए लगलौं। किसनी काकी अपन पुतोहुकेँ कहलखिन-

"तोरा धिरित नइ छह!"

ओना, किसनी काकी अपना पतोहुपर ललैक कऽ बाजल छेली मुदा 'धिरित नइ छह' सुनिते मन ठमकल। सोचलौं, जँ अखन काकीक आगू जाएब तँ पुतोहुक शब्द हमरेपर छोड़ए लगती। हो-न-हो जँ कहीं यएह पुछि दैथ जे आइ कोन पाबैन छी, पुरुखक आकि स्त्रीक..? तँ की हुनका हम बुझा कऽ शान्त कऽ सकब? पुरना घावपर नून छीटि अनेरे जे देहो आ मनोकेँ विसविसाएब तइसँ नीक पत्नीए-कँ पठा बुझि ली।

पत्नीकेँ कहलयैन-

"किसनी काकी आइ भोरे-भोर किए एते गरमाएल छैथ, से कनी बुझने आउ ते...।"

कनियाँ देरी हएत तँ बुझले अछि जे ओ केहेन ठोर-पकाहि लोक छैथ, लगले कहए लगती जे 'तूँ हमरा आन बुझै छह जे सभटा उधारीए खाता चलत। जे समांग जीबैतमे आँखिक सोझमे सेवा-बरदास नहि करत ओ मुइला पछाइत केते करत तेतबो की नइ बुझै छी।'

जहिना पत्नीकेँ कहलयैन तहिना ओ विदा भेली। तइ बिच्चेमे किसनी काकी दोहरा कऽ बजली-

"जखैन गामे-लोककेँ धिरित नइ अछि तखैन परिवार सबहक की रहत..!"

कान ठाढ़ करि कऽ रहबे करी, धियान किसनीए काकीपर रहए। कनी नरमाएल अवाज बुझि पड़ल। किए तँ परिवारक संगे गामक बात सेहो बाजि रहली अछि। जरूर कोनो तेहेन बात मनमे हेतैन। अपन जे प्रश्न छल- भगवान भास्करक अर्घ आ छठि परमेसरीक पाबैन, तेकरा मने-मन बन्ठा काकापर सोंपि, मुँह-कानमे पानि लइले तैयार भेलौं। बन्ठा काका, माने हाइ स्कूलक ओहन शिक्षक जे अपन विचारपर ठाढ़ होइक दम रखने छैथ। बच्चेसँ नीक विद्यार्थी रहला। विद्यार्थी जीवनसँ लऽ कऽ जहिया नोकरी शुरू केलैन तहिया तक 'सुलोचन कुमार' नाओंसँ जानल-मानल जाइ छला। मुदा नोकरीक पछाइत गामक लोक हुनका 'बन्ठा काका'क नाओंसँ पुकारए लगलैन। तेकर कारण शरीरक कद भरिसक सेहो छैन। ओना, समाजक देल नाओं 'बन्ठा', 'बन्ठा बौआ', 'बन्ठा भाय' आ 'बन्ठा काका' जे छैन यएह ने ससैर कऽ 'बन्ठा बाबा' तक पहुँचतैन। माए-बाप छठियार दिन बेटा-बेटीक नाओं रखैए। नाओं रखैक माने भेल समाजक दाइ-माइ सभ जे अपनामे विचारि आमक पातपर लिखि नामक प्रस्ताव दइ छथिन, तेकरे ने माए-बाप मानि अपन बच्चाक नाओं घोषित करै छैथ। तहिना ने समाजक देल नाओं सोल्होअना स्वीकार भेलैन। धनपत राय जहिना 'प्रेमचन्द' भेला, मुनीन्द्र चौधरी 'राजकमल' भेला तहिना सुलोचन कुमारसँ 'बन्ठा' सेहो भेला। ओना ई नाओं शुरूमे सुलोचन कुमार जखन

धिया-पुताक जेरमे आमक गाछीक अखड़ाहापर जाइ छला तहियो 'बन्ठा पहलमान'क नाओं धारण केने छला। मुदा अखड़ाहा छोड़ला पछाइत जखन विद्यालय धेलैन, तेकर पछाइत लिखित नाओं एने पुन: ओ दबि गेलैन।

पत्नीकेँ अबिते कहलयैन-

"दोहरा कऽ किसनी काकी लग जाउ आ हमरे नाओं कहबैन जे धाहे-बोखारे फल्लाँ धऽ धऽ जरै छैथ, से कनी चलि कऽ देखथुन।"

ई सोचि बजलौं जे आँगनसँ जखने काकी निकैल औती तँ गप-सप्पक क्रम बदलने मनो बदलतैन, जइसँ विचारमे ढीलपन औतैन। जखने विचारमे ढीलपन देखबैन कि गपक पाशा बदैल कीकीकेँ दोसर दिस मोड़ि देबैन। अनेरे पाबैन-दिन जे भोरेसँ घोचाल शुरू भेल ओहो दबि जाएत।

कहलापर पत्नी आँगनसँ तँ निकैल काकीकेँ बजबए विदा भेली, मुदा जखन अपने चद्देर-तद्देर ओढ़ि बोखरलग्गु बनि सिरमापर मुड़ी देलिऐ कि पत्नी दरबज्जाक कोनचर लगसँ हिया कऽ देखए लगली। हिया कऽ देखैक कारण भरिसक ई रहैन जे जखन काकी लग झूठ बजैले जाइ छी, तखन झूठ बजौनिहार केते अपन झूठक मेकप केलैन...। अपनो मनमे भेल जे सोझमतिया किसनी काकी छथिए, पतिआइमे देरी लगबे ने करतैन। भाय, पाबैन-दिन छी, भोरेसँ जँ किसनी काकी विवाद लधती तँ हो-न-हो दुपहर होइत-होइत कहीं पाबनियेँपर ने अट्ठा-बज्जर खसि पड़ए। जखने एकबेर अट्ठा-बज्जर खसत कि पाबनियेँ खोंर भऽ जाएत। खोंर भेला पछाइत जहिना जितिया पाबैन खोंर भऽ एकसंझू बनि जाइए, तहिना भऽ जाएत। जखने जितिया पाबैन जकाँ छठि एकसंझू हएत तखने...। छठि कि कोनो आन पाबैन छी जे एकसंझूओसँ काज चलि जाएत। दू-संझू पाबैन छी, अनेरे एकटा टुटि जाएत! तहूमे जँ छीप दिससँ टुटत तँ जड़ि दिस अदहा लगने लगलो रहैत, मुदा जँ कहीं जड़ि दिससँ टुटल, तखन तँ दुनू कूर समाप्त! तँए किसनी काकीक मनकेँ बदलब जरूरी बुझिये पड़ल।

अपन मुँह झाँपि दुखताह की बनब जे अँगनासँ निकैलते पत्नी ड़्योढ़वालीकेँ ललकब सुनए लगली-

"एना होइ! किसनी काकी किए बजली जे ललमुँही सभ सभटा पाबैन ढंस केने जाइए..!"

ड़्योढ़वाली बगलेमे पड़ोसीक परिवार छथि।

ड़्योढ़वालीक बात सुनि पत्नी दरबज्जाक मुँहथैरपर ठमैक कऽ ठाढ़े रहली। एक तँ दरबज्जाक आगूए-मे पड़ोसनी किसनीए काकी-दे बजैत, आ किसनीए काकीकेँ बजबैले जाइत रहैथ। पत्नीक मनमे भेलैन जखने किसनी काकीकेँ बजा कऽ अनबैन आ अपना काने ड़्योढ़वालीक बात सुनती, तँ अनेरे अहीठाम कहा-कही शुरू हएत! जखने घर लग कहा-कही हएत तखने सभ छार-भार अपना ऊपर खसत! पत्नीक मने घुमए लगलैन। ने आगू डेग उठबैक साहस होनि आ ने पाछू हटैक। बलुआह माटिक मुरुत जकाँ ने एक बून पानि थम्हैबला आ ने चाननक शीलाक रगरक रग्गर थम्हैबला..!

दूरक ललक लगमे सुनए लगलौं। मुदा एकटा जरूर भेल जे कनी हटलमे जहिना किसनी काकीक अवाज बुझि पड़ै छल तहिना लगमे ड़्योढ़वालीक। मरदा-मरदीक ललक नइ सुनने मनमे उठल जे ऐठाम सोलहन्नी दुखताह बनने काज नइ चलत, दोसर रंगक मेकप करए पड़त। सुतलसँ उठि चौकीए-पर बैस मने-

मन विचारए लगलौं जे आब की करी? अपन विचारकेँ सोलहन्नीसँ अठन्नी बनेलौं। बनेलौं ई जे चौकीपर सँ निच्चाँ उतैर चद्दैर ओढ़लौं। भाय! महिला जगतमे ने जा रहल छी, तँए ओहने रूप ने बनबए पड़त।

चद्दैर ओढ़ि निच्चाँ होइते पत्नीकेँ देख बजलौं-

"पाबैन दिन छी, एना जे पएर-मे जत्ता बान्हि आँटा पीसब तखन तँ छठिक ढोलक 'ठकर-ठकर ठक-ठकुआ' सुनिते रहब..!"

भाय, अपन घर अपने समेटने ने समटाइए। अनकर सभ खिड़की खोलि अपने बन्न कऽ कऽ राखए चाहबै से केना हएत। जँ अनकर खोलबै तँ अपनो खोलियौ। मुदा से पत्नी चेतली। चेतली ई जे चोट्टे आँगन दिस घुमैत बजली-

"अँगना-घरमे काज छिड़ियाएल अछि। अपनेसँ किसनी काकीकेँ देखियौन।"

तैसंग ईहो रच्छ रहल जे ड्योढ़ोवाली चुप भऽ पाबैनक जोगारमे लगि गेली। अपने आगू बढ़ि किसनी काकीक ऐठाम पहुँचलौं। ओतए चारि-पाँच गोरे ठाढ़ भेल गप-सप्प करैत रहैथ। जइमे बन्ठो काका छला। चद्दैर ओढ़ल देख अगुआ कऽ बन्ठे काका बजला-

"की बौआ, सभ दिन खइहह पबनियेँ ललैहह!"

बन्ठा कक्काक मुँहपर जवाब दइक हिम्मत नइ भेल। हिम्मत नइ होइक कारण भेल बनौआ दुखताह ने रही, तँए केमहरसँ की बाजब से ओरियेबे ने कएल। बिच्चेमे लसैक गेलौं। केना ने लसैकतौं, जँ निरोग बनि बजितौं तँ भगलपन किए लधने छी? कोनो कि पूस माघक जाड़ मास छिऐ जे चद्दैर ओढ़ने छी। अखन ते छठिक व्रतधारी एक-पहर साँझोमे आ एक-पहर भोरोमे छाती भरि जलतरंग करैए, तहूमे अनका सोझामे रहितौं तँ भग्गल भगलपन जोड़ि कहितिऐ जे मच्छरक दुआरे चद्दैर ओढ़ने छी, मुदा बन्ठा काका लग एहेन झूठ बिना पकड़ेने रहब। आन भलेँ बन्ठा काकाकेँ अदना बुझैत होनि मुदा अपने तँ जरूर जनै छी जे बन्ठा काका पौराणिक पुरुख छैथ, जे बजता से करता आ जे करता से बजता। बन्ठा चमार जहिया बन्ठ लकड़ीसँ अखड़ाहापर बन्ठा हाथे ढोल बजबै छला, तहिया लोरिक-रूदल सन मनियार छल तेकरे जकाँ ने बन्ठो काका छैथ। तँए अपनाकेँ निरोग केना कहितिऐन? ओना, अपना मने ओ रोगी बुझि हमरा पाबैनसँ बाड़ि देने छला मुदा पाबैन-दिन अपनो केना पाछू घुसैकतौं। भाय, आसीन-कातिक छिऐहे सरदी-बोखारक मौसम छी, सएह ने हमरो भेल हएत। मुदा केते निरोग कहबैन आ केते रोगाएल, से नपैक थर्मामीटर थोड़े अछि। लगले दोसर प्रश्न आगूमे उठि गेल। उठि ई गेल जे जँ बेसी निरोग कहबैन तँ कहता जे चलह तँ पोखैरक घाट देखिऐ जे घाटक पानि पवित्र अछि की नहि, जलतरंग जोग अछि की नहि। जँ थाल-कादो हएत तँ सौंसे पोखैर भलेँ नहि, मुदा जेतबो दूरमे माए-बहिन हाथ उठा सूर्य भगवानकेँ अर्घ देथिन, तेतबो दूर तक फरिच जल रहत तखने ने पवित्रतासँ हाथ उठाएब हेतैन...।

फेर भेल जे एहेन भरिगर काजमे पड़ब नीक नहि। पोखैरक घाटेपर थाल-कादो हेतै तँ हौउ। सभकेँ थाले-कादो नीक लगै छै तँ अपनो नीके लागत। आ जँ अपन मन नइ मानत तँ चबुतरा देल चापाकल दरबज्जापर अछिए, बाल्टीन भरि पानि आगूमे रखि डाली पसारि देब। जखने सूर्य भगवान मेघमे उगता कि धाँइ-दे बाल्टीनक जलमे नचबे करता, बस तखने अर्घ दऽ देबैन। तैबीच बन्ठा काका किसनी काकीकेँ बोधि नेने छला तँए वातावरण थोड़ेक नरमा गेल छल। जइ काजे किसनी काकी बिगड़ल छेली, तेकर निराकरण

छठिक प्रात भनेक तिथिपर रहि गेल। पाबैन भरिक अंकुश किसनी काकीकेँ बन्ठा काका लगा चुकल छला। बजलौं-

"काका, पाबैन छिऐ, आइ तँ छुट्टीए-मे हएब। हमरे ऐठाम चलू, चाहो-ताहो पीब आ किसनी काकी भोरेसँ किए ललकारा भरै छेली सेहो कनी बुझि लेब।"

ओना, अखन तक हम अपना मने निरोग छी मुदा बन्ठा काका तँ रोगीए बुझै छैथ तँए ओ अपना ऐठाम चलि कऽ गप-सप्प करैक जगहसँ नीक हमरे ऐठमाकेँ बुझलैन। भऽ सकैए दुखताहक होनि वा बेसी दिनपर गाम एलासँ समाजिकता सेहो होइन। खाएर.., दुनू गोरे विदा भेलौं। थोड़ेक आगू बढ़िते बन्ठा काका बजला-

"बौआ, की कहबह। तेहेन लंकाबास भऽ गेल अछि जे अखन तक चाहो ने पीलौं हेन।"

पुछलयैन-

"किए! अबेर-कऽ नीन टुटल की?"

'अबेर' सुनि बन्ठा काका सहमला। सहमैक कारण भेलैन जे जँ समैपर उठलौं, तखन चाहे किए पछुआएल? आ जखन पहिलुक काज- 'चाह पीब' अपन धुरी छोड़ि देलक तखन ऐगलो सबहक ने धुरी छुटि जेतइ? अपनाकेँ सम्हारैत बन्ठा काका बजला-

"बौआ, की पुछै छह! पाबैन-दिन छी, पबनौटक आशा सभकेँ अछिए, मुदा डुम्मा लोकक मुआबजा सरकारकेँ सभसँ बेसी भरए पड़ै छइ।"

काका बजिते छला, तैबीच दरबज्जापर पहुँचलौं। पहुँचते पत्नीकेँ कहलयैन-

"अखन तक बन्ठा काका तीन बेर चाह पीब नेने रहितैथ, से निराधारे छैथ, तँए तीनू बेरक मोजगरा पुराएब।"

बिच्चेमे बन्ठा काका लोकि लेलैन-

"ऐँह, अहिना लोक बजैए!"

मुहसँ निकैल गेल- "केतौ अनतए बजलौं हेन।"

मुँह दुसैत बन्ठा काका बजला-

"यएह ने तोरा सन-सन नवतुरियामे बुड़िपन अछि जे पत्नियोँ लग पुरुख बनल नइ होइ छह!"

तैबीच, पत्नी शुरूहेमे जे चाह बनौने छेली ओ दूटा कपमे नेने एली। जहिना भोरुका तुकक चाह छुटने बन्ठा कक्काक मन खौंता गेल छेलैन तहिना चाह पीबते शान्त भेलैन।

बजलौं-

"काका, गाममे सभ दिन अहाँ नइ रहै छी, केतेको विचार, केतेको प्रश्न मनमे उठैए आ बिसैर जाइ छी। आन कियो गाममे अहाँ सन छैथ नहि, जे मनगर जवाब देता।"

एक तँ चाह पीला पछाइत बन्ठा कक्काक मन शान्त छेलैन्हे, तैपर हमर विचार सुनि आरो शान्त होइत बजला-

"मनमे तँ बहुत अछि, मुदा बहुत तँ बहुत लोककेँ तैयार भेने ने हेतइ।"

बन्ठा कक्काक बातसँ बुझि पड़ल, काका अपनो वौआइ छैथ आ हमरो वौएता। कहलयैन-

"काका, दुनियाँ-दारीक गप-सप्प छोड़ू, अखनो एकटा प्रश्न मनमे घुरियाइए। तँए पहिने ऐठाम तकक वृतान्त सुना दिअ, पछाइत अपन बात फरियाएब।"

पत्नी पान नेने एली। पान खेला पछाइत बन्ठा कक्काक मन जेना पूर्ण तृप्त भऽ गेलैन। ओना, मुँहक सुरखीसँ बन्ठा काका शान्त जकाँ बुझि पड़ैथ, मुदा मनमे अशान्ति छेलैन। अशान्तिक कारण छेलैन जे एक दिस लोककेँ देखै छला आ दोसर दिस पाबैन दिस तकै छला तँ बुझि पड़ै छेलैन जे कमला धारक कटहरबा घाटक कटहरक कोआ सभकेँ भेटबे करत...। गम्भीर होइत बन्ठा काकाकेँ देख मनमे भेल जे छी छठि पाबैन, जइमे लोक पोखैर आकि धारमे स्नान करैत सूर्यकेँ अर्घ चढ़बैए आ दोसर दिस बन्ठा काका समुद्रमे डुमबैक विचार सुनबए लगता। तइसँ नीक जे अपने किए ने किछु चालि मारी। बजलौं-

"काका, चाहक यात्रा किए भङ्गैठ गेल?"

ओना बन्ठा कक्काक मन तुरछए लगलैन, मुदा जखन समाजेक पोखैरमे स्नानक संग सूर्यकेँ अर्घ दैक पाबैन छी तखन अपनो ने ओही समाजमे छी, तँए मनकेँ दबैत बजला-

"बौआ, आन दिन तोरा पितियाइनकेँ जगा कऽ उठबए पड़ै छल, मुदा आइ पहिनहि उठि सिरखड़ियावालीसँ कहा-कही करै छेली। हुनके दुनू गोरेक अवाज सुनि अपन नीन टुटल।"

पुछलयैन-

"किए पाबैन-दिन, भोरे-भोर दुनू गोरे कहा-कही करै छेली?"

मुस्की दैत बन्ठा काका बजला-

"जहिना कोटाक खराँत-ले लोक डीलर ऐठाम 'पहिने हम लेब' तँ 'पहिने हम लेब' करैत कहा-कही करैए तहिना बुझह।"

बजलौं-

"काका, आइ खरना पाबैन छी, तखन किए डीलरबला गप बजलिऐ?"

बजला-

"डीलरक ऐठाम चाउर-गहुमक बँटवारामे ते कनी लज्जैत रहितो अछि मुदा पाबैनमे की अछि से तँ स्त्रीगणे सभ जानैथ।"

बन्ठा काकाकेँ भँसियाइत देख बजलौं-

"काका, आइ पाबैनक दिन छी, तोहूमे मन कनी गड़बड़ो अछि, तँए चौहद्दी छोड़ि अपन चास-बासक गप करू।"

बन्ठा काका जेना बुझि गेला तहिना बजला-

"बौआ, साड़ीक कहा-कही छल। सिरखड़ियावालीक कहब रहै ऐँठ साड़ीसँ खरना पाबैन नइ हएत।"

बन्ठा कक्काक बात सुनि सहमलौं, किएक तँ 'ऐँठ' की से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। पुछलयैन-

"की 'ऐँठ' काका?"

बन्ठा काका बजला-

"ऐँठ भेल जे, जे साड़ी एको दिन पहिरल हुअए।"

बजलौं-

"काकीक कहब की छेलैन?"

बजला-

"हुनकर कहब जे अपने मनक बात छी, पहिल खींच देलिऐ ओ निरेठ भऽ गेल। जखन निरेठ भेल तखने ओ ऐँठ नइ रहल। तइले एते कहा-कही करैक कोन जरूरत। मुदा कहा-कहीक बात करैत जँ चाह बनबए कहितिऐन तखन ओ झगड़ा अपना दिस उनटैत की नहि, तँए चुपे-चाप आगू बढ़ि गेलौं।"

आगू बढ़ब सुनि अपनो नीक लागल। बजलौं-

"नीक केलौं।"

हमर 'नीक' सुनिते बन्ठा काका बजला-

"नीक की हएत कपार! कनियेँ आगू बढ़लौं तँ देखलिऐ, सोनरेवाली आ कैथिनियाँवालीकेँ खूब ललका-ललकी रस्तेपर करै छेली। अपन-अपन बात सुनबैले दुनू गोरे रस्तेकेँ रोकने छेली। मुदा रच्छ रहल जे फरिकेसँ दुनू गोरेक गप सुनि नेने छेलौं। एकक कहब रहै जे खरना पाबैन करैले अलगसँ एकटा साड़ी बनि कऽ ऊपरेसँ आएल अछि, ओ पहीर लोक पाबैन करत।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"दोसरक कहब की छेलैन?"

बन्ठा काका बजला-

"दोसरक कहब रहै जे हम जे दुर्गेपूजाक मेलामे खरना पाबैनले साड़ी कीन नेने छेलौं से की करब। मुदा रच्छ रहल जे दुनू गोरे रस्ता छोड़ि देली। आगू बढ़लौं।"

"नीक केलौं, काका।"-हम कहलयैन।

बन्ठा काका बजला-

"नीक की करब, अपनेटा नीक केने थोड़े नीक होइए। आनो नीक बुझि करत तखन ने। किछु छी तँ लंकाबास छी किने। किछुकेँ छोड़ैत चलू, किछुसँ जुटैत चलू। किसनी भौजीकेँ अठ-अठ हाथ कुदैत पुतोहुपर देखलयैन। ओना, पुतोहु अपन हाथ ससाइर नेने छेली। तँए सासुक बातकेँ खलिया बन्दूकक अवाज बुझि अनठौने छेली आ अपन खरना पाबैनपर सुरता लगौने छेली। मुदा रच्छ रहल जे जखने किसनी भौजी आगूमे अबैत हमरा देखली कि एकाएक चुप भऽ गेली। ललकैकाल आँखिसँ नोर निकलै छेलैन कि नहि, से तँ नहि देख पेलिऐन मुदा चुप होइते देखलयैन जे दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर टघैर रहल छैन। नोर देख मन खटकल जे भोरे-भोर कोन एहेन खटका किसनी भौजीकेँ भेलैन!"

बजलौं-

"ओना, किसनी काकी तँ छोट-छीन खटकाकेँ नइ मानै छैथ। जेना हरहारा साँपकेँ देखते कियो डेरा कऽ पाछू हटि जाइए आ कियो हाथपर राखि खेलाइए,तहिना छोट-छीन खटकासँ किसनी काकी खेलाइ छैथ। मुदा जँ आँखिसँ नोरक टघार निकललैन तँ जरूर कोनो तेहेन काज रहल हेतैन।"

बिच्चेमे विचारकेँ छीनैत बन्ठा काका बजला-

"हँ, गम्भीर बात छेलैन।"

'गम्भीर' सुनि सुनैक जिज्ञासा भेल। बजलौं-

"की गम्भीर बात छेलैन से तँ कहने हेती किने?"

बन्ठा काका-

"पुछलयैन, भौजी दुनू आँखिसँ नोरक दुनू धार बहैए, से की?"

ऐगला बात हमरा पेटेमे रहए तइ बिच्चेमे किसनी भौजी कहली-

"बन्ठा बौआ, नवतुरिया सभकेँ बुझल हेतै कि नहि, मुदा अहाँ तँ सोझेमे तहियो छेलौं आ अखनो छी।"

कहलयैन-

"हँ, से तँ छीहे।"

हमर बात- 'हँ, से तँ छीहे' सुनिते किसनी भौजीक विचारक धारकेँ जेना धारा भेटल तहिना धड़धड़ाइत बजली-

"सासुर बसना जहिया पाँचे बर्ख भेल छल तहिये स्वामी मरि गेला, से तँ बुझले अछि।"

बजलौं-

"ताबे हमहूँ नवतुरिया रही। तँए, भाय जे मुइला से तँ बुझल अछि मुदा किए मुइला से नइ बुझल अछि।"

किसनी भौजी-

"यएह पाबैन छी, अगते शीतलहरी पकैड़ नेने छेलइ। तहूमे अनाड़ी मास[2], माने उतारक मास छल तँए लगले जाड़क मसीम पकड़ा गेल।"

कहि किसनी भौजी ठमैक गेली। भौजीकेँ ठमैकते कहलयैन-

"हँ, कनी-मनी सालो मन पड़ैए।"

'साल' सुनि किसनी काकीकेँ आरो सह भेटलैन। सहटैत सेरियाम धरतीपर उतैर बजली-

"ओही साल छठिए पाबैन दिन मरि गेला।"

बजलौं-

"आब नीक जकाँ मन पड़ल। ओइ सालक शीतलहरीमे बहुतो लोक गाममे मरल। अखुनका जकाँ कि लोककेँ नुआ-बिस्तरक सुख छल। जाड़क मास अबिते केते लोक कठुआ-कठुआ मरै छल।"

किसनी भौजी बजली-

"सासुक मुँह देख अपन जिनगीकेँ तियागि ऐठाम रहलौं। पतिक संग बेटोक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। एक तँ खेत-पथार बेसी नहि, तैपर जेहो छल तेकरो दियाद-वाद सभ हड़पैक कोशिश केलक। एहेन स्थितिमे दू सालक बेटाकेँ पोसलौं।"

मुड़ी डोलैत हमरा मुहसँ निकलल-

"से तँ आँखिक देखल अछि।"

तैपर किसनी भौजी बजली-

"अनका बेटा जेकाँ बेटाकेँ नीक जकाँ नइ पढ़ा सकलिऐ, तेकर कारण छल जे एक दिस वृद्ध सासु अपन जिनगीसँ हारल-थाकल छेली, दोसर दिस भविसक बेटा। मुदा तैयो सम्हारैत-सम्हारैत बीस बर्खक बनाइये देलिऐ। आँखि-पाँखि भेलै, दस हजारक नोकरी दिल्लीमे करैए।"

कहलयैन-

"से तँ अहाँ स्त्रीगण रहितो परिवारक गाड़ीक धुरीकेँ, केकैयी जहिना रणभूमिमे दशरथक गाड़ीमे अपन बाँहि लगा समर जीतलैन तहिना गामक नमूना तँ छीहे। तँए नमनीय छीहे।"

हमर बात सुनिते किसनी भौजी पसीज गेली। अपन विचारक बहैत तूफानी बेगकेँ रोकैत किसनी भौजी बजली-

"बौआ, पाँचसँ दस प्रतिशत परिवार एहेन अछि जेकरा नुआ-बिस्तरक अभाव छइ। मुदा अधिकतर परिवार आब ओहेन अछि जेकरा जरूरतसँ बहुत बेसी कपड़ा-लत्ता छइ। कहुना-कहुना तँ बीस जोड़सँ बेसी कपड़ा अपनो घरमे अछि। तखन ई कोन बहाना भेल जे छठिक खरना-ले 'ऐँठ साड़ी' उपयोग नइ हएत। दू साए रूपैआसँ सौंसे पाबैन हएत, तैठाम ऐ खर्चक माए-बाप के भेल?"

भौजीक मनक बात बुझि गेलौं तँए असथिरसँ हुनका कान लग अपन मुँह लऽ जा फुसफुसा कऽ कहलयैन-

"जेहेन अहाँक लूरि-बुधि अछि तेहेन अपने ने जीवन-बसर करब आ जेहेन हुनकर माने अहाँक पुतोहुकेँ छैन तेहेन ओ अपने ने जीती। तइले अनेरे मगजमारी केने की फैदा।"

जहिना नढ़ियाक बोल नढ़िया, सुग्गाक बोल सुग्गा, हंसक बोल हंस आ कुत्ताक बोल कुत्ता परेख बाजए लगैए तहिना हमर बोल परेख किसनी भौजी कहलैन-

"कखन हमर पनचैती करब?"

कहलयैन-

"ई पनचैती थोड़े छी, छी तँ ठट्ठा। पाबैनक प्रात पनचैती हएत।"

बन्ठा कक्काक बात सुनि कहलयैन-

"तखन तँ ओमहरसँ अहाँक जान छुटिये गेल। आब, एकटा प्रश्न हमरो अछि। सूर्यक अर्घ, छठि परमेसरी पाबैन केना कहबैए?"

बन्ठा काका बजला-

"तोरो प्रश्नक जवाब विस्तारसँ ओही दिन, माने जइ दिन किसनी भौजीक पनचैती हेतैन, देबह। अखन एतबे बुझह जे आसिनक आश आ कातिकक बासक बीचक ई बीचमानि छी।"

शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

[1] डोर भेल जे जेना बैजनाथ, जगरनाथ इत्यादि स्थान जेबाक संकल्पित विचार।

[2] तीर्थक घटी-बढ़ीक कारण कोनो साल ऐगला मौसमकेँ पकड़ैमे देरियो होइए आ कोनो साल लगले पकड़ा जाइए।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.मिथिलेश कुमार सिन्हा- "चुप्पी" (बीहनि कथा) २.प्रणव झा- एकटा संस्मरण आ एकटा खिस्सा

१

मिथिलेश कुमार सिन्हा

"चुप्पी" (बीहनि कथा)

ओ'अपन बहिन'क ओत' आएल छलीह. हमर घर आ ओकर बहिन'क सासुर एकहि ठाम अगल-बगल मे छल. हम स्नातक'क फाईनल परीक्षा द' गाम आएल छलहुँ. हमर खान-पीन ओकरे बहनोई , जे हमर जिगरी दोस्त छैथि, हुनके ओहिठाम होईत छल. दोस'क साढि, तं स्वाभाविके छै....किछु हंसी-मजाक होइते छलै.
'ओ' लगभग मास दिन रहलीह..कहिया हमरा दुनू केर बीच प्रेम'क बीज अंकुरित भेल, नहि कही ? समय बीतलोपरान्त ओकर जेठ भाय ओकरा ल' जबाक वास्ते आवि गेलैथ. मोन भकदन क' गेल....

हमहुँ कहलहुँ जे हमरो दडिभंगा तक जेबाक अहि चलू हम ओत' धरि साथ रहब, किछु काज अहि क' वापस आबि जाएब !
बस सं विदा भेलहुँ. किछु आगू चलि क' एकटा चौक पर बस'क डरेभर,कंडक्टर, खलासी आ आन यात्री सभ चाय-नाश्ता कर' लेल उतरि गेलाह संगहि ओकर भाय सेहो उतरि गेलाह.
हम बसे मे....

किछु क्षण मौन रहलाक उपरांत हम ओकर सीट लग आवि पुछलिये :
"की, चलिए जेबै ?"'
ओ' मौन....
"हम मोन आएब की नहि ?"
फेनो चुप.....
ओ' हमरा दीस नोर सं भरल आँखि सं देखलिह....
ओहि काल हमरा दुनू के कोनो होश नहि छल की केओ आनो देख-सुनि रहल छै....ओ सभ की सोंचैत हेतैक ?
प्रेम'क आवेग मे मोन आंधर भ'जाएत छै ने ! सैह आब बूझि पड़ल.
"आब कहिया भेंट हाएत ?"
ओकर आंखि टूभ-टूभ लाल....ओढनी सं आंखि'क पोर पोछैत एतवे बजलिह,
"जे मोन होइए, भैया सं कहि दियौ ने...?"
ताबें बस'क खलासी सभ यात्री कें बस मे बैस' लेल हल्ला कर' लागल. हमर मोन'क बात मोने रहि गेल, किछु बाजि नहि पौलहुं.....

पन्द्रह'म वर्ष'क उपरांत, हमरा एक विवाह समारोह मे शामिल होव' केर मौका भेंटल. एकसरे छलहुँ. मोन भेल किछु पानीपूड़ी'क आनंद ली. बढि गेलहुं ओहि काउंटर लग.
भीड़ मे घूसू कोना...? 'गर खोजैते रही कि आवाज आएल,
"की हाल,कखन औलहुं ?"
चौंकि पुछलियैह "के...?"
"हम.... हमहूं त' अहां के नहि चिन्हलहुं, उ त' भौजी कहलथिन्ह कि अंही छियै ! इ दाढी मे चिनहिये मे ने अबैत छी.... एहि मे अखैन धरि स्मार्ट
लागैत छी !" एक्के सांस मे बाजि गेलीह.
"ओहहो अहां....
हमहूं नहि चिन्ह पौवलहुं, आब त' अहूं मे परिवर्तन आबि गेलैए....''

हम बजलियै. "मोन छी ने ?" ओ' पुछलकै.
"एह.... एहो विसर' वाला छै ?"
"हां, अपनेक ओ बस'क चुप्पी आई धरि मोन मे सूईया सन चूभि रहल यै...."
"अहां अपन वियाह सं खुश छी ने ?" हम एहि मुद्दा सं फराक होम' लेल पुछलियैह.

"हां,तन सं तं खुब्मे, मोन सं त' नहिए ने ....!"
बाजि, अपन नोर पोछैत
फुर्र भ' गेलिह.

मोन में हथौड़ा'क चोट सन लागल....
कंठ सूख' लागल....
पानि पर पानि गटागट पीवोपरांत मोन शांत नहि भेल. वापस होटल मे आबि, विस्तरा पर धम्म सं खसि पडलहुं. नीन जेना बिला गेलैए टुकुर-टुकर नचैत पंखा कें निर्विकारें घुरि रहल छी.

२

प्रणव झा

एकटा संस्मरण आ एकटा खिस्सा

१

राजा खानदान (संस्मरण)

बात आठ नौ बरष पहिने के अछि । एक बेर हम अपन पिसियौत भैया-भौजी संगे दरिभंगा घुमय के योजना बनेलौं। भोरगरे उठि क नहा-सोना कऽ तीनु गोटे टेंपू से दरिभंगा के लेल बिदा भ गेलहुं। ओतय पहुंचि क सर्वप्रथम श्यामा माई के दर्शन केलहुं । श्रद्धालु हमर आ गृहणी भौजी के मोन दर्शन में भाव विभोर भ रहल छल, मुदा कामरेड भैया के ओहि दर्शन में दार्शनिक तेज प्रज्वलित भ गेल छलैन। ओतय से निकलला पर बाट में ओ बजलाह जे ईह, ऐ मंदिर प्रांगण के वातावरण बड़ड पवित्र अछि मुदा बुजह जे इहो जे छह से सामंतवादऽक प्रतीक छह। हम पुछलियैन जे से कोना यौ भायजी?

भायजी बजलाह जे देखह ई मंदिर जे अछि से महराज रामेश्वर सिंहऽक चिता पर बनायल गेल अछि। "हमर चितो पर लोक पूजा अर्चना करय" ई सामंती सोच नै अछि त की अछि?

हम बजलहुं जे ईह! अहुं भायजी कहां के लिक कहां भिडा दैत छी। ऐ पर भायजी बजलाह हौ हम ठीके कहैत छियह। एतबे में भौजी प्रांगण के सभटा छोट-नमहर मंदिर, गाछ-वृक्ष आदि के पूजा क के आबि गेलिह आ बजलिह जे आब चलै चलू आगा। हमरा श्यामा माई के प्रसाद 'लड्डू' बड़ड पसिन्द छल हम बजलहुं जे भौजी प्रसाद त द दिय ने। तै पर ओ बजलिह जे एह एतेक दूर सपैर कऽ एलहुं अछि त सभटा मंदीर में पूजा-पाठ केला के बादे खायब। ऐ पर हम की बजितहुं जे आधाटा लड्डू त हम पंडितजी से मांगि क पहिनेहे खा नेने छी! चुपे रहय में भलाई बुझलहुं आ सभ गोटे आगा बढि गेलहुं । आगा मनोकामना मंदिर में पूजा करैत, लक्ष्मिश्वर निवास(संस्कृत विश्वविद्यालय), नरगौना पैलेस, मिथिला विश्वविद्यालय के कैंपस घुमैत, फ़ोटो खिंचबैत दरभंगा महराजऽक किला पहुंचलहुं जहां से आगा बढैत कंकाली मंदिर प्रांगण में जा पहुंचलहुं ।

ओतय श्यामा माई मंदिर प्रांगण सन चहल पहल नै छल, मुदा वातावरण ओतुको दिव्य बुझना गेल छल। एकटा छोट-छिन दोकान पर दू टा छैंडा प्रसाद बेच रहल छल । प्रसाद किनला के बाद मंदिर में ढुकलहुं त

देखल जे मंदिर में त केयौ अछिए नै। तखने हमर नजैर एकटा पुरूष पर पडल, जिनकर उमैर गोटैक पचपन बरख हेतैन । गंजी-धोती पहिरने, माथ पर चानन ठोप, गौर वर्ण पर आर शोभा बढा रहल छलैन। गंजी-धोती कतौ-कतौ खोंचायल सन छल मुदा उज्जर बग-बग छल। हम पुछलियैन जे की यौ महराज अहिं पंडित जी छी ? ओ बजलाह जे छी त हमहुं पंडिते मुदा ऐ मंदिर के पुजारी नै छी । हम अपस्यांत हौइत बजलहुं जे की भ गेलै त। छी त अहां पंडिते ने से कनि हमरा सब के प्रसाद चढाब के अछि से अहां चढा ने दियौ।

ऐ पर ओ बजलाह जे बौआ चढा त हमहुं सकै छी मुदा "ककरो हक नै मारबाऽक चाही"। हमहुं राजे खानदान के छी, ऐ मंदिर के सेवा करैत एलहुं अछि। अहां सब पांच मिनट बैसै जाउ पुजारी जी आबि जेताह ।

बैसे के त पड.बे करितै, हम सब बैसियो गेलहुं, मुदा आसू भायजी त विशुद्ध पंचोभिया ब्राम्हण छलाह, गोटगर टीक-ठोप बला। ओ ओय ब्राम्हणदेव से शास्त्रार्थऽक मुद्रा में बजलाह जे औ जी अहां कोन राजा खानदानऽक छी । औइनवारि वंश के छि आ की खंडवाला वंश के छी। ओ बजलाह जे हम राजा महेश ठाकुरऽक वंशज छी। मुदा आसू भायजी एतबे से कहां मानय बला छलाह। ओ यक्ष जेना सवाल पर सवाल करैत गेलाह आ ओ ब्राम्हणदेव युधिष्ठिर जेना सभटा सवालऽक यथोचित जवाब दैत गेलाह। ऐ तरहे लगभग आधा-पौन घंटा बीत गेल छल। अंततोगत्वा आसू भायजी हुनका से बजलाह जे अच्छा चलू राजा महेश ठाकुरऽक खानदान के वंशावली बताउ त। ओ पंडितजी, रटाओल सुग्गा जेना धुरझार बाजय लगलाह राजा महेश ठाकुर, राजा गोपाल ठाकुर, राजा परमानंद ठाकुर, राजा सुभंकर ठाकुर, राजा पुरषोत्तम ठाकुर, नारायण ठाकुर, सुन्दर ठाकुर, महिनाथ ठाकुर, निरपत ठाकुर, रघु सिंह, बिष्णु सिंह, नरेन्द्र सिंह, प्रताप सिंह, माधो सिंह, छत्र सिंह बहादुर, रुद्र सिंह बहादुर, महेश्वर सिंह बहादुर, लक्षमेश्वर सिंह बहादुर, रामेश्वर सिंह, कामेश्वर सिंह................एक स्वरे ई नाम-पाठ सुनि क हमरा नजैर के सामने ओ वंशव×क्षऽक चित्र नाचै लागल जे हम दरिभंगा के म्युजियम में एकबेर देखने रहि।

ऐ उत्तर के सुनला के बाद आसू भायजी ठीक ओहिना आस्वस्त भेलाह जेना अर्जुन के द्वारा अपन दसो टा नाम बतौला पर 'उत्तर' विश्वस्त भेल छलाह जे किन्नर वेशधारी हुनकर सारथी आन केयौ ने 'अर्जुने' थिकाह।

एही बीच में घंटी डोलबैत संठी सन कायाबला पुजारीजी सेहो आबि गेल छलाह। हम सब भगवती के दर्शन केलहुं, भौजी पूजा केलिह आ पुजारीजी प्रसाद चढौलाह, दान-दक्षिणा दैत हम सब ओत से विदा भेलहुं आ कि पाछां से ओ ब्रामणश्रेष्ठ टोकलाह जे "हे बाउ, हमरो किछु देने जाउ, दू दिन से हम भोजन नै केलहुं अछि"।

ऐ पर हम कनि विस्मयित भेल छलहुं। ता भौजी प्रसाद बला डिब्बा से ४ टा लड्डू निकालि क हुनका हाथ में थम्हा देलखिन आ हमहु अपन पर्स से एकटा दसटकिया निकालि कऽ हुनका हाथ के थम्हा देलियैन। ऐ

के बाद ओ हमरा सब के खूब रास आशीर्वाद दैत विदा केलाह। ओतय से विदा होइत हमरा मोन मे दू टा बात गूंज लागल छल "हमहु राजे खानदान के छी", "ककरो हक नै मारऽ के चाही" ।

२

फेसबुक केऽर चक्कर (मैथिली खिस्सा)

कुशल जी, नोयडा के एकटा बहुराष्ट्रीय कंपनी में मैनेजर छलाह। जहिना नाम कुशल तहिना ओ अपन पेशा आ बेक्तिगत जिनगी के सब कार्य में कुशल छलाह। समाजिकता सेहो छलैन्ह आ समाज सं जुडल रह के शौख सेहो। महानगरिय जिनगी के एकटा साईड इफ़ेक्ट इ अछि जे एतुका जिनगी के भागाभागी में अहां नहियो चाहैत समाज से कटि जायत छि!

आधुनिक काल में मनुक्खक जिनगीशैली मे तकनिकि के बड्ड योगदान अछि। एहि क्रम में तकनिकि, भागादौरी में व्यस्त मनुख के समाज सं जोडै में सेहो मददगार साबित भऽ रहल अछि । जतय एक तरफ़ नेता से लऽ के अभिनेता सब भरि दिन ट्वीटर पर टिटियाइत रहै अछि ओतै आनो आन लोक सभ फ़ेसबुक आ व्हाट्सएप के मदैद सँ अपन बिछुडल समाज-समांग आ संगी सब सँ जुडल रह के नया प्रयोग में लागल छैथ। एहन लोक में कुशलजी के नाम अग्रणी श्रेणी मे राखल जा सकै अछि कियेक त हुनका फ़ेसबुकिया कीडा खुब कटलकैन अछि। दिन भरि में देखल जाय त २४ घंटा में ओ १८ घंटा त निश्चिते फ़ेसबुक पर ओनलाईन भेट जेताह। नाना प्रकार के पोस्ट करैत रहताह राजनीति सँ ल के समाज तक आ फ़ूल-पत्ति से ल के जंगल-झाड तक । हुनका अंदर दिनोदिन ई फ़ेसबुकिया कीडा के संक्रमण बढैत जा रहल छलैन्ह जेकर परिणाम ई भेल छल जे हुनकर कनियाँ के आब ई आदैत से किछु असोकर्ज जेना होमय लागल छल । दोसर गप्प जे ई किछु समाजिक आ क्षेत्रिय समस्या पर सेहो अपन प्रतिक्रिया ठांय पर ठांय दैत छलाह, जे किछु गोटे के अनसोहांत बुझना जाय छल। ऐ बातक शिकायत सेहो इनबोक्स में खूब भेटय छलैन्ह । चलु जे से मुदा दोसर गप्प के गैण बुझि पहिल गप्प के प्रमुख मानल जाय।

अहिना एक दिन घर में ऐ फ़ेसबुकिया रोग के ल के खुब महाभारत मचल। कनियाँ हिनका खुब सुनौली। विवाह स ल के आई धरि के जतेक उपराग छल सभटा मोन पारि पारि के ओय सभसं कनियाँ हिनका पुन: अलंक्रित केलिह।

उपरागक एहन दमसगर डोज सँ कुशलजी के मोन अजीर्णता के शिकार भ गेल। हुनका अतेक रास गप्प पचलैन नै। ओ अपन मोबाईल में से फ़ेसबुक के अनइंस्टल करै के कठोर फ़ैसला लेलाह। हुनका लेल ई फ़ैसला लेनाई नोटबंदी के फ़ैसला से कम कठोर नै छल मुदा जेना सरकार के नोटबंदी में देश कऽ हित बुझना गेल छल तहिना हिनको अखुनका परिस्थिति में फ़ेसबुक बंदी में अपन हित बुझना गेल छल । तथापि फ़ेसबुकिया कीडा के असर अतेक जल्दि कोना जा सकै छल से ओ फ़टाफ़ट अपन मोबाईल निकाललाह आ लगलाह अपन फ़ेसबुक स्टेसस अपडेट में "पब्लिकक भारी डिमांड पर हम काल्हि सौं फ़ेसबुक छोडि रहल छी, ताहि लेल जिनका जे किछु कहबा-सुनबा के होइन से आई अधरतिया धरि कहि सकै छी ! "

तकरा बाद त अधरतिया तक पोस्टऽक जेना 'बाढि' आबि गेल होय। आ तहिना 'गिदरऽक हुआ-हुआ' जेना ओय पोस्ट सभ पर कमेंटऽक हुलकार होमय लागल छल। जौं जौं समय बितल जाय छल कुशल जी के मोन कोना दैन करय लागल छल । मुदा एहि बेर फ़ेसबुक बंद करय के प्रण ओ कदाचित भीष्म पितामह के साक्षी मानि के लेने छलाह आ कि कनियाँ के शब्द वाण हुनका तहिना घायल केने छलैन जेना अर्जुन के वाण कुरुक्षेत्र में भीष्म पितामह के । परिणाम ई भेल जे अंततः ओ फ़ेसबुक बंद क देलाह।

मुदा ककरो एने-गेने की जिनगी क चक्र रूकल अछि! एहिना फ़ेसबुको के चक्र हिनका अनुपस्थितियों में अपन गति से चलिते रहल। यद्यपि किछु निकटवर्ती सर-समांग सब से वाया व्हाट्सएप विमर्श क सिलसिला चालुए छल। ऐ घटना के किछु दिन बितल हैत की एक दिन कुशलजी के एकटा फ़ोन आयल। 'हेल्लो!'

"हें..हें... हें... मनेजर साहब यौ... .नमस्कार"

"नमस्कार। अहां के?" प्रतिउत्तर में कुशल जी बजलाह।

" हें..हें... हें... नै चिन्हलौं? आह! चिन्हबो कोना के करब, पहिने कतौ भेंट भेल हैब तखन की ने। हम अहांक फ़ेसबंधु छी। नाम अछि पुष्पेन्द्रनाथ चौधरी। पुष्पेन्द्रनाथक अर्थ भेल पुष्प क राजा अर्थात कमल आ हुनकर नाथ अर्थात कमलपति भगवान विष्णु । हें..हें... हें..." अपन साहित्यिक परिचय दैत ओ फ़ेर सँ बलहंसी हंसय लगलाह ।

कुशलजी किछु याद करबाक चेष्टा करैत फ़ेर बजलाह "ओह। अच्छा। कहु की समाचार।"

" हें..हें... हें... हमहु अत्तै सोनीपत में रहै छी। अहांक फ़ेसबुक पोस्ट सब सँ बहुत प्रभावित छी। समाज में अहाँ सन लोक सब के बड्ड आवश्यकता अछि। अतएव अहांके फ़ेसबुक छोड़ला से हम बहुत दुखित छी। अहाँ के अंतिम पोस्ट सब हम देखने छलहुँ । हम जनैत छी जे अहांक बात सब किछु गोटे के लौंगिया मिर्चाई सन लगै छलैन । आ एहने लोक सब के धमकी के कारणे अहाँ फ़ेसबुक छोड़लहुं अछि। मुदा जहिया तक हमरा सन लोक जीवित अछि अहाँ के डराय के कोनो आवश्यकता नै अछि। एहि संबंध में हम अहाँ से भेंट क के विमर्श करै चाहै छि। बड्ड तिकरम से अहाँ के नंबर उपलब्ध भेल अछि। आई हम नोयडा आबि रहल छि आ अहाँ से भेंट करै के अभिलाषी छी ।"

"मुदा हम आफ़िस क काज में कनि व्यस्त छी" कुशल जी बजलाह

"आहि आहि आहि। बस किछु मिनट के भेंट चाहै छी। हम बस एक घंटा में पहुंच रहल छी।" ई बजैत उत्तर के प्रतिक्षा केने बिना ओम्हर से फ़ोन राखि देल गेल ।

फ़ोन राखि के कुशलजी पुन: अपन कार्य में व्यस्त भ गेलाह। करीब डेढ घंटा के बाद रिसेप्शन से फ़ोन आयल "सर कोई पुष्पेंद्रनाथ चौधरी आपसे मिलने आए हैं ।"

"ठीक है भेज दो" कहि कुशलजी फ़ेर अपन काज में व्यस्त भ गेल छलाह।

दू मिनट बाद अर्दली एकटा थुलथुल काय व्यक्ति के संग नेने हाजिर भेल। उजरा धोती, ताहि पर से घाम में लभरायल सिल्क के कुर्ता, लंबा टा चानन केने ई व्यक्तित्व भीडो में आराम सँ चिन्ह में आबि सकै छैथ से इ कियौ मैथिल थिकाह।

"आउ बैसु" अतिथि के स्वागत करैत कुशलजी बजलाह।

आह मैनेजर साहेब आइ अहाँ स भेट भेने हमर जिनगी धन्य भ गेल। कहिया से नियारने छलहुँ, आइ जा के अहाँ पकड़ में एलहुँ अछि। अच्छा से सब जाय दिय, पहिने ई बताउ जे अहाँ फ़ेसबुक किये छोडलहुँ अछि? अहांके भाषा बचाउ आन्दोलन बला किछ कहलक अछि आ कि शिथिला राज्य बला धमकेलक अछि, आ कि शिथिला हुरदंगिया सेना बला सब घुरकेलक अछि? अहाँ बस एक बेर नाँ लिय बाँकि हम देख लेब। हम सभटा बुझै छि एकर सब के खेल-बेल। यौ महराज हमहुँ बीस बरख सँ एम्हरे रहै छी आ दिल्ली के गोट-गोट कालोनी सब जै में मैथिल-बिहारी सब बसल अछि,में पैठ बनौने छि। इलाका के छांटल बदमाश सब हमरा नाँ से धोती... धोती त खैर पहिरैत नै जाय अछी धरि पैजामा में लघी क दैत अछि। एहि प्रकारे चौधरी जी आधा-पौना घंटा तक खूब हवा-बिहारि देलखिन ।

जखन हवा-बिहारि के क्रम किछु रुकले तखन गप्पक दिशा मोड़ैत चौधरीजी बजलाह: "हें..हें... हें... अहां भोजन त कैये नेने हैबैक?"

आब चरबजिया बेरा में एहन प्रश्न के की उत्तर देल जाय! अस्तु कुशलजी एहि प्रश्नक उत्तर एकटा प्रश्ने से देलाह "कि अहां भोजन नै केने छी की?"

"आह। हम त घरे सं भोजन क के विदा भेल रही। आब त जे हतै से नस्ते-पानी हेतै की। हमर घरनी त जलखै संगे बांन्है छलखिन । मुदा हम मना करैत कहलियैन जे मनेजर साहेब बिना नस्ता करेने मानथिन्ह थोरेक ने। से अनेरहे हमरा ई सब फ़ेर घुरा क नेने आबय परत।"

चौधरी जी के आशय बुझ में कुशलजी के कोनो भांगट नै रहैन। तथापि ओ मोने मोन किछ राहत अनुभव करैत सोचय लगलाह जे हाथ एहिना टाईट अछि, एहन में यदि जलखै भरि कराक हिनका सँ पिंड छूटै त सौदा महरग नै अछि।

एहि निर्णय पर पहुंचैत ओ चौधरीजी से बजलाह। जे चलु तखन किछु जलपाने क लेल जाय। हुनका संग नेने कुशलजी बगल क एकटा रेस्टोरेंट में पहुंचलाह।

ओतय बैरा के बजाय ओकरा दू टा सिंहारा, दू टा लालमोहन आ दू टा चाह क आर्डर दैते छलाह आ की चौधरी जी बीच में कूदैत बजलाह " इह! एकटा जमाना छल जे एक प्लेट सिंहारा माने दू टा सिंहारा बुझल जाय छल। आ ताहि पर से उप्पर से परसन जतेक लेल जाए तकर हिसाब नै। आ आब त एकटा सिंहारा के फ़ैशल आयल अछि। जे कहु, हमरा सन लोक के त एकटा सिंहारा से मोन छुछुआएले रहि जाय अछि।

आ लालमोहन के की पुछल जाए। बरियाति सब में त गिनती के कोनो हिसाबे नै रहै छल। खौकार सब के बाजी लागय त सै, डेढ सै, दू सै टिका दैत छल। मुदा आबक जुग के की कही!"

ई बजैत ओ बैरा के चारि टा सिंहारा, २० टा लालमोहन आ दू कप चाह क आर्डर क देलखिन, आ व्यापार कुशल बैरा सेहो कुशलजी द्वारा कोनो संशोधन के इंतजार केने बिना आर्डर ल के निकलि गेल। पांच मिनट बाद हिनकर सभक मेज पर सिंहारा आ लालमोहन के पथार लागि गेल छल।

कुशल जी नहु नहु चम्मच काँटा स तोरि तोरि सिन्हारा आ लालमोहन खाय लगलाह आ ओम्हर कुशलजी बुलेट क गति से सिन्हारा आ लालमोहन के सद्गति देबय लगलाह। जा कुशलजी संग दैत २ टा सिन्हारा आ २ टा लालमोहन खेलथिन्ह टा बचलाहा सबटा माल चौधरीजी के पेट में अपन जगह पाबि गेल छल। चाह क अंतिम चुस्की लैत चौधरीजी बजलाह "ईह! इ नास्ता की भेल बुझू जे भोजन भ गेल।"

"बेस तखन आज्ञा देल जाउ।" बैरा के बिल के बदला में पांच सौ के नोट पकराबैत कुशल जी बजलाह।

"हें.. हें ..हें ... हें आब त अपने घरे निकलबै की ने। हम सोचै छलहुँ जे एतेक दूर आयल छी आ आई संजोग बनल अछि त भौजियो से एकरत्ती भेंट भैये जैतै त ...हें.. हें ..हें ... हें।" इ बजैत चौधरीजी फेर सं बलहँसी हँसय लगलाह। आब ऐ ढिठाई पर कुशलजी की कहि सकै छलाह! तिरहुत्ताम के रक्ष रखैत मौन स्वीकृत्ति दैत चौधरी जी के संग क लेलैथ आ गाड़ी में बैस घरक बाट धेलाह।

घर पहुंचला पर चौधरीजी कुशलजी के कनियाँ 'चँदा दाई' आ बुतरू सब के बीच रैम गेलाह आ तुरत्ते हुनका बीच में अपन वाक्-कुशलता के धाक जमा देलखिन।

गप्प-सप्प एम्हर आम्हार से होयत माँछ क गप्प पर पहुँचल। चौधरीजी बजलाह "ईह! अहाँक बगले में त छलेरा गाँव में बड़का मछहट्टा लगै अछि. बड़का-बड़का जिबैत रहु भेटै छै. चलु घुरि क अबैछि।" ई बजैत ओ कुशल जी के हाथ धेने बाहर जाय के उपक्रम करय लगलाह।

आब आगाँ के खिस्सा अहाँ अपनहुँ सोची सकै छि। अस्तु रात्रि पहर दिवगर माँछ-भात-दही-पापड के भोजन भेलै। भोरे कुशलजी के छए बजे से एकटा मीटिंग छल बिदेशी क्लाइंट संगे वीडियो कांफ्रेंसिंग पर। ओ पँचबज्जी भोरे ऑफिस निकली गेलाह आ एम्हर चौधरी जी आठ बजे तक चद्दर तानि क फोंफ कटैत रहलाह।

उठला पर चाह-चुक्का संगे फेर सं दमसगर नस्तो भेलै। चलै काल ओ कुशलजी के कनियाँ के कल जोरि के क्षमायाचना के भांगट पसारैत बजलाह "हें ..हें...हें... भौजी तखन आब आज्ञा देल जाउ। हमारा कारणे जे अहाँ सब के कष्ट भेल होयत तकरा लेल क्षमाप्रार्थी छि हें ..हें...हें..."

"नै नै ऐ में कष्ट के कोन गप्प छै। अतिथि सत्कार त हमर सबहक परम कर्तव्य थीक" ई बाजि चँदा दाई हिनका जेबाक आशा में केबार लग ठाढ़ भ गेल छलीह मुदा चौधरीजी एक बेर फेर किछु संकोच करैत आ बलहँसी हँसैत बजलाह "हें ..हें...हें...जै काज से नोयडा आयल रही तै में किछु पाई के खगता भ गेल।

मैनेजर साहब अपनहि रहितैथ तखन त किछु बाते नै रहितै जतेक कहतियन पुराइये दितथिन मुदा ओ त भोरे भोर मीटिंग के लेल निकली गेल छैथ। से दूओ हजार टका जौं भ जैतै त ...."

चँदा दाई किछु धकमकाइत चौधरी जी के हाथ में एकटा दू हजरिया के नोट थम्हा देलीह।

सांझ में कुशलजी जखन आफिस से घुरलाह त चँदा दाई हिनका हाथ से मोबाइल छीन किछ करै लगलीह। कुशलजी के भेलैन जे हौब्बा! आब कोन काण्ड भ गेलै। कनिके काल में कनियाँ हिनका हाथ में मोबाइल दैत बजलीह "लिय अहाँक मोबाइल में फेसबुक इंस्टॉल क देलौं अछि ... आब अहि पर करैत रहु शोशल नेटवर्किंग।"

इति श्री !

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

३.१. अम्बिकेश कुमार मिश्र-२ टा पद्य

३.२.१.डा जियाउर रहमान जाफरी- रुबाइ २.**आशीष अनचिन्हार-** ४ टा गजल

३.३.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- ४ टा गजल

३.४.कुमार रवि-वर्षा मेघक संग एलैय

अम्बिकेश कुमार मिश्र

२ टा पद्य

१

सुतारु

बौवा रहलै सुतारु

काटि रहलै अहुरिया

अपन' स्वार्थक पूर्ति लय'

बिधुआयल आत्मा आ हॅसैत मुँहस'

दबबैतै हाथ-गोर

छातिमे नून आ मुँहमें चिन्नी धरने

वासना, लोभ, घृणा स' भरल'

भजिया रहलै कोनो छाह

उदर-पूर्तिक पश्चात

डकरिक' अनकर सपना आ श्रृंगार

दिनक' इजोत' मे चाटि रहल' अछि

गन्हाइत विष्ठा लागल योनि

चूसै लय तत्पर अछि

मूतस' भरल स्तन

कंठ मोकने वासनाक' भूत

जैव प्रक्रियामे मस्त

हँसि रहलै अपन वीरतापर

दुनियाक सबसॅ पैघ तनाशाहक

सबसॅ दुर्दांत हँसि

गाबि रहलै अपन वीरताक' गीत

सट्टेअन्हरा गेलै स्वार्थी

२.

<u>मिथिलाक आह</u>

कानि रहल छथि माऽए मिथिला

हलधर जननी दुःखमे अबला,

दिन-दुर्दिन हालत छनि खस्ता

अपने पूत न पाबैन रस्ता|

कानि रहल छथि अपन व्यथापर

ओँघरा रहली जथा-पथापर,

आँखि नोर लेर मुँह बहकल

रस-रस तुषदह मोनो लहकल|

गोचर डाटि पाएर फुलाबैन

मार्कण्डय लह पीठ जराबैन,

बिन काराअंतड़ी छनि सटकल

मुँह पीयर प्रेम बिन लटकल|

तन रूचि आई सैकत सन हहरल

वयन मसृण लोल नै ठहरल,

मही पंके आई वारि बिआरी

निशा भेर गाबै छथि नचारी|

चार' मकई जकरा लए खोंसल

जकरा उरमे साटिक' पोसल,

आई ओबनल आन केर पट्टा

एकरास' निक हाथक' लट्टा|

अम्बिकेश कुमार मिश्र

गाम+पोस्ट-सतघरा ,बाबूबरही (मधुबनी)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.डा जियाउर रहमान जाफरी- रुबाइ २.आशीष अनचिन्हार- ४ टा गजल

१

डा जियाउर रहमान जाफरी

रुबाइ

जिनगी अपन कम नहि अछि
आँखि हमर ते नम नहि अछि
विश्व टिकल अछि प्रेमक संग
गोली बारूद बम नहि अछि

डा जियाउर रहमान जाफरी (माफ़ी, आस्थावा, नालंदा, बिहार 803107)

२

आशीष अनचिन्हार

४ टा गजल

१

जे अछि जयकार विरोधी

से अछि दरबार विरोधी

ई मानू या नै मानू

सभ छै अधिकार विरोधी

संसारे खातिर देखू
भेलै संसार विरोधी

खाली संगे भरलाहा
बनतै अवतार विरोधी

चारू दिस बंदूक मुदा
कहलक हथियार विरोधी

सभ पाँतिमे 222-222-2 मात्राक्रम अछि
दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

२

रस रंग साधना काम्य हमर
मधु सिक्त वासना काम्य हमर

अछि हियमे राखल नेह मधुर
विष रिक्त भावना काम्य हमर

छोट छीन जीवन रहै मुदा
सही प्रस्तावना काम्य हमर

अहाँ जपैत रहू विनाशकेँ
नीक संभावना काम्य हमर

संग रही स्वस्थ रही अतबे
छोट शुभकामना काम्य हमर

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि (बहरे मीर)
दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

३

कियो हँसलै कोनो बातपर

कियो कनलै कोनो बातपर

कियो उठि गेलै बड़ ऊँच आ

कियो खसलै कोनो बातपर

कियो चुप्पे रहलै देर धरि

कियो बजलै कोनो बातपर

कियो पाथर बनि जिंदा रहल

कियो गललै कोनो बातपर

कियो रहलै तहिआएल सन

कियो भजलै कोनो बातपर

सभ पाँतिमे 1222-22-212 मात्राक्रम अछि

४

नौकर बनलै गरीब बच्चा

होटल मोटल ईंटा भट्ठा

रसगुल्ले सन के जीवन छै

दुइए दिनमे खट्टा खट्टा

अपना अपनी केलहुँ बड़ाइ

अपने कहलहुँ अच्छा अच्छा

अइ नेहक मारल हमहूँ छी

दुनियाँ लागै फिक्का फिक्का

किछु परसादी हमरो भेटल

हमहूँ खेलहुँ फक्के फक्का

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि

दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

४ टा गजल

(1)

हुनका सोझाँ लिबल ने भेल

'प्रेम करैछी' कहल ने भेल

हमरा मोनक चैन चोरेलौं

मुदा अहाँकें जहल ने भेल

छलै अशरफी ओत्तै गाडल

हमरा जैठाँ रहल ने भेल

केश माथमे जते,तते दुःख

गन' चाहलौं गनल ने भेल

ठोहि पाड़िक'कियो कनै छल

घ'र बंद क' पडल ने भेल

नोरहिसं लिखने छलीह ओ

चिट्ठी हमरा पढल ने भेल

बिना बहरके पद्य 'अनिल'

कविता भेलै गजल ने भेल

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(2)

युद्ध करू जुनि शोक करू

हे अर्जुन जुनि सोच करू

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रमे छी

पापक तीब्र विरोध करू

मित्र कियो नै शत्रु कियो नै

बुझियौ और संतोष करू

जीतू भोगू सुख धरतीक

अथवा स्वर्गक भोग करू

अहाँ आतमा अविनाशी छी

तन आ मोनक योग करू

सत्य और शांतिक जय हो

नूतन नित्य प्रयोग करू

जय हो जय हो पवित्रता

आउ एखन उद्घोष करू

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

(3)

वेद-पुराणक महिमा सभटा बूझल अछि
मुदा लोक हमरे करतबसं रूसल अछि

राति आ दिन ओझराएल रहै छी हम जैमे
इहो जाल त अपनहि हाथक बूनल अछि

भूमि-भवन गहना-गुडिया एफ डी सभटा
सोचि रहल छी की अरजल की लूटल अछि

हृदय कहैए ई अन्हार हटतै एकदिन
सपता-विपताकेर कथा सभ सूनल अछि

जे जागल अछि ओकरा खातिर भरि दुनिया
'अनिल' ओकर की जे सपनेमे डूबल अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-17)

(4)

रावणकेर संहार केलौं अपने मनमे
रामक हम दर्शन कयने छी जीवनमे

पढबा-लिखबामे आनंद अबैत रहल

मोन रमल नै कतौ और किछु अर्जनमे

दूर रहैत एलौं सभदिन चौका-छक्कासं

लागल रहलौं शब्दक सागर-मंथनमे

माए बाबू दादी दादा नानी नाना मामी मामा

सभ क्यो छथि हमरा संगे शुभ चिंतनमे

कोना बिसरबै राति दिसंबर सोलहके

शाप सुनै छी निरभयाक ओइ क्रंदनमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कुमार रवि
वर्षा मेघक संग एलैय

वर्षा मेघक संग एलैय
तकली काटैत चरखा चललैय
आष करैत विस्तार
पोखैर स खाई के देखी
लागैय छै केहन पोखैर बहार
 वर्षा मेघक संग एलैय
हैर गेल ओ पीठ देखा क
भ्रमर संग केलक बिचार
मकड़ा जाल क बुनि के

कस्ती डुबेलक माँझधार
वर्षा मेघक संग एलैय
गाँम घर उजैड़ी के
बिहैर घर बसेलक
मांथक तौला फोरी क
पनघट अलग बनेलक
वर्षा मेघक संग एलैय
नक्शा चौहद्दी उल्टा क
छोड़ि रवि के संग
अपन ढोल तुहीं बजा
खूब पि क भंग
वर्षा मेघक संग एलैय
दीप जरेलूं रैत म
दिवस भेल हेरान
दु चैर टा सिक्का रैहि गेल
बाँकी गिरल सुनसान
वर्षा मेघक संग एलैय

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु

नीलकमल

नीलकमल

जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रकाशक...

Nilkamal

Collection of Short Stories in Maithili Language
by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

पोथीक मादे

हम दरभंगामे रही। कैलाश सर (डॉ. कैलाश कुमार मिश्र) कहलैन (फोनसँ) जे अहाँ अपन पिताजीक एक पोथीक फाइनल प्रूफ फाइल, दू-सँ-तीन दिनक पेसतरे पठाउ। 'मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली'सँ प्रकाशित हएत।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र 'मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली'क परामर्शदात्री समितिमे प्रतिष्ठित सदस्य छैथ। मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक वार्षिकोत्सव मार्चमे होइत अछि। ऐ अवसरपर अनेको कार्यक्रमक मध्य पोथी प्रकाशन एवम् लोकार्पणक जनतब दैत सभ बात कहलैन। खुशी भेल। पोथीक फाइनल प्रूफ फाइल चाही। गछि लेलिऐन। पिताजीसँ सेहो गप भऽ गेल।

एकबेर कैलाश सर हमरा घरपर सेहो आएल छैथ आ पिताजी सेहो हिनका घरपर गेल छथिन। दुनू बेकतीक बीच भेँट-घाँट छैन, गप-सप्प छैन। इन्द्रधनुषी अकास (कविता संग्रह)क आमुख सेहो लिखने छैथ। गामक जिनगी लघु कथा संग्रहक आ जीवन-संघर्ष उपन्यासक समीक्षा सेहो केने छैथ। बहुत बेसी सिनेह-विश्वास एक दोसरक बीच छैन। मुदा हमरा संग एहेन संयोग अखन धरि नइ बनि पड़ल अछि जे कैलाश सर हम एक-दोसरकेँ सोझा-सामने होइ। ओना, करीब एक दशकसँ दुनू गोरेक बीच फोनसँ बात-चित होइत रहल अछि। भाए जकाँ सभ दिन कैलाश सर सिनेह दैत रहल छैथ। हमहुँ भाय जकाँ बुझै छिऐन। मुदा शुरूए-सँ एकटा टोन जकाँ बनि गेल अछि तँए 'कैलाश भायजी' नै कहि, 'कैलाश सर' कहै छिऐन।

कोन पोथी देल जाए, ऐ लेल पिताजीसँ गप करब आवश्यक। ओना, दूटा पोथी शीघ्र प्रकाशनक क्रममे अछि। पहिल 'लहसन' (उपन्यास) आ 'सुभिमानी जिनगी' (कथा संग्रह)। मुदा दुनू पोथीक घोषणा समाजक (फेसबुकपर) बीच कएल अछि जे 'पल्लवी प्रकाशन, निर्मली'सँ प्रकाशित भऽ ऐगला सगर राति दीप जरय'क 97म आयोजनमे लोकार्पण-वितरण हएत। संयोगसँ हमरा गामेमे मार्चमे ओ गोष्ठी होइबला अछि।

पिताजी कहलैन जे सभ संग्रहसँ एक-एक कथाक एक संग्रह बना पठा

दहुन। आ नाओं रहत- ‘नीलकमल’।

कैलाश सरसँ सेहो गप भऽ गेल। कहलैथ- बहुत सुन्दर। ओना, अपना मनमे छल ‘जगदीश प्रसाद मण्डलक श्रेष्ठ कथा’ पोथीक नाओं राखी। मुदा...।

काजमे लगि गेलौं। पहिल डेग उठैबते एक प्रश्न आगूमे आबि ठाढ़ भेल। बीहैन कथा, दीर्घ कथा आ लघु कथा तीनूक फाइल कम्प्यूटरमे अलग-अलग रखने छी। प्रस्तुत पोथीमे की तीनू तरहक कथा लेल जाए? मुदा ऐ सभमे नै ओझरा काजकेँ आगू बढ़बैत मात्र लघु कथा संकलन करब शुरू केलौं। शुरू करिते एक आरो झमेल आगूमे आबि गेल जे संग्रह सभमे तँ अनेको कथा अछि, कथा संग्रहे छिऐ। एक संग्रहसँ लेब तँ कोनो एकेटा कथा। कोन कथा लेब?

पिताजीसँ फेर फोन करि कऽ पुछलयैन। ओ कहलैन सभ कथाक अपन-अपन महत छइ। आर कए-टा बात कहलैन मुदा निर्णय किछु ने भेल। अन्तमे कैलाश सरसँ पुछलयैन। ओ कहला जे संग्रहक जे चुनिन्दा कथा अछि ओ सभ संकलित करू। भारी आफत आबि गेल। दरभंगासँ आएल छी। थाकल-झमारल छीहे। जेना तंग हुअ लगलौं। मुदा उत्साहो तँ असथिर नहियेँ रहि सकैत अछि। एकाएक जेना शरीरमे ऊर्जा आबि गेल। मन निर्णय कऽ लेलक जे करीब-करीब कथा संग्रहक नाओं तँ एक कथेक शीर्षकसँ अछि। से नहि तँ वएह कथा सभ लऽ लइ छी। सएह केलौं। हँ, जइ संग्रहक नाओं कथाक शीर्षकपर नहि अछि तइ संग्रहक जे हमरा नीक बुझि पड़ल से लेलौं। ओना, पहिल ‘भैंटक लाबा’केँ बनाएल। कारण ऐ कथाक अपन इतिहास रहल अछि। ई कथा लेखकक प्रथम कथा छिऐन। पहिल पोथीक पहिल कथा सेहो छी। तेतबे नहि, प्रस्तुत पोथीक नाओं ‘नीलकमल’क अनुकूल सेहो अछि।

संग्रहमे 32 गोट कथा अछि। अखन धरि 32टा लघु कथाक पोथी छैन-एक-एकटा कथा लेलौं। आ जेना-जेना कथा लिखल गेल अछि क्रमश: तहिना-तहिना संग्रहमे संकलित अछि।

डॉ. कैलास कुमार मिश्रक संग ‘मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली’क समस्त सदस्यगण एवम् अध्यक्ष- श्री नीरज ठाकुरजीक केर प्रति सादर आभार...।

उमेश मण्डल।

निर्मली (सुपौल)

19 फरवरी 2018

कथाक सत्तैर-

भैंटक लाबा
अर्द्धांगिनी
सतभैंया पोखैर
उलबा चाउर
मुसहैन
पतझाड़
सुमति
अप्पन-बीरान
रेहना चाची
गामक शकल-सूरत
समरथाइक भूत
उकड़ू समय
अपन मन अपन धन
पसेनाक धरम
मधुमाछी
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
फलहार
खसैत गाछ
एगच्छा आमक गाछ
शुभचिन्तक
गाछपर सँ खसला
डभियाएल गाम
गुलेती दास
मुड़ियाएल घर
बीरांगना
स्मृति शेष
बेटीक पैरुख
क्रान्तियोग
त्रिकालदर्शी
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
दोहरी हाक
सुभिमानी जिनगी

भैंटक लाबा

पैछला बाढ़ि मोन पड़िते देह भुटैक जाइए। रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइए। बाढ़िक विकराल दृश्य आँखिक आगू नाचए लगैए। घोड़ोसँ तेज गतिसँ पानि दौगैत। बाढ़ियो छोटकी नहि, जुअनकी नहि, बुढ़िया। बुढ़िया रूप बना नृत्य करैत। केकरा कहूँ बड़की धार आ केकरा कहूँ छोटकी, सभ अपन-अपन चीन-पहचीन मेटा समुद्र जकाँ बनि गेल। जेमहर देखू तेमहर पाँक घोराएल पानि, निछोहे दच्छिन-मुहेँ दौगल जाइत। केतेक गाम-घर पजेबाक नइ रहने घर-विहीन भऽ गेल। इनार, पोखैर, बोरिंग, चापाकल पानिक तरमे डुबकुनियाँ काटए लगल। एहेन भयंकर दृश्य देख लोककेँ डरे छने-छन पियास लगलोपर पीबैक पानि नइ भेटैत। जीवन-मरण आगूमे ठाढ़ भऽ झिक्कम-झिक्का करैत। घर खसल, घरक कोठी खसल, कोठीक अन्न भँसल। जेहने दुरगैत घरक तेहने गाइयो-महींस, गाछो-बिरीछ आ खेतो-पथारक।

घरक नूआँ-वस्तर आ बासन-कुसनक संग आनो-आन समानक मोटरी बान्हि माथपर लऽ अपनो डाँड़मे दू भत्ता खरौआ डोरी बान्हि आ बेटोक डाँड़मे बान्हि आगू-आगू मुसना आ पाछू-पाछू घरवाली-जीबछी, बेटी-दुखनीकेँ कोरामे लऽ कन्हा लगौने पोखैरक ऊँचका महार दिस चलल।

अखन धरि ओ महार बोन-झाड़ आ पर-पैखानाक जगह छल, जइमे साँप-कीड़ा बसेरा बनौने, बाढ़ि ओकरा घराड़ी बना देलक।

जहिना इजोतमे छाँह लोकक संग नै छोड़ैत, तहिना बर्खा बाढ़िक संग छोड़ैले तैयार नहि। निच्चाँ पानिक तेज गति आ ऊपरसँ बर्खाक नमहर बून। महारपर मुसनाकेँ पहुँचैसँ पहिनहि बीस-पच्चीस गोरे अप्पन-अप्पन धिया-पुता, चीज-वौस आ माल-जालक संग पहुँच चुकल छल। महारपर पहुँच मुसना रहैक जगह हियाबए लगल। शौच करैक ढलान लग खाली जगह देख मुसना मोटरी रखलक। मोटरी रखि बिसनाइरिक डारि तोड़ि खर्ड़ा बनौलक। ओइ खर्ड़ासँ खर्ड़ए लगल। एक बेर खरैड़ कऽ देखलक तँ मनमे पड़पन नइ भेलइ। फेर दोहरा कऽ खरैड़ चिक्कन बनौलक। चिक्कन जगह देख दुनू बेकतीक मनमे चैन भेलइ। मोटरी खोलि मुसना एकटा बोरा निकालि चारिटा बत्तीक खुट्टा गाड़ि, खरौआ जौड़सँ ओइ चारू खूटकेँ बत्तीमे बान्हि घर बनौलक। दोसर बोरा निच्चाँमे ओछा धियो-पुतोकेँ बैसौलक आ समानो रखलक।

चिन्तासँ दुनू परानी मुसनाक मुँह सुखाएल। एक दिस दुनू बच्चाकेँ देखए

आ दोसर दिस गनगनाइत बाढ़िकेँ। माथपर दुनू हाथ दऽ जीबछी मने-मन कोसी-कमला महरानीकेँ गरियेबो करैत आ जान बँचबैले निहोरो करैत। दुनू बच्चो करवनो बाढ़ि देख हँसैत तँ करवनो जाड़े कनैत। बाढ़िक वेगमे एकटा घर भँसियाएल अबैत देख मुसना बाँसक टोन आ कुरहैर लऽ दौगल। पानिमे पैस हियाबए लगल जे कोन सोझे घर औत। ठेकना कऽ हाँइ-हाँइ पाँचटा खुट्टा ठोकलक। आस्ते-आस्ते घर आबि कऽ खुट्टामे अड़कल, खुट्टामे अड़ल घर देख घरवालीकेँ हाक पाड़ि कहलक-

"हाँसू नेने आउ। घरक समचा सभ उघि-उघि लऽ जाउ।"

घरक ऊपरमे एकटा कुकुर सेहो भँसैत आएल। लोकक सुन-गुन पाबि कुकुर कुदि कऽ महारपर चलि गेल। ठाठक बत्तीमे जहाँ मुसना हाँसू लगौलक कि एकटा साँप लप-दे हाथेमे हबक मारि देलकै। थालमे गड़ल खुट्टा घरक भार नहि सम्हारि सकल। पाँचो खुट्टा पानिमे गिर पड़ल। घर भँसि गेलइ। खूब जोरसँ मुसना कनबो करैत आ हल्लो करैत जे हौ लोक सभ, दौड़ै जाइ जा हौ, हमरा साँप काटि लेलक।

मुसनाक कानब सुनि जीबछी सेहो बपहारि काटए लगल। बपहारि कटैत घरवालीकेँ मुसना कहलक-

"हे गइ दुखनी माए, नाग डँसि लेलकौ। छाती लग बिख आबि गेल। कनीए बाँकी अछि कण्ठ छुबैले। धिया-पुताकेँ हाक पाड़ि कनी मुँह देखा दे। आब नै बँचबौ।"

जीबछी हल्लो करैत आ घरबलाक बाँहि पकैड़ ऊपरो करैत। महारक किनछैरमे पहुँच जहाँ ऊपर हुअ लगल कि दुनू गोरे पिछैर कऽ तरे-ऊपरे निच्चाँमे खसि पड़ल। दुनू परानी भीजल तँ रहबे करए, आरो नहा गेल। मुदा तैयो ओरिया-ओरिया कऽ ऊपर भेल। महारपर आबि जीबछी चुनक कोहीसँ चुन निकालि दाढ़मे लगौलक। साँपक बिख झाड़निहार गाममे एकोटा नहि। मुदा रौदिया अही बेरक दशमीमे चनौरा गहबरमे चाटी सिखने छल। सभ कियो रौदियाक खोज करए लगल।

रौदिया माछ मारैले सोहत लऽ कऽ बाध दिस गेल छल। एक गोरे ओकरा बजा अनलक। अबिते रौदिया सोहत कातमे रखि हाथ-पएर धोइ मुसना लग आबि बाजल-

"हौ भाय, हमर चाटी सिद्ध नइ भेल अछि, किएक तँ हम अखन धरि गंगा स्नान नै केलौं हेन। मुदा तैयो बिसहाराकेँ सुमैर देखै छिऐ।"

मुसनाकेँ आगूमे बैसा रौदिया हाथेसँ जगहकेँ झाड़ि चाटी रखलक। सभ

रौदिया दिस देखैत। मुदा चाटी चलबे ने कएल। बाढ़ि दुआरे आन गामसँ झाड़निहार आ चट्टिबाहकेँ बजाएब महाग मोसकिल रहए। सभ निराश भऽ गेल। छाती पीटि-पीटि जीबछी कनबो करए आ देवी-देवताकेँ कबुलो करए। मुदा ढोढ़ साँप कटने छेलै तँए बिख लगबे ने केलइ।

गोसाँइ लूक-झूक करए लगला। गामक ढेरबा, बुढ़ आ जुआन स्त्रीगण सभ चँगेरियो आ चँगेरोमे काँच माटिक दियारी लऽ लऽ पोखैरक घाट लग जमा भऽ कमला महरानीकेँ साँझ दऽ गीत गाबए लगल। बच्चा सभ जय-जयकार करैत। तैबीच लुखिया कमला महरानीकेँ पाठी कबुला केलक, सुबधी एक सेर मधुर। दोसर साँझ धरि गीत-गाबि सभ घुमि कऽ आएल।

एक रफ्तारमे बाढ़ि पाँच दिन रहल। मुदा पोह फटिते छठम दिन पानि कमए लगलै। बाढ़िक पानि जहिना हुहुआ कऽ अबैए, तहिना जाइए।

बेर झुकैत-झुकैत घर-अँगनाक पानि निकैल गेल मुदा थाल-खिचार रहबे करए। सातम दिनसँ लोक घर ठाढ़ करए लगल। बाढ़ि सटैकते लोक परदेश दिस पड़ाए लगल। गाममे ने एक्कोटा धानक गब बँचल आ ने खेत रोपैले बीरार। नारक टाल सभ केतए भँसि कऽ गेल तेकर ठेकान नहि। गहुमक भुस्सी भुसकाँड़ेमे सड़ि-सड़ि गोबर बनि गेल। मनुखसँ बेसी दिक्कत माल-जालकेँ भऽ गेलइ। आमक पात, बाँसक पात आन-आन गाछ सबहक पात काटि-काटि माल-जालकेँ लोक खुबए लगल। आन-आन गामसँ नार, भुस्सी कीनि-कीनि आनए लगल। मुदा माल-जाल तैयो अनधुन मुइलै। जे बँचल रहै, ओहो सुखा कऽ संठी जकाँ भऽ गेलइ। तैपर सँ रंग-बिरंगक बेमारी सभ सेहो आबि गेलइ। केकरो खुरहा तँ केकरो पेट-झर्ड़ी। ..किछु गोरे अपन सभ मालकेँ कुटमैती सभमे दऽ आएल।

चारिक अमल। पिसुआ भाँग पीब श्रीकान्त मैदान दिससँ आबि दलानपर बैस चाह पिबैत रहैथ। सोगसँ अधमरु जकाँ भेल श्रीकान्त मने-मन सोचैथ जे महाजनी तँ चलिए गेल जे आब अपनो साल भरि की खाएब..! अगते धान सबाइ लगा देलौं। बड़ पैघ गलती भेल जे एक्को बखाड़ी पछुआ कऽ नै रखलौं। मुदा एक बखाड़ी रखनहि की होइत। के केकरा मदैत करत। ठीके कहब छै जे सभकेँ अपना भरोसे जीबा चाही। भने दुआर परहक बखाड़ीक धान सठि गेल। कियो दरबज्जापर औत तँ देखा देबइ। मुदा अपनो तँ जरूरत ऐछे, से केतएसँ आनब? लऽ दऽ कऽ घरक कोठीमे जे चाउर अछि, ओतबे अछि। एक्को धूर धान नै बँचल जे अगहनोक आशा हएत। आब अवादो तँ नहियेँ हएत, आगू रब्बियेक आशा रहल। जे सभ दिन कीनि-बेसाहि कऽ खाइए ओकरा तँ किछु नहि, मुदा हमरा लोक की कहत..?

चाह पिबते-पिबते श्रीकान्तकेँ चोन्ह आबए लगलैन। मन पड़लैन- 'बाबा कहने रहैथ जे दरबज्जापर जँ कियो दू-सेर वा दू-टका मांगैले आबए तँ ओकरा ओहिना नै घुमबिहक। ओइसँ लछमी पड़ाइ छथिन।'

जीबछीकेँ अबैत देख श्रीकान्त हाक पाड़लखिन। सालो भरि जीबछी हुनके कुटाउन कऽ गुजर करै छल। चाउर-चूड़ा कुटैमे जीबछी गाममे सभसँ बेसी लूरिगर।

श्रीकान्तक लग आबि जीबछी हँसैत कहलकैन-

"एते किए सोगाएल छैथ काका! हिनका एते छैन तहन एते दुख होइ छैन, हमरा तँ किछु ने अछि तँए की मरि जाएब।"

जीबछीक बात सुनि भखरल स्वरमे श्रीकान्त बजला-

"जहिना सभ किछु बाढ़िमे दहा गेल तहिना जँ अपनो सभ तूर भँसि जइतौं, से नीक होइत। जाबे परान छुटैत, तेतबे काल ने तकलीफ होइत मुदा आगू तँ दुख नै काटए पड़ैत।"

मुस्कियाइत जीबछी कहलकैन-

"एक्केटा बाढ़िमे एते चिन्ता करै छैथ काका! कनी नीक आकि कनी अधला, दिन तँ बितबे करतैन।"

चीलम पिबैत मुसना ओसारपर बैसल। कसि कऽ सोँठ मारि मने-मन सोचए लगल- अगहन-पूस दुनू मास मुसहैन खुनि-खुनि गुजर करै छेलौं। दस सेर जमो भऽ जाइ छल आ गुजरो कऽ लइ छेलौं। ओहो चलि गेल। ने एक्को गब केतौ धान बँचल आ ने गाममे एकोटा मूस..!

दोसर दम घिंच धुआकेँ घोटिते मनमे एलै- मूसक तीमन आ धुसरी चाउरक भात जँ जाड़क मासमे भेटए तँ ऐसँ नीक दोसर की हएत। एहेन खेनाइ तँ रजो-महरजोकेँ सिहिन्ते लगल रहतैन। ओ-हो-हो! भगवान गरीबेक सुख छीनि लेलैन..!

मुसनाक पहिलुका नाओं मकसूदन छल। मुदा मूस आ मुसहैनसँ बेसी सिनेह रहने लोक मुसना कहए लगलै।

जीबछी आँगनक चुल्हिपर रोटी पकबैत। इनारपर हाथ-पएर धोय मुसना लोटामे पानि नेने आँगन आबि जलखै करैले बैसल।

टिनही छिपलीमे रोटी-नून लऽ जीबछी पतिक आगूमे देलक। अँगनामे दुखबाकेँ नइ देख मुसना जोरसँ शोर पाड़लक।

पिताक अवाज सुनिते दुखबा दौगल आबि धुराएले हाथे-पएरे आबि

खाइले बैस रहल। दुनू बापूत खाए लगल। चुल्हिये लगसँ मुस्कियाइत जीबछी बाजल-

"केकरो किछु हौउ मुदा जेकरा लूरि रहतै ओ जीबे करत। ऐठाम देखै छिऐ जे एक्के दहारमे किदैन बहारक खिस्सा अछि। सभ हाकरोस करैए!"

मुँहक रोटी मुसना हाँइ-हाँइ चिबा जीबछी दिस देखैत बाजल-

"तेते ने माछ भँसि-भँसि आएल अछि जे खत्ता-खुतीमे सह-सह करैए। कनी पानि तँ कम हौउ। जखने पानि कम भऽ उपछै-जोकर भेल आकि मछबारि शुरू कऽ देब। खेबो करब आ बेचबो करब। हरिदम दू पाइ हाथेमे रहत।"

अपन नहिराक बात मन पड़िते जीबछी बाजए लगल-

"हमरा नैहरमे पच्छिमसँ गंडक आ पूबसँ कोसीक बाढ़ि सभ साल अबै छेलइ। तैबीच जे धार अछि ओकर पानि तँ घुमैत-फिरैत रहिते छल। सगरे गाम साउनेसँ जलोदीप भऽ जाइ छेलइ। टापू जकाँ एकटा परती-टा सुखल रहै छेलइ। ओइपर सौंसे गामक लोक बरसाती घर बना रहै छल। कातिक अबैत-अबैत खेत सभ जागए लगै छेलइ। तेकर पछाइत लोक खेती करै छल। गहिंरका खेत आ खाधि-खुधिमे भैंटक गाछ सोहरी लागल जनमै छेलइ। अगहन बितैत-बितैत ओ तोड़ैबला हुअ लगै छेलइ। हम सभ ओइ भैंटकेँ तोड़ि-तोड़ि आनी, ओकरे दाना निकालि सुखा कऽ लावा भूजी। तेते लावा हुअए जे अपनो खाइ आ बेचबो करी। ..काल्हि गिरहत काका ऐठाम जाएब आ कहबैन जे चौरीमे जे मनसम्फे भैंट जन्मल अछि, ओ हमरा दऽ दिअ।"

अखन धरि दुनू परानी मुसना, चाउर आ चूड़ाक कुट्टी करै छल, सेहो ढेकीमे। किएक तँ गाममे एक्कोटा छोटको मशीन धनकुटियाक नै छल। अधिकतर परिवार अपन-अपन ढेकी-उक्खैर रखै छल। मुसना सेहो कुट्टी दुआरे अपन ढेकी-उक्खैर रखने अछि। नीक चाउर बनबैमे जीबछीकेँ सभ लोहा मानैए। ऐ बेर तँ धनकुट्टी चलत नहि। मुदा बाढ़िमे आन गामसँ तेते भैंट दहा कऽ चौरीमे आएल जे सापरपिट्टा गाछ सौंसे चौरीमे जनैम गेल अछि। तँए जीबछी मने-मन चपचपाइत। दोसरकेँ भैंटक भाँज बुझले नहि। सभ दिन नहाइ बेरमे जीबछी चौरी जा भैंट देख-देख अबैत। चौरगर-चौरगर पात सौंसे चौरीकेँ छेकने। थोड़बे दिनमे गोटि-पँगरा फूल हुअ लगलै। फूल देख जीबछीक मनमे होइ जे एतेटा फुलवाड़ी इन्द्रो भगवानकेँ हेतैन की नहि...।

पाँचे दिनमे सौंसे चौरी फूल फुला गेल। अगता फूलक पत्ती झड़ि-झड़ि खसए लगल, फूलमे नुकाएल फड़ निकलए लगल। गोल-गोल, हरिअर-हरिअर। फड़ देख जीबछी आमदनी बुझि, चौरीक कातमे बैस नव-नव योजना मने-मन बनबए लगल, ऐ बेर एकटा खूब निम्मन महींस कीनब। जँ महींस-जोकर

आमदनी नै हएत तँ दूटा गाइए कीनि लेब। अप्पन तँ सम्पैत भऽ जाएत। ओकरे खूब चराएब-बझाएब। ओहीसँ तँ चारू परानीक गुजर चलत। जिनगी भरि तँ कुटाउने करैत रहलौं मुदा ऐ बेर कमलो महरानी आ कोसियो महरानी दुख हइर लेलैन।

मने-मन जीबछी कोसी-कमलाकेँ गोड़ लगलक। गोड़ लगिते मनमे उठलै- अपन धन हएत, तैपर सँ मेहनत करब तँ कोन दरिदराहा दुख आबि कऽ हम्मर सुख छीनि लेत। मजगूत घर बान्हब, बेटा-बेटीक बिआह करब। नाति-पोता हएत, बाबा-दादी बनि कऽ जेते दिन जीबी ओ की देवलोकसँ कम भेल। अहीले ने सभ हरान अछि। केलासँ सभ किछु होइ छै, बिनु केने पतरो फुसि।

घनगर गाछ देख जीबछीक मनमे एलै, बीच-बीचमे सँ जँ गाछ उखारि देबै तँ सौरखियो करहर भऽ जाएत आ छेहर गाछ रहने फड़ो नमहर हएत आ दन्नो नीक। अखनेसँ आमदनी शुरू भऽ जाएत।

उत्साहित भऽ जीबछी भैंटक कमठौन शुरू केलक। मुदा करहर उखाड़ैमे तेते डाँड़ दुखाइ जे हूबा कमए लगलै। कमठौन छोड़ि देलक।

देखते-देखते फड़मे लाली पकड़ए लगलै।

अगता फूल अगता फड़ भेल। नमहर-नमहर, पोछल-पोछल, गोल-गोल पुष्ट, रंगल फड़ देख जीबछी बुझि गेल जे आब ई तोड़ैबला भऽ गेल। दोसर दिनसँ फड़ तोड़ैक विचार जीबछी मने-मन कऽ लेलक।

दोसर दिन भोरे जीबछी रोटी पका, दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खेनाइ खा प्लास्टिकक बोरा लऽ फड़ तोड़ैले विदा हुअ लगल कि धक-दे मन पड़लै, बोरामे तँ फड़ राखब मुदा पानिमे तोड़ि-तोड़ि कथीमे रखब। फड़ तोड़ैले तँ झोरा नीक जे अपना अछि नहि! आब की करब?

..लगले जीबछी पुरना साड़ीकेँ फाड़ि दूटा झोरा सीलक। झोरा सीबि बोरो आ झोरोकेँ चौपेत एकटा झोरामे रखि, दुनू बच्चो आ दुनू गोरे अपनो, चौर दिस विदा भेल।

फड़क रूप-रंगसँ जीबछीक मन गदगद। मुदा अनभुआर काज बुझि मुसना तर्क-वितर्क करैत। चौरक कात पहुँच ऊपरका खेत जे सुखाएल छल तइमे दुनू बच्चो, बोरो आ रोटियो-पानिकेँ रखि दुनू परानी भैंट तोड़ैले पानिमे पैसल।

पानिमे पैसते जीबछीक नजैर भैंटक फड़क ऊपरे-ऊपर नाचए लगलै। जहिना केकरो रूपैआक थैली भेटलासँ खुशी होइ छै, तहिना जीबछीक मनमे भेलइ। एक टकसँ देख जीबछी दुनू हाथे हाँइ-हाँइ फड़ तोड़ए लगल। खिच्चा

फड़ देख जीबछी पतिकेँ कहलक-

"जुएलके फड़टा तोड़ब, अजोहा अखन छोड़ि दियौ। पछाइत तोड़ब।"

झोरा भरिते जीबछी ऊपर आबि-आबि बोरामे रखैत। मुसनो सएह करैत। दुनू बोरा भरि गेल। ऊपर आबि जीबछी पतिकेँ कहलक-

"कनी काल सुस्ता लिअ। पानिमे निहुरल-निहुरल डाँड़ो दुखा गेल हएत। अहाँ एत्तै रहू, हम एक बेर अँगनासँ रखने अबै छी।"

जीबछी एकटा बोरा उठा आँगन विदा भेल। एक तँ पानिक भीजल, दोसर ओजनगर वस्तु। मुदा जीबछी भारी बुझबे ने करए। किएक तँ सम्पैतक मोटरी रहै किने! आँगन आबि ओसारपर बोरा रखि पुनः जीबछी चौर दिस रमकल विदा भेल। लग आबि पतिकेँ कहलक-

"हम बोरा लइ छी, अहाँ दुनू बच्चो आ डोलोकेँ सम्हारने चलू।"

दुनू बच्चाक संग एक हाथमे डोल नेने आगू-आगू मुसना आ माथपर बोरा नेने पाछू-पाछू जीबछी विदा भेल। थोड़े दूर बढ़लापर जीबछी पतिकेँ कहलक-

"भगवान दुःख हइर लेलैन।"

मुदा स्त्रीक बात सुनि मुसनाकेँ ओ खुशी नहि एलै जे जीबछीकेँ रहए। आँगन आबि जीबछी पहिलुके बोरा लग दोसरो बोरा रखि भानसक ओरियान करए लगल। चारिम दिन पहिलुके खेप भैंट तोड़ै काल मुसनाकेँ एकटा ठेंगी बाँहिमे पकैड़ लेलकै। जे शुरूमे नै बुझलक। मुदा जहन ठेंगी भरि पोख खून पीब भरिया गेल, तहन नजैर पड़लै। ठेंगीकेँ देखते मुसनाक परान उड़ि गेलइ। थरथर काँपए लगल। खूब जोरसँ घरवालीकेँ कहलक-

"बाप रे बाप! देहक सभटा खून ठेंगी पीब लेलक। कोन पाप लागल जे ऐ मौगिया भाँजमे पड़लौं। एक तँ बाढ़िक मारल छी जे भरि पोख अन्न नै होइए, सुखा कऽ संठी भेल छी। तैपर जेहो खून देहमे छेलए सेहो ठेंगीए पीब गेल। झब-दे आउ नहि तँ हम पानियेँमे खसि पड़ब।"

पतिक बातकेँ अनठबैत जीबछी हाँइ-हाँइ फड़ो तोड़ैत आ मने-मन बजबो करैत-

"जेना नाग डँसि नेने होइ तहिना अड़ाहैए। भभटपन ने देखू! एहने-एहने पुरुख बुते परिवार चलत!"

दुनू झोरा भरिते जीबछी मुसना लग आबि हाथेसँ ठेंगी पकैड़ एकटा चिचोरमे बान्हि देलक। मुदा जैठाम ठेंगी धेने रहै तैठामसँ छर्र-छर्र खून बहैत। अपन दहिना औंठासँ जीबछी दाबि देलक। कनीए कालक पछाइत खून बन्न भऽ गेलइ। जीबछी फेर फड़ तोड़ैले पानिमे पैसल। मुसना बैसले रहल। थोड़े कालक

पछाइत जीबछी बाजल-

"आउ ने, आब किछु ने हएत।"

जीबछीक बात सुनि मुसना आँखि गुड़ैर कऽ बाजल-

"ई मौगिया, जान मारैपर लगल अछि! होइ छै जे कहुना मरि जाए। कोनो कि दुनियाँमे सँएक कमी छइ, दोसर कऽ लेत।"

दुनू बच्चा दिस देखैत मुसना फेर बाजल-

"मुदा ऐ टेल्हुक सबहक की हेतइ। बिलैट कऽ मरत की नहि?"

पति दिस देख जीबछी मुस्कियाइत बाजल-

"नइ तोड़ब तँ नइ तोड़ू। ओतै बैस बच्चा सभकेँ खेलाउ।"

दुनू बोरा भरि कऽ जीबछी आँगन अनलक। सभकेँ सम्हारने मुसनो आएल। आँगन आबि जीबछी चुल्हि पजारि भानस कऽ दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खेलक। खा कऽ हाँसू लऽ भैंटक फड़ चीरि-चीरि दाना निकालए लगल। लाल-लाल, गोल-गोल दाना। मुसना सेहो दाना निकालए लगल। दुनू बच्चा दुनू भाग बैस दूटा फड़केँ गुड़कबैत खेलैत।

दानाकेँ एकटा चटकुन्नीपर थोपि-थोपि रखैत जाए। मुदा कनीए कालक पछाइत मुसनाकेँ चीलम पीबैक मन भेलइ। उठि कऽ चुल्हि लग जा आगियो तापए लगल आ चीलमो पीबए लगल। दानाक ढेरी देख जीबछी गर अँटबए लगल जे एते राखब केतए। गुनधुन करैत। एकाएक नैहरक बात मन पड़लै। मन पड़िते मुहसँ हँसी फुटलै।

जीबछीकेँ हँसैत देख मुसना अह्लादित भऽ पुछलक-

"अँइ गइ, कोन सोनाक तमघैल तोरा भेट गेलौ हेन जे एना खिखिआइ छेँ?"

मुदा पाशा बदलैत जीबछी बाजल-

"अखन तँ अन्हार भऽ गेलै, काल्हि भोरे एकटा खाधि अँगनेमे टाट सटा कऽ खुनि देबइ।"

भोरे उठि मुसना ढक जकाँ गोल-मोल खाधि खुनलक। जीबछी दुलेब कऽ लेब सुखौलक। ओइमे भैंटक दाना सुखा-सुखा रखैत गेल। ऊपरसँ टाटक झँपना बना मुसना झाँपि देलक।

मास दिनक मेहनतसँ जीबछीक आँगन भैंटक दानासँ भरि गेल। अनभुआर चीज तँए चोरी-चपाटीक कोनो डरे नहि। ..भरल आँगन देख जीबछीक मनमे समुद्रक लहैर जकाँ खुशी हिलकोर मारए लगलै। कनडेरिये

आँखिए मुसना दिस देख मुस्कियाए लगल। घरवालीक मुस्की देख मुसना खिसिया कऽ बाजल-

"हमरा देख-देख तोरा हँसी लगै छौ। हँसि ले, जेते हँसमेँ से हँसि ले। जाबे जीबै छियौ ताबे। भगवान केलखुन आ मरलियौ तहन तोहर हँसी नगरक लोक देखतौ।"

मुदा जीबछी-ले धैनसन। किएक तँ खुशीसँ मन एते भरल रहै जे घरबलाक बात ओइमे पैसबे ने केलइ।

मने-मन जीबछी लावा भुजैक विचार करए लगल। लावा भुजैले एकटा नमहर खापैड़ चाही। बाउल रखैले एकटा कोहा चाही। लाड़ैन तँ अपनो खड़हीसँ बना लेब आ बाउलो नदी कातसँ लऽ आनब। जहन कुमहैन ओइठाम जाएब तँ कँचकूह ताकि कऽ एकटा नमहर तौला लऽ आएब। ओकरे खापैड़ बना लेब। बाउल धिपबैले मझोलको कोहासँ काज चलि जाएत। एकटा सरबा सेहो चाही। किएक तँ बाउल जे देबै से तँ हाथसँ नै हएत। ओइमे एकटा बत्तीक डाँट लगबए पड़त। लगा लेब। मुसनाकेँ कहलक-

"लावा भुजैले जारैन सेहो ओरियाबए पड़त।"

लावाक नाओं सुनि मुसनाक मनमे खुशी भेलइ। मुस्कियाइत बाजल-

"अखन टेंगारी सुढ़िया लइ छी। बेरू-पहर गिरहत कक्काक गाछीसँ बाँझियो आ सुखल ठौहरियो सभ आनि देब।"

भरि दिनमे दुनू परानी जीबछी सभ कथूक ओरियान कऽ लेलक।

पराते भने जीबछी लावा भुजब शुरू केलक। दू चुल्हिया चुल्हि। एक मुँहमे खापैड़, दोसरमे कोहा। खापैड़मे भैंटक दाना भुजैत आ कोहामे बाउल धिपबैत। पहिल घानी भुजि जीबछी एक चुटकी चुल्हिमे दऽ दोसर घानी भुजब शुरू केलक। दोसर घानीक लावा देख जीबछीक मन तर-ऊपर हुअ लगलै। पहिलुका घानीक लावा चँगेरीमे लऽ दुनू बच्चो आ घरोबलाकेँ आगूमे देलक।

आगूमे लावा देख मुसना मने-मन सोचए लगल, ई मौगिया बड़ लूरिगर अछि। एहेन स्त्री भगवान सभकेँ देथुन। कहू जे अखन तक हम जे बुझितो ने छेलौं से आइ खाइ छी। धिया-पुताकेँ पोसब कोन बड़का भारी बात जे समाजो-ले लोक बहुत किछु कऽ सकैए।

लावाक गमक पुर्बा हवामे मिलि सौंसे गामकेँ सुगन्धित कऽ देलक। सुगन्ध पाबि टोलोक आ गामोक स्त्रीगण सभ लावा किनैले एक्के-दुइए जीबछीक आँगन आबए लगली। मुदा एक्केटा जवाब जीबछी सभकेँ दैत-

"पहिने गिरहत काकाकेँ खुएबैन, तहन केकरो देब।"

भरि दुपहर जीबछी लावा भुजलक। दू छिट्टा भेलइ। दुनू छिट्टा लावा घरमे रखि ओइमे सँ एक मुजेला लऽ साड़ीसँ झाँपि जीबछी मुसनाकेँ कहलक-

“हम गिरहत काका ओइठाम जाइ छी। अहाँ अँगनेमे रहब।”

कहि जीबछी माथपर मुजेला नेने श्रीकान्त ऐठाम विदा भेल।

जीबछीक माथपर मुजेला देख श्रीकान्त गौर करैत मुस्किया कऽ पुछलखिन-

“बड़ खुशी देखै छी लछमी महरानी। मुजेलामे की चोरा कऽ अनलौं हेन। कनी हमरो देखए दिअ?”

अनसुनी करैत जीबछी मुस्कियाइत आँगन जा गिरहतनीक आगूमे मुजेला रखि कहलकैन-

“काकी, थोड़ेकेँ लाइ बना लिहैथ आ अखन कनीमे नोन-मरीच-तेल मिला कऽ दौथ, जे काकाकेँ दऽ अबै छिऐन।”

छिपलीमे लावा नेने जीबछी दरबज्जापर जा श्रीकान्तक आगूमे देलकैन। ओ छिपलीमे उज्जर-उज्जर रमदाना-लावा जकाँ लावाकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगला। जीबछी कहलकैन-

“काका, की निंगहारै छथिन, पहिने एक मुट्ठी मुँहमे दऽ कऽ देखथुन ने। भैंटक लावा छिऐ।”

एक मुट्ठी उठा श्रीकान्त मुँहमे लेला। लावाक कोमलता आ सुआद पाबि श्रीकान्त खुशीसँ पत्नीकेँ हाक पाड़ि कहलखिन-

“एते सुन्नर वस्तुकेँ अखन धरि जनितौं ने छेलौं। धन्य अछि कमलपुरवालीक ज्ञान आ लूरि जे एहेन सुन्नर हेराएल वस्तुकेँ ऊपर केलक। साक्षात् देवी छी कमलपुरवाली। जाउ, सन्दूकसँ एकजोड़ साड़ी आ आँगी निकालने आउ। जीबछीकेँ अपना ऐठामसँ पहिरा कऽ विदा करब। गरीब-दुखियाक देवी छी कमलपुरवाली।”

सभ दिन जीबछी लावा भुजैत आ अँगनेसँ लोक सभ कीनि-कीनि लऽ जाइत। पनरह दिनक जमा कएल रूपैयो आ फुटकुरियो जीबछी मुसनाकेँ गनैले आगूमे देलक। पाइ देख मुसनाक मन उड़ि गेल। मुहसँ ठहाका निकलल। एक टकसँ मुसना जीबछी दिस देख कैंचा गिनए लगल।

❍

शब्द संख्या : 3100

अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आँगन बहाड़ि बाढ़ैनकेँ कलपर धोइ पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलैन। हाथ-पएर धोअल बुझि नजैर फूल तोड़ैपर गेलैन। ओना, लालकाकी एहेन नियमित छैथ जे जहिना खढ़ लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छैथ तहिना दिन भरिक काजोक छैन। मुदा मन पाड़ैक जरूरत अइले रहि जाइ छैन जे पति गाममे छैथ कि नहि। गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइ छैन आ नइ रहने कमि जाइ छैन। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलैन। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उतारि कल दिस बढ़ली। कलक बगलेमे रंजनी-गन्धापर हाथ दइते छेली आकि नजैर अपराजितपर पड़लैन। मेल-पाँच करैक विचार मनमे अबिते लालकाकी रजनी-गन्धासँ अपराजित दिस बढ़ली। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलैन। आँखि पड़लैन फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देख विचारली जे पाँचटा बेलीमे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेली कि नजैर पतिपर गेलैन। पतिपर नजैर पड़िते मन दुखाए लगलैन। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कण्डीशन गाड़ीमे बैस सराफा बजार जा हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गाड़ामे लटकैबतौं। मुदा तेहेन भेला जे जखन सरकारी दरमाहा भेटए लगलैन आ कहलयैन जे साइकिल कीनि लिअ सुभितगर हएत, तँ कहलैन जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जँ खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलश्तर करब, तैयो ने जुटत। तइसँ नीक पएरे। कहलैन एक मानेमे नीक...।

मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ उतरलैन नहि। मन गेलैन दोसर दिस। सभटा पोथी बर्खामे भीज-भीज सड़ि गेलैन, जखन घरे चुबै छेलैन तखन जँ सड़िए गेलैन तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखन घर बनौलैन तखन किए ने फेर किनलैन। जइ घरमे पोथी नइ रहत ओ घर केहेन हएत? लालकाकीक क्रोध कमलैन। क्रोध कमैक कारण भेलैन अपन काज मन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ बेर धरि केकरा-ले करै छी, परिवारे-ले ने। फेर तामस मुड़ि गेलैन, कहैले आठ घन्टा ड्यूटी करै छैथ, चारि घन्टा बाटेमे लगै छैन। अदहा काज जँ सम्हारि कऽ नइ रखबैन तँ पारो ने लगतैन। एहेन पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैथ? फुलडाली रखिते लालकाकीक मनमे एलैन, एक विहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बैसैमे अखनो बहुत बाँकी अछि। हड़बड़ा

कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा-ठाँउ कऽ चूल्हि-चिनमार दिस बढ़ली। घर-निप्पा रखि अर्घासरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि घड़ी दिस देखली। अखन तक समय आ काजमे तल-बितल नइ देख मनमे खुशी भेलैन। फेर नजैर पतिपर गेलैन। किड़ी आँखिमे पड़ने जहिना करुआ जाइ छै तहिना लालकाकीक मन करुआ गेलैन। बुदबुदेली-

"एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू-मुहेँ ससरत?"

बुदबुदाइते लालकाकीक मनमे उठलैन आन दिन जकाँ जारैन सुखाएल नइ अछि। भानसमे देरी लागत, से नइ तँ पानि चढ़ा पहिने चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजरल रहत तँ कनी देरियो लगने समैपर भऽ जाएत।

बाड़ी पहुँच पतरका जारैन सभ बीछ कऽ चूल्हि लग आनि कऽ रखली। चूल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे राखए लगली। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लैन। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बुझि पड़लैन। मनमे एलैन, ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छइ। फेर मन पतिपर गेलैन। उमैक कऽ मन कहलकैन, आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलैन। हृदए बिहुसि गेलैन। 'जइ मर्दकेँ आनि नहि आ जइ बरदकेँ पानि नहि, ओ अनेरे गाम घिनबैले किए जीबैए? मन पड़लैन दुरगमनियाँ पिढ़ी। जहिना बाबू सतपुड़ैन खोधाएल कटहरक पिढ़ी देलैन आइ धरि ओइपर बैस भोजन करै छैथ...।

थारी साँठि लालकाकी पंखा नेने छोटकी पिढ़ीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैले पढ़ुआकाका दिस देखए लगली। मगन भऽ पढ़ुआकाका भोजन करए लगला। देहांगक सिरखार देख लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन-काल जे बजबे ने करता हुनका कहले की जाए। तँए लालकाकी चुप्पे रहली।

कपड़ा पहिर पढ़ुआकाका घरसँ निकैलते रहैथ कि आँगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलैन। पत्नीक काज देख मन मानि गेलैन जे सिपाही जकाँ छैथ। मनमे खुशी उपकलैन। पान खा आगू-आगू पढ़ुआकाका आ पाछू-पाछू लालकाकी आँगनसँ निकैल डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआकाका पुछलकैन-

"किछु कहबोक अछि?"

लालकाकी कहली-

"अपन तनदेही राखू।"

दुनू गोरे दुनू दिस विदा भेलैथ। मुस्कियाइत पढ़ुआकाका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घुमि कऽ देख डेग तेज करैत आगू बढ़ला। नाकमे सुरसुरी लगलैन।

भेलैन जे छिक्का हएत। बामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगला। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नहि। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द ‘तनदेही’पर गेलैन। पत्नीक मुहसँ निकलल शब्द, विशारद पास पढ़ुआकाकाकेँ ओझरा देलकैन। पाछू घुमि पत्नी दिस तकलैन तँ देखलैन जे सड़कसँ अँगनाक घुमौनक भौकपर पहुँच गेल छेली। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेली। कोकिलक कण्ठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआकाकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलैन। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चन्दन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलैन केतए-सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नइ केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलिऐन कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किए ने बजनिहारिए-सँ पुछि लिऐन। ओहो तँ आन नहि, अर्द्धांगिनीए छैथ। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैले दुनूक सहयोग तँ बरबैरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ आ एक सीमाक भीतर अपने छी। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रूपैआ हाथमे दऽ दइ छिऐन। मुदा ओइ रूपैआकेँ नचबै तँ वएह छैथ। तैसंग पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छैथ...।

पढ़ुआकाका जेते दुनू गोरेक भीतर झाँकै छला तेते हटल-हटल बुझि पड़ैन। मन वौआ गेलैन जे पति-पत्नीक, पुरुख-नारी आ स्त्री-स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबा चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलैन। किए ने दुनू गोरे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलैन। गामक सीमो टपि गेला। विद्यालयक मुरेड़पर नजैर गेलैन, सवुर भेलैन जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंतीस सालक अभ्यास तँए थकान नइ बुझि पड़ैन मुदा...।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जैठाम ओसारपर चपरासी बैसैत तइ सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआकाका रहैथ कि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखलैन। सीढ़ी लग पहुँच पढ़ुआकाका आगू तकला जे चपरासी घुमि कऽ अबैए आकि नहि। मुदा नै देख काकामे पौरुख जगलैन। मनमे उठलैन अखन तँ सेवानिवृत्तो नहियेँ भेलौं हेन, तखन किए अनकर सेवा लइले मुँह ताकब! सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेला मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छेलैन आगूसँ घेर लेलकैन। जे चपरासी ‘बाबा’ कहैए, ऑफिसोक सभ ‘भैये-काका’ कहै छैथ मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए? जँ से नहि, तँ परिवारमे किए कहल जाइए? नजैर ठनकलैन, अगर बीस बर्खक अधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उम्रे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए..! पढ़ुआ-कक्काक मन हल्लुक भेलैन। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलैन...।

हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़ुआकाकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतैन। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसैर गेल छल।

स्टाफ-रूम पहुँचते पढ़ुआकाकाकेँ एक नहि अनेक तरहक खटका खटकए लगलैन। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहैन। मुदा कुरसीपर बैसते तह दैत मनसँ हटौलैन। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़ैन। किछु व्यंग्य-वाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहैथ तँ ओहन बेवहारे नै छेलैन। चालिसँ थाकल रहबे करैथ, आँखि झल-फलाए लगलैन। गमे-गम नीनो आबए लगलैन। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलैन। पढ़ुआकाकाकेँ आँखि मूनल देख इशारामे उतरीक चर्चा हुअ लगल। मुदा पढ़ुआ-कक्काक आँखि बन्न, तँए किछु बुझबे ने करैथ।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजेमे ट्रेन अछि तँए स्टाफ सबहक बीच चिलमिलक कुचकुची जकाँ पसैर गेल, सबहक देह-हाथ चुलचुलाए लगलैन। कुरसीक पौआ सबहक अवाजसँ पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगला, ऑफिसक बड़ाबाबू आबि पढ़ुआकाकाकेँ कहलकैन-

“अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?”

कहि बड़ाबाबू ऑफिस दिस बढ़ि गेला। ठाढ़े प्रणाम करि कऽ संगियो सभ निकैल गेलैन। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआकाका असकरे कोठरीमे बैसल रहला। बड़ाबाबूक भाषापर नजैर गेलैन। आन दिनक जे बोली रहै छेलैन, तइ हिसाबे औझुकामे किछु करुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। काल्हि धरि सहयोगी सभ अरियाति कऽ पहिने विदा कऽ दइ छला तेकर बादे कियो जाइ छला..! पढ़ुआ-कक्काकेँ नौकरीक एहसास भेलैन। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा सभसँ की सम्बन्ध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइ छेलए आ बजै छेलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइ छल। जे पहिने लोटा पकैड़ पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझै छल। मुदा आइ की देखै छी? शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैए! केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहिए-सँ विद्यालयक सरकारीकरण भेल तहिए-सँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहिन भऽ गेल। ओना महिनवारी वेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। मासे-मास नइ भेट सालक चुकती सालमे हुअ लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नहि, अपन काज बुझै छेलौं। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे केतौ बन्हनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआकाका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बोही आगूमे बढ़ा देलकैन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पैत टुटैए तहिना पढ़ुआकाकाकेँ नौकरी टुटि रहलैन हेन। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआकाका हतास भऽ गेला। मनमे उठलैन सभ किछु हरा गेल। जेते पढ़ने छेलौं तइमे-सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नइ भेल। आ जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल! की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि..?

आगूमे प्रश्न ठाढ़ होइते पढ़ुआ-कक्काक मोन पड़लैन, अपना संग किनको हाथो पकड़ने छिऐन किने? दू परानीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै, ओ हमरा बुते कएल हएत? अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छला ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छेलिऐन। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत? की जिनगीक एक्कोटा व्रत निमाहै-जोकर हम नइ छी..?

द्वन्द्वमे पड़ल पढ़ुआ-कक्काक छाती दलकए लगलैन। तैबीच चपरासी आबि टोकलकैन-

"कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौ।"

अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआकाका कोठरीसँ निकैल पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठैन। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओंगैठ कऽ बैस गेला। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलैन। जेबीसँ निकालि पढ़ए लगला। सूचना देल जाइत अछि, तेसर मासक अन्तिम तिथिसँ सेवा-मुक्त होएब। ..निचला पाँती पढ़ौ ने लगला, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेला। मुदा जहिना नदीक किनछैरक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत तहिना पढ़ुओ-कक्काक पएर आगू-पाछू हुअ लगलैन। मनक लहैरसँ पएर तनेलैन। आगू बढ़ए लगला। विद्यालयक फाटक लग पहुँच पाछू घुमि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहैन। फुरलैन, जखन जीबैक सभ रस्ता बन्न भऽ रहल अछि तखन मरैयोक तँ ढेरी उपए अछिए। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत! जीबैले अपराध करि कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैए मुदा मृत्यु-ले अपराध...।

बीच रस्तापर आबि पढ़ुआकाका क्रोधक लहैरमे आरो ओझरा गेला। मुदा मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते फुरलैन, जखन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइए देलक तखन एक्केटा उपए अछि जे जिनकर हाथ पकैड़ भार नेने

छिऐन तिनका लग पहुँच कहिऐन जे अखने दुनू परानी हरिद्वारक रस्ता धरू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मन्दिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सूनब आ अपनो नचारी कहबैन। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब...। तखने एकटा छुछुनैर दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआइत टपैत रहए, कि पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। ताबे छुछुनैर ससैर कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलैन जे छुछुनैर पैरमे काटि लेलक। झूकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगला। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलैन। मन मानि गेलैन जे छुछुनैर काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलैन। काजक बेर रहने सभ छिड़ियाएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलैन। सभ चलि गेल छला। मनमे एलैन छुछुनैरक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलैन। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। अपन बीख अपना बुते कहाँ झड़ै छै, तँ की ऐठाम पएर पटैक कऽ मरि जाएब आकि जेतए मनतरिया भेटत ओतए जाँच करा लेब। मुदा असगरे पढ़ुआकाका, तँए मनमे उठलैन-ताधैर अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे... दु... एक...।

मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुहसँ फुकि दैथ। अबैत-अबैत गामक सीमापर आबि गेला।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढ़ुआकाका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लालकाकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहैन। किसाने परिवार देख लालकाकीक पिता कुटुमैती केलैन। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू परानीक हृदए जुड़ा गेल रहैन जे लक्ष्मीक संग सरस्वतियो छैन।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढ़ुआकाकाकेँ सीमापर अबिते बुझि पड़लैन। सौनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकैन। पानि जकाँ बुधि पसैर गेलैन। जीवित छी आकि मुइल से होशे ने रहलैन। थुस-दे बैस रहला। मन पड़लैन अकाजक हएब। दुनियाँ तँ काज करैबलाक छी। की मृत्युक शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक अछि, सेहो नहियेँ हएत। जिनगीमे कहियो जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा व्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि..! पढ़ुआ-कक्काक मन राँइ-बाँइ भऽ फटि गेलैन। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिस बहए लगलैन। हृदए पसीज गेलैन। मन पड़लैन अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि ओइसँ हटल रखैमे केकर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छेलिऐन। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिलि करी काज, हारने-जीतने

कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलिऐन। अपनो एते होश नै केलौं जे साए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत! आब शेष जिनगी केना चलत? अपनो ने छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं! निराश मनमे सासुर मन पड़लैन। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा-ले रूसैए! मुदा सासु मन पड़िते पढ़ुआकाका मधुआए लगला। जँ लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ केतए करत? मन आरो पघिल गेलैन। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छैथ। मुदा फेर मनमे उठलैन जे रूसबो तँ केतेको रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलैन जे सियानी रूसबसँ शुरू करब आ जेते निच्चाँ सुतैर जाएत तेते निच्चाँ धरि आबि अँटैक जाएब। फुरफुरा कऽ उठि पढ़ुआकाका घर दिस विदा भेला। चारूभर चकोना होइ छला जे कियो देखए नहि। मुदा से सुतरलैन। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हरि कऽ बजला-

"ई घर मनुखक रहैबला छी! एमहर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओमहर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि..!"

कहि, रूसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि पड़ि रहला। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देख नेने रहैन। हँसुआ-खुरपी बाड़ीए-मे छोड़ि लालकाकी आँगन दिस बढ़ली तँ किछु अवाज सुनि पड़लैन, मुदा नीक नहाँति नइ बुझि सकली। ओना, लोकक दुआरे पढ़ुओकाका मुँह दाबिए कऽ बाजल छला। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजला-

"एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाइर करैबला...।"

पढ़ुआ-कक्काक बात लालकाकी बुझि गेलखिन जे केतौ किछु भेलैन हेन। दू बीघा हटल अवाजमे लालकाकी बजली-

"एलौं।"

'एलौं' सुनि पढ़ुआकाकाकेँ सवुर भेलैन। आ लालकाकी मने-मन सोचै छेली जे पुरुखक लटारम्भ की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी वौस कऽ शान्त कऽ देबैन। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलैन।

पत्नीक अवाज सुनि पढ़ुआ-कक्काक छाती दहैल गेलैन। नाँगैर सुरैर कऽ विद्यालय घर धरौलक! केतौ-के ने रहलौं। मन गरमेलैन। बमैक कऽ बजला-

"काल्हिए विद्यालय जा लिखि कऽ दऽ देबै जे आइए-सँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हेतै तँ मनिआर्डर कऽ रूपैआ पठा देत, नइ तँ नै पठबऽ।"

जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत तहिना पढ़ुआ-कक्काक लगले मन

थलथला गेलैन। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल अछि..? विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बुझि रहलौं हेन? आकि अर्थशास्त्र पढ़ैक अभाव रहल?

पढ़ुआ-कक्काक लग आबि लालकाकी पुछलकैन-

"चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला रखने छी, नेने आएब?"

पत्नीक बात सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन मचकी जकाँ झूलए लगलैन। मुदा आस लगिते मन दोसर दिस भऽ गेलैन। खिसिया कऽ बजला-

"हूँह! चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा!"

मुस्की दैत लालकाकी पुछलखिन-

"हमरे छी, अहाँक नइ छी?"

पत्नीक बात सुनि मन सिहैर उठलैन। बेरुका सुरूजक रौद जकाँ पढ़ुआ-कक्काक गरमी कमलैन। बजला-

"एकटा गप कहए चाहै छी?"

"भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धूराएल अछि, पहिने हाथ-पएर धोने अबै छी तखन अन्डी-तेलसँ घुट्ठियो ससाइर देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदिकाल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सूनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहैरक गप छी।"

लालकाकीक गप सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन आगिमे पकैत भँट्टा जकाँ असुआ गेलैन। असुआइते लजबिजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलैन। कल पड़ल रोगी जकाँ पतिकेँ देख लालकाकी सहैट कऽ निकैल, ठोकले बाड़ी पहुँच गेली।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआकाका बिसैर गेला। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलैन। किसानक बेटी लालकाकीकेँ खेतीक सोल्होअना लूरि छैन, ओना, अन्नक खेती तँ बटाइ लगा नेने छैथ, मुदा पाँच कट्ठा चौमास आ गाछी-बिरछीक सेवा टहल अपने करै छैथ। दूटा गाइयो पोसियाँ लगौने छैथ, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइ छैन। पक्का घर बना सभ बेवस्थो केने छैथ।

लालकाकी हँसुआ, खुरपी आ कोदारिकेँ आँगनमे रखि, झाड़ू लऽ कऽ अँगना बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पिबते रहैथ आकि मन पड़लैन पतिक रूसब। फेर मन पड़लैन अपन जिनगी। जाधैर माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोरेक इच्छा सदिकाल यएह रहैन जे धिया-पुता कखनो कानए नहि। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बुढ़ी–सासु–सदिकाल कहैत रहै छेली जे कनियाँ अँगनाक मालिक स्त्रीगणे होइ छैथ। तँए आँगनमे सदिछन बिआहक

मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नहि जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बुझि सती-धर्मक पालन करैत एली। मन पड़लैन सावित्री, दमयन्ती...। करुआ कऽ किछु बाजब उचित नहि। तैबीच दरबज्जा परहक अवाज सुनलैन। "हे भगवान, जानह तूँ।"

मने-मन पढ़ुआकाका अपने सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। आमोक गाछी तेहेन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल मोजरबे ने करैए, तँ गोटे साल बिजलोके-मे जरि जाइए। गोटे साल बिहाड़िए-मे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहेन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे केते जीब सकै छी..?

दरबज्जापर लालकाकीकेँ अबिते पढ़ुआ-कक्काक टुटल मन कलैप उठलैन। गोरथारीमे बैस लालकाकी कहलखिन-

"पएर सोझ करू।"

लालकाकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पढ़ुआ-कक्काक बोल निकललैन-

"पएर नै टटाइए, हृदैक बेथा छी।"

पतिक बात सुनि फरैक कऽ चौकीपर सँ उठि लालकाकी मधुआएल स्वरमे बजली-

"साँचे स्त्रीगण सबहक-मुहेँ सुनै छी जे पुरुख नँगरकट होइ छैथ! कुत्ता जकाँ सदिकाल नाँगैर टेढ़े रहै छैन।"

"जे बुझी।"

"तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुर जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक औत।"

"चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझहे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोरेक एक्के वृत्त करैए, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।"

पढ़ुआ-कक्काक बेथा सुनि लालकाकीक मन कानि उठलैन। जाधैर ओछाइनोपर पड़ल रहता ताधैर सत्ती साध्वी तँ...।

लालकाकीकेँ चौकीपर बैसते पढ़ुआकाका आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

"सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।"

'अहाँ छी' बजिते पढ़ुआकाकाकेँ मन पड़लैन छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन-

"भारी भूल भेल जे अहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित अहाँ-मुहेँ सूनब।"

अवसर पाबि लालकाकी पुछि देलखिन-

"अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी केते दिन जीब? जेते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब? राजा-दैवक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब। अखन दुनू परानी जीबै छी, मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछैल कऽ चौकीपर ठाढ़ होइत पढ़ुआकाका बजला-

"नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जखन अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तखन तँ... ।"

❍

शब्द संख्या : 3057

सतभैंया पोखैर

पोखैर कहिया खुनौल गेल आ के खुनौलैन ई मिथिलांचलक इतिहासे जकाँ अखन धरि हेराएले अछि, मुदा एते गामक सभ मानैए जे पोखैरक बतारी ने एकोटा गाछ-बिरीछ अछि आ ने आन कोनो चीज। ओना, पोखैर नमहर रहने रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी अछिए। कियो दैंतक खुनल कहैए तँ कियो राजा-रजवारक। मुदा जे हौउ, हजार बर्खसँ ऊपरक पोखैर जरूर अछि, जे सभ मानैए। शुरूमे पोखैरक महार जेहेन रहल हुअए मुदा अखन झड़ि-झूड़ि गेल अछि आ पोखैरक पेटो गदियाह भऽ गेल अछि।

गाममे एकेटा यएह पोखैर अछि, मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम रहितो पोखैरक अभाव गौंआँकेँ नै हुअ दइ छैन। चाकर-चौड़गर पेट अखनो ऐछे, मुनहर जकाँ दर्जनो ठेक-बखारी सद्दश...।

गाममे सभसँ पुरानो आ झमटगरो परिवार मात्र सतभैंयाकेँ रहलैन। पोखैरो हुनके सबहक छिऐन। केना भेलैन से तँ नीक जकाँ किनको नै बुझल अछि मुदा जहियासँ देखै छी तहियासँ हुनके सबहक कब्जामे रहलैन अछि। ओना पोखैर तँ गामे-गाम अछि मुदा आन गामक पोखैरसँ ऐ पोखैरक अलग पहचान अखनो अछिए। ने एते नमहर कोनो गामक पोखैर अछि आ ने चौबगली महारक घाट। एक्के घाट रहने पारो नहियेँ लगैत जेना आन-आन गामक पोखैरमे अछि। आन गामक पोखैरमे बड़ बेसी अछि तँ एकटा-दूटा घाट अछि। एकटा मरद आ दोसर जनाना लेल। तहूमे रंग-बिरंगक बेवहार बनल अछि, जइक चलैत जँ कहियो गाममे आगि-छाइ लगै छै तँ गामे सुन भऽ जाइ छै, मुदा एकोटा पोखैर रहने आइ धरिक इतिहासमे कहियो ऐ गाममे एना नै भेल अछि। ओना गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछि। केते गाम पूबे-पछिमे सूर्यमण्डल-गढ़ैनक बनल अछि जइसँ पूर्बा-पछबाक झोंकमे आगि लगिते धुआ-पोछा जाइए।

बिनु जाठिक पोखैर रहने अनगौंआँ तँ पोखैर मानबे ने करैत मुदा पोखैरक सभ काजक पूर्ति तँ होइते अछि, तँए गौंआँ लेल धैनसन। कियो अनगौंआँक गपपर धियानो ने दइत। सभ यएह मानि चलैत जे कियो अपन मुँह दुइर करैए। नीककेँ अधला कहने थोड़े अधला भऽ जाएत आ अधलाकेँ नीक कहने थोड़े नीक भऽ जाएत। जँ एहेन बजनिहार अछि तँ ओ अपन मुँह दुइर करैए। सभकेँ

अपन-अपन गुण-धर्म होइ छै, से तँ अछिए। चारू महार घाट रहने सबहक काजो चलिते अछि। तहूमे आन गाम जकाँ कोनो रोक-राक ऐछे नहि, जे ई घाट पुरुखक छिऐ तँ ई घाट जनानाक, ई फल्लाँक खुनौल छिऐन तँए दोसरकेँ नहाए देथिन कि नहि से हुनकर मन-मरजी छिऐन। कियो जाठि गाड़ि पोखैरक पहचान बनौने छैथ तँ छैथ। पोखैरक पहचान भलेँ जाठि हौउ, मुदा झील-सरोवर आकि धारमे जाठि कहाँ रहैए। तँए कि ओकरा कुमार कहि कात कऽ देबइ। आम खेनिहारकेँ आम चाही आकि ओ गाछ-गाछी गनत। हँ, ई बात जरूर जे आमक गाछ केना होइ छै, केना लगौल जाइ छै, केना ओकर सेवा कएल जाइ छै एकर जानकारी रहक चाही। जइ जाठि लऽ लऽ अनगौंआँ नचै छैथ ओ तँ ईहो कहता ने जे जाठिक काज की होइ छइ? जँ बीच पोखैरक पानिक नाप मानल जाए तँ जइ पोखैरक किनछैरेमे उपयोग करै-जोकर नहाइ-धोइक पानि रहत, ओकर बीचक नाप नपैक जरूरते की रहत? ओहन पोखैरक मानियेँ केते हएत जे एकटा घाट–जे भलेँ सिमटीए-ईटाक किए ने हौउ–बना बाँकी भागमे मोथी रोपि खेत बना लेब आ जँ कहीं गाममे आगि लागत तँ छूत-अछूत कहि गामे जरा देब, मुदा आगि लगबे ने करै से ने सोचब आ करब। जनियेँ कऽ पोखैरकेँ अघट बना दुइर कऽ लेब, नहाइ-धोइ-जोकर नै रहए देब तँ ओइमे दोख केकर? खाएर जे हौउ, मुदा चारू महार घाटो आ बिनु जाठिक पोखैरो तँ अछिए।

शुरूहेसँ गामक सतभैंया परिवार जोतल-चौकियौल खेत जकाँ समतल रहल अछि। ओना, बीच-बीचमे बाढ़ि-भुमकममे थोड़-बहुत उभर-खाभर बनबो कएल तँ ओकरा पुन: सेरिया समतल बना लेल गेल। मुदा भविस दिस नै देख, भूते दिस देखने तँ भूत लगबे करै छइ। मुदा तेकरो भगबैक तँ उपाय होइते अछि।

बाबेक अमलदारीसँ सतभैंया अपन परिवारक पहचान परोपट्टामे बनौने रहल अछि। ओना, सात भाँइक भैयारीमे तीन भाँइक परिवार नावल्द भऽ गेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ी अबैत-अबैत सातसँ चारि भैयारी रहि गेल। सात भाँइसँ सतरह हेबा चाहै छल से नै भऽ चारिपर उतैर गेल, तेकर कारण भेल जे एक भाँइ बेटीक बाढ़िमे दहा गेला। ढेनुआर नक्षत्र जकाँ बेटीक आगमन जोड़ा-पल्ला जे आबए लगलैन से ठीके सातसँ सतरह तँ नहि, मुदा एकसँ एगारह जरूर भऽ गेलैन। मुदा एकसँ एगारह होइतो हुनकर मुँह कहियो मलीन नइ भेलैन। मनक विश्वास अन्त धरि बनले रहि गेलैन जे प्रकृतिकेँ अपन गति छै, ओ अपन निअम-निष्ठासँ चलैए। जँ से नहि, तँ एक कम्पनीक वस्तु एक रंग होइ छै मुदा तइमे ओहन मेल-पाँच केना भऽ जाइ छै जे मेल-पाँच भेलोपर चारि-पाँच वा पाँच-छहसँ आगू-पाछू नै होइत अछि। भऽ तँ ईहो सकै छल जे एक रंगाहे होइत वा एकसँ पाँचो होइत वा आरो अन्तर भऽ सकै छल। मुदा से कहाँ होइए? जहिना

एकसँ साए धरि गनू आ साएसँ एक दिस गनू, पचास तँ बिच्चेमे रहत। तँए बेटा-बेटीक बाढ़ि अबौ आकि रौदी हौउ, मुदा अपन व्यासक अनुकूले रहैत आएल अछि आ रहबो करत।

दोसर भाए जे बच्चेमे कुभेला भेलासँ गाम छोड़ि परदेश गेला से पुन: घुमि कऽ नहियेँ एला। बाल-बोधकेँ सेवाक जरूरत होइ छै, होइत एलैए आ सभ दिन होइत रहतै। मुदा जखन वएह बाल-बोध चेतन भऽ जाइ छैथ, तखन हुनक विवेक की कहै छैन से तँ आनक-आन नै बुझि सकत। ओ अपने अपन कर्तव्यकेँ निर्धारित कऽ जीवन-पथपर चलता। खाएर जखन धरतिये भूमि छी तँ जेतए बास करब ओकरे मातृभूमि बना लेब। तहूमे ओइ बच्चाक तँ अधिकार बनियेँ जाइ छै जेकर जन्म जेतए बनि गेल हुअए। मुदा प्रश्न तँ अहूसँ आगू अछि। जँ धरती स्वर्ग वा वैकुण्ठ बनए चाहए तखन अपनामे बँटि कऽ बनत आकि सम्मलित भऽ कऽ? जँ से नहि, तँ हम केतए छी ई तँ देखए पड़त?

मुदा मिथिलांचलोक भूमि तँ वएह भूमि छी जे सभ दिन प्रकृति प्रदत्त रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जँ से नहि, तँ कहाँ अरब करोड़पर लटकल आ करोड़ लाखपर? सभ दिन जहिना रहल तहिना अखनो अछि। भलेँ केतौसँ हमहूँ कहिऐ जे छीहे।

तेसर भाँइक परिवार ऐ लेल आगू नै बढ़लैन जे शरीरसँ निरोग रहितो मनसनक बच्चेसँ भऽ गेला। जइसँ ने बिआह केलैन आ ने कोनो भाँइक बात-विचारमे कहियो रहला। तहिना बाँकी भैयारी मिलि घरक मोजरे समाप्त कऽ देलकैन। मुदा तइले हुनको मनमे कहियो दुखो नहियेँ जन्म लेलकैन। जखन भाय सभ लगमे बैसैथ तँ गरैज-गरैज बजैथ जे ‘मने सभ किछु छी, जे मनक मालिक ओ सबहक मालिक।’ मुदा भाइयो सभ बिना किछु टोकारा देने चुपे-चाप सुनि लैत जे अनेरे टोकने आरो बरदियाएब। से नहि तँ एक झोंक बाजि नारद जकाँ वीणा हाथमे लेता आ जेमहर मन हेतैन तेमहर विदा हेता। असगरूआ परिवारमे एककेँ वौड़ने परिवारेक उसरन होइए मुदा गनगुआरि जकाँ एकटा टाँग टुटनहि की हएत। एक भाँइ तँ परिवार-टोलसँ लऽ कऽ समाज धरि गढ़ि लइए। हम सभ तँ कहुना तैयो चारि भाँइ बँचल रहबे करब। बाँझी लगने डारि फड़ै नइए मुदा तँए कि ओ गाछसँ हटल रहैए, एहेन तँ नै होइत।

पिताक अमलदारीमे चाकर-चौड़गर, चौघारा घरक आँगन हथिसार सन दरबज्जा, चन्द्रकूप सदृश इनार, सरोवर सदृश बिनु जाठिक पोखैरक बीच सबहक जिनगियो संयमित रहैन तँए परिवारमे हर-हर खट-खटक प्रश्ने किए उठत। ओना सातो भाँइक सातो काज सात रंगक। जिनगी लेल सातो उपयोगी मुदा गुण-बेवहार आ उपयोगक हिसाबसँ छोट-पैघ। हर-हर खट-खट नै होइक

कारण एकटा दोसरो छल जे अपन-अपन बुधिक उपयोग कऽ स्वतंत्र रूपसँ सभ अपन-अपन काज सम्हारै छला। एक काजमे ने करैक बखेरा ठाढ़ होइत–जे एना-हेतै, एना नै हेतइ–मुदा एक विचारमे तँ से नइ होएत। समटल बिछानक सुख जहिना सुतनिहारकेँ होएत, तहिना ने समटल परिवारोकेँ होएत। छोट ओसार रहत आ बच्चा बेसी रहत तँ ओंघरा-ओंघरा खसबे करत। खाइकाल भिन्ने छिपली-बाटी फुटत, जहिना वस्तु वेपारक सहायक छी तहिना वेपार उपयोगक। जइ वस्तुक जेते उपयोग जिनगी लेल होएत ओ वेपार ओते चतरल। मुदा प्रश्न अछि जँ सभ फूल फूले छी तँ देवताक बीच बँटाएल किए अछि? जँ देवताक परसाद परसादे छी तखन महादेव किए बाँतर छैथ?

अखन धरि सतभैंया परिवारमे घराड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरिक जमीनमे दुइए बेर बँटबारा भेल छेलैन जे खूटे-खूट भेल छेलैन मुदा ऐबेर रूप बदैल गेल। भितरिया गुमराहट आबि गेल। मुदा खुलि कऽ आगू भऽ बजैले कियो अपन डेग नै बढ़बए चाहैथ।

जहिना सुखल जारैनक बीच आगि हवा पबिते धधैक उठैए तहिना पोखैरक लहैर जकाँ सतभैंया परिवारमे उठए लगलैन। कारणो अछि जे कहिया केतए जे कँचका ईटापर खपड़ा घर बनौलैन सएह अखनो धरि चलि आबि रहल छैन। निच्चाँ जहिना मुसहैनक माटि भरल तहिना अकासक तरेगन जकाँ फुटल खपड़ा लग इजोत होइत। शुद्ध किसानक घर। चाहे खेतमे काज करैकाल बरखा हुअए आकि सुतली रातिमे, अन्तर कोनो नहि। जहिना गोनैरक दुनू भाग एक्के रंग भेने उनटा-सुनटाक प्रश्ने नहि, पहिलुका चद्दैरक चारूभाग बराबरे होइ छेलै आ जे बँचल अछि ओ अखनो ऐछे, तहिना धोतियोक, मुदा आजुक जे सिंग-मांगबला चद्दैर वा अन्य जे वस्त्र अछि ओ एकभग्गुए नहि, संयुक्त परिवारक एकाकी रूप जकाँ बनि गेल अछि। जहिना जनमौटी बच्चा छोटसँ पैघ बढ़ैत सिरिफ मानवे नहि, महामानवो बनैत अछि मुदा वएह मनुख मृत्युक पश्चात अछियामे जखन जरबैले जाए लगैए तँ पैघसँ छोट बनैत-बनैत लोथरा जकाँ बनि जाइत अछि तहिना ने भऽ रहल अछि। ओना, खूटे-खूट जमीन बँटनौं जहिना छुतकाबला केश कटबैकाल सभ बरबरिये भऽ जाइ छैथ। तहिना बाधक जमीनमे कनी घटियो-बढ़ी भेलैन मुदा घराड़ी आ पोखैरमे कोनो तरहक कमी-बेसी नइ भेलैन, सभ अपन-अपन उपयोगक अनुकूल रहैत आएल छैथ। तँए सतभैंया परिवारकेँ गामक लोक एके परिवार बुझि ने कियो किछु बजैत आ ने किछु पुछैत। जइसँ पूर्बा-पछबाक कोनो लसैर नहियेँ लगल छेलैन। जखन लसैरे नै तँ असर किए। तेतबे नहि, ईहो बुझैत जे जहिना गाछक डारि फुटने फूल-फड़ थोड़े बदैल जाइ छै तहिना अनेरे देह रगड़ने तँ अपनो रगड़ा लगबे करत। मुदा से नै भेल, भऽ ई गेल जे सात भैयारीमे तीन भाँइकेँ सुखने गाछक डारि जकाँ

चारिए-टा रहि गेलैन आ तहू चारिमे दूटा बँझियाइये गेलैन, तँए फल-फूलक आशे नै रहलैन। मुदा दुइयो भाँइ रहने चारि भैयारीक परिवार पसारै-जोकर तँ भाइए गेला। गड़बड़ एतबे भेलैन जे एक भाँइकेँ एक आ एक भाँइकेँ तीन बेटा भेलैन। एक रहितो मानवीय विचार आर्थिक विचारमे बदैल रगड़ा-रगड़ी शुरू भेल।

जखने तीन भाँइ एक दिस हएत आ दोसर दिस कियो असगरे पड़त तँ निसचिते छह हाथ पैरक जगह दूटा हाथ-पएर झँपेबे करत। मुदा चद्दैर तँ ओइठाम ने झाँपि चारूकात अड़ियबैत जैठाम ओढ़निहारसँ डेढ़िया-दोबर होइत, से तँ परिवारमे भाइए गेल छैन। विचारवान परिवार सभ दिनसँ रहलैन जँ से नै रहलैन तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन परिवार मटियामेट भऽ गेल। मटियामेटे नहि, केते जहल भोगलक तँ केते अस्पताल, केते फाँसीपर लटकल तँ केते कपार फोड़ा मरल। मुदा विचारेक चलैत ने परिवारकेँ ने कहियो सम्प्रादायिक आ ने जातिक हवा कनियोँ डोलौलकैन। समैक प्रभाव तँ सभ किछुपर पड़िते अछि से तँ परिवारोमे भेलैन। ओना जेकरा समय कहै छिऐ–दिन-राति–ओइमे ओतेक बदलाव कहाँ आएल, किएक तँ अखनो बारहो मास आ छबो ऋृतु होइते अछि। अपन-अपन गुण-धर्म तँ बँचौनहि अछि। मुदा एकटा गड़बड़ तँ परिवारमे भाइए गेलैन। ओ ई जे एक भाँइक बेटा–श्याम–भैयारीमे असगरे छथिन। असगर भेनाइ तँ बड़ पैघ बात नहियेँ भेल, मुदा पिताक भैयारीमे छोट भाइक बेटा रहने किछु गड़बड़क सम्भावना तँ जनमियेँ गेलैन।

बाबाक अमलदारीमे सातो भाँइक बीच बँटबारा भेलैन मुदा ओ पुन: समटा गेलैन। कारण ई जे शुरूमे तँ बँटबारा भेलैन मुदा तीन भाँइक परिवार घटने फेर समटा गेलैन। केना नै समटाइत, तीनूकेँ कियो पानियोँ देनिहार तँ नहियेँ रहलैन।

चारू भाँइक बीच एहेन सम्बन्ध बनल रहलैन जे भीन-भीनौजीक परिस्थितिये पैदा नै लेलकैन। तेकर कारण भेल जे चारू भाँइक चारि तरहक कारोबार रहलैन। एक काजमे चारि गोरेकेँ रहने वैचारिक मतभेद होइक सम्भावना रहै छइ। किएक तँ एक्के काज केते ढंगसँ कएल जा सकैए। तहूमे जखन समैक मोड़ अबै छै तखन काजोमे मोड़ अबै छइ। सभठाम भलेँ नहि अबौ मुदा नहियेँ अबै छै सेहो नइ कहल जा सकैए। चारू भाँइकेँ परोछ भेने परिवारमे भीन-भिनौजक सम्भावना बनलैन। सम्भावनाक कारण भेलैन जे एक भाँइकेँ एकेटा बेटा, जखन कि दोसरकेँ तीनिटा भेलैन। दू भाँइ तँ मेटाइए गेला।

छोट भाइक बेटा रहितो श्याम भैयारीमे सभसँ जेठ, खाली भैयारीए-मे जेठ नहि, पढ़ै-लिखै दिस सेहो विशेष झूकान रहैन। एक तँ पढ़ैक लगन दोसर

सुभ्यस्त परिवार रहबे करैन। मुदा तीनू भाँइ घनश्याम खेलौड़िया बेसी। सदिकाल सिनेमे-पत्रिका आ खेले-पत्रिका उनटा-पुनटा देखैत। पढ़ैपर तँ ओतेक नजैर नहि, मुदा फोटोपर बेसी नजैर पड़ैत।

अखन धरि श्यामक विचारमे कोनो दूजा-भाव नै आएल छेलैन जइसँ कोनो तरहक नीक-अधलाक प्रश्ने नै उठल छल। जे किछु कारोबार छेलैन सामूहिक छेलैन। तहूमे एकटा जबरदस गुण श्याममे छैन जे घरसँ बाहर धरिक जे कोनो काज होइ छैन ओ तीनू भाँइ–अपना लगा चारू–केँ जरूर जानकारीमे दैये दइ छथिन। मुदा भैयारीक संग दियादनियोँ तँ बरबैर भाइए जाइत अछि। एक बाप-माए वा सहोदर पित्ती-पितियाइनिक बीच जे सिनेह रहैत ओ तँ चारि गामक चारि दियादनीकेँ एने तँ किछु-ने-किछु गड़बड़ भाइए जाइत अछि। कारणो छै, मिथिलांचलेमे एक सीमा कातक गाम आ दोसर सीमा कातक गामक बीचक जँ दूरी अछि तइमे खान-पान, रहन-सहन, बोली-वाणी इत्यादिमे किछु-ने-किछु अन्तर बनले आबि रहल अछि। तहूमे जइ इलाकामे बाढ़िक उपद्रव कम छै आ जइ इलाकामे बेसी छै, दुनूक जीवन शैलीमे सेहो बदलाब अबै छइ। जखने जीवन-शैली बदलत तखने जीवन पद्धति बदलत। जखने जीवन पद्धति बदलत तखने जीवन लीला बदलए लगै छइ। तहिना गाममे अखड़ाहा रहने किछु-ने-किछु लूरि कुस्तीक भाइए जाइ छइ।

तहिना मध्य मिथिलांचलक भाषामे पश्चिम–भोजपुरी सीमा–क्षेत्रक सुआसिन एने, भाषामे किछु-ने-किछु रूप बदलले रहै छै जइसँ भाषापर माने बोली-वाणीपर प्रभाव पड़ै छइ। तहिना पुबरिया इलाका वा दछिनबरिया इलाकाक प्रभाव सेहो पड़िते आबि रहल अछि। जहाँ धरि कुटुमैतीक प्रश्न अछि ओ तँ भागलपुरसँ मोतिहारी आ जनकपुरसँ सिमरिया धरि होइते आबि रहल अछि।

एकाएक श्यामक मनमे भैयारीक प्रति सिनेह किछु कमए लगलैन। सिनेहमे कमी एने काजमे कमी आबए लगलैन। जेना शुरूसँ परिवारक काजक जानकारी सभकेँ दैत अबै छेलखिन तइमे किछु कमी आबए लगलैन। तीनू भाँइ खेलौड़िया सोभावक रहबे करैथ, तैबीच काजक आदेश कम पाबि आरो खेलौड़िया भऽ गेला।

अखन धरि घनश्यामकेँ श्याममे कोनो कमी नै देख पड़ैन। तँए हिसाबक कोनो जरूरतो नहियेँ बुझैथ।

श्यामक मनमे सिनेह कमैक कारण भेल जे पत्नी सदैतकाल कानमे घोरि-घोरि पियबैन जे सम्पैत अपन आ सुख-मौज दियाद सभ करैए! पहिने तँ श्याम पत्नीकेँ सेवक बुझैत आबि रहल छला, ई नै बुझै छला जे दियादनीसँ दियादियो

ठाढ़ होइ छइ। मुदा विचारो तँ किछु छिऐ, अड़ि कऽ पत्नी पूजे करैकाल खिसिया-खिसिया बाजए लगलैन-

"जइ पुरुखकेँ कोनो बात बुझैक ज्ञाने ने छै ओ पुरुख नहि, पुरुखक झड़ छी!"

पत्नीक बात श्यामकेँ छातीमे धक्का देलकैन। मन कहए लगलैन जे 'झड़'क अर्थ तँ ओ होइत जे कखन अछि आ कखन अपने झड़ि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। जे पाछू दिस ससरत ओ पौरुष केना पाबि सकैए? मुदा अखन मुँह खोलैक तँ समय नै अछि सिरिफ सुनैक समय अछि...।

जहिना बाल्टी भरि पानिमे नेबो आ चीनी रखिए देने तँ सरबत नै बनैए। नेबोकेँ काटि गाड़ि कऽ रस मिलौल जाइत अछि तहिना चिन्नियोक अछि। जहिना एक शब्द वा एक पाँति पढ़लासँ बुझिमे नै अबैत बल्कि दोहरा-दोहरा पढ़लासँ वा ऐगला-पैछला पाँतिक मिलानसँ बुझल जाइत अछि तहिना ऐगला बातक प्रतीक्षामे श्याम आँखि उठा पत्नीपर देलैन।

नजैरक पानि देख पत्नी बुझि गेली जे ऐगला बात सुनैक प्रतीक्षा कऽ रहल छैथ। जहिना मधुमाछीक सभ छत्तामे एक्के रंग मधु नै रहैत, कोनोमे कम तँ कोनोमे बेसियो रहैत आ तइ संग-संग नव-पुरान–पहिलुका-पैछला–सेहो रहैत। तँए ठिकिया कऽ ओइ छत्ताकेँ पकड़ब बुधियारी छी जइमे डगडगी भरल नवका मधु रहैए। किएक तँ पुरना मधु दबाइ-दारू लेल नीक होइ छै, खाइले तँ नवके नीक हएत, तहिना वकील जकाँ अपन पक्ष रखैत पत्नी बजली-

"अखन धरि अहाँ एतबो ने बुझै छिऐ जे चारू भाँइक बीच पनरहटा बाल-बच्चा आँगनमे अछि। पनरहोक खर्च तँ सागीरदेमे सँ चलैए। एके रंग लत्ता-कपड़ा, खेनाइ-पीनाइ अछि, मुदा ई बुझै छिऐ जे ऐमे अपन केते हएत आ दियाद-वादक केतबे छैन?"

श्यामक नजैर धँसए लगलैन। पत्नीक विचारमे किछु तत्त्व बुझि पड़लैन मुदा से स्पष्ट नै भऽ सकल! प्रतीक्षाक नजैर उठा श्याम आगू दिस ताकए लगला। तैबीच अवसरक लाभ उठबैत पत्नी दोहरौकैन-

"पनरहटा बाल-बच्चामे अपन तीनटा अछि। बाँकी बारह तँ भैयारीए-क भेल। तैसंग अपने दू परानी छी आ ओ छह परानी अछि। कनी जोड़ि कऽ देखियौ जे अदहा हिस्सामे अपन केते हएत आ केते हुनका सबहक हेतैन।"

श्यामक मन सहमलैन। सहैमते उठलैन- जे पत्नी अक्षरस: सत्य कहि रहली हेन। सम्पैतक अर्थ सुख-भोग होइ छै, परसादी बाँटब नहि।

पूजासँ उठि भोजन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"घनश्याम, दुनियाँक तँ बेवहारे भैयारीमे भीन होएब रहल अछि। अपनो सभकेँ कम नै निमहल। गाममे देखै छिऐ जे केते छौड़ाकेँ मोँछक पम्हो ने आएल रहै छै आ बापसँ भिन भऽ जाइए अपना सभ तँ सहजे धीगर-पूतगर भेलौं। भीन भऽ जाह।"

जेना घनश्यामो प्रतीक्षेमे रहए तहिना धाँइ-दे बाजल-

"भैया, सभ दिन अहाँक आदेश मानैत एलौं, आइ नै मानब से उचित हएत। मुदा अहाँ जहिना जेठ भाय छी तहिना तँ रामो-बलराम अछि। भलेँ ओ दुनू छोट भाए छी, जे कहबै से करत। मुदा तैयो बिना पुछने किछु नै कहब।"

"बड़ बढ़ियाँ, अखन जा कऽ पुछि लहक। सुति कऽ उठै छी तखन फेर गप करब।"

घनश्याम उठि कऽ विदा भेल।

तीनू दियादनियोँ आ दुनू भाइयोकेँ एकत्रित कऽ घनश्याम पुछलक-

"सबहक बीचमे कहै छी। भैया बजा कऽ कहलैन जे भीन भऽ जाह। से की विचार?"

बलराम कहलकैन-

"विचार की भैया, ओ असगर छैथ तँ जीविए लेता आ हम तँ सहजे तीन भाँइ छी। हुनका जे मनो खराप हेतैन तँ ने कियो डॉक्टरो ऐठाम लऽ जाइबला हेतैन आ ने बजारसँ दबाइ कीनि कऽ अनैबला हेतैन।"

घनश्याम-

"सबहक की विचार?"

पहिल दियादनी-

"अपन परिवार बुझि नौरी जकाँ दिन-राति खटै छी तैपर जे पाँचो मिनट चाहमे देरी हेतैन तँ साँढ़-पारा जकाँ गर्द करए लगता। भने नीक हएत। जानो हल्लुक हएत।"

सुति उठि चाह पीब पान खा श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़लखिन। अबिते घनश्याम लगमे बैस कहलकैन-

"जे विचार अहाँक अछि भैया, सएह हमरो अछि। अखने बाँटि लिअ।"

घनश्यामक बोली सुनि श्याम सहमला। मनमे उठलैन, हम जे बुझै छिऐ तइसँ भिन्न ने तँ बुझैए। मुदा बात तँ आगू बढ़ि गेल आब जँ पाछू हटब सेहो नीक नहि। बजला-

"बँटबारामे कोनो बेवधान तँ छहे नहि। सभ किछु अदहा-अदही भेलह।

तखन बाप-पुरुखाक बनौल जेठौंस होइए से तँ तोहीं बजबह?”

श्यामक विचार सुनि घनश्याम कहलकैन-

“अहाँ पितासँ हमर पिता जेठ छला। संयोग नीक रहलैन जे भिनौजी नै भेलैन। जखन पिताक अधिकारक हिसाबसँ आइ बँटै छी तँ हुनकर जेठौंस केते हेतैन से तँ हमर हएत किने?”

श्याम कहलकैन-

“देखह, तमसा कऽ नै बाजह। सभ दिन अपन सतभैंया परिवार ‘विचारक परिवार’ मानल जाइत रहल अछि, तैठाम कनी-मनी चीज लेल झगड़ब नीक नहि।”

घनश्याम मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बात तँ बड़ सुन्दर आ बड़ सोझगर कहलौं मुदा एक वंशक सभ रहितो अहाँ अइल-फइलसँ रही आ हम सभ बँटाइत-बँटाइत एते बँटा जाइ जे घसाएल सिक्का जकाँ सभ किछु रहितो चलबे ने करी, से केहेन हएत?”

तैपर श्याम पुछलखिन-

“तोहर की विचार?”

घनश्याम कहलकैन-

“तीनू भाँइक विचार अछि जे घर-सँ-घराड़ी, खरिहाँन-सँ-खेत धरि चारू भाँइ एकरंग कऽ लिअ। जँ से नहि, तँ... ।”

श्याम-

“तँ की?”

घनश्याम-

“ई तँ माटिक चर्च केलौं। पोखैर सेहो तहिना बाँटब। जँ से दइले तैयार नै हएब तँ जमीनक फैसला जमीनपर हएत।”

श्याम-

“सएह।”

घनश्याम-

“हँ! सोलहन्नी सहए।”

❍

शब्द संख्या : 2999

उलबा चाउर

अगहनक पूर्णिमाक दिन। काल्हि पूस चढ़त। अदहा-अदहीपर जाड़ औत। महिना दिनक पछाइत पूर्णिमा औत। सकराँइतकेँ पूर्णिमासँ कोनो सरोकार नै छइ। सरोकारो केना रहतै, एकटा दिनक हिसाबे चलै छै दोसर मासक हिसाबे। ओना दुनू दिन-राति संगे चलैए, संगे रहैए मुदा करवन के अगुआ जाइए आकि पछुआ जाइए से ओ जानए। मुदा आब अगहनुआँ जाड़ थोड़े रहल, तहूमे ऐबेरक अगहनमे तेहेन शीतलहरी भेल जे माघोक कान कटलक। जहिना कोनो खेल आकि काजमे हानि-लाभ संगे चलै छै मुदा के करवन अगुआइ छै आ के करवन पछुआ जाइ छै से जानब सबहक बसक काज नहि। जँ से रहैत तँ एक्के भैयारीमे कियो वर-बिमारीक तर पड़ि तरोटा बनि जाइए आ कियो बेटाक दहेज लऽ कऽ उपरोटा बनि जाइ छइ। एक कील रहनहि की हेतइ। तरोटा ने साधल रहत उपरौटा तँ छुट्टे रहत। तहिना जाड़ोक भेल। अगहनक शीतलहरी, समैसँ पहिनहियेँ माघकेँ बजा अनलक। पूस तँ बिच्चेमे रहि गेल। अगहन-माघकेँ भेँट भेने पूस हेरा गेल। किएक तँ जहिना गोटे-गोटे गाइयो-महींसकेँ आ मनुखोकेँ समैसँ पूर्ब जुआनीक सभ वयकरन अपने आबि जाइत तहिना जाड़ोक भेल। पल-पल ओस पला पाला बनबै कएल। लतैर-लतैर गोड़ा रोपि लतरबे कएल। अनुकूल अवसरो भेटलै। कश्मीरी बरफवारी संगबे भऽ गेलइ। समैसँ पूर्व भेनौं आम जकाँ ने कोलिफट्टू भेल, ने रसफट्टू भेल आ चोकरेबो नहियेँ कएल। मुदा एते तँ भेबे कएल जे पछिया अगते पकड़ने ओसो मोटा-मोटा पाला बनि पलरबे कएल। जे हवा संग चलै छल ओ ओसक बून बनि टप-टप नाकपर होइत खसबे कएल। मेघौन नै रहितो सुरूज तेना झँपाएल जे दिनो रातिए जकाँ भऽ गेल। भरिसक दशतारक ने तँ छी..!

जाड़क बैसारी भेने घूरोक चलती आएल, गपो-सप्प बढ़ल आ पोथियो-पुराण उनटल। पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोक बीच शास्त्रार्थ चलए लगल। कियो 'ग्रह' कहैत तँ कियो 'ग्रहक करतूत'। मुदा गपक गरमी ओतए मद्धिम पड़ि जाइत जेतए निर्णय होइत, जँ अपना बरदकेँ कुड़हैरेसँ कियो नाथत तँ अनका की! तइले हम सभ अनेरे मुहाँ-ठुठी कऽ फूला-फुली किए करब। जाड़ेक मसिम छिऐ ओकरो तिहाइ हिस्सा तँ छइहे। ओकरो जे मन फूरतै आ जेना मन हेतै तेना अपन करत। अपने केने ने कियो जीबैए। ओहिना तँ नै कहल गेल अछि जे अपने मुइने जग

मरए।

बुढ़-बुढ़ानुसक बीच तेसरे झमेल ठाढ़ भेल। कियो कहैत जे पूस-माघमे शीतलहरी तँ देखैत एलौं मुदा अगहनमे तँ नै देखने छेलौं! मुदा हुनको सबहक गप ओइठाम जा अँटैक जानि जेतए जुग-जमानाक उठैत। बापे-बेटाक सम्बन्ध जे बनि गेल ओ केते उचित अछि, जखन जुगे बदैल गेल तखन की बदलत आ केते बदलत तेकर कोनो ठेकान! समुद्रक भँसियाएल नाव, लहैरक धक्का सहत तखन ने किनछैर धरत। नहि तँ केकर मजाल छी जे नावकें बँचा लेत..?

मुदा गाम-घरक बात उठिते सभ गप तर पड़ि जाइत। समस्या ठाढ़ भऽ कहैत जे केना बाधक लक्ष्मी एहेन समैमे घर औती। नै औती तँ उसनियाँ केना हएत आ के करती! उसनियाँ नै हएत तँ उसना चाउर केना बनत! नइ बनत तँ सुपच्च खेनाइ केना हएत? अरबा-अरबाइन तँ राजा-महाराजाक छिऐ, किसान परिवारक तँ उसने छिऐ ने। भलें नोकरिया-चकरिया अपनाए नेने हुअए। परिवारक ओ औरत जे जेते परिवार-ले करैत ओ ओते ओइ घरक गिरथानि होइए किने। जहिना खेतक धान, पानिक संग चुल्हिपर चढ़ि अपन व्याकरण बदैल उसनल धानसँ उसना चाउर बनि 'उसना भात' बनैत जे सुस्वादुक संग सुपाच्यो होइत अछि तहिना ने घरक लक्ष्मी सेहो होइ छैथ।

पनरह-बीस दिनक शीतलहरी भरिसक छँटत। पोह फटिते रविया एकचारिक घूर लग बैस पीढ़ियेपर खुरपी लऽ कऽ तमाकुल मिलौल गाँजा कटैत रहए। पनरह-बीस दिनक परता भेने खुरपियो अधबिज्झू भऽ गेल रहइ। जहिना चालि कमने पैरक होइ छै तहिना धार मोटा गेल रहइ। लेटौल गाँजापर खुरपीक बेंटकें जोरसँ दबिते रवियाक मनमे उठलै-

"केते दिनसँ निआरै छी जे गुलाबतरव्ती आ प्रेमकटारी लेब से तेहेन ने समय भऽ जाइ छै जे की लेब! बुझै छिऐ जे अपन प्रेमकटारी आ गुलाबतरव्ती खुरपीए-पीढ़िया छी!"

घूरसँ खड़ौआ जौड़क गूल निकालि चीलमपर चढ़ा भोग लगबैत मंत्र पढ़लक-

"जीवैत-मरैत जे जेतए छह आबि जाह!"

मंत्र पढ़ैत रविया दमसा कऽ चीलममे दम मारलक। जहिना चारक वा भीतक दाबसँ घरक मुँहक चौकैठ-केबाड़ कसकसा कऽ बन्न रहैत मुदा जोरसँ धक्का पाबि खुजि जाइत तहिना रवियाक कपाट खुजल। बाजल-

"दिलरामक माए, कनी एमहर आउ?"

जड़ाएल पतिक अवाज सुनि रूपनी सिरसिराइत आबि आगूमे ठाढ़

भेली। ने दोहरा कऽ रविया किछु बजैत आ ने रूपनी। एक रंगक रोगी दोसराक की हाल-चाल पुछत। मुदा नहियोँ पुछने तँ नहियेँ हएत। मुँहक काजे की छिऐ। खाइयेकालमे ने कनी बाँकी तँ बैसारीए रहैए। तहूमे बैसारियो की एक्के रंगक होइ छै, केतौ खेलहा तँ केतौ बिनु खेलहा सेहो होइते अछि। तैबीच तँ बीचमानि तखने चलत किने जखन दुनूकेँ नीके कहत। जँ से नइ कहत तँ मुँहक मानियेँ की भेल? मुदा बिहंगरो कम रहै तखन ने जे दुनूकेँ अगल-बगल जोड़ियो कऽ चलत, मुदा जैठाम अकासे फाटल छै तैठाम दरजीए बेचारा की करत आ केते करत! कियो खाइक रोगसँ पीड़ित भऽ सुखा रहल अछि तँ कियो भूखक रोगसँ। मुदा तहूसँ नमहर बिहंगरा तँ ओतए उठैत जेतए भुखेलहासँ बेसी भुखाएल-खेलहाक खेल चलैए!

दुनू परानी–रविया-रूपनी–एक दोसरपर आँखि अँटकौने जेना आगू-पाछू दुनू दिस दुनू दुनूकेँ देखैत। मुदा गाँजाक चढ़ल मन रविया अपन मौन तौड़ैत बाजल-

“बुझलौं की से किने आइ खिचड़ी खाइक मन होइए। तिला सकराँइतक भरोसे की रहब।”

पतिक बात सुनि रूपनी किछु बाजल नहि। मुदा रूपनीकेँ अनसोहाँत जकाँ रीब-रीब लगल। रीबरीबाइत बाजल-

“एना किए अहाँ तिलासकराँइतक खिदहाँस करै छी। सोझ मुहेँ कहू जे खिचड़ी खाएब।”

पत्नीक बात रवियाकेँ कण्ठक निच्चाँ नै उतरल। गल-गलबैत बाजल-

“एकटा खिस्सा कहै छी। एगो रहै अन्हरा एगो रहै डिठरा। दुनू मिलि कातिकमे एकटा खत्ता उपछलक। तइमे फँसलै एकटा अन्है। डिठरा कि केलक जे नाँगैर दिससँ अन्हराकेँ पकड़बैत जहाँ उधडरेड़पर आएल कि जोरसँ कहलकै- ‘छोड़-छोड़ ने तँ धाए लेतौ साँप छिऐ!’ ओ छोड़ि देलकै। से हम थोड़े छी। अहीं कहू जे आब लोक दुरागमन करैए आकि माल-जाल फरिछबैए। हे मानि लेलौं जे बर-कनियाँक दुरागमन भेल मुदा बेटा-बेटीक की हएत। घरेक काजमे एना दू रंग किए भेल जाइ छइ?”

रवियाक बात सुनि रूपनी जेना पघिल गेल तहिना विस्मित होइत बजली-

“उसना चाउर ऐछे कनी नून दऽ कऽ टभका लेब। कचका मिरचाइ चीर कऽ दऽ देबै, तइले अहाँ किए लल-वेकल छी।”

जहिना ठीकेदारकेँ बिल-भुगतानक दिन होइत जे रोहू लेब कि मुंगरी तहिना रवियाकेँ भेल। गरीबक गोनैर जहिना दुनू कात चिकने होइ छै तहिना दुनू

परानीकेँ भेल। रविया बाजल-

“अरबा चाउरक प्रेमी छिऐ दूध-चीनी आकि नून। मुदा अपन सबहक तँ नूने छी किने? जखन खिचड़ीए भेल तखन चाउर, पानि आ नून-मिरचाइ पड़बे करत, एते जइमे पड़त से खिचड़ी केना नइ भेल।”

खाइक ओरियान देख रवियाक मन घुमल, घुमिते गंभीरता देखबैत असथिरसँ बाजल-

“बाध गेना बीस दिनसँ ऊपरे भऽ गेल। बाधमे की भेल हएत की नहि। तहूमे तेहेन ने सिल्लीक उजैहिया आएल अछि जे सभटा धान चाभि देने हएत।”

पतिक बात सुनि रूपनी अगुअबैत बाजल-

“पैछला बेर देखलिऐ जे बीघा भरि सोनाइ कक्काक सूर्यमुखी फूलकेँ सुग्गे खा गेलइ! बेचारे केते आशा लगा खेती केने छेलखिन!”

पत्नीकेँ भँसियाइत देख रविया लोहछैत बाजल-

“हमरा एते–सौंसे गामक हिसाब-बारी–जोड़ैक काज नइए। हम माल-जालक ओगरवाहि करै छिऐ आकि चिड़ैयो-चुनमुनीक। खेलकै तँ गिरहतक खेलकै, हमर बड़ खेलक तँ रखवारिक राखी।”

साक्षात् वैरागी भेल निर्विकार पतिक रूपकेँ देखते रूपनीकेँ जेना सुरूजक धाही नजैरपर पड़लै, चरियबैत बाजल-

“हम चुल्हिक ओरियानमे जाइ छी। अहाँ झब-दे बाध चलि जाउ, नहि तँ गिरहत अबलट जोड़त। जँ पहिने चलि जाएब आ गिरहतकेँ देखब तँ अगुआइए कऽ कहबै जे तेते ने सिल्ली आबि गेल जे एको कनमा धान नै होइबला अछि।”

पत्नीक विचार रवियाकेँ जँचल, मुदा भरल पेट जहिना ओछाइन दिस तकैत तहिना एक तँ घूरक अगियासीक ताउ तैपर गाँजाक रंग रवियाकेँ चढ़ले रहै, तँए उठैक मन नै भेलइ। मुदा आगियोक तँ अपन गुण होइ छै किने, चाहे तँ उपयोग करू नहि तँ घर जरौत। मुदा से रवियाकेँ नै भेल। मन छड़पलै। छड़ैपते फुसफुसाएल-

“कोनो गामक नाइँर-गाइँर नीक नै छइ। कहू जे जखन एक्के नाओं सबहक अछि गाम, तखन किए कोनो गामक बाधक रखवारि बीघामे दस धूर छै, तँ कोनो गामक पाँच धूर। कोनो गामक चारि धूर छै, तँ कोनो गामक दू धूर!”

बजैत-बजैत रवियाक मन ठमकए लगलै, मुदा फेर बाजल-

“अनेरे कोन चक्करमे चकराइ छी। ई तँ रखवारिक भेल। जेकरा ने माए छै आ ने बाप। मुदा माइयो-बापबला केँ तँ देखते छिऐ जे कोनो गामक लग्गी साढ़े

छह हाथक छै तँ कोनो गामक पौने सात हाथक। तहिना कोनो गामक साढ़े सात हाथक छै तँ कोनो गामक नअ हाथक। धुर! अनेरे अनकर रोग अपना सिर सिरजै छी। साबे बोझ जकाँ सदिकाल गरमुराहे होइत रहैए तखन तँ कहुना कऽ सम्हारि खरिहाँन पहुँचू जे पसाइर कऽ सुखा लेब। बड़-बड़ लीला सभ छइ। केते देखब। जखन एक्के गामक एक्के आड़िक खेतक मलगुजारी 'बढ़मोत्तर' कहि रेन्ट मुक्त अछि, आ बगले बलाक ओते रेन्ट अछि जे मलगुजारी भुगतानपर बटाइ खेत रहै छइ।"

ऐगला बात मनमे अबैसँ पहिने रविया फुरफुरा कऽ उठल। शीतलहरीक चलैत जे कुतरूमोमे अगते फूलक कोढ़ी आबि गेल छल, से रविया देखने रहए। बाजल-

"अहाँ बाड़ीसँ कुतरूम आनि लेब। ताबे हम बाध दिससँ भेल अबै छी।"

रविया बाधक रस्ता धेलक।

करीब अस्सी बीघाक दछिनबरिया बाध, जेकर रखवारि रविया करैत। संयोग नीक रहै जे तीन साल पहिने पैछला रखबार–जे पंजाब गेल–रवियाकेँ बाधक भार देने गेल। पचास बीघासँ ऊपर जमीन निचला आ पच्चीस-तीस बीघा ऊपरका जमीनक बाध छिऐ। तइमे पाँच बीघा जमीन उस्सर छै, जइमे भरि-भरि जाँघक कुश अछि आ परदेशिया सबहक किरदानीसँ पान-सात बीघामे छाहेँ भऽ गेल छइ। तैपर रौदी भेने उपराड़ि खेत अवादे ने भेल...।

खोपड़ी लग पहुँचते रवियाक मनमे उठल- अनेरे एहेन ठण्ढामे पैरक बेमाए किए फटाएब। नीक हएत जे खोपड़ी अपन छीहे, आगि सुनगा घूरे तापी। उपराड़ि चौरक बीच परतीपर रवियाक रखवारिक खोपड़ी छइ। घूर पजाइर बैस गेल, हाथ-पैरक कन-कनी कमए लगलै। रवियाक मनमे उठलै- अनका जे हौउ, मुदा भगवान पक्षक काज केलैन।

उपराड़ि नै उपजल तँ नै उपजल मुदा निचला तँ उपजल अछि। नै साल भरि तँ छबो मासक बुतात तँ हेबे करत। मुदा गामेमे देखै छी जे अही चौरीटा मे नहर नै भेनौं नहरक पानि एलइ। बाँकी गाम तँ रौदियाहे भऽ गेल अछि!

सिताएल नढ़िया जकाँ सुरूज तँ उगल मुदा सिरसिराइत। नव विहान देख गिरहस्तक बीच चलमली आएल। पानिक धानमे कनी ठंढे ने लागत मुदा सुरूजोक तँ धाही छइहे। हो-न-हो कहीं पूस-माघ अगुआएल अछि जँ कहीं पैछला डेग नपलक तँ फेर ओहिना भऽ जाएत। एक तँ रौदियाह समयक अन्न, तेकरो जँ जानि कऽ छिजानैत करब तखन तँ आरो केतौ भऽ कऽ नइ रहब।

किसानक चलमली देख रूपनी हाँइ-हाँइ भानस कऽ दुनू मायपुत खेनाइ

खेलक आ पति-ले खाएक लऽ कऽ आठ बजैत-बजैत हँसुआ नेने विदा भेल। सात बर्खक बेटा–दिलराम–कैं अँगनासँ निकैलते रूपनी कहलक-

“बौआ, आइ उलबा चाउर खुएबो।”

आगू-आगू दिलराम आ पाछू-पाछू रूपनी बाध दिस विदा भेल। किछु दूर गेलापर रूपनीक मनमे उठल। भगवान कूह फेड़लैन। नै तँ कोनो दशा बाँकी नै रहितए। जहिना अन्नक गति होइत तहिना जारैनक। ओहो तँ माघ-ले रखने छेलौं जे कोनो धरानी पार लागल, नहि तँ कठुआ कऽ मरैमे कोनो भाँगठ छेलए।

गाँजा पीबैत रविया आगू-आगू बेटा आ पाछू-पाछू पत्नीकैं अबैत देख, बुदबुदाएल-

“जे जीबए से खेलए फॉगु। हमरा सबहक जिनगीए की अछि जे ऐगला आशापर जीब। जहिया हेतै तिलासकराँइत तहिया हौउ। अपन तँ आइए छी।”

मुदा लगले मन ठमैक गेलइ। आन पाबैन खीरक होइ छै आ तिला सकराँइत किए खिचड़ीक होइ छइ? तहूमे उजरा अरबा चाउरक संग करिया तिल-गुड़ आ पानिक संग परसाद किए बनै छै..?

आँखि मूनि रविया विचारिते छल, जन-गिरहस्तसँ बाध भरि गेल छल। तैबीच दुनू मायपुत रूपनी लगमे पहुँचल आ पहुँचते बाजल-

“जहिना गामपर तहिना बाधोमे भकुआएले रहै छी!”

रवियाक बनल मन रहबे करइ, बाजल-

“गामपर तँ अहाँ देख भकुआ जाइ छी मुदा बाधमे तँ अपने देखै छी किने।”

तैबीच बीघा दुइए हटि धानक खेतमे जन सबहक बीच हल्ला भेल। हल्लाक कारण रहै एक भाग सिल्ली धान चाभि देने रहइ। धान नै देख जन-सबहक बीच पाहि धड़ैक हल्ला रहइ। हल्ला देख रूपनी पतिकैं कहलक-

“कनी जा कऽ देखियौ जे किए झगड़ा होइ छइ।”

गाँजाक असकताएल मन रवियाक, बाजल-

“हम बाधक रखबार छिऐ आकि गामक पंच! अपन गिरहत फरिछाबह...।”

रवियाक बात रूपनीकैं जँचलै। आगूमे थारी बढ़बैत बाजल-

“बेटाकैं आइ उलबा चाउर खुआइयो देबै आ मोटरियो बान्हि देबइ।”

‘उलबा चाउर’ सुनि रविया विस्मित भऽ गेल। मन पड़लै अपन माए। माए मन पड़िते मनमे उठलै- ओ दिन जइ दिन दियारी पाबैन रहइ। धान अधपक्कू भऽ

गेल रहै, मुदा सुभर नै पाकल रहइ। लक्ष्मी पूजा दिन रहने वएह अधपक्कू धान काटि, पैरसँ मीड़ि खापैड़मे भुजि, चाउर कूटि भात खेने रही...।

हाथ-मुँह धोय रविया दिलरामकेँ कहलक-

"बौआ, अहूँ कनी खा लिअ।"

भरल पेट दिलरामक रहबे करइ, नकारैत बाजल-

"नहि! खिचड़ी नै खाएब, उलबा चाउर खाएब।"

'उलबा चाउर' सुनि रवियाक मनमे खीझ उठल। बाजल-

"उलबा चाउर लगले केतए-सँ औतै। बड़ अगुताएल छेँ। के तोरा मन पाड़ि देलकौ!"

निष्कपट दिलराम बाजल-

"माए कहलक।"

माइक नाओं सुनि रविया ठमैक गेल। जहिना मन्दिर जाइसँ पहिनहि भगवान आबि राशि लगा लऽ जाइ छथिन तहिना ने गाछोक पीपही रोपिते-काल पाकल आम आगूमे आबि जाइ छइ।

फेर दोसर खेतमे हल्ला उठल। पानिक तरमे आड़ि डुमल रहइ। खाली आड़िक खरही टिक-टिक करैत रहइ। मुदा सभठामक ओगरवाहि की बन्दूके हाथे होइ छै, खरहोरिक कड़ची केना ओगरवाहि करैए। झगड़ाक कारण रहै एकटा खेतक धान चतैर-लतैर दोसर खेतमे चलि गेल छेलइ। पहिने तँ रवियाकेँ सोझ-साझ बात बुझि पड़लै, मुदा लगले मन ठमैक गेलइ। पानिक संग माटिक प्रश्न मनमे उठि गेलइ। ई केहेन होइ छै जे लोक कलम-गाछी लगबै-काल आड़िक कातमे झमटगरहा गाछ लगा दइ छै जे नमैड़ कऽ दोसरा खेतक उपजा खा जाइए! बुढ़-बुढ़ानुसक सेहो कहब छैन जे घर लग बाँस नै लगाबी, एक तँ लत्ती-गाछक सीमापर बसल अछि दोसर तेहेन सिराह होइए जे जेते दूर ओकर छाँह जाइ छै तेते दूर ओकर सीरो जाइ छइ। जँ जेबेटा करितै तखन तँ नै कोनो, मुदा तरे-तर तेहेन खच्चरपनी करैए जे जेते दूर जाइए ओतेमे दोसराक बास नै हुअ दिअ चाहैए। खिचड़ीसँ मन भरिते रविया पत्नीकेँ कहलक-

"हमरा अघँस-मघँस करैक मन होइए, अहाँ बाध घुमने आउ।"

पतिक समरपन देख रूपनी बाजल-

"थाल-पानिमे बौआकेँ केना लऽ जेबइ। एतै छोड़ि दइ छी।"

खेते-खेत रूपनी टहैल घुमि कऽ आबि पतिकेँ कहलक-

"बलौकिया धान छोड़ि सभ ऊपरा-ऊपरी अछि।"

बजैत-बजैत मनमे उठलै- घरमे कोठी-भरली तँ नहियेँ अछि, एते धान रखब केतए? मुदा फेर मन कहलकै- आब कि धान-चाउरक चोर रहल जे कियो चोरा लेत। आब तँ हिस्सा-बखराक चोरि देखाइयो आ छिपाइयो कऽ होइ छइ।

रविया पुआरक ओछाइन सेरियबैत निनियाँ देवीक स्तुति करिते छल कि पत्नीक बुदबुदाएल बात सुनलक। सुनिते मन मुरैछ कऽ तुरैछ गेलै, बाजल-

“बड़ लाल बुज्झकैर बनै छैथ! अच्छा एकटा कहू जे जइ गाममे सभ चोरे रहत ओइ गाममे चोर के भेल?”

पतिक बिगड़ैक कारण बुझि रूपनी नहाएल आ बिनु नहाएल अवस्थामे पड़ि गेल। बाजल-

“पड़ू-पड़ू। लाउ घुट्ठी दाबि दइ छी।”

पियाससँ पहिने पानि आ भूखसँ पहिने अन्न जहिना आगू एलासँ क्षुधाक धार रोकाइ छै तहिना दू-अढ़ाइ बजिते धान कटनिहार सबहक शक्ति सिहरए लगलै। एक तँ मरियाएल रौद तैपर जट्ठर पानिक संग पछबाक लहकी लहकैत रहबे करइ, एक्के-दुइए धानक बोझ लऽ लऽ खेतसँ निकलए लगल। बोझ लऽ लऽ निकलैत देख रूपनी पतिकेँ पुछलक-

“हम राखी कटने अबै छी।”

पेमेन्ट, वेतन, महिना, पगार, तलब, तनखा आकि दरमाहा उठैकाल जहिना नोकरियाक मनमे तरंग उठै छै तहिना रूपनियोँक मनमे उठए लगलै। तेते खेत कटाएल जे एते राखी काटब पार लगत। तहूमे बेरो खसल आब जाड़ो बेसियेबे करत।

लगले रूपनीक मन मानि गेलै जे कोनो कि जमा-जिगिर अछि जे एते पुरबै पड़त। जेतबे सम्हरत तेतबे काटब। बाँकी आन दिन काटब। एते दिन कियो चोरेबे ने केलकै आ एक-दू दिनमे उनटन भऽ जाएत! सोचिते-विचारिते पहिल खेत रूपनी पहुँच गेल। आँखि उठा हिया कऽ देखलक जे कोन कोणमे राखी अछि। दुइए धूर हएत तइसँ की, हएत तँ कोनो कोणेपर। मुदा नमहर खेत रहने अदहोसँ कम खेतक धान कटाएल, तखन राखी केना बनत। दोसर-तेसर-चारिमो खेत तहिना। पाँचम खेतटा मे राखी बेराएल अछि।

धान देख रूपनीक मनमे सवुरक सवुरदाना छिड़िया गेलइ।

पाँजो भरि धानक आँटी बान्हि माथपर उठौने धानक गदियाएल पानि देहपर टघरैत रहइ। समुच्चा देह भीजल रूपनी खोपड़ी लग पहुँचल। अराम करैत पति आ पुत्रकेँ देख विभोरसँ विसरभोर भऽ गेल। मोने ने रहलै जे माथपर धानक भारी आँटी अछि।

धानक आँटी पत्नीक माथपर देख रविया मुस्की दैत बाजल-

“एहेन जे अहाँ छी जे दिलरामकेँ बाधे अबैकाल उलबा चाउर गछि लेलिऐ आ अखनसँ जे छाल-छोड़ौत से केहेन लागत?”

बिहुसैत रूपनी बाजल-

“जइ बेटाकेँ गछलिऐ तेकरा पूरा कऽ छोड़बै। ऐठामसँ जाएब, एक पाट हएत पहिने मलि लेब। चुल्हि पजाइर धान उला लेब। साँझे परतै तँ कि हेतै, कोनो कि अनका आँगना जाएब जे भरली साँझ नै कुटए देत। अपने ढेकी अछि जखन पलखैत हएत तखने कुटि लेब, तँए कि बेटाकेँ उलबा चाउर नइ देब।”

❍

शब्द संख्या : 2630

मुसहैन

भोरेसँ बेलबा घुसकीपट्टीवालीक हरियर मन देख तारतम करैत रहए जे की बात छिऐ जे यएह घुसकीपट्टीवाली छी जे कहियोकाल जहिना खढ़ देख लप-दे आगि पकैड़ जरा दइत तहिना बुझि पड़ै छल आ आइ की बात छिऐ..? मुदा चेहरा केतबो मेकअप किए ने कऽ लिअए मुदा हृदैक बात सोलहन्नी तँ नहियेँ बुझि सकैए...।

घुसकीपट्टीवालीक खुशीक कोनो अरथे ने बेलबाकेँ लगइ, दिन बीत गेलै मुदा भाँज नै लगलै। भाँज लगलै रातिमे खाइ-काल जखन मनोनुकूल खेसारी दालिक पाँचटा कचौड़ी थारीमे देखलक। सेहो भाँज सुपते कहाँ लगलै, पुछला पछाइत लगलै। भाँज लगिते बेलबाक मनो हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइत मुहसँ फुटलै-

"हँ-हँ चेनसँ सूतब किने। अनेरे नान्हिटा गपमे भरि दिन मड़ियाइत रहलौं।"

बेलबाकेँ अपन खेत-पथार नहि, ने हरे-बरद आ ने दोसर समांगे जे एक समांगक कमाइसँ गुजर चलैत आ दोसर बँटाइ खेत करैत, सेहो ने रहइ। मुदा भगवान जँ खाइले आ बजैले मुँह चीरलखिन तँ कमाइक चालि चलैले हाथो-पएर देलखिन। किछु हौउ, ई पैरुख तँ बेलबामे छइहे जे अपन बाँहुबलसँ गामक मुसहैनपर अधिकार बनेने अछि। ऐ भीर दोसराकेँ तँ नहियेँ आबए देने अछि। आबियो केना सकै छै, हल्लुक माटि ने बिलाइ तकैए, भारी-भीरमे किए जाएत। समुद्र मथन केला पछाइत यएह ने बँटवारा भेल जे माटिक ऊपरका अनका दिस बँटा गेल आ नुका कऽ तरमे रखलाहा बेलबाक हिस्सा भेल।

दोसर साँझ। दिन भरिक टालाक काज उसाइर, पोखैर-झाँखैर दिससँ आबि चीलमक चौखरीमे बेलबा बैसल। घुसकीपट्टीवाली तइसँ पहिने चौखरीकेँ बहारि, चटकुनी बीछा, एकटा गोइठाँ सुनगा कऽ रखि देने छेली। बेलबाकेँ बैसते तेतरा, झिंगुरा, लेलहा सेहो पहुँचल। चारू गोरेक बीच अजीव प्रेम। जेना प्रेमास्पद होइत तहिना एक दोसर-ले जान अरपनिहार। ओना चारूक जिनगीमे दूरियो आ लगिचो परिवार बनौनहि छइ। अपन-अपन किछु चालियो-परकीत तँ

छइहे। तेतराक पहिलुक घरवालीकेँ जहिया बम्बैया छौड़ा[1] उड़हाड़ि कऽ लऽ गेलै तहिए-सँ जेना दुनियासँ विरक्ति भऽ गेलइ। मनमे सदिकाल होइ जे बिनु इज्जतक जिनगी ओहने होइए जेहेन बिनु गमकक फूल। ओना निर्णय करैमे तेतरा औगताएल जरूर। ओ ई नइ बुझि पेलक जे पतियो-पत्नीक बीच बेकतीगत चालि होइ छइ। जे इज्जतक खाम्हीक काज करै छइ। बुझबो केना करैत। अर्द्धांगिनी बुझि सभ किछु अदहा-अदही बुझैत। ओना, जइ दिन स्त्री घरसँ पड़ेलै तइ दिन तेतराकेँ ओते दुख नै भेलै, मुदा मनमे सोग तँ आइयो समाएले छइ। खाएर.., तैयो जिनगीमे हारि नहियेँ मानलक। हारियो केना मानैत एकटा गेलै, दोसर आनि तीनटा बेटा-बेटीक संग परिवार तँ बनौनहि अछि।

चारू गोरे एकठाम होइते जेना ऑफिसमे टेबुल-टेबुलक काज अलग-अलग अंगक होइत तहिना चारू गोरे अपन-अपन काजमे जुटि गेल। झिंगुरा गाँजा, चीलम निकालि आगूमे रखलक। आमदनी परहक टीपगर जहिना गाँजा तहिना समस्तीपुरक बड़की तमाकुल। ओना बेसीकाल चारू गोरे भाँगे पीबैत अछि। बाड़ी-झाड़ीमे फूलक समय भाँगक फूलो झाड़ि लइए आ वसन्ती गाछ बीछि-बीछि सुखा-सुखा कऽ रखियो लइए, मुदा परसुका मुसहैन चारूक सुरखीए बदैल देलक, तँए जेहने टीपगर तमाकुल तेहने गाँजा। ओना चारू गोरेक परिवार एकरंगाहे छै, कनियेँ तल-बितल छइ। झिंगुराक दोसर आमदनी छइ जे दोसर-तेसरकेँ नै छइ। ओ छिऐ गछचढ़नी घरवाली जे गाछपर चढ़ि जारैन तोड़ै छइ। ओना, लग्गियो रखने अछि मुदा केहनो-केहनो घोरनाह गाछपर चढ़ि कऽ फुदनी जारैन तोड़ि लइए। तइले कोनो रोको-राक नहियेँ छइ। सुखल जारैनक रोको किए हएत। गछचढ़नीए दुआरे सरही आमक गाछीक ओगरवाहि सेहो लोक दइते छइ...।

आगूमे गाँजा अबिते लेलहा लटबए लगल। बेलबा कटकीसँ चीलम साफ करए लगल। तेतरा गोइठाकेँ तोड़ि घुर जकाँ लगा गूल बनबए लगल। चीलम साफ कऽ बेलबा गिट्टी खोखरलक। गाँजा लटा, तमाकुल मिला चीलममे बोझि लेलहा तेतरा दिस बढ़ौलक। गूल चढ़ा तेतरा बेलबा दिस बढ़ौलक।

चारू गोरेमे बेलबा सभसँ जेठ। बेलबामे सभसँ प्रमुख गुण छै जे केकरो बनहौटा जन नइ छी। ने नीक-बेजामे आ ने पाबैन-तिहारमे केकरोसँ एको सेर आकि एको पाइ कर्ज लइए। कियो 'भैया' तँ कियो 'गुरूकाका' सेहो कहै छइ।

आगूमे चीलम रखि बेलबा भोग लगबैत फुस-फुसा कऽ मंत्र पढ़ए लगल, 'जेकर जे हक-हिस्सा छह से अपन-अपन लऽ जा।' तीन बेर पढ़ि दम मारि,

---

[1] बम्बइमे नोकरी केनिहार

तेतरा दिस बढ़ौलक। मुदा धुँआ मुहेँमे रखि शरबत जकाँ घोरए लगल।

दम मारि तेतरा जखन झिंगुरा दिस चीलम बढ़ौलक तखन बेलबा मुँहक धुँआ निकालि बाजल-

"परसुका सगुन बढ़ियाँ रहल!"

बेलबाक सगुन सुनि लेलहा खिसिया कऽ बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

लेलहाक तामस बेलबा बुझि गेल जे भुखाएल बिलाइ खौंझाइते छइ। जखन ओहो दम मारत तखन ने मन असथिर हेतइ। ताबे लेलहा-हाथ चीलम पहुँच गेल। जिराएल लेलहा रहबे करए, तेते जोरसँ दम मारलक जे एक बित धधड़ा चीलमसँ धधैक गेलइ। दम मारि जहिना हाथसँ चीलमक धधड़ा मिझेलक तहिना अपनो मनक धधड़ा मिझा गेलइ। मुदा तेतरा लेलहाक बातकेँ पकैड़ लेलक। दोहरौनी भाँज जाबे चीलमक शुरू होइ तइ बीचमे सवाल फँसि गेल। अपनेमे दू पाटी बनि गेल। दू गोरे कहै जे सगुन-तगुन किछु ने होइ छै आ दू गोरे कहै जे होइ छइ। तेहाला कियो नहि, जेकरा दुनू पंच मानि फरिछबैत। रूकल चीलमकेँ धुँआइत देख लेलहा बाजल-

"झगड़ा ने दन चुन-तमाकुल किए बन्न हौ, गप्पो चलतै आ चीलमो चलए दहक।"

जहिना एकघोंट चाह पीला पछाइत आकि एक कौर खेला पछाइत दोसर अपने अबै लगैत तहिना लुबलुबाइत लेलहा बाजल-

"सगुन-तगुन किछु ने होइ छइ।"

दोहरा कऽ बेलबा दम मारि चीलम आगू बढ़बैत बाजल-

"सगुन बड़ पैघ गुण छिऐ, तँए एकरा दोखी बनाएब उचित नइ हएत?"

बेलबा आ तेतराक विचार एक बटिया रहै तँए एक दिस भऽ गेल आ झिंगुरा, लेलहाक एक बटिया रहै तँए दोसर दिस भऽ गेल। दू-दू गोरेक पाटी चारू गोरेक बीच बनि गेल। बेलबाक विचारकेँ रोकैत झिंगुरा बाजल-

"सगुनकेँ दोखी कहाँ कहै छिऐ, जँ गुण सगुन भऽ जाए तखन तँ जरुर नीक भेल, मुदा जँ कोनो काजे केतौ विदा होइ आ माछ-दहीसँ सगुन बनाबी एकरा हम नीक नै कहबै?"

बेलबाक प्रश्नकेँ ठमकैत देख सोंगर लगबैत तेतरा बाजल-

"दुनियाँ बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक खेल चलै छै तँए अनका छोड़ह, अपने बात लएह। परसू जे छ-छ पसेरी मुसहैन भेलह तेकरा की कहबहक?"

तेतराक बातकेँ लेलहा लपैक कऽ पकड़ैत बाजल-

“जँ माछे-दहीसँ सगुन बनिते तँ मछिबारे आ माले-जाल बलाकेँ सभ किछु भऽ गेल रहितै, दिन-राति ओकरे देखैत-सुनैत रहैए... ।”

तैबीच पहिल चीलमक गाँजा जरि गेल। गुलाब तकथीपर लटाएल-काटल गाँजा रहबे करै, झिंगुरा चीलममे बोझि आगि चढ़ा बेलबा दिस बढ़ौलक। ओना, तइले अपना बीच कोनो मलिनता केकरोमे नै रहइ। करणो रहै जे एक्के-एक्के दम ने कियो लगबैए। बरबैरक हिस्सा ने भेल। बड़ बेसी हएत तँ कियो दमगर अछि तँ कनी बेसी जोरसँ दम खींच लेत, तइसँ बेसी की करत..!

मुदा तैसंग ईहो तँ रहबे करै जे पेटगरोकेँ बेसी खेनो पेटे भरै छै आ कम खेनहारकेँ सेहो पेट भरिते छइ। धुँआ फेकैत बेलबा बाजल-

“परसू जे अपना सभकेँ ओते मुसहैन भेल ओकरा नीक सगुन नै कहबै तँ की कहबै?”

जेना लेलहाकेँ प्रश्नक उत्तर बुझले रहै, तहिना बाजल-

“तूँ सभ भलेँ जे कहक मुदा हमर मन नै मानैए। तीन सालक बाढ़िमे धान तँ उपैज गेल मुदा मुसहैन किए निपत्ता भऽ गेल। जे चीजे निपत्ता अछि ओ सगुन केना भऽ पौत?”

लेलहाक बातमे चोंगरा भरैत झिंगुरा बाजल-

“दिल्ली गेल छहक, रेलबे टीशनमे जे मूस देखबहक तँ बिसवासे ने हेतह जे मूस छी आकि बिलाइ।

मुदा गाममे तँए देखते छहक रौदी होइ छै तैयो मूसकेँ पड़ाइन लगि जाइ छै आ बाढ़िमे तँ सहजे, जँ नै भागत तँ डुबकुनियाँ काटि-काटि मरबे करत। ई तँ गुण भेल जे सुभितगर समय भेल तँए धानो उपजल आ मूसक बाढ़ि एने मुसहैनो भेल।”

तेसर चीलम चलैत-चलैत चारू गोरेक मन भरि गेल। कौल्हुका विचार करए लगल। तेतरा बाजल-

“काल्हि दू ठाम काज अछि। एकठाम तीनगोरेक आ दोसरठाम दू गोरेक।”

तेतराक बात सूनि झिंगुरा बाजल-

“तीन गोरे तँ जोड़ियाएल छी मुदा पाँचम नै रहने दोसर केना हएत?”

बेलबा बाजल-

“किए ने हएत? दुनू काजकेँ मिलानी करि कऽ देखहक। टुकड़ी बनै-

जोकर जँ हेतै ओकरा टुकड़ी बना लेब आ जँ नै बनैबला हेतै ओकरा पूरा कऽ करब।”

बेलबाक बात सुनिते लेलहाक मन मानि गेलइ। बाजल-

“बेस तँ भैया कहलहक। दुइए-टा ने भऽ सकै छै, या तँ पाँचम केनिहारकेँ भाँजह या तँ काजेकेँ टुकड़ी कऽ दहक।”

तेतराक मन सीकपर टाँगल, तँए खोलि कऽ तँ नहि बजैत मुदा मुड़ी डोला-डोला हुँहकारी भरैत रहए। सीकपर टाँगल ई रहै जे परसू जे मुसहैन खुनलक तइसँ नमहर दोसर रहइ। ओना, ईहो मनमे उठै जे ऊपरका काज ने हूसि सकै छै, तरका काजपर तँ एकाधिकार ऐछे, ओइमे दोसर काइए की सकैए। मुदा तँए की, काज करए जाएब तइसँ दोबर-तेबर बेसी ओइमे हएत, तेकरा पहिने करब आकि जइमे कम हएत, तेकरा करब...।

गाममे खेती छोड़ि दोसर काज नहि। जे छोट-छोट टुकड़ीमे विभाजित रहैए। छोट-छोट काज रहने कम केनिहारक जरूरत पड़ै छै, तँए बोनिहार-मजदूरक बीच संगठन नहि। मुदा शहर-बजारक बीच तँ से नहि अछि। पैघ-पैघ कारखाना रहने बेसी मजदूरक जरूरत पड़ै छइ। तहूमे खेती-बाड़ीक काज दिने भरिक होइ छै जखन कि कारखाना चौबीसो घन्टा बारहो मास चलैत रहैए। तैसंग ईहो होइ छै जे कारखाना घरमे बनल रहैए जइसँ हवा-बिहाड़िक संग झाँटो-पानिमे चलिते रहैए मुदा से खेतीमे तँ नहि होइए। ओना शहरो-बजारमे कारखाना सभ रंगक भेने मजदूरक कमी-बेसी होइ छइ। मुदा जेना-जेना बजार बढ़ैत जाइए तेना-तेना कारखानोक रूप बढ़ल जाइ छै, जइसँ खुदरा मजदूर थौकक रूपमे थकियाइत जाइए। जेकर विपरीत गतिए किसानी अछि। जेना-जेना समय आगू बढ़ैए तेना-तेना परिवारो बढ़ै छै आ परिवार बढ़ने खेतो विभाजित होइत जाइ छइ। खेत विभाजित भेने काजक रूप सेहो छोट होइत जाइ छइ। दोसर ईहो होइ छै जे जेकरा बेसी खेत रहल ओ मशीनक सहेतासँ काज लइए जइसँ मजदूरक संख्यामे कमी अबै छइ। तँए जहिना शहर-बजारक श्रमिक संगठित होइत जाइए तहिना गामक मजदूर अंसगठित होइत जाइए। तैसंग दोसर ईहो छै जे गाम-घरक अधिकतर बोनिहार बन्हुआ बनल अछि, जखन कि शहर-बजारमे से नै छइ। ओना शहरो-बजारक रूप बदैल रहल अछि, लोकक (श्रमिकक) काज लोहाक मशीन हथियौने जा रहल छै जइसँ हजारक-हजार हाथ निकम्मा भेल जा रहल छइ। जहिना सभ गामक काज तहिना अँहू गामक काज रहने, ने काजमे एकरूपता आ ने श्रमिकक बीच एकरूपता रहल। रहबो केना करत, कियो पजेबाक घर बनबैए तँए ओकरा सीमेंट, बाउल, लोहा आ राज मिस्त्रीक जरूरत पड़ै छइ। आ कियो फुइसिक घर बनाबैए तँए ओकरा

लकड़ी, बाँस आ खढ़क जरूरत संगे घरहटियाक जरूरत पड़ै छइ। जइसँ जहिना काजक एकरूपता नै रहै छै तहिना हाथ आ हाथक ओजारोक एकरूपता नै रहै छइ। मुदा छोटो-छोटो काज रहने किछु-ने-किछु एकरूपता तँ रहिते छइ। तीन गोरेक काज खढ़ अँटियेनाइ रहै आ दू गोरेक मटिकटियाक। दुनू काजकेँ टुकड़ी बनौल जा सकै छइ। खढ़ अँटियेला पछाइत चारि दिन खढ़ सोझ होइले जँकियाएल जाइ छै, तहिना खाधि भरैक सेहो अछि। मुदा एकरंग बोइन रहितो हल्लुक-भारी तँ अछिए। एकटा जहिना बैसारी-काज अछि तहिना दोसर ठढ़का काज अछि। तहूमे माटिक फेकब भारी भेल, जखन कि खढ़ अँटियाएब मात्र खढ़केँ सेरिया कऽ छोट-छोट आँटी बनाएब अछि। कौल्हुका काज सुनि बेलबा बाजल-

"दुनूठाम एक्के काज अछि आकि दू रंगक?

तेतराकेँ दुनू काज बुझले रहै, बाजल-

"काज तँ दू रंगक ऐछे एकठाम खाधि भरैक छै आ दोसरठाम खढ़ अँटियबैक अछि।"

बीच-बचाउ करैत झिंगुरा बाजल-

"अपना सबहक बीच बेलबा भैया बुढ़े भेल, आ हमरा देखनहि रहह जे सातमे दिन बोखारक पथ पड़ल, अखनो तक नीक जकाँ देहमे तागत नहियेँ आएल हेन, परसुए मुसहैन खुनैकाल देखलहक ने जे केते बेर बैसलौं। तँए हम दुनू गोरे खढ़ अँटियाबए जाएब आ तूँ दुनू गोरे खाधि भरए चलि जैहह। जुआन-जवान छहे।"

उठैत-उठैत लेलहा बाजल-

"भैया, एहेन प्रेम रहतह तँए सभ दिन आनन्दे-आनन्द रहतह। नै तँए देखते छहक..!"

'देखते' कहैत लेलहा चुप भऽ गेल। बात खुजबे ने कएल। मुदा चीलमक भरल मन छोड़ियो तँ नहियेँ सकैए। झिंगुरा पुछलक-

"की कहलहक?"

लेलहा-

"यएह ने कहलयह जे दुनियाँमे केना उनटा-पुनटा होइ छै, जे महिला शरीरसँ पुरुखक अपेछा निरबल होइए ओकरा कारखानाक इंजन आ पुलिसक लाठी हाथमे थम्हा दइ छै आ जे पुरुख सबल होइए ओकरा हाथमे कागत-कलम थम्हा दइ छइ। एहने रीतकेँ ने वसन्त रीत कहै छइ!"

तेतराक आँखिपर निशाँ लटैक गेल, बातक चिड़ौड़ी देख बाजल-

“अनेरे समुद्र उपछैक कोन चिड़ौड़ीमे लागल छह, ठनका जेकरा माथपर खसै छै से बुझै छै ठनकाक गुण। चलह, अनेरे मनमे खुट-खुटी रखने छह। कौल्हुका काज काल्हि देखल जेतइ। चेनसँ खाएब, भगवानक नाओं लऽ निचेनसँ सुतनाइ छोड़ि अनेरे कौल्हुका चिन्तामे किए माथ धूनब?”

बेलबा-

“दुनू काज सेरिया लएह, तखन ओहू मुसहैनकेँ खुनिए लेब।”

बेलबाक बात सुनि तेतरा बाजल-

“भैया, भने खेतमे पड़ल छइ। परसुके धान तँ घरे-अँगने छिड़ियाएल अछि ओकरा सदहऽ दहक तखन खुनब।”

तीनू गोरेकेँ जाइते घुसकीपट्टीवाली बेलबा लग आबि बजली-

“संगतिया सबहक भाँजमे पड़ि अहूँ दुइर भेल जाइ छी! कहू जे केते खान पहिने ठकुरवारीमे घड़ी-घन्टा बजलै, असतुत भेलै आ अहाँले धैनसन!”

पत्नीक खौंझसँ बेलबा मिसियो भरि डोलल-डालल नहि। किएक तँ पत्नीक खौंझक कारण बिनु बुझने डोलि-डालि जाएब नीक नहि।

बाजल-

“ठकुरवारी ठाकुर सबहक छिऐ आकि हमर छी जे ओकर देखौंस करब। हमर तँ यएह संगतिया सभ ने छी जेकरा संगे जीबै-मरै छी।”

निरुत्तर भेल घुसकीपट्टीवाली पाछू नै हटली, पाशा बदैल लेली। जहिना शिवजी पाशा बदैल शिवानी भऽ गेला, तहिना। पाशा बदलैत बजली-

“अन्न तीमनक सुआद टटकेमे होइ छै आकि सेरा कऽ पानि भऽ जाइए तखन होइ छइ!”

बेलबोक मन हल्लुक रहबे करै, तँए अवसरकेँ हाथसँ गमाएब नीक नइ बुझलक। किएक तँ अवसर गमौनाइ ओहने होइ छै जेहने डारिक चुकल बानरक होइ छइ। बाजल-

“लोक सुआद-ले खाइ छै आकि पेट भरैले खाइ छइ। सरेने जँ ओकर गुणो निकैल जाए तखन ने।”

पतिक बात सुनि घुसकीपट्टीवालीक मनमे उठलैन- एना जँ बात छिड़ियाएत तखन तँ काजक गप बिसरिये जाएब। एक तँ ओहिना ओहन बिसराह छी जे आन तँ कनी मनो रहैए जे काजे बिसैर जाइ छी! काजे नहि तँ राज की? ..हृदए खुशीसँ भरल तँए घुसकीपट्टीवाली सोचलैन जे जे बात पति बजता तेकरा जँ मुँह-नाँगैर जोड़ब तखन ने, जँ से नै जोड़ि सोझहे अपने मनमे

दोसर काज आबि गेल तखनो तँ गड़बड़ाइए जाएत। घरो घर जकाँ रहए तखन ने, से तँ सतरहटा भुरकी हरिदम रहिते अछि। ..हाथमे पानिक लोटा बढ़बैत घुसकीपट्टीवाली बजली-

"लिअ, अखने कलपर सँ अनलौं कुर्रा कऽ लिअ।"

आन दिनसँ बदलल बात सुनि बेलबाक मन खुट-खुटाएल। आन दिन कहाँ पानिक बात बजै छेली, आइ किए बजली? जरूर किछु रहस्य अछि! मुदा इशारोमे जँ रहस्यकेँ नै रखल जाएत, तखन तँ ओ तेना तरेमे दबा जाएत जेना कोनो सीखे-लीखे ने रहत...। बेलबाक आँखि तँ पत्निक आँखिपर रहै मुदा नजैर नजैर दिस बढ़ौलक। कुर्रा कऽ ओसारपर पतिकेँ बैसते घुसकीपट्टीवाली घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। घरदेखिया थारी जकाँ साँठल थारी देख बेलबाक मनमे उठलै जे बिनु कारणे टिटही थोड़े लगै छै, जरूर किछु बात अछि! लगले मन हुमरलै हम कि कोनो घटिया घरदेखिया थोड़े छी जे खेनाइयए-पीनाइमे केकरो गरदैन काटि लेबइ। भातक ऊपरमे पाँचो कचौड़ी तेना पसारल जे आगूमे सानैयोक जगह नहि। भात सानब छोड़ि बेलबा पहिल कचौड़ी उठा हिया-हिया देखए लगल। ई तँ पुड़ी जकाँ लगैए मुदा छी तँ कचौड़ीए! कचड़ी नै छी आ ने पकौड़ी छी, छी तँ सोलहन्नी कचौड़ीए। किएक तँ ओहिना खेसारीक सौंसका दालि, मिरचाइक टुकड़ी आ पिऔजक टुकड़ी टक-टक तकैए। नून-तेल ने तरे-ऊपरे सटि गेल छै, बाँकी तँ तकिते अछि।

कचौड़ीकेँ निहारि-निहारि देखैत पतिकेँ देख घुसकीपट्टीवालीक छाती चहकए लगलैन। बजली-

"ई तँ ओही भगवानकेँ धैनवाद दिऐन जे बेटाक पुसौठ हएत, नइ तँ जहिना तीन साल नै केलौं, हाथ-पएर फाटए लगलै तहिना अहूबेर फटितै।"

तीन साल पूर्वक पुसौठ बेलबा बिसैर गेल छल। बिसैरो केना ने जाएत। एक तँ ओहिना गजेरी-भगेंरी गाँजा-भाँगक प्रेममे दुनियाँ बिसरैले तैयार रहैए, तैपर बेलबा संगैतियो छीहे। संगैतियाक जिनगी तँ ओहन जिनगी होइ छै जइमे दस दिसक धार-नाशीक संग गंगा-जमुना सन धारक पानि मिलि समुद्र सिरजन करैए...। बेलबा बाजल-

"पुसौठ केकरा कहै छइ?"

लहकी देख घुसकीपट्टीवाली अवसरकेँ हाथसँ नै छोड़ि, बजली-

"एहने मुनसा ने धिया-पुताक पाबैन बिसैर धियो-पुताकेँ बिसैर जाइए!"

तैबीच बेलबा पहिल कौर तँ छुच्छे दालि-भातक खेलक मुदा दोसर कौरमे जे मिरचाइक टुकड़ी मुँहमे पड़लै, तँए सुसुआइते बाजल-

“पाबैनमे की सभ होइ छइ?”

धनलक्ष्मी जकाँ घुसकीपट्टीवाली बजली-

“किच्छो ने होइ छइ। जे होइ छै तइसँ तँ घर भरल अछि, किच्छो कथी ताकए पड़त।”

पत्नीक धारक प्रवाहमे बेलबा बाजल-

“शुभ काजमे अनेरे देरी करब कोन कबिलती हएत, तइले पुछैक कोन जरूरी अछि। अच्छा ई कहूँ जे पाबैनमे की सब हएत?”

जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप सिखबै छैथ तहिना बिकछा-बिकछा घुसकीपट्टीवाली बाजए लगली-

“पाबैनमे किछु ने होइ छै आ सभ किछु होइ छइ।”

उड़ैत चिड़ैक बोल जकाँ बेलबा किछु थाहि नै पबै छल। तँए जहिना धार थाहैक नाहक लग्गा होइ छै तहिना थाहैत पुछलक-

“खेबा-पीबामे की सभ होइ छइ?”

“अगबे चाउरक चिक्कसक बगीया बनै छै, ओही लऽ कऽ बाल-बच्चाक हाथ-पएरक पुसौठ होइ छइ।”

“घीओ तेलक काज पड़ै छइ?”

“घी-तेल किए कहै छिऐ, नूनो-मिरचाइक काज नै पड़ै छइ।

“चिक्कसक मुँह-नाँगैर बना, छतिया-पीठिया बनौल जाइ छै, टटका पानिमे नहा कऽ चुल्हिपर सिद्ध कएल जाइ छइ। सिद्ध होइते भऽ गेल बगिया।”

“एक्के रंगक होइ छै आकि दोसरो-तेसरो रंगक?”

“एकटा सुच्चा भेल, दोसर कुरथियो दालि दऽ कऽ आ तेसर गुरो दऽ कऽ बनौल जाइ छइ।”

“तब तँ नामो सबहक हेतइ।”

“होइते छै, जहिना आमक गाछ भेल आ दालि-दलिहन भेल ई जड़ि भेल। जड़िक पछाइत अमुख आम आकि अमुख दालि बनैए। तहिना बगिया जड़ि भेल। दलिबगिया, गुड़-बगिया किसिम भेल।”

“एक दिन तँ एक्के रंगक ने खाएब, दोसर-तेसर?”

“एना अनाड़ी जकाँ किए बजै छी। पहिल दिन टटका खाएब, दोसर दिन बसिया खाएब, तेसर दिन दलिबगिया खाएब, चारिम दिन गुड़-बगिया खाएब।”

“गुड़ दालिए जकाँ केना रहत?”

“खेबै तखन देखबै, जे केहेन रसगर छइ। एते पघिलल रहत जे छातीमे चुहुटि कऽ पकैड़ लेत।”

“जखन चारि दिनक ओरियान एक्के दिन केने भऽ जाएत तखन अहाँकेँ चारि दिनक छुट्टी दऽ दइ छी। तैबीच कुशेसर आकि सिंहेसर आकि जनकपुरसँ घुमि आउ।”

❍

शब्द संख्या : 2742

पतझाड़

पलंगपर पड़ल राघोबाबाक आँखि मुनाइते ताड़क छोटका पंखा हाथसँ निच्चाँ खसलैन। पंखा खसिते पसेनाक टघारसँ कोढ़ियाएल नीन अकचका कऽ टुटि गेलैन। बन्ने आँखिये दहिना हाथसँ सिरमाक बगलमे पंखा हँथोड़ए लगला मुदा निच्चाँ खसल पंखा नै अभरलैन। आँखि खोलि सिरमापर सिर सेरिया पजराक मसलनक बीच देह सेरियबैत मुड़ी उठा निच्चाँ देखैक कोशिश केलैन। चीनीपट्टा सन पेट, फीलपाँव पएर, सड़ल साँप जकाँ दुनू बाँहिक गड़ लगैबते बजला-

“की समय छल, की भऽ गेल आ की हएत तेकर कोनो ठेकान नहि।”

मड़ियाएल पतिक बात सुनि, बगलक चौकीपर पड़ल सुमित्रा बिअनि हौंकैत बजली-

“सभ कर्मक फल छी। जेहने पीसब तेहने ने उठाएब।”

कहि हाँइ-हाँइ बिअनि हौंकए लगली। चारि-पाँच हाथ हटल चौकी तँए राघोबाबाकेँ हवा नै लगैन। मुदा पत्नीक बोल जेना ओल सन कबकबा कऽ लगि गेल होइन, तहिना मनमे भेलैन। हारल नटुआ जहिना अपन कलाकेँ हारैत देख जिनगीक हार कबूल करए लगैत अछि तहिना झड़ैत जिनगी देख राघोबाबा सेहो हारि मानैक क्रममे क्रमिक गतिये क्रमे-क्रम झड़ि रहल छला। जीवित दुनियाँक प्रेमी पति-पत्नी छी। ओना विगत दस बर्खसँ सुमित्रा पतिकेँ झूठक्कर मानि रहल छेली, मुदा पति-पत्नीक बीचक सम्बन्ध सूत्र जँ ओहन हुअए जे पतिक हाथमे पत्नीक छोर पकड़ा देल जाए आ पत्नीकेँ बिना छोरक जिनगी बना देल जाए तँ की ओ पत्नी पतिक बराबरी कऽ सकत? नीच कर्म केनिहार पुरुखकेँ ऊपर रखि सकत? मुदा..?

एहेन स्थितिमे सुमित्रा, तँए मुँह झाड़ि तँ नै बाजि पबै छेली तैयो उचित बुझि लग्गी लगा तँ कहबे करै छेलखिन। पत्नीक बात सुनि पलंगक निच्चाँ खसल पंखा उठा राघोबाबा हाँइ-हाँइ मुँहपर पंखा हौंकए लगला। पसीनासँ भीजल देह हवाक सिहकी पैबते मन सिहैक कलशलैन। जिज्ञासा करैत बजला-

“से की? से की?”

पतिक जिज्ञासु प्रश्न सुनिते सुमित्राक मनमे उठलैन, की जिनगी छल आ

आइ की भऽ गेल। जहिना पुरान देह अपन भेलैन तहिना ने हमरो भेल। तखन तँ हल्लुक-फल्लुक देह अछि, आसकैत नै लगैए, मुदा जे जीता जिनगी अपनो फुहराम भऽ उठि-बैस नै सकैए तँ के केकरा देखत। बेटा-पुतोहु सहजे सात सागर दूर चलि गेल, ओकर कोन आश, तखन? मुदा उपाइए की?

नीक आकि अधला पति तँ यएह छैथ, हिनके आशा ने करए पड़त। ओना तीत-मीठ बात सभ दिनसँ होइत आएल, होइत रहत। लगले मन पाछू घुसैक गेलैन। दस बर्ख पहिने की रोब छेलैन, की बुझै छेलिऐन आ आइ की छैन आ की बुझि रहल छिऐन।

ऐ दस बर्खक बीच, जहिना गाछक पात एका-एकी झड़ए लगैत अछि तहिना राघोबाबा हारैत निच्चाँ उतैर रहल छला। सुमित्रा जीतैत ऊपर चढ़ि रहल छेली। दुनियाँक बीच नै पति-पत्नीक बीच। बजली-

"किछु ने, बुढ़िया फुइस।"

पत्नीक झँसाएल बात सुनि राघोबाबाक मन झड़झड़ा कऽ उड़ि गेलैन। उड़ि कऽ स्मृतिक ओइ दुनियाँमे पहुँच गेलैन जेतए गुलावक फूल सन ललिचगर आ कोइलीक वसन्ती मदमस्त भरल बोल सन बोली सुमित्रामे पबै छला, तेतए आइ कौआक बोल आ काँटक गाछ गुलाव देख रहल छैथ। देख रहल छैथ बिनु पतवारिक जिनगीक नाह, जे पतवारि छोड़ि धारमे भँसि रहल अछि। जिनगीक जालमे अपनाकेँ ओझराइत जालक एक-एक सूत देखए लगला। केना छोट कोठली बनल चारूकात गीरहसँ गीरहाएल अछि।

खींचाइत जाल जकाँ राघोबाबाक मन खींचा कऽ दस बर्ख पाछू खींचा गेलैन। चाइनिक पसीना आँगुरसँ काछि निच्चाँ फेकते रहैथ आकि मन ऊपर तकलकैन। यएह घर छी जइमे पाल पंखा[2] चलैत रहै छल, छतमे इजोतक झालैड़क बीच दुनू बेकती सौनक हरिअर साड़ीक बीच लटपटाइत टहलै छेलौं, टहलै छेलौं ओइ विरूदावली वनमे जैठाम मन्द-मन्द हवा अपन मस्तीमे नचैत, पुरस्कार देल नर्तकी जकाँ देहमे लटपटा गुदगुदबै छल, केतए गेल! लोक कहैत धन देने धन बढ़बे करै छै, मुदा से कहाँ भेल, उनैट केना गेल! जिनगीक घटल घटना आन नै बुझलक तँ नै बुझलक, कोन जरूरी छै अनका बूझब, अपनासँ उगारे नै तँ अनका की देखैत, मुदा अपन तँ अपन छल, से के बूझत, मुदा अपनो कहाँ बुझलौं..?

मन एकमात्र बेटापर पड़लैन। ओकर कोन आशा, मुदा ओकरो गलती कहाँ देखै छिऐ, बढ़ैत समय, बढ़ैत परिवार आ बढ़ैत पीढ़ीक तँ उचिते हक बनै

---

[2] धरैनमे कपड़ाक नमहर हवा पसारैबला

छै किने जे पैछलासँ बेसी सुख-भोगक जिनगी जीबए। जैठाम अपने नोकर-चाकर, जन-बोनिहारक संग रीनियाँ[3] सँ घेरल रहै छेलौं तैठाम जँ ओ (बेटा) अपन सम्पैत उठा विदेश जा कारखाना बैसा नोकर-चाकरक बीचक जिनगी बना लेलक तँ उचिते केलक किने। आगू घुसकैत मनमे महाजनी एलैन। बोरा लऽ लऽ लोकक ढबाहि लगल रहै छल, बखारीसँ धान निकालि नोकर तौल कहै छल आ अपने ब्रह्मा जकाँ लिखै छेलौं। चाहे तीन सेरकेँ तीन पसेरी लिखौं आकि तीन पसेरीकेँ तीन मन। मुदा ईहो तँ भऽ सकै छल जे तीन मनकेँ तीन पसेरी आ तीन पसेरीकेँ तीन सेर लिख सकै छेलौं से कहाँ लिखाइ छल। केना लिखाइत? अपन ब्रह्मा अपने छेलौं किने, जँ शराबी, जुआरी अनका बहु-बेटीकेँ नै गरिया अपनाकेँ गरियौत तँ ओकर बदचलैन केते दिन चलतै। यएह गाम छी, तीन मनक उपजा साढ़े चारि मन दइ छल। तैपर खेतक उपजाक संग बुधियारीक माने लेन-देनक बेइमानीबला आमदनी सेहो छल। केतबो नोकर-चाकर जन-बोनिहारकेँ दइ छेलिऐ तैयो कहाँ घटै छल, सभ किछु चमकै छल...।

..अपना परिवारमे कहिया माछ-मासु तहूमे मिथिलांचलक ललमुहाँ रोहू आ खस्सीक कलेजी आकि दूधे-दही-छालहीक अभाव रहल। भोलो बाबाकेँ माने भाँगमे दूध-परसाएल गौरिया केरा, मुनक्का-किशमिश, मिसरी तँ चढ़ैबते रहलयैन, तखन किए आइ सभ बेपाट भऽ गेला। की सुरूजे भगवान गाछमे टुसिया हरिअर-हरिअर डारि-पात, फड़-फुलक संग देबो करै छथिन आ समय आनि सभटा केँ झाड़ियो दइ छथिन। कण्ठमे सुखौनक आभास भेलैन। पानिक तृष्णा भेलैन। तेहेन जनमारा रौद अछि जे घैलो-बाल्टीनक पानि इन्होरा गेल हएत, जरल लेल ठण्ढ-शीतल चाही, जँ जरलपर जरल पड़त तँ आरो जड़ा कऽ जड़िया जाएत। मुदा..? अपने केना लगक बाल्टीन छोड़ि कलपर आनए जाएब। से नै तँ पत्नीकेँ कहिऐन जे पियास लागल अछि। मुदा लगले मनमे एलैन जे जँ कहीं, जेना चाह पीबैकाल गिलास नेने आबए कहै छैथ तहिना कहि दैथ जे बाल्टीनमे अछि, लऽ कऽ पीब लिअ, तखन? पलंगपर बैसल राघोबाबा ने पानि पीबए उठि रहला अछि आ ने पत्नीकेँ कहि रहल छैथ मुदा नजैर पत्नीएक चौकीपर नाचि रहल छैन। दुनियाँक बोनसँ हाथ पकैड़ सिरजनक दुनियाँ बसबैक वचन देने छिऐन, रोग-वियाधिक बीच सहयोगीक संग पुरैक वादा केने छिऐन जेकर बदला ऊहो अपन दिन-रातिक जिनगी समरपित केने छैथ, तैठाम जहिना अपन तहिना ने हुनको भूख-पियासक संग मन-मनोरथ सेहो छैन। से केते धरि पुरा रहलयैन अछि?

फेर मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे पुरुख हुअए आकि नारी, दुनू शक्ति

---

[3] खौदका, कर्ज लेनिहार

सम्पन्न होइते अछि तँए ओंगठबो नीक नहि। ओंगठलो नै जा सकैए मुदा रोग-वियाधि, भूख-पियास तँ शक्तिकेँ हिला-हिला दोसराक सहयोगक अपेछा कराइए दइ छइ। तहीले ने संगीक प्रयोजन होइ छइ। अखन तँ कियो आन नै अछि, अपने दुनू बेकती छी, दुनियाँक संग लोककेँ छल-प्रपंच करए पड़ै छै, दुनियेँ छल-प्रपंचीक छी। अपना लेल तँ वएह ने नीक जे जेहेन बेवहार करत, सम्बन्ध बनौत तेकरा संग तेहने बेवहार करी। जँ से नै करब तँ दुनियाँक केतौ आदि-अन्त छै जे जड़ि पकैड़ ठाढ़ हएब।

एहनो लोक तँ छैथे जे सत्यकेँ संकल्प-तीर बना नदीमे तैर रहला अछि आ शब्द–वाण छोड़ैत रहला अछि, मुदा तँए कि झूठ छी जे एहनो लोक तँ ऐछे जे बजैकाल वेलगाम घोड़ा जकाँ सत्य-फुइसकेँ एके बुझि दूधपनियाँ पीबैए। ओह! अनेरे मनकेँ बौअबै छी, अपन बात अपना लूरिये-बुधिये नै बुझि पेने लोक पौल जाइए। तहिना तँ अपनो भेल! मन ठमकलैन। दस बर्ख पूर्व यएह पत्नी छेली जिनका अपराजित कली सन आँखिक नजैर मिलिते प्रेमसँ उपोउप भऽ जाइ छल आ यएह आइ कारकौआ सन बुझि पड़ि रहल छैथ, आखिर एना किए भेल? लोक बजैए ओल्ड बेटल ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ उत्तम होइए अर्थात् पुरान पान तहिना पुरान शराब अपन सहयोगीक संग घुलैत-मिलैत एक रस भऽ जाइत तहिना विचारवान पत्नी सृजनसँ पतिपालक भार उठा चलैत, से कहाँ भेल? की ई झूठ जे प्रेमी पाबि प्रेम प्रेमास्पदक सीमा पकैड़ कदमक गाछमे राधा-कृष्ण जकाँ यमुना किनहरिक गाछक डारिमे झूला झूलि बरहमासा गबैत। मुदा एहेन प्रेम भऽ कहाँ पएल जे होइत! अपन दस बर्ख पहिलुका जिनगी केहेन रहल जे होइत। की परिवार छल, केते सेवा करै छेलिऐन। घरक भार भनसिया, पैनभरनी संग जिनगीक कोनो काज बाँकी नै छल जइमे सहयोगी नै छेलिऐन। मुदा आइ? आइ तँ ओहिना ने ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेल छैथ जइमे एकोटा पात नहि। सभटा झड़ि गेल। पातक-संगबे छुटने मुड़ीक टुस्साक संग ठौहरियो सुखि खसि पड़लैन। जे सजल सजाएल गाछ नै सुखल-टटाएल ठूठ गाछ भऽ गेल छैन। इजोतमे भलेँ लोक भूत-प्रेत नै देखह मुदा अन्हरिया राति हुअए आकि झलफलाएल इजोरिया, ठूठ गाछ भूत जकाँ तँ देखे पड़ैत। मन घुमलैन, जँ ओ -पत्नी- ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेली तँ अपने की रहल। रहल खाली एक क्वीन्टल सताइस किलोक देह। देहपर नजैर पड़िते मनमे खुशी उपकलैन।

साठि-सत्तैर किलोबला देह जखन क्वीनटलिया बोरा पीठ आकि माथपर उठा लइए, तैठाम ओइसँ दोबर उठबैक तागत तँ अपनो देहमे अछिए। हूबा जगिते राघोबाबा उठि कऽ झाँपल बाल्टीन उघारि लोटामे पानि ढारि गिलाससँ पीबए लगला। एक गिलास पीविते कौआ जकाँ मन कड़कड़ेलैन। जहिना भरि दिन चरौड़ कएल कौआ साँझमे एकठाम भेला पछाइत निअम बनबैत जे, देख

काल्हिसँ कियो ने अधला वृत्ति करिहें आ ने अधला बौस खइहें। जेहेन खेमे तेहेन बुधि हेतौ। नीक बात रहने एकमुहरी सभ मानि लइत। मुदा अधरतियाक अधपेटिया विचारो ने अधविचरिया होइत। सौंझुका निअम बदैल संशोधित निअम बनबैत जे अदहा नीक करिहें आ अदहा अधलो खइहें। मुदा वएह कौआ भोरमे ओहू निअमकेँ बदैल निअम बनबैत जे खाइ-जोकर जे भेटौ से खहिहें आ जे मन मानो से करिहें। तहिना एक गिलास पानि पीला पछाइत राघोबाबाकेँ सेहो विवेक आगू बढ़ि मनकेँ कहलकैन। सुनिते निर्णय केलैन जे जखन गरम चाहो लोक सुआदि-सुआदि पीविते अछि तखन तँ हमहीं एकरत्ती ठाढ़ मारल पानि पीलौं तँ कोन अधला भेल। निआसल मनकेँ पानि चाही आकि शीतल-ठण्ढा जल। मनमे विचार अबिते दोसर देवदूत अपन तरकशसँ तीर निकालि छोड़लक, बैशाख जेठमे जँ ठरल पानिमे सुआद होइ छै तँ पूस मासमे गरमे ने नीक होइ छइ। किए कियो इन्होर पीबैए। तर्कक मजगूती देख राघोबाबाक मन मानि गेलैन जे ई सभ सभटा मन भड़छब छी जँ से नै छी तँ एक चीज सभकेँ एके रंग नीक किए ने लगै छइ। तर्कक बोनमे राघोबाबाक नजैर पत्नीपर गेलैन। पोचाड़ा दैत बजला-

"बड़ पियास लगल छेलए।"

पतिक पियास सुनि सुमित्रा बजली-

"तँ बजलौं किए ने?"

एकबटुआ देख राघोबाबा बजला-

"कहुना भेलौं तँ अहूँ बूढ़े भेलौं किने। किए अनेरे अहाँकेँ हरान करितौं। अपन काज अपने करी, सएह ने केलौं।"

अपन काज अपने करी सुनि सुमित्राक विचारमे धक्का लगलैन। धक्का ई लगलैन जे जँ अपन काज अपने करी तँ कियो केकरो भार बनत किए? मुदा उमेर पाबि शरीरोक तँ रूप बदैलते छै, तैठाम दोसराक जरूरत तँ हेबे करत। मुदा..? मुदा ई जे नोकर-चाकरपर जीनिहारक जँ अपनो बेटा-पुतोहु दूर चलि जाए तँ तखन बुढ़ाड़ीमे की हएत। नजैर बेटापर गेलैन। आइ जँ अपन बेटा-पुतोहु लगमे रहैत तँ की अहिना जिनगीक रूप रहैत। ऐ अवस्थामे चुल्हिफुक्की केहेन भेल! जेते सम्पैत बेच गामसँ चलि गेल तेते सम्पैतसँ की गाममे पेट नै भरितै। तखन? तखन तँ यएह ने जे छी तहीमे जीबैक अछि। बजली-

"पैछला सभ किछु बिसैर जाउ, नीक भेल आकि अधला, जे भेल से भेल। आब केना जीब, तइ दिस ताकू।"

पचास बर्ख पूर्व राघोबाबाक बिआह सुमित्रा संग भेलैन। राघोबाबाक

पिता देवानन्द गामक जेठरैयत। बीस बीघा जमीन। किसानी जिनगीक जे स्तर होइ छै तइ स्तरक जिनगी। बाहरसँ कम सम्पर्को आ समाजमे पैंच-पालट तँ करैथ मुदा महाजनी नै रहैन। पाहीपट्टीक गाम। जइ जमीन्दारक गाम तिनका संग देवानन्दक कुटुमैती केलैन।

ओना किछु गोरेक ईहो कहब अछि जे समतुल्य सम्बन्ध अधिक नीक होइ छै मुदा विधातोक किरदानी तँ किरदानीए छिऐन। ने दूटा मनुखकेँ एकरंग मुँह-कान बनबै छथिन आ ने कलमक दूटा नोक एकरंग करै छथिन। जेते लोक तेते मुँह आ जेते लिखिनिहार तेते रंगक लिखाबट। खाएर जे हौउ, जहिना देवानन्दकेँ राघवक सम्बन्ध जोड़ब नीक लगलैन तहिना ठाकुरो प्रसादकेँ सोहनगर बुझि पड़लैन। जमीन्दार घराइनमे बाधा ई उपस्थित भेल रहैन जे दियादीक सम्बन्ध रहैन। दोसर विकल्पो नै बुझि पड़लैन। कारण कुटुमैती तँ जातियेमे हएत, तखन तँ गोरगर-कन्हगर देख कऽ करी, से जँचलैन। देवानन्दो दुनू परानीक मन खुशीसँ भरि गेलैन। के ने ऊपर उठए चाहैए, दुनू परानी देवानन्द विचारि लेलैन जे जँ एको पाइ दहेज नहियोँ भेटत तैयो कुटुमैती कइए लेब। भने बेटाकेँ नै बेचने रहब, मुँहदानो दइले तँ रहत। जखन ठाकुर प्रसादक सिपाही देवानन्द बेटाक बिआहक गप-सप्प उठौलैन तखन देवानन्दो पत्नीक विचारक आशा छोड़ि 'हँ' बजला। ओना विचार भेले रहैन। सिपाही तँ सिपाही छल, ठाकुर प्रसाद लग बाजल जे कुटुमैती करै-जोकर अछि। कुटुमैती करै-जोकर सुनि ठाकुर प्रसादक पत्नी- सुनीता, पुछलखिन-

"से केना बुझलहक?"

जहिना इन्टरभ्यूक समय विद्यार्थी निर्भीक भऽ कोनो प्रश्नक उत्तर करैत तहिना सिपाही बाजल-

"पुरुखाह लोक देवानन्द छैथ।"

पुरुखाह सुनि सुनीताक मनमे खुट-खुटी उठलैन। खुट-खुटी ई जे जखन परिवारमे पुरुख आ महिलाक काजक बीच सीमांकन अछि तखन एहेन बात सिपाही किए कहलक। पुछलखिन-

"से की?"

अपन बढ़ैत मान देख सिपाही तिलिया-फुलिया लगबैत बाजल-

"एक तँ जाइते देरी बिना किछु पुछने दरबज्जापर बैसा अपने आँगन जा लोटामे पानि अनलैन। पएर धोनौं ने रही आकि चाह-जलखै पहुँच गेल।"

सुनीताक नजैर बेटी बिआहपर रहैन तँए सिपाहीक बातसँ कानमे झड़ पड़ए लगलैन। बजली-

"ई सभ छोड़ह, काजक गप करह?"

काजक गप सुनि सिपाही पट बदैल दोसर दिस मुँह बनौलक। बाजल-

"जखने कुटुमैतीक गप-सप्प उठेलौं आकि धाँइ दऽ बजला जे निसचित जूड़बन्धन हेबे करत। जाति-पाँजि कोनो छीपल अछि। एक्कैस पुरुखाक इतिहास अछि। कहियो कियो इज्जत गमा कऽ पाँजि नै बनौलैन। परिवारक काज छी किनकोसँ किछु विचारैक प्रश्ने नै अछि।"

सिपाहीकेँ भँसैत देख पुन: सुनीता दोहरौलैन-

"सुमित्राकेँ कोनो दुख-तकलीफ तँ ने हएत। लड़का केहेन अछि?"

"मलिकाइन, सएह ने कहै छेलौं, सम्बन्धक प्रश्न अछि, सविस्तर बात बूझब जरूरी अछि किने।"

ठाकुर प्रसाद आ देवानन्दक बीच कुटुमैती भऽ गेल। कुटुमैती भेला पछाइत दान-दहेजक ठेकान नै रहलैन। मुदा दूटा प्रमुख रहैन। पहिल गामक सरकारी जमीन आ दोसर, महाजनीबला बोही सुमझा देलकैन। जहिना लछमीक आगमण भेने छप्पर फाँड़ि धन-बरखा होइत तहिना देवानन्दोकेँ भेलैन। बढ़ैत कारोबार देख, जन-बोनिहारक अतिरिक्त तीनटा नोकरो रखलैन। दोसर दिस सुमित्रा लेल तीनटा नोकरनी सेहो नैहरेसँ आएल छेलैन। दुनू परानी देवानन्दो मरि गेला आ ठाकुरो प्रसाद दुनू बेकती। रहि गेला राघव आ सुमित्रा। ओना तीनटा बेटियो-जमाए आ बेटो-पुतोहु छथिन। जिनगीक चारिम पड़ावपर पहुँचते राघोबाबाकेँ चारू दिससँ धक्का लगलैन। धक्का लगिते अपन देह देखलैन।

जेना जुग बदलै छै तहिना राघोबाबाकेँ साठि बर्खक अवस्थामे भेलैन। तीन-चारि सालक रौदी महाजनी खा गेलैन। करताइत दुआरे खेती टुटि गेलैन, तैपर महाजनी आ जमीनक विवाद सेहो समाजमे पसैर गेल। राघोबाबा डेगे-डेग पाछू मुहेँ ससरए लगला। ससरैत-ससरैत आइ पचहत्तैर बर्खक अवस्थामे पहुँच गेल छैथ।

जहिना गाछक फुनगीक डारिपर चिड़ै-चुनमुनी बैस अपन जिनगियोक गप करैए आ नचैत-गबैत-हँसैत-हटैत-सटैत सभ मस्त रहैए, तहिना तँ मनुखोकेँ हेबा चाही, से कहाँ होइए?

मन ठमकलैन। किछुकालक पछाइत ठकुआएल मन कुड़कुड़ेलैन। कुड़कुड़ेला-

"जहियासँ दुनू गोरे एकठाम भेलौं, तहियासँ अहाँ कोन नजरिये देखलौं?"

पतिक आक्षेप सुनि सुमित्रा डहकली-

"निरलज जकाँ बजैमे लाजो ने होइए?"

पत्नीक इशारा राघोबाबा नै बुझि सकला। धड़फड़ा कऽ बजला-

“हमर लाज अहाँक लाज नै, तखन एना किए बजै छी।”

जहिना बोन-झाड़मे माए-बाप अपन बच्चाकेँ केतौ ठाढ़ कऽ अपने गाछक अढ़मे नुका रहैए आ औनाइत बच्चाकेँ देख कखनो थोपड़ी बजा तँ कखनो बौआ-बौआ कहि बोल-भरोस दइए, तहिना सुमित्रा बजली-

“गुड़क मारि धोकड़ेसँ लोक बुझैए, हाथी जकाँ जे अखनो लगै छी, से केकरा केने?”

दबैत मन राघोबाबाक आरो दबा गेलैन। दबाइत मनमे एलैन हाथी जकाँ तँ ठीके खुआ-पीआ कऽ बना देलैन मुदा ई किए ने बुझलैन जे एहनो दिन देखए पड़त। प्रकृतिकेँ अजीव खेल छै, जँ गरमी मासमे ठण्ढा पानिक मान बढ़ि जाइ छै तँ जाड़मे इनहोरक। तहिना पतझड़ मास होइतो सभ गाछमे एकेबेर थोड़े पतझड़ो होइ छै, कोनो पालाक पल्ला पड़ि झड़ि जाइए तँ कोनो रौदक तीक्ष्ण गरमीसँ, तँ कोनो बरसातक रोग-वियाधिसँ। रोग वियाधि अबिते मन अपना दिस बढ़लैन। अपन जिनगी.., गाछे-बिरीछ जकाँ मनुखोक पतझड़ होइ छै, जे भेल? नहि, रोग-वियाधिक फल छी। गाछो-बिरीछमे तँ मौसमक अतिरिक्त रोगो-वियाधिसँ पतझाड़ होइते अछि। भरिसक सएह भेल। बजला-

“रोग-वियाधि काबू केने अछि, नै तँ अपन पेट जखन कुतो-बिलाइ, चिड़ैओ-चुनमुनी पालि लइए तखन हम तँ मनुख छी। मुइला पछाइत देखए एबै।”

सामंजस करैत सुमित्रा बजली-

“की नवे-नौताड़ि पति-पत्नी भेली आ बुढ़-बूढ़ानुस नै हेती। जे पतिकेँ मानए सएह सोहागिन।”

पत्नीक प्रेम भरल बात सुनि राघोबाबा घरसँ बाहर सुरूज दिस देखलैन। बेर टगि गेल छल। साँझो लगिचा गेल छल। पुन: बाहरसँ घर आबि बजला-

“बेर टगि गेल, चलू रतुका ओरियान करए।”

पतिक बात सुनि सुमित्रा बजली किछु ने, सिहैक कऽ मन कलैश मुड़-मुड़िया गेलैन। जेना जीवनक नव शक्ति सिरजित भऽ गेल होइन। सिरजिते ने जीत-शक्ति छी, असिरजितेक हरल ने हारल-मारल भेल।

❍

तिथि : 31 दिसम्बर 2013, शब्द संख्या : 2587

सुमति

तीन माससँ किछु बेसीए दिनपर हरिनाथ भाय भेटला। ओना उमेरमे भरिसक चारि-पाँच मास छोटे हेता मुदा तेहेन लछन-करम छैन जे छोटक कोन बात जे जेठोजन सभ 'भाय' कहै छैन, हमहूँ सएह कहै छिऐन। नै भेँट होइक कारण ई नै अछि जे परिवारक ओझरीमे हरिनाथ भाय ओझरा गेल छैथ आकि बेमरियाहे भऽ गेल छैथ। आन भैयारी जकाँ सेहो नहियेँ छैन जे बपौती हिस्सा-बखरा लेल कन्हामे झोरा लटका सरकारी दुआरि[4] धेने रहता।

भेल ई छैन जे परिवारक दाब[5] कम भेने नव-नव काजो आ विचारो तेना कऽ पकैड़ लेलकैन जे पैछला[6] सभ किछु तरिऐ लगलैन अछि, जइसँ घुमबो-फीड़ब कम भऽ गेलैन अछि। कम भेने भेँट-घाँट कमब सोभाविके अछि। दोसर ईहो जे जहिना नव-विचार विचरण-ले समय मगैए तहिना नव काजो तँ मांगिते अछि।

दोहरी मांग भेने रूटिंगो बदलबे करत। सएह भेलैन। भेटते मनमे उठल जे आने जकाँ तँ ओहो भैयारीक बीच छैथे, तँए रामा-कठोला हेबे करतैन। मुदा मुँहक सुरखी से नै कहै छैन। आशाक ओसाएल ओसक बून जकाँ टप-टप करै छैन। ओना एहनो तँ होइते अछि जे अपन मनक बेथा-कथा अनका लग बजनहि की! तँए अनेरे मुहोँ लटकाएब नीक नहियेँ होइए। मुदा से हरिनाथ भायकेँ नै रहैन। जेना रसे-रसे बेसियाएले जाइत रहैन। एहेन स्थितिमे अगुरवार किछु बाजब उचित नै बुझि पुछलयैन-

"हरी भाय, बहुत दिनपर भेटलौं अछि। की माया-जालमे बेसी ओझरा गेल छी?"

जहिना हल्लुक फूलमे फल्लुक फड़ फड़ैए तहिना ओहो निर्विकार उत्तर देलैन-

"घर आँगनमे तेते नवका-नवका अतिथि-अभियागत सभ आबए लगला अछि जे एक्को-घड़ी छुट्टीए ने होइए जे केतौ टहलबो-बुलबो करब। तँए बेसी

---

[4] कोट-कचहरी

[5] भार

[6] जिनगीमे पहिलुका

दिनपर देखलह।”

हरिनाथ भाइक चिक्कारी[7] बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं। मुदा दोहरा कऽ पुछबो केना करितिऐन। अखन तँ भेँटक ऊपरके सीढ़ीपर छी, चाहे ओ भूमिका होइ आकि कुशल-छेम। कोनो गम्भीर बात तँ राजसी ठाठ-बाठमे चलैए, आगू-पाछू सर-सिपाही रहै छइ। मुदा ईहो तँ मनकेँ हौंरबे करत जे जखन कुशले-छेम नै बुझि पेलौं तखन ऐगला केना बुझि पाएब। करहर सौरखीक गाछ होइ आकि मखानक गाछ बिनु पात पकड़ने केना ओकर गाछ पकैड़ सकै छी। जँ गाछे नै पकड़ाएत तँ पानिक निच्चाँ कीचक जड़ि केना पकड़ाएत, जँ जड़िये नै पकड़ाएत तखन बिच्ची उखाड़ि केना सकै छी। जँ बिच्चीए नै उखड़त तँ अनेरे ओइ दिस ताकिये कऽ की लाभ? पोखैर-डाबरमे तँ पड़ले छइ।

तीन-चारि मासक बीच हरिनाथ भाय भेटला, एते दिनमे सालक मौसमो बदैल जाइए। मुदा गप-सप्पमे तेहेन घुच्ची बनि गेल जे खसैकेँ के कहए जे पैरक कनगुरिया आँगुरक सिर तक छिटका देत...।

मन मोड़ि कहलयैन-

“भाय, बारह मासक सालमे तीनटा मौसम बदैल जाइए मुदा एते दिनक पछाइतो अहाँक मुँहक चुहचुही नै चिहकल?”

जेना निर्विकार हरिनाथ भाय रहैथ तहिना बजला-

“मुँहक चुहचुही किए बदलत, अपन जे दायित्व बुझै छी तइ पाछू लगल छी। जहाँ धरि सम्भव भऽ सकतै, हेतइ। तइले अनेरे चिन्तासँ चीत भऽ चितामे चलि जाइ सेहो केहेन हएत। जँ कोनो काज अछि तँ से केना हएत, ओकर चिन्तन-मनन करैत चिन्तक बनि परिवारमे ठाढ़ हएब, तखने ने चिन्तामुक्त परिवार बनत। से बिना केने थोड़े हएत।”

ओना हरिनाथ भाइक विचार सुनि केतेको बात मनमे उठल मुदा फेर भेल जे भैयारीक सम्बन्ध बुझैक अछि, अनेरे दोसर-तेसर बातमे वौआएब नीक नै...।

पुछलयैन-

“सपरिवार नीके छी किने?”

परिवारक नाओं सुनिते जेना हरिनाथ भाय चौंकला तहिना हलसैत कहलैन-

“भने परिवारक कुशल पुछलह, सुन्दरलाल सेहो आएल अछि, गामेपर चलह कलकतिया बिस्कुटो खुएबह, चाहो पीविहऽ आ गपो-सप्प हेतइ।”

---

[7] अलङ्कारी

हरिनाथ भाइक बात सुनि मनमे उठल भने कहबो केलैन आ बहुत दिनसँ सुन्दरलालसँ भेँटो ने भेल, दुनू भऽ जाएत। मुदा नमहर नचनियाँक फीस तखने ने नमहर होइ छै जखन व्यस्तता बेसी देखबैए। तहिना हमहूँ बजलौं-

"भाय, एकटा काजे दछिनवारि टोल जाइ छी मुदा सुन्दरलाल बहरवैया भेल, परदेशक किछु समाचार सुनब बेसी महत रखैए। अपन काज तँ अपना हाथक छी, जखने समैक गर लागत तखने ससारि लेब।"

जहिना हरिनाथक घर दिस डेगो बढ़ैत रहए तहिना गपो-सप्प डेगे-डेग बढ़ए लगल...।

कहलयैन-

"जखन सुन्दरलाल महानगरक राजधानीमे रहैए तखन तँ बाल-बच्चा सभकेँ ओतै पढ़बैत हएब?"

ऐगला बात कहैले पछुआएले रहए आकि बिच्चेमे हरिनाथ भाय टपकला-

"संगतुरिया जकाँ तोरा बुझै छी, तखन किए एना अनाड़ी जकाँ बजै छह?"

हरिनाथ भाइक बात सुनि फेर मन ओझरा गेल। केहेन सुन्नर बात कहलयैन तखन किए तमसा गेला। तमसाइक कोनो अरथे ने लगल। फेर सोचलौं जे दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिने खटपटाएब नीक नहि। खटपटही गाए जकाँ दुहैसँ पहिने लथारसँ डाबा फोड़ा लेब तखन दूहब कथीमे। मुस्की दैत जहिना शुभ-शुभ कियो केतौ पहुँच बजैए तहिना बजलौं-

"भाय, बिस्कुट तँ कलकतिया नीक हएत मुदा चाहमे पौडरबला दूध मनाही कऽ देबै, गैसक शिकाइत रहैए।"

जेना हरिनाथ भायकेँ ठोरेपर बरी पकैत होइन तहिना जवाब देलैन-

"घरवैयाकेँ जुड़त मरूआ रोटी तँ खीर केतए-सँ आनत।"

गर भेटल। कहलयैन-

"कहलौं तँ बेस मुदा ईहो केहेन हएत जे नै पचैए सएह खुआएब।"

जहिना बजलौं तहिना ओहो लोइक लेलैन-

"खुएबऽ विस्कुट, चाह तँ पीबैक वस्तु छी। खेला पछाइत ने पीअल जाइ छै पीला पछाइत खाएल थोड़े जाइ छइ।"

गपक रस पाबि बजलौं-

"खेनाइ-पीनाइ दुनू संगी छी। एकठाम बनि-ठनि भरि दिन केतए वौआइए तेकर खोज-खबैर रहौ आकि नै रहौ मुदा बनै-ठनै बेर तँ दुनू एकठाम

होइते अछि।"

घर लग एने मनमे भेल जे रस्ताक गपकेँ विराम देब नीक हएत। तहूमे लङ्गोटिया संगीक बीचक बात छी, जँ कहीं परिवारक दोसराइत सुनि लेत तँ अनेरे अर्थक अनर्थ भऽ जाएत...।

बजलौं-

"सपरिवार सुन्दरलाल एला अछि आकि असगरे?"

हरिनाथ-

"ऐबेर तँ सपरिवार आएल अछि मुदा बेसीकाल असगरे अबैए।"

असगर सुनि पुछि देलिऐन-

"एना किए दू-रंगा गप कहै छी?"

'दू-रंगा' सुनि मनमे कचोट भेलैन। मुदा सोझे मुहेँ नै बाजि कनछियाइत बजला-

"नोकरियो कि एक रंगक होइए जे एक चालिये सभ चलत। रघुवीरकेँ देखै छी एजेंसीक नोकरी छै, किम्हरोसँ किम्हरो महिनामे चारि-पाँच खेप चलि अबैए। मुदा सभ कि रघुवीरे छी, सेहो बात नै अछि। एहनो तँ होइते अछि जे कियो सालक मास दिनक छुट्टी एकेबेर गाममे बितबैए, तँ कियो टुकड़ी काटि-काटि पान-सात बेर सालमे चलि आबैए। मुदा सुन्दरलालकेँ अपन ढाठी छइ। दस दिनक दुर्गा पूजाक छुट्टीमे सभतूर अबैए आ अनदिना असगरे अबैए। मुदा ऐबेर तइ सभसँ अलग भऽ सपरिवार आएल अछि।"

पेटमे जहिना भूखल बिलाइ बिलाइत रूपमे कुदैत तहिना पेटमे दू भैयारीक रामा-कठोला सुनैले सेहो कुदैत रहए। मुदा कण्ठसँ ऊपर हुअ नै दिअ चाहिऐ। अनेरे अनका चार परहक कुमहर गनब। गनबै कुमहर आ जँ कोनो बतिया सड़ि जेतै तँ नाओं लगौत जे फँल्लेँ आँगुर बतौने रहए...।

फेर मन हुअए जे जँ कहीं दुनू भाँइक बिच्चेमे सम्बन्धक प्रश्न रखि दिऐ तँ से बेसी नीक हएत। मुदा फेर हुअए जे सबहक कीदैन रूपैआ करए। जँ कहीं पाइ-कौड़ीक चर्च भेल आ विवाद फँसल तँ अनेरे दोखी हएब जे फँल्लेँ आबि कऽ दुनू भाँइमे मारि करा देलक। मारि करत अपना चालिये आ दोखी बनौत हमरा जे फँल्लमा घरे फोड़ि देलक..!

कोनो गरे ने अँटए जे अपन बातक जड़ि पकड़ब। जाबे जड़ि नै पकड़ाएत ताबे सत् केना औत, जाबे सत् नै औत ताबे चेतनकेँ चेतन केना कहबै, ताबे तक तँ ओ बाले-बोल रहत। बाल-बोलक आनन्दे की? क्षणिक! मन तेना मकड़जालमे ओझरा गेल जे हरिनाथ भाइक रस्ताक बातो अदहे-छिदहे सुनि पेलौं।

दरबज्जापर पहुँचते जहिना घोड़ाएल मक्खन आगिपर चढ़ि घी बनए लगैए तहिना भेल।

दरबज्जा ओसारक चरिजनियाँ अखड़े चौकीपर सुन्दरलाल सभटा धिया-पुताकेँ माने दुनू भाँइक बेटा-बेटीकेँ गोल-मोल बैसा अपनो बैसल रहए। रूमाल चोर जकाँ गोलका माला बनौने रहए आ सभसँ छोट भतीजीकेँ पुछैत रहइ-

"बुच्ची, तोहर नाओं की छियौ?"

आँखि उठा चारि बर्खक रानी मने-मन गर लगबए लगल। माए कहैए-

'रानी', पिता कहै छैथ- 'सड़लाही', बड़का भैया कहै छैथ- 'लछमी' आ काका अपने कहै छैथ- 'त्रिवेणी' आ चाची 'जमुनियाँ सरोसती।' जेतए लोकक नाओं तँ एकटा होइ छै तैठाम हमरा ढेरी अछि। तखन की कहबैन, यएह ने कहबैन त्रिवेणी। बाजल-

"त्रिवेणी।"

सुन्दरलालकेँ बच्चा सबहक बीच गप-सप्प करैत देख डेढ़ीए लग कनी डेग छोट कऽ लेलौं। ओना, संयोगो नीक रहए जे सुन्दरलालक पीठ दिससँ अबैत रही।

'त्रिवेणी' सुनि सुन्दरलाल जेठकी बहिनकेँ देखबैत पुछलक-

"ई के भेलखुन?"

"दीदी।"

"हम?"

"कलकतिया काका।"

सुन्दरलालकेँ बच्चा सबहक बीच देख मन घीवाह भऽ गेल। आगिपर चढ़ल घीबक सुगन्धसँ दरबज्जा सुगन्धित पाबि ठाढ़ भऽ गेलौं। मुदा से हरि भाय भंग कऽ देलैन। सुन्दरलालकेँ टाँहि देलखिन-

"बौआ, पुरान संगी रस्तापर भेटला, बच्चा सभकेँ छोड़ह पहिने जलखै-चाहक ओरियान करह।"

धड़फड़ा कऽ सुन्दरलाल उठि बाँहि पकैड़ कुरसीपर बैसबैत भातीजकेँ कहलक-

"बौआ, पहिने जलखै नेने आबह, ताबे चाहो बनते।"

कहि दुनू भाँइ चौकीपर बैसला। सेरिया कऽ सभ बैसलो ने रही आकि तीन-चारि रंगक बिस्कुट आ दूटा लालमोहन सजल प्लेट हाथमे आबि गेल। तेज काजक रूप देख मनमे भेल जेना पहिनेसँ प्लेट सजल होइ। तीनू गोरेक हाथमे

प्लेट आबि गेल मुदा हाथ तीनूक बाड़ल। ओ दुनू भाँइ बाड़ने जे पहिने, ओ मुँहमे लेता तखन ने हम सभ लेब। जेना भोजो काजमे पहिने बुढ़-बुढ़ानुस कौर उठबै छैथ तेकर पछाइते ने सभ उठबैए। भलेँ धिया-पुता पहिने किए ने खेनाइ शुरू कऽ लइए। अपन अगुआएब नीक बुझि एकटा बिस्कुट तोड़ि मुँहमे लेलौं। ओहो दुनू भाँइ खाए लगला। बेवहार देख भ्रमित मन सहैम गेल। अपनाकेँ छिपबैत सुन्दरलालकेँ पुछलिऐ-

"बौआ, केते दिनपर गाम एलह हेन?"

सुन्दरलाल कहलक-

"डेढ़ मासपर।"

'डेढ़ मास' सुनि मन आरो भरैम गेल। डेढ़ मासपर कलकत्तासँ आएल, तखन कमाएल कथी हएत! ओ कमाइ तँ गाड़ियेक भाड़ा-भुड़ीमे चलि गेल हेतइ। मुदा पुछबो केना करबै जे भाड़े-भुड़ीमे सभ पाइ चलि जाइत हेतह, तखन परिवार केना चलतह...।

विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"डेढ़ मासपर किए एलह, कोनो विशेष काज की?"

'विशेष काज' सुनि सुन्दरलाल बाजल-

"विशेष केकरा कहबै आ साधारण केकरा कहबै?"

सुन्दरलालक प्रश्न जेना मनकेँ दाबि देलक, दाबि ई देलक जे विशेष आ साधारण तँ बेकता-बेकती होइए। ओना समाजिक सेहो होइते अछि, मुदा जहिना समाज अपन चालि बदैल कुचालिक बाट पकैड़ लेलक अछि तहिना ने बेक्तिक साधारण आ विशेष काजोक चालि बदैल गेल अछि। ओना बेकता-बेकती जिनगीक दशा-दिशानुसार सेहो बदलैत चलै छै...।

कोनो गरे ने फुरए जे सुन्दरलालकेँ सवुरगर[8] जवाब दऽ सकब। मन ठमकल। मुदा लगले भेल जे जखन पी.जी. किलासमे विषय धारा पकैड़ चलबे ने करैए, तखन गाम घरक तँ दलान दलाने भेल। जँ खेती-गिरहस्तीक क्रार्यक्रममे भगवतीक गीत बीचमे नै गाएब तँ की गाएब। ने खेतीकेँ अपन उपजाक ठेकान छै आ ने गिरहतकेँ गिरहस्तीक। तखन हमरे किए रहत। पाशा बदलैत बजलौं-

"बौआ, गाममे नीक लगै छह?"

प्रश्न तँ ऐ हिसाबसँ रखलौं जे जहिना बजरूआ लोक सिनेमा-कलाकारक सात पुश्त तक जनैए मुदा अपन वंशक तीनियोँ पुश्त नै जानि पबैए। मुदा से

---

[8]सन्तोषप्रद

भेल नहि। जेना ठेकनाएले रहै तहिना सुन्दरलाल कहलक-

"भैया, जहिना अहाँ भाय साहैबक संगी छिऐन तहिना हमरो भेलौं। तँए अहाँ लग कोनो बात बुझैले रखि सकै छी। गाममे किए ने नीक लागल? बोन राखए सिंह आ सिंह राखए बोन।"

खोलि कऽ सुन्दरलाल किछु ने बाजल मुदा तेहेन गड़ूगर प्रश्न रखि देलक, जे किछु फुरबे ने कएल। मनमे उठल जे जखन धारो-धुरक कोनो ठेकान नै अछि जे जइ कोसी-कमलाक गीत लोक झालि-मिरदंगपर गबैए भलेँ ढोलक-झालिक जगहे किए ने बदैल गेल हौउ। मुदा जइसँ खुशी होइत ओहो कोसी-कमला गामक-गामकेँ उजाड़बो करैए आ माटिकेँ सेहो उजरबैए! तैठाम मनुख तँ मनुखे भेल। जे मनुखाहो बनैए आ मरखाहो...।

पाशा बदैल बजलौं-

"भाइयो साहैबक धिया-पुताकेँ ओतए लऽ जा नीक स्कूल कौलेजमे पढ़बै छहुन किने?"

ले बलैया! सुन्दरलाल चुपे रहल आ बिच्चेमे हरी भाय बमैक उठला-

"अहिना बुझै छहक। हम कि अपना बेटाकेँ कारखानाक लूरि सीखा कारखानाबलाक बेटा बना देब। जइ दिन अपना पूजी-पगहा हएत तइ दिन अपना मशीनपर लूरि सिखत।"

हरी भाइक बात सुनि किछु खास बात मनमे उठल संगे मनमे ईहो उठल जे अनेरे अनका दरबज्जापर मुँहचुरू होइ छी तइसँ नीक जे हरीए भायकेँ पुछि वक्ता बना अपन नाङैर समेट लेब नीक। बजलौं-

"केना अपन बेटा अनकर भऽ जाएत?"

हरी भाय बजला-

"केना भऽ जाएत, से तूँ नै बुझै छहक।"

अपना दिस प्रश्न अबैत देख फेर पाशा बदललौं-

"बौआ सुन्दरलाल, तोहर बात नै बुझि पेलौं जे केना बोन सिंह रखैए आ सिंह केना बोन?"

गम्भीर होइत सुन्दरलाल बाजल-

"भैया, किए हम परदेश गेलौं, अहीं कनी बुझा दिअ। स्कूलमे नीक विद्यार्थीक गिनतीमे हमहूँ छेलौं। एम.बी.ए. केलौं। अहाँक गाममे हमर कोन काज रहल। जँ पढ़ि-लिखि काज बदैल करितौं तँ अहीं बजितौं जे पढ़ै फारसी बेचै तेल, देखू भाय करमक खेल। तखन?"

सुन्दरलालक प्रश्न जेना मनकेँ आरो भरिया देलक। मुदा जइ दरबज्जापर बैस जलखै केलौं, चाह पीलौं तैठामसँ मुड़ी गौंति जाइ ओ नीक नहि। मुदा मुड़ी उठाएबो असान तँ नहियेँ अछि। मनमे एकटा गर उठल। गर ई उठल जे जइ प्रश्नपर हरी भाय बमकला तही प्रश्नकेँ किए ने सुन्दरलालकेँ दोहरा कऽ पुछि दिऐ। बजलौं-

"बौआ हरीभायकेँ कोन बातक कुवाथ भऽ गेल छैन जे एना कड़ुआएल छैथ?"

सुन्दरलाल हूसल। हूसल ई जे अपन पैछला बात दोहरबैत बाजल-

"मनमे उठल रहए जे जखन भैयारीमे, परिवारमे जाबे तक काजक सम्बन्ध नै बनत ताबे तक एक दबाइत रहत दोसर उठैत रहत। यहए सोचि भैयाकेँ कहलयैन जे भातीज-भतीजीकेँ कलकते जाए दियौ, ओतै नीक स्कूल-कौलेजमे पढ़ाएब। मुदा..?"

'मुदा'क पछाइत सुन्दरलाल रूकि गेल। ओना जिनगीक घटित घटना रहै, भाइक सोझहामे पक्ष राखब नीक नै बुझलक, मुदा हरी भायकेँ जेना पैछलो बात ओहिना तजगरे छेलैन। तहूँमे बजैक क्रमो तँ अगियाऐ गेल रहैन। मुदा मनुख तँ भगवानोसँ बुधियार होइते अछि। आगि भलेँ पानि नै भऽ सकए आ ने पानि आगि भऽ सकए मुदा मनुख तँ भऽ सकैए। आगि पानिक बनल मनुख, कखनो आगिक लहास जकाँ भऽ जाइए तँ कखनो कैलाशक बरफ जकाँ। हरियो भायकेँ सहए भेलैन...। सुन्दरलालक विचारपर पानि फेड़ैत टटका प्रश्न बनबैत बजला-

"तोरेसँ पुछै छिअ जे जे बच्चा बच्चेसँ माए-बाप लगसँ हटि जाइए ओ सकताइत-सकताइत पाकल बाँस जकाँ नै सकता जाएत, ओ माए-बापक देल कोन किरिया-करम मन पाड़ि अपन किरिया करमसँ जोड़ि करत?"

हरीभाइक प्रश्नक उत्तर उकड़ू छेलैन। उकड़ू काजकेँ सुकड़ू बनाएब धिया-पुताक खेल थोड़े छी। तहूमे केहेन उकड़ूकेँ केहेन सुकड़ू बनौल जाए। ईहो एक अलग समस्या भेल। एहेन तँ नै ने जे जइ बाँसक टोनसँ ढेंग उनटाबए जाएब आ वएह टुटि जाए, तखन तँ आरो उकड़ू हएत। तइसँ नीक जे दुनू भाँइक बीचक बात छी तँए किए ने ओही गरे उनटा दिऐ...।

बजलौं-

"हरी भाय, बातकेँ कनी फरिछा कऽ कहियौ। नै बुझि पेलौं जे अहाँ की कहै छिऐ।"

जेहने धियानसँ हमर बात हरी भाय सुनने रहैथ तेहने अपन जगह ठेकनबैत बजला-

"हमहीं दू भाँइ छी। दुनू भाँइक बीच केहेन मेल-मिलान अछि जे सभ देखैए, मुदा मिलान रहलो पछाइत हटल केते छी। जँ कलकत्तामे सुन्दरलाल बिमार पड़ए आकि गाममे हमहीं पड़ी, भैयारीक सेवा कथी हएत?"

हरीभाइक अकाट बात सुनि किछु फुरबे ने कएल, खिस्सा सुनिनिहार जँ हूँहकारी नै देत तँ खिस्सकर अपनाकेँ की बुझत। मुदा हूँहकारियो तँ हूँहकारी छी। केहेन हूँहकारी पड़त ईहो तँ अदना बात नहियेँ अछि। ओना सुन्दरलाल डेढ़ मासपर आएल छल, मुदा बुझलो बातकेँ अनठबैत फेर पाशा बदैल बजलौं-

"बौआ, गामक आवाजाही केहेन रखने छह?"

अपन भार हटैत देख हरी भाय ओसारक देवालमे ओङैठ गेला। ओङठैत देख मन हल्लुक भेल। जइ नजरिये हरी भायकेँ देखै छिऐन तइ नजैर-जोकर सुन्दरलाल थोड़े अछि। आँखि उठा सुन्दरलालक आँखिमे गाड़लौं आकि सुन्दरलाल बाजल-

"भैया, नोकरीक शुरूआतमे दस बर्ख सोलहन्नी गाम छुटि गेल। छुटैक कारण नोकरी रहए। जहिना सभ जिनगीमे आगू बढ़ए चाहैए तहिना चाहलौं। जइसँ ड्यूटीकेँ मजगूतीसँ पकड़लौं। ने कहियो अनट-बिनट छुट्टी ली आ ने कोनो लापरवाही करी। मुदा बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ आ पत्नीक बर-बिमारी खुदरो-खुदरी एते भाइए जाए जे सालक बीस दिनक छुट्टी हेरा जाए। छुट्टियो ने हुअए जे गाम ऐबतौं। दस बर्खक पछाइत मनमे भेल जे आब बच्चो कनी चेष्टगर भेल आ पत्नियोँ कनी निधोख भेली, जइसँ दुनू काज असान भेल। असान कि भेल जे अपन काजे ने रहल। मुदा फेर दोसर बिहंगरा ठाढ़ भऽ गेल?"

'बिहंगरा' सुनि बजलौं-

"की बिहंगरा?"

मुँह बिजकबैत सुन्दरलाल बाजल-

"तेते ने हित-अपेछित भऽ गेल अछि जे नौते-हकार पुड़ैमे छुट्टी हेरा लगल। हेरेबे नै कएल जे केतेठामसँ उपरागो आबए लगल जे अहाँ नै एलौं।"

बाजि सुन्दरलाल चुप भऽ गेल। पुछलिऐ-

"चुप किए भेलह?"

जेना सुन्दरलालक आँखिमे चुमकी एलै! बाजल-

"सभ छोड़ि दुर्गापूजामे सपरिवार गाम आबए लगलौं। मुदा जे मनमे छल से अहूसँ नै भेल।"

जिज्ञासा जगल पुछलिऐ-

“की मनमे छेलह?”

सुन्दरलाल-

“मनमे आएल जे कम-सँ-कम मासे-मास गाम आबी। मुदा तहूमे बाधा आबए लगल। कहियो पत्नी नैहरक लाटमे नौत पूरए जेती तँ कहियो बच्चा-सबहक पढ़ाइ बाधित हुअए।”

“तखन?”

“तखन यएह केलौं शनि-रबिक उ पयोग केलौं, परिवारकेँ छोड़ि गाम आबए लगलौं।”

गाम अबैक लाट देख कहलिऐ-

“हरी भायकेँ गाम-गमाइत करैले एकटा गाड़ी कीनि दहुन? एक तँ उमेरगरो भेला आ अपन नामो-निशान रहतह?”

बजैकाल तँ बाजि गेलौं मुदा हरी भायकेँ नीक नै लगलैन। बमैक गेला-

“बड़ बुधियार भऽ गेलह, टिटही जकाँ हमरा टिकटिकिया कपारपर चढ़ल अछि जे अनेरे रोडमे हाथ-पएर तोड़ा काहि काटब। हाट-बजारक जे काज अछि ओ जखन गामेमे भेट जाइए तखन अनेरे किए वौआएल घुमब।”

सुर्जकेँ सिरचढ़ू होइत देख उठैक गर अँटबए लगलौं। बहुत बेसी कहा-कही दुनू भाँइक बीच भलेँ नै भेल होइ, मुदा विचारक दूरी तँ अछिए। तहूमे दरबज्जापर बैस चाह-पानि पीलौं, सामंजस करैत कुरसीपर सँ उठैत बजलौं-

“समय तेहेन भऽ गेल अछि जे कँटहा बाँस जकाँ केतबो चिक्कन करबै तैयो उबड़-खाबड़ रहिये जाएत। कोनो कि गीरहेटा खोंचाह रहैए, पोरक बिच्चोमे तहिना रहैए।”

बाजल तँ ई सोचि रही जे दुनू भाँइकेँ नीक लगतैन मुदा से भेल नहि। सुन्दरलाल चुप रहल, बात मानलक आकि नै से तँ ओ जानए। मुदा चुप्पीसँ अपना बुझि पड़ल जे मानि लेलक। मुदा हरी भाय तड़ैंग बजला-

“अनेरे समैकेँ दोख लगा लोक अपन गलती छिपबैए। समैये केकरो ने किछु केलकै हेन आ ने करै छइ। लोक अपने केतौ भाग कहि समैक दोख लगबैए तँ केतौ दिनक दोख तहिना केतौ मौसमक तँ केतौ सालक।”

हरी भाइक बात सुनि मन चकरा गेल। चकरा ई गेल जे, जे बात सभ बजैए से झूठ केना भऽ जाएत। सभ कि झूठेक कारोबार करैए..?

बजलौं-

"हरी भाय, अहाँ जान नै छोड़ब। सोफ[9] जकाँ तेहेन बात लाधि देलिऐ जे बिना लाठी लगौने ठाढ़े ने हएत। अधडरेरेपर सँ लीब जाएत। कहैले तँ बिछानसँ नमहर होइए मुदा अपने भरे ठाढ़ो होइक जोर[10] नै होइ छइ। कनी फरिछा कऽ कहियौ जे समैक दोख किए ने होइए?"

हरी भाय बुझि गेला। कनियेँ रूकि बजला-

"देखहक, कोनो काज करैसँ पहिने लोक ओकर विचार करैए। विचार केला पछाइत एक सीमापर अबिते बुझब मानैए। बुझबकेँ बुझाएब लूरि भेल, कला भेल।"

हरी भाइक विचार जेना मनमे गड़ल। काँट जकाँ नै गड़ल जे बिसबिसैतए, छेनाक पानि जकाँ कपड़ामे बान्हल मोटरीक पानिक ठोप जकाँ गड़ल...।

कहलयैन-

"हरी भाय, कनी पैछला बात समैक दोख जे कहलिऐ तेकरा चिक्कन कऽ दियौ।"

'चिक्कन' सुनि हरी भाइक ठोर जेना मधुएलैन। मुस्की दैत बजला-

"जेकरा समय बुझै छहक ओ निरविकार अछि। हाथ-पएर नै रहितो ओ अपना गतिये चलिते अछि, चलिते रहत। मुदा विवेकी मनुख विवेकहीन बनि अपन काजकेँ दोसरपर लादि दइए। खाएर, आब नहाइयोक बेर भेल जाइए, तहूँ जेबह। तँए कहि दइ छिअ।"

हरी भाइक लछन-करमसँ बुझि पड़ल जे अपन अन्तिम बात कहए चाहै छैथ।

हूँहकारी भरलौं-

"समैयेपर ने नहाएब-खाएब आ सुतब नीक होइए?"

सुनि जेना हरी भाइक मन फुला गेलैन। जेठ मासक रौदमे जखन कियो छाती भरि पानिमे पइस पतालसँ अकास धरिक बीच अपनाकेँ पबैए तहिना हरी भाय अपन बात बजला-

"जखन सुन्दरलाल आगू पढ़ैक विचार केलक, तखन सुन्दरलालो आ पितोजीक एक विचार रहैन। मुदा नै ऐ दुआरे बजलौं जे पिताक आगू किछु बाजब आ जँ कहीं सुन्दरलालक मनमे होइतै जे भैये बाधा छैथ, तखन किए

---

[9] बड़का बिछान

[10] दम

बीचमे बाधक बनि कलङ्क लैतौं। तँए किछु ने बजलौं मुदा ओतैसँ परिवार हूसल।

'हूसल' सुनि जिज्ञासा बढ़ल। पुछलयैन-

"उपए?"

बजला-

"जे हूसल से तँ हूसि गेल, मुदा आबो सुमति आबौ जे आगू दिन दनदनाइत चलत।"

❍

तिथि : 30 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 3072

अप्पन-बीरान

आने गाम जकाँ हरिहरपुरो। स्वतंत्रता आन्दोलन जहिना सभ गाममे तहिना हरिहरपुरोमे। ओना पाँच साए परिवारक गाम मुदा गामक जमीन, गाछी-कलम आ पोखैरक चौथाइयो हिस्सापर गौंआँक अधिकार नहि। बारह-अनासँ ऊपरे सम्पैतपर अनगौंआँ जमीनदारक लड़ो-जड़ आ माशोक अधिकार तँ अछिए।

आजादीक पछाइत लगानक वसूली जमीन्दारक हाथसँ निकैल गेल मुदा जमीनपर अधिकार तँ रहबे कएल। गौंआँक घर-घराड़ीक संग किछु गोरेक हाथमे किछु जमीनो, वेलगानक चलैत घराड़ियो आ मालगुजारी देने खेतो रहल, मुदा बारहसँ चौदह-अना परिवारकेँ मात्र घराड़ियेटा। तँए कि गामक जमीन गौंआँक कहियो नै रहल, से बात नहि। मालगुजारीक चलैत साले-साल नीलाम होइत गेल आ गौंआँक जमीन छिनाइत गेल। जइसँ गामक बारह-अनासँ ऊपरे जमीन अनगौंआँक हाथमे चलि गेल! गौंआँ खेतिहर किसान नै बटेदार किसानो आ बटेदार बोनिहारो बनि रहि गेल, अधिकांश बोनिहार।

मुदा जेना-तेना आ कमा-खटा कऽ गौंआँ बहरबैयाक सभ जमीन हथियौलक। जेना-तेना ई जे किछु जमीनपर वकास्तक झंझट तँ किछुपर सिकमी बटाइक, तँ किछु जमीन कीनियोँ कऽ गौंआँ अनगौंआँ सभकेँ गामसँ हटौलक।

बहरबैयाकेँ हटिते गौंआँ नमहर साँस छोड़लक। गौंआँक हाथसँ जमीन ससरैक अनेको कारण भेल। तइमे किछु मालगुजारी आ किछु समाजक जाल-फाँस मुख्य रहल। समाजिक जालो-फाँस अनेक रंगक रहल मुदा मुख्य रहल मरला पछातिक काल्पनिक दुनियाँक बेवहार। काल्पनिक बेवहार ई जे मुइला पछाइतक खर्चक जे विधि-विधान रहल ओ समाजक रीढ़केँ तोड़ि देलक! समाजक एहेन दबाब रहल जे खेतो-पथार खुशीसँ बेचबैत रहए। एक तँ गामक लोकक हाथमे गामक सम्पैत नै, तैपर प्राकृतिक प्रकोप सेहो! ओना तीन रंगक समय मुख्य रूपसँ छल मुदा तीनूमे सेहो तीन-तीन-चरि-चरि रंगक समय भेल। एक भेल जे अनुकूल मौसम, अनुकूल मौसमक अर्थ भेल जे गोटे साल एहेन होइ छल, अखनो होइए, जे बारहो मास अनुकूल समय बनै छल। कोन समय केहेन हवा चलत, कोन समय केहेन गरमी पड़त आ बरसातक केहेन रूप-रंग रहतै।

दोसर तरहक समय बनैए, रौदियाह। जइ साल प्रतिकूल प्रकृति रूप पकड़लक तइ सालक सुसमय-कुसमय बनए लगै छल, एक रौदी दोसर दाही! ने रौदियाहक कोनो ठेकान आ ने दाहीक कोनो ठेकान। गोटे साल शुरूहेसँ समय बगदल जे अन्त धरि, रौदियो आ बरसातो लधनहि रहि गेल! जइसँ मनुखसँ लऽ कऽ मालो-जाल आ गाछो-बिरीछकेँ तबाह कऽ दइए। जे मेहनती किसानकेँ मन तोड़ि दइए। दोसर समय भेल जे अगतामे बिगैड़ कम-बेसी मध्यसँ सुधैर जाइए आ तेसर भेल जे शुरू-मध्य बिगड़ल रहल आ अन्तमे सुभितगर भेल...।

प्रकृतिक ई खेल सभ दिनसँ रहल, अखनो अछि।

ओना स्वतंत्रता आन्दोलनमे 1934 इस्वीक पछाइत जे गामक लोकक मनसूबा जगल ओ धीरे-धीरे पश्त होइत गेल। पश्त ई जे स्वतंत्रता संग्रामक मञ्चपर अवाज उठल जे गामक जमीन गौंआँकेँ हेतै, ओकरो खेती लेल साधनक ओरियान हएत आ नीक जकाँ उपजौल जाएत। जहिना मनुख लेल पानिक जरूरत अछि तहिना मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ लेल। ओना अपन इलाका पहाड़ी नदीसँ छारल अछि, जे किछु एहेन अछि जइमे बारहो मास पानि चलैए, किछु एहेन अछि जे छह-मसिया छी आ किछु तीन-मसिया छी।

मुदा अबैत गेल बहैत गेल, अँटकबैक कोनो जोगाड़ नै भेल!

देशेक भीतर पंजाबो कृषि प्रधान राज्य छी। जेतेक इञ्च बरखा अपना सबहक हिस्सामे अछि ओते पंजाबक हिस्सामे नै छै, मुदा खेतीक मूल साधन पानिकेँ ओ कृत्रिम रूपे बनौलक। हम सभ ढोलके-हरिमुनियाँपर अपन सम्पन्नता गबैत रहलौं, अखनो गबै छी। जँ से नै रहल तँ दुनियाँक केहनो भू-मध्य सागरीय जलवायु किए ने हौउ मुदा जेते रंगक खेतीक उपज, चाहे अन्न हुअए आकि तीमन-तरकारी, फल-फूल हुअए आकि गाए-महींस, उपजैक अपना इलाकामे शक्ति छै, ओ दुनियाँमे केतौ ने अछि। तँए, मिथिलांचलक धरती शक्ति स्वरूपिणी धरती अछि। मुदा...। जँ अपन बात अपने नै बुझब तँ ऐ दौड़ा-दौड़ीक दुनियाँमे केकरा ओते पलखैत छै जे अहाँक बात बुझि तलपट मिला देत? लोक सिनेमा स्टारक पञ्जी, खेलवाड़िक पञ्जी बनौता आकि अपन बाप दादाक आकि अपना गाम-घरक..?

हरिहरपुरेक दू भाए-भैयारीक परिवारमे सुपतलाल आ कुपतलाल। ओना अखन ओ परिवार सभसँ नीक गाममे मानल जाइए मुदा छेहा बोनिहार परिवारमे दुनू भाँइक जनम भेल। बोनिहार परिवार रहितो माए-बाप सुतिहार, तँए आने गरीब परिवारक बच्चा जकाँ रहितो, केना बच्चा सियान चेतन बनि जिनगी बितौत, यएह सुतिहारी दुनू परानीक।

बच्चेसँ दुनू भाँइ–सुपतलाल आ कुपतलाल–मेहनती जे पिताक देखा-

देखीसँ सीखने। बहरबैयाक धिया-पुता जकाँ प्लाष्टिकक खेलौना नै जे खलिये फटक्का फोड़त, घरक वस्तुक खेलौना! ओना बहरबैयाक हाथसँ गौंआँक बीच आएल सम्पैतसँ नमहर निसाँस छुटल मुदा तेकर बादो रंग-रंगक बिहंगरा अछिए। एक तँ अहुना घटबी होइत-होइत जमीन करमघट्टू बनि गेल, तैपर घटबी रोकैक उपय नै भेने लोकक मनो घटए लगल! केना ने घटत? अहीं कहू जे धान रोपैक अछि, खादक पाइ नै अछि, रोपैक ताक सम्हारब आकि खादक प्रतिक्षामे...। कारण खाली विचारे नै अर्थक अभाव सेहो एकर सहयोगी बनल। तेतबे नै, खेतक संग मौसमी पानि आ उर्वरा-शक्ति बढ़बैले छाउर-गोबरक संग अपन पुरान पद्धैतक बीज सेहो।

अदौसँ अपना ऐठामक गृहपति जहिना घरक सभ कलासँ सम्पन्न छला तहिना दुनियाँक बीच अपन कलाकारी रखितो छला। खेतीक पूर्णताक बोध छेलैन। जे केना अन्न उपजबै छला, आकि तीमन-तरकारी, फल-फलहरी। सबहक बीजसँ फल धरिक बोध छेलैन। ओना एक रसाह लूरिकेँ जँ समैनुकूल लोहाक ओजार जकाँ पनियौल नै जाएत तँ ओहो भोथियए लगत। भोथियाइत-भोथियाइत एते भोथिया जाएत जे अपन चीने-पहचीन समाप्त कऽ लेत।

मात्र घर-घराड़ीबला सुपतलाल पिताक बतौल बाट पकैड़ पोसियाँ गाए बच्चेसँ पोसब शुरू केलक। परिवारक खर्चक भार पितापर। जहिना विद्याध्ययन लेल माता-पिता बच्चाकेँ अपना लेल समय दइ छथिन तहिना सुपतलालो- दुनू भाँइ-केँ पिता देलखिन। जहिना पाँच बर्ख चढ़िते गारजनोक नजैर आ आरो अभिभावकक नजैर विद्यालय दिस बढ़ैए तहिना सुपतलालोक पिताक नजैर गेलैन। आइक समय जकाँ तँ नै जे आन-आन देशक बोली-चाली नै सीखब तँ कमा कऽ खाएब केतए! ओना दुनू भाँइमे उमेरे तीन बर्खक अन्तर, मुदा संगी लेल उमेर ओते महत नै रखैत जेते संगी बनि काजकेँ सङौइर कऽ चलैक लूरि रखैए...।

पनरह बर्ख पुड़ैत-पुड़ैत सुपतलाल अपन पोसल गाइक सेवासँ पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। सभ वस्तुक दाम कम तँए तीनियेँ साए रूपैए कट्ठा पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। जइ दिन पिता पाँच कट्ठा जमीन बेटाकेँ देखलैन तही दिन परिवारक मन भरैत देख भगवानकेँ प्रणाम केलखिन। आइक महगीक दौड़मे कोन वस्तुक मूल्य आगू मुहेँ दौग रहल अछि आ कोन पाछू पड़ि रहल अछि, ई तँ बुझए पड़त। ओना मोटा-मोटी सभ वस्तुक मूल्य -पाइक रूपमे- बढ़ि रहल अछि। तँए अपन उपारजित पूजीकेँ धरगर नै बनाएब तँ चिल्होरिया ऊपरेसँ झपैट लेत। झपैट कि लेत जे अपनो दिल खोलि झपटबऽ चाहै छी। आन गाम जकाँ ने हरिहरपुर अट्ठारह गण्डा पोखैरबला आ ने कोसी-कमलाक भरैन कएल

गाम जकाँ, जे एकोटा पोखैर कुम्हरबैयोले नहि। तइ दुनूसँ हटि हरिहरपुरमे तीन भागक पोखैर कमलाक भरैन भऽ गेल आ एक भाग तीनू पोखैर बँचल अछि। ओना पहिने हरिहरोपुरबलाक विचार रहैन जे गाम चपगर अछि तँए जँ गामक चौथाइ पोखैर खुना जाए तँ गामक मुँह-कान नीक भऽ जाएत। गामक मुँह-कान की? यएह ने जे वासभूमिमे पानिक जमाव नै हुअए, बरसाती मासक तरकारी लेल चौमास हुअए, फल-फलहरीक औसतन उपजैक जमीन होइ, तहिना आरो-आर। मुदा गामक पञ्ची बनबैत-बनबैत एतए आबि अँटैक जाइ छेलैन जे जखन अठारह गण्डा पोखैरे तखन केते रकबाक गाम? तैसंग दोसर प्रश्न उठि जान्हि जे सौंसे गाममे जेते पानिक जरूरत अछि ओतेकेँ पहुँचाएब। मुदा गाममे बेसी मुँहगर-कन्हगर नै, तँए दसे-बारहटा पोखैर खुनौलैन।

पनरह बर्ख पुड़िते सुपतलाल हरवाहि सीखलक। हरवाहि सीखैक विद्यालय गामे-गाम, बाधे-बाध। जइ हरवाह लग जाउ, स्वेच्छासँ हरवाहि सीखा देता। अपन गाइक बच्चासँ बरद बनौने छल। खेतीक भार सुपतलाल अपना ऊपर लेलक आ कुपतलालकेँ गाइक भार सुमझा देलक। एकर माने ई नै जे काजमे कटा-कटी भेल। हर काजमे जिम्मेदारक खगता होइ छै, तइ हिसाबे। ओना दुनू काज परिवारेक भेल तँए परिवारक सभ काजपर सभकेँ नजैर रखए पड़त, नै तँ कमी अबैक सम्भावना बढ़ैक शंका रहिते अछि।

हरवाहि सीखते सुपतलालक परिवारमे आमदनीक तीनटा बाट खुजल। पहिल हरवाहिसँ बाहरक आमदनी, बरद आ खेतिहरकेँ संगी बनने खेतीक सम्भावना बढ़िते अछि। तहूमे खेतक मालिक बहरबैया। ओ सभ कि ओहन भठियाह थोड़े छैथ जे एतबो ने बुझता जे बटाइ खेत ओकरे ने देब नीक जेकरा समांगक संग हरो-बरद छइ। ई तँ नै जे कन्याकुमारीसँ कश्मीर आ कश्मीरसँ अरूणाचल धरि सड़क बनाएब आ माटिक काज छिट्टा-पथियासँ होइ! भाय, छिट्टा-पथियाक काज तँ गामे-घरमे तेते अछि जे पार नै लगि रहल अछि आ.., टिटही जकाँ मेघ टेकब! गाम-घरमे अखनो ओहन आँगन-घरक कमी नै अछि, जे आँगनसँ दरबज्जा आ दरबज्जासँ आँगन जाइ-अबैमे नाहक जरूरत पड़ैए। कन्याकुमारीसँ कश्मीर-अरूणाचल तक सड़कक जरूरत अछि, मुदा गाम-घरक बाघक खेतीक जमीन ओहन अछि जे दसो-बीस बीघा जमीन समतल नै अछि जे भारी मशीनक उपयोग हएत।

गाममे दाही भेल। तेहेन दाही भेल जे गामक उपजावाड़ी तँ गेबे कएल जे बाधक घासो-पात सड़ि-गलि कऽ पचि गेल। अदहासँ बेसी गामक गाए-महींस आ बरद मरि गेल। ओना सुपतलालोक मरल मुदा खुटापर सातटा माल रहने पाँचटा बँचल। अगिलग्गीक पछाइत, भुमकमक पछाइत, रौदी-दाहीक पछाइत

जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन बेपार दुनू संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एक्के-दुइए गाम पहुँचल। सुपतलालकेँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मनखप लेलौं, समय खराप भऽ गेल, रौदी-दाही भेने अहाँक पूजी -खेत- तँ धोखैर कऽ समुद्रमे नै चलि गेल, मुदा हमर लगता तँ चलि गेल। विचारि कऽ सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकटा माशसँ लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएब जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजला पछाइत अनुमानित कण निर्धारित हएत, सबहक अपन-अपन नजैर रहत।

पाँचो बीघा गोरहा खेतमे कमो पानि भेने गामक चारू भागक पानि बोहि कऽ चलि अबैत, जइसँ बाधक जमीनसँ बेसी सुविधा भऽ जाइत। सुपतलालक भाग जागल। मनखप बटाइसँ पहिने सुपतलालकेँ अपन कीनल पाँचे कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठाकेँ बरह-मसिया खेती-जोकर बनौने। बरह-मसिया ई जे तीनू मौसमक तीन फसल उपजैत। ओना हरि अनन्त हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्कक अनन्त उत्तर छइ। ईहो तँ भऽ सकैए जे बरह-मसिया गाछीए लगौल जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैए जे बरह-मसिया ओकरा तँ नै कहबै जे सालमे एकबेर उपजा देत। मुदा तेकरा मानब उचित हएत? उचित तँ यएह ने जे बारहो मास ओइमे श्रम लगौल जाए आ बारहो मास उपज आबए। जँ से नै औत तँ खाली समैमे, जइ समय उत्पादन नै हएत, उपजौनिहार जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपयक जरूरत अछिए। खाएर जे हौउ, सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीनकेँ धरोहर बुझि उपजाबऽ लगल। मध्यम किसिमक जमीन। पाँचो कट्ठामे तरकारी उपजाबऽ लगल। एतेक उपजा होइ जे अप्पन परिवारक भोजनक अदहाक संग नगदो-नारायण भऽ जाइ।

एक दिन दुनू भाँइ, सुपतलाल-कुपतलाल, घरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। तेहेन रौदियाह समय जे दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगैत। ओ गामो-घर दिस एबे करैत। गाछ सबहक पत्ता झड़ैक-झड़ैक अधसुखू भऽ गेल। सौंसे बाधमे केतौ हरियरीक दरस नहि। टोलसँ निकैलते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देख सिहैर गेल। आगू बढ़ैक साहस नै भेलइ।

कुपतलाल सुपतलालकेँ कहलक-

“भैया, गाम बीरान भऽ गेल। जइ गामक माटि-पानि मरि जाएत तइ गामक गाछ-बिरीछ आकि जीवे-जन्तु केना ठाढ़ रहत?”

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकैड़ बाजल-

“बौआ, से केना बुझै छहक?”

सुपतलालक प्रश्नक उत्तर दइले जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करइ,

तहिना जेठ भाइक पुछब सुनि कुपतलाल बाजल-

“भैया, जखन खेतमे अन्न आकि आने कोनो उपजा नै हएत तखन लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानीसँ तँ लोहा चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। लाखो रंगक परसाद पबैबला!”

कुपतलालक ओजाएल जिज्ञासा देख सुपतलाल बाजल-

“बौआ, अपने दुनू भाँइ छी आ दू दियादिनी आँगनमे छैथ। जहिना चारू गोरेकेँ अपन-अपन जिनगी आ जिनगीक काज अछि तहिना ने सबहक छइ। एककेँ नष्ट भेने तँ पर्यावरण बिगड़ए लगै छै आ जखन एक भागेक सभ किछ नष्ट भऽ जाएत तखन की हेतै?”

“हँ से तँ हेबे...।”

“अपना दुनू भाँइकेँ एतबे ने बुझैक काज छह। जँ अपन काजपर ठाढ़ हेबह तँ अदहा भक्त कमाल जकाँ हेबह, नै जँ बाँकियोहो अदहा पुरा लेबह तँ सोलहन्नी हेबह। जइसँ भेद-अभेद मेटा जाइ छइ।”

“हँ, से तँ ठीके भैया!”

“बौआ सुनह, जे बात हम बुझै छिऐ ओ तोरा कहला पछाइते ने तहूँ बुझबहक, तहिना ने तोरो बात आ घरो लोकक बात सुनला पछाइते ने अपनो बुझब?”

“हँ से तँ ठीके।”

“बौआ, आब तँ सहजे केते दिनसँ खेती करै छी, मुदा जहिया नहियोँ करैत रही तहियेसँ कोसी नहैर सुनै छी जे गामे-गाम बनत, डैमसँ बिजली बनतै आ ऐठामक किसानकेँ करखन्ना जकाँ चौबिसो घन्टा खेतीक काज चलतै।”

“भैया, ई बहुत भेल। छोड़ह ऐगला गप। कान भरैत-भरैत तेना भरि गेल जे काने बन्न भऽ गेल। दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कऽ सुतत नै, तखन भगवानसँ एकाकार केना हएत?”

“धुर बुड़िबक! अहिना बुझै छीही, जहिना कारखानामे चौबिसो घन्टा काज छै तहिना खेतियोमे अछि। खेतेक उपजासँ चौबिसो घन्टा कारखाना चलैए। जँ पचपन खान चलबैए तँ पैंतालीस खेतो चलबैए।”

कुपतलाल जेना अकैछ गेल। अकछबो केना ने करैत। ने ओते ओकरा समय छै आ ने समैट कऽ रखैक कोठी...।

बाजल-

“भैया, जाबे अपन घड़ी-घण्टा बजा अपना मन्दिरमे पूजा नै करबह ताबे

तक तेहेन-तेहेन घड़ी-घण्टाक अवाज सुनैत रहबहक जे अनेरे कानमे तेते झड़ परतह जे काने झड़ा जेतह। काननी कामनी बनि अनेरे औनाए लगबह।"

कुपतलालकेँ अकछाइत देख सुपतलालक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे भने समटल मन आ समटल बुधि छै, नै तँ अनेरे भरि दिन तासपर बैस पाइकेँ कागत बना देत। जखने पाइ कागत भेल तखने अन-पानि, गाछ-बिरीछ, सोना-चानी सभटा पाइए बनि जाएत। तखन कोन खगता छै जे खेतसँ धान उपजौल जाए? ओ तँ रस्तो-पेरा भऽ सकै छइ। गामक ओहन परिवार सुपतलाल-कुपतलालक बनि कऽ ठाढ़ भेल जे ओहन स्थान जकाँ अद्भुत बनि गेल, जैठाम हजारो मन्दिरक बीच गोटे कोनो अद्भुत रहैए! छेहा किसान परिवार। दुनू भाँइ सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्कर-भक्करमे पड़ि नीककेँ अधला किए बनाएब। ने दरबार धरब आ ने दरबारीलाल बनब...। मुदा तँए कि सुपतलाल गामकेँ छोड़ि देलक? नै छोड़लक, गामक किसान अखनो ठेकनगर किसान बुझि पूसा-ढोली, सबौरक किसान-मेलामे गामक किसानक संग जाइते अछि। सालो भरिक डायरी, खेती-वाड़ी करैक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक ओजार-पाती अनिते अछि...।

ओना गौंआँक संग सुपतलाल पुड़िते अछि मुदा गामक माटि, पोखैर, गामक जमीनक किस्म, जमीनक माटि इत्यादि नै भेने मन झुझुआइते रहै छइ। गामक छक्कर-बक्करकेँ ओ धु-बन्हू छागर जकाँ बुझैत अछि। चाहे देवालयमे चढ़ाउ, चाहे भोजनालयमे! दुनू ठाम लेल तैयार। दुनियाँक विपरीत हवामे देखए पड़ैत जे कोनो देशक लोक चरितवान अछि तँ सरकारी महकमा चरितहीन, आ केतौ सरकारी महकमा चरितवान अछि तँ लोक चरितहीन। तँए कि ओहन नै अछि जैठाम दुनू चरितहीनो अछि आ चरितवानो? अछि! जैठाम अछि तैठामक लोक जिनगीक ऊँचाइ छूबि रहल अछि आ जैठाम नै छै, तैठाम धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हूक बरद जकाँ घुमि रहल अछि! उपाध्याय आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि! देशक नदीकेँ जोड़ि खेतीक पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा लेबड़ाक साए रूपैआ जकाँ, किछु ओइमे गेल, किछु तइमे गेल, रूपैआ भेल गोल, एक्केबेर सभ कहियौ 'हरि बोल'। बिहारक समस्या कहियो नै बुझल गेल जे खाली बिहारेक पनिचलाउ धारकेँ ढंगसँ पूबसँ पच्छिम धरि जोड़ि देल जाए आ समुचित देख-रेख होइ तँ की खेतीक समस्याक समाधानक एक कड़ी हएत की नहि?

समय बीतल। अधउमेरेमे सुपतलाल बीमार पड़ल। एक तँ गाम-घरक जिनगी तैपर इलाजोक नीक सुविधा नहि। आठे दिनक बीमारीक पछाइत सुपतलालक मन कनी-कनी धोखरए लगल। धोखरैत मनमे भेलै जे ऐ काँच माटिक देहक कोनो ठेकान अछि जे कखन फुटि जाएत। कुपतलालकेँ सोर पाड़ि

बाजल-

"बौआ, हमर कोनो ठेकान नै छह, परिवारक सभ एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सभकेँ दइए देबह। अनेरे मरैकाल माथपर एकटा बोझ चढ़ल रहत।"

अखन धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहन अज्ञापालक रहल जे जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे बुझैत आ ओतबे करितो रहए। जेठ भाइक प्रति जेना पूर्ण समरपित। ओना फल अधला कुपतलालकेँ भेल। भेल ई जे कुपतलालकेँ कहियो कोनो काजकेँ परखैक खगता नै भेल। जइसँ सभ काजक लूरि रहितो उजड़लहा-उपटलहा गामक इतिहास नै बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार व लिखनिहारक मने उचैट गेलैन जे हमरो गाम-घर अही दुनियाँमे अछि।

परिवारक सभ समांग एकठाम भेल। ओना जइ डरे सुपतलाल भीन भेल सएह हिस्सामे आबि गेलइ। मुदा परिवार तँ परिवार छी जाधैर एक-दोसराक दुख-दर्द, नीक-अधला दोसर नै बुझि अपन बनौत ताधैर परिवारक गाड़ी केना ससरत...।

अबिते पत्नी बजली-

"सभ दिन ओछाइने पकड़ने रहब आकि उठबो करब?"

पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना रणभूमि जाइसँ पहिनहि सिपाही बाटेमे घेरा जाइए तहिना सुपतलालक मन घेरा गेलइ। जिनगीक संगी। जँ गाड़ीक एक पहिया टुटने वा जुता-चप्पलक एक संगी विरहेने केतौ फेका जाइए, तहिना सुपतलालोक मनमे घेरा लगि गेल।

सुपतलालकेँ गुम-सुम देख कुपतलाल बाजल-

"भैया, राजा-दैवक कोनो ठेकान नै छै, जेते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक गाड़ी जोतलह से जोतलह। जँ तूँ मरबह तँ हमरो मरले बुझियहऽ। लूरि ने हमरा देलह मुदा बुधि तँ तोहीं ने नेने जेबह, तखन खाली टीन ढनढ़नौने कथी हएत?"

सुपतोलालक आ कुपतोलालक बेटा बी.ए.क विद्यार्थी। तीन मासक पछाइत परीक्षा हेतै, स्नातक भऽ जिनगी शुरू करत। अपन आभार व्यक्त करैत सुपतलाल बेटो आ भातिजोक- सुगमलाल आ कुगमलाल- बीच बाजल-

"बाउ, अखन धरिक परिवारक गाड़ी खींचलौं। जँ बीमारीसँ छुट्टी भेटत तैयो नीक, जँ नै भेटत तैयो नीक। जे समय बीतल ओ अहाँ दुनूक बीच अनुकूलताक समय भेल। जे आगू अछि ओ प्रतिकूलताक भेल। अपनो मन कहैए जे स्नातक बना परिवारकेँ ठाढ़ करी, अपना जनैत करैत एलौं, एतेक तँ

जरूर गारंटी देब जे जहियासँ परिवारक गाड़ी कन्हापर उठा घीचलौं, मनुख बनि जे आएल ओकरा मरए नै देलिऐ। मुदा दुनू भाँइकेँ देख एते तँ मन खनहन ऐछे जे ऐगला गाड़ी खींचिनिहार परिवारमे भाइये गेल। केते परिवार गाममे अछि जे अहाँ सभ जकाँ कौलेजमे पढ़लक। मुदा अपन विचार, अपन काज अनकापर लादैक नै अछि, देखबैक अछि, कहैक अछि। बस एतबे कहब।"

सुगमलाल बाजल-

"बाबू, अहाँ विचारे की होय?"

सुगमलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल जिज्ञासाक नजैरसँ कुगमलाल दिस तकलक, ओहो तँ कौलेजेमे पढ़ैए। किछु तँ अपनो बात जोड़त मुदा अदौसँ अबैत परिवारक जेठ-छोटक विचारक संग विचार नै मिलेबाक चलैन रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप मानल गेल। मुदा से नै बापेक बेटा कुगमलालक मनमे उठलै, दुनू भाँइ विचारि कऽ करब। तँए कोनो विकार मनमे नहि। सुपतलाल बाजल-

"बौआ, समैक संग चलैक अछि। बहुत आशासँ दुनू भाँइ तोरे सभले खेत कीनलौं, सम्पैत अरजलौं। जँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुरमे चलि जेबह। बेसी अखन नै कहबह अखन तोरा अपन परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह जे तोरे सभ दुआरे अपन खेत बनेलौं, नै तँ ओही समैमे बँटैत ऐबतौं तँ जम्मे ने होइत। मुदा जे भेल, खेती जे साधनक अभावमे केलौं, ओकरा पुरबैत, गाइक जे पुरना खाँढ़ अछि ओकरा समायानुकूल बनबैत चलबह तँ किसानक खतियान बना किसानक देश कहेबह, नै तँ सरकारी खजाना जकाँ तमादी हेतह। सुनि लएह, खेत ओहन विशाल गाछ पैदा करैक शक्ति रखैए, जे जेते ओइमे खाद-पानि देल जाएत ओते विशालसँ विशालतम बनैत जाएत। तँए लक्ष्मण रेखाक बीच रहि जाधैर चलैत रहबह ताधैर लंकाक कोन बात जे लंकापतियो बुते किछु ने बिगाड़ल हएत।"

सुगमलाल-

"तखन?"

"तखन यएह जे समाजेक लत्ती लतरैत अमरलत्ती जकाँ दुनियाँमे लतैर जाइए, मुदा पहिने ओकर जड़ि बिटिया कऽ पकड़बऽ तखने ने?"

❍

तिथि : 01 मई 2014, शब्द संख्या : 2919

रेहना चाची

दिन लहसैत किशुन भाय लौफा हाटसँ घुमती बेर जखन दीप पहुँचला तँ बाटपर ठाढ़ रेहना चाचीपर नजैर पड़लैन। कोराक बच्चा-प्रपौत्रकेँ रेहना चाची बाजि-बाजि खेलबैत रहथिन।

रेहना चाचीक 'अवाज' सुनिते किशुन भायकेँ सात-आठ बर्ख पहिलुका बुझि पड़लैन मुदा सत्तैर बर्खक झूर-झूर भेल शरीर, धँसल आँखि, आमक चोकर जकाँ मुँहक सुरखी देख शंको भेलैन। ओना सात-आठ बर्खसँ किशुन भाय रेहना चाचीकेँ नै देखने रहैथ तँए हँ-नै दुनूमे मन फँसल रहैन। फँसबो उचिते छेलैन। एक दिनमे तँ राज-पाट उनैट जाइए, सात-आठ बर्ख तँ सहजे सात-आठ बर्ख भेल।

मुदा तैयो मन तरसैत रहैन, तरंगी होइत रहैन जे रेहना चाचीक अवाज छी। लग्गा भरि हटि बाटेपर साइकिल दहिना पैरक भरे ठाढ़ केने, रेहना चाचीपर आँखि गड़ौने मने-मन विचारिते छला आकि अनायास मुँह फुटलैन-

"रेहना चाची।"

'रेहना चाची' सुनि चाची बच्चापर सँ नजैर उठा चारू दिस खिरौलैन। दछिनवारि भाग साइकिलपर ठाढ़ भेलपर नजैर पड़लैन। चेहरासँ चिन्ह नै सकली। मुदा कानमे किशुनक अवाज ठहकलैन। अवाज ठहैकते बोल फुटलैन-

"बौआ, किशुन।"

'बौआ किशुन' सुनि किशुन भायकेँ जीहमे जान एलैन। जान अबिते जीहपर राखल तीस बर्ख पहिलुका रेहना चाचीक रूप-रंग आ बोल ठहकलैन। वएह रेहना चाची जिनकर जिनगीक दुनियाँ दच्छिन भाग लखनौर, उत्तरमे बेरमा, पूबमे कछुबी आ पच्छिम सुखेत भरि छेलैन। यएह छेलैन हुनकर कर्मभूमि आ दीप छेलैन पतिभूमि। एक तँ अहुना दीप ओहन गाम अछि जइमे छोट घराड़ीक परिवार बेसी अछि। जइसँ बरो-बाट घराड़ीए बनि सुखसँ रहैए। पहिने घराड़ीपर घर तखन ने जाइ अबैले आकि चलै-फिड़ैले बर-बाटक खगता होइए। बाटक काज तँ एक पेड़ियो, खुरपेड़ियो आ धुरपेड़ियोसँ चैल सकैए मुदा घराड़ी बिना 'घर' बाँसक धूजा बनि थोड़े फहराएत...।

घराड़ी भरि जमीनमे बास करैवाली रेहना चाचीक जीविकाक बेवसाय

छेलैन, भोरे अपन जवाबदेहीक अँगना-घरक काज सम्हारि, पथियामे अपन सौदा-बारी सैंति, चारू दिसक गामक पारक हिसाबसँ निकैल एक अनिया अलता, पैयाही डोरा, पैयाही सुइयाक संग आनो-आन वौस लऽ गामक सीमान टपि आन सीमानमे भरि दिन गमा साँझ पड़ैत फेर अपन सीमानमे पहुँच जाइ छेली।

मिथिलाक जे गौरव-गाथा अछि- दुआरपर आएल बाट-बटोही, भूखल-दूखल जँ खाइबेर पहुँचैत वा जलखैए बेर पहुँचैत आकि जखन जे समय रहल, पहिने हुनकर आग्रह करिऐन। ओना खाधुरोक अपन राज-पाट छइ। जँ से नै छै तँ ओइठामक भोजैतक कोटा हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरियानक पछाइत किए नतहारी ताकब छइ। ओहन नतहारी जकाँ तँ नै मुदा हिस्सामे बखरा तँ लोक निमाहिते अछि।

कोनो गाम अबैसँ पहिने रेहना चाची बिसैर जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की आ रहब केतए। परिवार परिवारक बीच खाली कारेबारक सम्बन्ध नहि। घन्टा-घन्टा बैस रेहना चाची अपनो जिनगी आ परिवारो-समाजोक जिनगीक खिस्सा-पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आएल छेली। साइकिलपर सँ उतैर किशुन भाय, स्टेण्डपर साइकिल ठाढ़ कऽ बजला-

"चाची गोड़ लगै छी?"

किशुन भाइक गोड़ लागब रेहना चाची सुनबे ने केली जे असीरवाद दितथिन, ले बलैया उनटा कऽ पुछि देलखिन-

"बौआ, माए नीके छह किने। जहियासँ गाम छुटल, कारोबार गेल तहियासँ चीन्हो-पहचीन गेल! के केतए जीबैए आ केतए मरि गेल...! मरि गेल मनक सभ सखी-बहिनपा...!"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाइक माथ चकरेलैन। जहिना एक-जनिया, दू-जनिया, बहु-जनिया ओछाइनो-बिछाइन चकराइत जाइए तहिना बुधिओ-बुधियारी आ चासो-बास तँ चकराइते अछि। तहिना किशुन भाइक मन चकरा गेलैन। चकरा ई गेलैन जे गाम छुटल! गाम किए छुटल? गुम-सुम भेल किशुन भाय रेहना चाचीक झूर-झूर भेल चेहरा देखए लगला, जेना खेसारी-बदामक बीड़िया झूर-झूर भेलो पछाइत गरदी तरकारीक रूप पकैड़ भोज्य भोग पबैक सुख पबैत अपन जिनगी चैनसँ गमबए चाहैए, तहिना चाचीक मन सेहो पुलकैत रहैन। मुदा बिनु बुझनौं तँ नइने लोक बुझैत। कोनो बात सूनब आ बुझब, दू भेल। बुझैले बेसी सुनए पड़ै छै, सुनै तँ लोक एकहरफियो अछि। भाय पुछलखिन-

"चाची, गाम केना छुटल?"

किशुन भाइक प्रश्न सुनि रेहना चाचीकेँ एको मिसिया बिसबिसी नै लगलैन। जेना नीक जिनगी पाबि कियो नीक सिरासँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइए तहिना भगिन-जमाए पाबि रेहना चाची खुशी छैथ। मुदा पेटमे पेटेले झगड़ा उठि गेलैन। झगड़ा ई उठलैन जे बीतल जिनगीमे जे घटल सत बात अछि ओ बाजल जा सकैए की नै? ओना आब ओइ बातक खगतो नहियेँ जकाँ अछि मुदा इतिहास तँ काल-खण्ड विहीन भाइए जाएत?

रेहना चाचीक मन बेकाबू भऽ गेलैन! मुदा बिसवास देलकैन। बिसवास ई देलकैन जे अबैया दिन सुखैया तँ ऐछे, तखन किए ने अपन जिनगीक बात भाइयो-भातीजकेँ कहि दिऐ। आब कियो जिनगी लूटि लेत।

बजली-

"बौआ, सात-आठ बर्खसँ गाम सभ छोड़लौं, ओना खटनी छुटने देहो हर-हरा गेल, मुदा मन अखनो कहैए जे जानि कऽ रोगा गेलौं...। गामे-गामे तेना ने छीना-झपटी हुअ लगल, जे आन गामक लोकक कारेबारेटा नै, चलैक रस्तो कटि-खोंटि गेल।"

एक संग किशुन भाइक मनमे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलैन, मुदा जहिना मुड़ी आ टाँग कटल लहासकेँ परखब कठिन भऽ जाइए तहिना चाचीक बात सुनि भेलैन। छीना-झपटी आकि झपटी-झपटा, वएह ने जे जहिना प्रखर वक्ता लोकैन अपन मेहिका चाउरमे मोटका चाउर फेँटि काज ससारि लइ छैथ आकि मोटके चाउरमे मेहिका फेँटि दइ छथिन..? मुदा अनेरे मन वौअबै छी। मनकेँ थीर करैत बजला-

"चाची, जहिया जे भेल, से भेल। आब नीके छी किने?"

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाची विस्मित भऽ गेली। 'विस्मित' ई भऽ गेली जे यएह देह छी, अपन गाम लगा पाँच गामक लोकसँ हबो-गब करै छेलौं आ खेबो-पीबो करै छेलौं, कमाइयो-खटा लइ छेलौं, से तँ छिनाइए गेल! ओना आब अपन उमेरो ने रहल जे माथपर पथिया लऽ चारि गाम घुमि कारोबार करब। रेहना चाची बजली-

"अपन बेटा-पोता अल्ला हेरि लेलैन, मुदा फेर वएह ने देबो केलैन।"

रेहना चाचीक उत्तर किशुन भाय नीक जकाँ नै बुझि सकला। तेकर कारण भेलैन जे लगले सुनला जे 'बेटा-पोता हेरि लेलैन' आ लगले सुनला जे 'प्रपौत्र बच्चा छी' आ भगिन-जमाइक परिवारमे रहै छी...।

मनकेँ सोझरबैत किशुन भाय बजला-

"चाची, हमरा ओहिना मन अछि, जखन माइयो आ अहूँ एकेठीन बैस

खेबो करी आ नीक-अधला गपो करी।”

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सत्तैर बर्खक जिनगी बिजलोका जकाँ मनमे चमकलैन। करियाएल मेघ, बदरियाएल मौसम, सरदियाएल रातिमे जखन बिजलोका चमकै छै तखन ओ अपन इजोतक संग अवाज करैत कहै छै जे हम लाली इजोत छी नै कि पीड़ी। पीड़ी दूर-देशक होइ छै लाली लगक। प्रमाण असतक होइ छै आकि सतक? सत तँ अपने सत भऽ सौंसे फल फड़ जकाँ अछि।

रेहना चाचीक आगूमे ठाढ़ किशुन भाइकेँ ने ‘अक’ चलैन आ ने ‘बक’। दिन सेहो लुक-झुका गेल। सुरूज तँ डुमि गेल मुदा लाली ओहिना पसरल छल। किशुन भाय बजला-

“चाची, अखन तँ दिन निसचित नै भेल मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँकेँ लिऔन करै छी।”

किशुन भाइक ‘लिऔन’ सुनि रेहना चाचीक मन ठहकलैन। मन ठहकलैन ई जे आब वएह जुग-जमाना रहल आकि ओइसँ नीको-अधला भेल?

नीक-अधलाक बीच रेहना चाची चपा गेली। जइसँ बोथिया गेली। बोथिया ई गेली जे की सम्बन्ध छल! कोरा-काँख तर केते दिन किशुनलालकेँ नेने छी, पाबैनमे पबनौट खुएलौं आ अपने केते खेलौं, तेकर कोन हिसाब। जिनगीए ओही भरोसे बीतल किने...।

आइ ओइ किशुनलालक बेटाक बिआह छी, की आब ओतए पहुँच पाइब सकै छी? केना पाबि सकै छी? जैठाम लोक अधला काज करै छल तैठाम गंगाजलसँ सिक्त कऽ नीक बनौल जाइ छल, आ अखनो बनौल जाइए। मुदा ओहन तँ जगहे खिया गेल। मुदा जैठाम गंगेजल अधला बनि जाएत, तैठाम की उपए...।

रेहना चाचीक मन ओझरा गेलैन। मुदा सौंझुका तारा जकाँ जेना मनमे भुक-दे उगलैन- जँ कहीं काजेक चर्च पाछू पड़ि जाएत आ अनेरूए गप साँझ पड़ा देत, तइसँ नीक जे काजक नाँगैर पकैड़ धार पार होइ। बजली-

“बौआ, ढौओ-कौड़ी लेलहक हेन?”

ढौआ-कौड़ीक बात सुनि किशुन भाइक मन पुलकलैन। बजला-

“चाची, बिआहक अखन गपे-सप उठल हेन, ओ सभ गप पछुआएले अछि, जखन बिआहमे एबे करब तखन सभ गप बुझा देब।”

किशुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मनमे उठलैन, जेते अल्ला-मियाँ परिवार सभकेँ झाँपन-तोपन दैत रहथिन तेते नीक। भगवान सभकेँ

नीक करथुन। बजली-

"किशुन बौआ, देखते छह जे अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै-जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से...।"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समय बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब, तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भविस...।

❍

तिथि : 9 जुलाई 2014, शब्द संख्या- 1307

गामक शकल-सूरत

एक तँ ओहिना श्यामलाल बाबू पनरह मिनट बिलम भेने धड़फड़ाएल छला तैपर अपन उपस्थिति दर्ज करौने बिना किलासमे केना जइतैथ। ओना मनमे ईहो होइन जे अखन धरिक तँ यएह परम्परा अछि जे कोनो शिक्षक विद्यालय पहुँच उपस्थिति बोहीमे हस्ताक्षर कऽ अपन उपस्थिति दर्ज करबैत आबि रहल छैथ मुदा उपस्थिति केकर?

कार्यालयक मुँहपर ठाढ़ श्यामलाल बाबूक मनमे ईहो होइन जे किलासक पनरह मिनट कटिये गेल अदहा समय शेष अछि तँए पहिने किलासेक काज पुरा ली, पछाइत उपस्थिति पञ्जीमे नाओं चढ़ा लेब। तलब पढ़बैक लइ छिऐ। मुदा लगले मन उनैट ओतए चैल जानि जे एक तँ परम्परा मानि नेने छी दोसर जँ कियो ऊपरका पदाधिकारी आबि जेता तँ अनुपस्थितियो बुझता।

बेर-बेर घड़ीपर आँखि जानि। घड़ीक सुइया क्षण-पल-मिनट आगू ससरल जाइत। श्यामलाल बाबू ओइ ओझरीमे फँसि गेला जे पढ़बैक समय निर्धारित अछि। आगू दोसर घण्टीक पढ़ाइ बढ़त, काजमे कटौती भेने फलमे कटौती हएत, उत्पादनमे कटौती हएत। जइसँ नोकसान चाहे जेकर होइ मुदा नोकसान तँ हेबे करत। देव-मन्दिरक ऊपरक धुजा जेतए-सँ देख पड़ैत तेतए तक ओइ स्थानक महत भेल, तैठाम अखन तँ सहजे विद्यामन्दिरक मुँहपर छी! मनमे अबिते बजा गेलैन-

“अपन पढ़बैक समैक भरपाइ भलेँ अतिरिक्त समैसँ व्यय करब मुदा हमहूँ तँ ओही वर्गक शिक्षक छिऐ। जहिना कोनो ऑफिसक जवाबदेह अफसर होथि आकि विद्यालयक प्रधानाध्यापक, तेकर पछाइते आन कियो कोनो-ने-कोनो किलासक वर्ग-शिक्षक हेबे करै छैथ। आबक महगीमे तँ एक-एक गोरे एके वर्गक किए सौंसे विद्यालैये-महाविद्यालयक किलासक भार कान्हपर लऽ चलै छैथ।”

ओना बजैकाल श्यामलाल बाबूकेँ बजा तँ गेलैन मुदा बिनु विचारल बात बजेलैन। बजाइते कान पकैड़ मन कहलकैन-

“अहूँ तँ अही विद्यालयक शिक्षक आ नवम् वर्गक वर्ग शिक्षक छिऐ। ई भेल जवाबवदेही, मुदा जवाबदेहीक पाछू जे बेवहारिक पक्ष बाधक अछि,

ओकर साधक के बनत? जहिना सरकारक गृहमंत्री तहिना ने परिवारक बीच, परिवार चलौनिहारो।"

लगले मन अपन जवाब पात पकैड़ मखान वा भेँट-मलकोकाक पनिपत पकैड़, बीज लग पहुँचलैन। विद्यालयक सहायक शिक्षक तँ हमहूँ छीहे। जइ विद्यालयक बीच शिक्षककेँ रहैक बेवस्था नै छैन गाम-घरसँ अबै छैथ, परिवारिक-समाजिक लोक भेने बाट-घाटमे किछु विलम हेबे करतैन। तैबीच पहिने अपन उपस्थिति रजिष्टरमे दर्ज कराएब जरूरी भेल आकि नियत समैमे काजपर जाएब भेल?

श्यामलाल बाबू समस्याक जड़ि तँ पकैड़ लेलैन मुदा हौहैट-कलकैल जकाँ समस्या विचिया गेलैन। विचियाइते उरकुसी लगल जकाँ मन चुलचुलए लगलैन। एक दिस देखैथ जे काजक दुआरे हाथ खाली अछि आ दोसर दिस देखैथ जे हाथक दुआरे काज खाली अछि। कियो मासक दरमाहा एक दिन बैस मासो दिनक उपस्थिति दर्ज कऽ मासो दिनक कमाइ पबिते अछि। तैठाम उपस्थितिक कोन महत रहल। खाएर ई जेकर भेल ओ तेकर भेल, अपन बुझह, अपन जानह। मुदा अपनो तँ किछु एहेन प्रश्न अछिए। आब कहू जे विद्यालय अबै छेलौं बाटमे मोहन भाय बजारक एकटा टटका घटना सुनबैत कहलैन-

"श्याम भाय, बिसैर जैतौं तँए अहाँकेँ कहब जरूरी अछि। अहाँ ठेकान करबै आ फेर साँझमे दरबज्जेपर बैस दुनू भाँइ बतिआ लेब।"

जेकर चलैत पनरह मिनट विलम भऽ गेल। फेर मन घुमि कारखाना दिस गेलैन जैठाम मिनट-घड़ी जोड़ि आवाजाहीक हाजिरी होइए। मुदा तँए कि ओहन नै अछि जे कोनोमे आइती आ कोनोमे जाइतीक हाजिरी नै होइए? सेहो तँ ऐछे! मुदा हम तँ विद्या मन्दिरक पुजेगरी छिऐ। विचार तँ करए पड़त। मुदा विचारो करब तँ असान नहियेँ अछि। हँ से तँ नै अछि मुदा अपनो भरि जँ नै करब तँ कोन मुहेँ धरमराज लग ठाढ़ भऽ स्वर्गक फाटक खोलबाएब। मुदा बाटो तँ तेहेन अछि जे भोथिआइए जाइ छी। तखन?

चोटे मन उनैट अपन पिताक चलौल परिवारपर गेलैन। घरसँ बाहर धरिक अपन समय बनौने छला जे भिनसुरका उखराहामे काजक जेते समय बाधित हएत ओकर भरपाइ बेरूका उखराहामे कऽ लेब। मुदा विद्यालय तँ से जगह नै छी दस बजेसँ चारि बजे धरिक छी।

जहिना बदाम-केराउक भूजा पथरा कऽ आरो बेसी सक्कत भऽ जाइए तहिना श्यामलाल बाबूक मन सेहो पथरा गेलैन। पथराइते मनमे फुरलैन, अपन मुँह तखने ऊपर उठत जखन नीक फल गाछक डारि पकैड़ उठाएब। जँ से नै उठाएब तँ काटल गाछ वा डारिक अशे केते। मन जेना थीर भेलैन। थीर होइते

विचार ई भेलैन जे अखन बच्चा सभकेँ पढ़बैक समय छी, जँ ओकर समय ओहिना जाइ छै तँ दोखी हएब। सोचै-विचारैक सेहो अपन-अपन समय होइ छइ। एकटा ओहन होइ छै जे आगूमे काज रहल ओकरा कोन जुतिये-भाँतिये करब आ दोसर होइ छै जे काज आगू औत आकि जे काज बेठेकनाएल रहत, तेकर विचार पहिने करब। ऐठाम दुनू अछि। मुदा एते तँ ऐछे जे एकटा नै केने नोकसान हएत दोसर किछु पछाइतो केने नोकसान नै हएत। मन मानि गेलैन जे पहिने पढ़बैले किलास जेबा चाही।

अपन उपस्थिति बोहीमे उपस्थिति दर्ज केने बिना विद्यार्थी सबहक उपस्थिति बोही ऑफिसक टेबुलपर सँ उठा श्यामलाल बाबू किलास विदा भेला। विदा होइते मनमे उठलैन अखन जँ कियो ऊपरका पदाधिकारी आबि जाथि तँ ओ बोही देख अनुपस्थिते ने बुझता? तखन हुनका लग केना अपन उपस्थिति दर्ज कराएब? समैयो सहए भेल अछि जे एक दिस पैघ-पैघ योजना नष्ट भेल जा रहल अछि आ दोसर दिस, हरसीकार-दिरघीकार छुटने लोक जुरमाना भरि रहल अछि। बिना पाइ-कौड़ीक कोनो काज नै ससैर रहल अछि। काज करै छी दरमाहा पबै छी, परिवार चलैए। मुदा जँ अखन सए-सैकड़ाक पेंचमे पड़ि जाएब तँ ओते परिवारेक बाल-बच्चापर ने पड़त? आन कियो कहैथ आकि नै कहैथ आ कहबे के करता, कोन गर्ज छैन। मुदा पत्नी थोड़े मानती। ओ तँ दुसैत कहबे करती जे तेहेन कोढ़ि छैथ जे जेतबो उचित कमाइ हेतैन सेहो दण्डे-जुरमानामे गमबै छैथ। ओना दण्ड-जुरमानाक जगहो बदैल गेल। तइसँ जे जेते जुर्माना भरनिहार से तेते लब्धप्रतिष्ठ भऽ गेल छैथ।

जेतबो ऑफिससँ बोही लऽ किलास विदा होइकाल श्यामलाल बाबूक मन खनहन छेलैन सेहो जेना खरहरा गेलैन। खरहराइते बकार फुटलैन-

“हाथक कंगना जँ ऐनासँ देखल जाए तँ ओ आँखिक देखब भेल आकि ऐनाक?”

कोठरीक मुँह लग पहुँचते छात्र सभ ठाढ़ भेल। टेबुल लग अबिते दुनू हाथ उठा सभकेँ बैसबैत श्यामलाल बाबू बजला-

“बाउ, रस्ता-बाटक घुच्चीमे घुचिया गेलौं तँए थोड़ समय घुचिया गेल। तइले तौं सभ दुख नै करिहह। दू घण्टीक बीच जे समय बँचत तइमे तोरा सबहक हाजिरी बनेबऽ। आइ तँ सोम दिन छिऐ, पहिल घण्टी चित्रकले हेतह किने?”

एक स्वरमे छात्र दिससँ उठल-

“हँ।”

मुदा पैछला बेंचपर सँ अवाज आएल-

"नीके भेल नै तँ औझुका हाजिरी कटिये जइतए।"

कुरसीपर नीक जकाँ श्यामलाल बाबू बैसलो ने छला कि ऐगला बेंचक पहिल छात्र अपन ड्रॉईंग-कॉपी नेने पहुँचल। कमल फूलक चित्र बनेने छल। ओना श्यामलाल बाबूक मन चौचंग रहबे करैन। चौचंगक कारण रहैन जे एक दिस समय कम देखैथ, दोसर दिस छात्रक संख्या बेसी देखैथ, तैपर पैछला काज सेहो बेसियाएल देखैथ। मुदा मनमे एकटा युक्ति फुरलैन। फुरलैन ई जे सांगोपांग निरीक्षण-परीक्षण नै कऽ देख-देख कऽ खाली टीक लगा देबइ।

मुदा लगले भेलैन जे नीक-बेजए दुनूमे टीक लगाएब तँ आरो भयंकर गलती हएत। किछु करैत किछु नै बनैत देख विचारलैन जे नीक हएत ओहिना एक-एक नजैर देख आगूक सवक संगमे जोड़ि देब। तखन एतबे ने हएत जे काज दोबरा जाएत। मुदा उपैए की? ओहुना तँ लोक करिते अछि जे काज बेसी रहने देहमे पानि चढ़ा सम्हारैक कोशिश करिते अछि। जँ से नै सम्हरत तँ अगुएलहा काजकेँ सम्हारैत पछुएलहाकेँ खण्ड काटि आगू दिस बढ़बैत जाएब, जइसँ एक दिनक बदला दू-तीन दिनमे काज पुड़िये जाएत। मनमे सवुर भेलैन। नीक जकाँ श्यामलाल बाबू असथिरो ने भेल छला तखने अभिराम अपन ड्रॉईंग-कॉपी आगू बढ़ौलक।

हाथमे कॉपी लैत श्यामलाल बाबू निहारए लगला। चित्रक बगलमे 'कमल फूल' लिखल। मुदा चित्र देख मन नाचि उठलैन। नाचि ई उठलैन जे कमलो फूल तँ रंग-रंगक होइए। एकटा ओहन होइए जइमे पंखुरी-दल कम होइए, दोसर एहनो तँ होइते अछि जे कोनो शत कमल तँ कोनो सहस्र कमल सेहो होइत अछि। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे कोनो शुभ्र कमल तँ कोनो लाल कमल तँ कोनो नीलो कमल तँ होइते अछि। तेतबे किए! कमला धारो तँ बहिते अछि। पानिक कमल एकरंगा होइए मुदा ऐठाम तँ से नै बेराएल अछि। सोझहे 'कमल फूल' लिखि देने अछि। ई तँ फुटौने नै अछि जे जलकमल छी आकि थलकमल छी? दुनू कमल रहितो चालि-प्रकृतिमे अन्तर छइहे। अन्तर ई छै जे जलकमल जँ एकरंगा होइए चाहे उज्जर, लाल नीले किए ने हुअए, मुदा थल कमल तँ तीनरंगो होइते अछि। ओना तीने रंग किए कहबै, बहुरंगो तँ कहले जेतइ। बहुरंगा ई जे जखन भोरमे थलकमल कलीसँ कलियए लगैए तखन उज्जर रंग धारण केने रहैए मुदा जेना-जेना सुर्जक किरिण आगू मुहेँ ससरैए तेना-तेना ओकर उज्जरपनोमे लाली आबए लगै छइ। बाल-किरिण जकाँ बाल-रंग अबैत गढ़ियए लगैए। हल्लुक लाल, गुलाब लाल अड़हुल लाल आ आल लाल होइत लाल कमल भाइए जाइए...।

एक तँ ओहुना कोनो ओझरीमे पड़ने मनक रस्ता ओझरा जाइ छै तैपर तँ आरो श्यामलाल बाबूक मन ओझराइते रहलैन। कॉपी देख किछु बजला नहि। बजैक पाछू दोसर-तेसर सबाल उठैक डर भेलैन। डरो केना ने होइतैन, कम समैमे अधिक काजक तँ सूत्रे बदैल जाइ छइ।

अभिरामकेँ कॉपी बढ़बैत कहलखिन-

“बौआ, चित्रकारी तँ नीक केने छह, मुदा जइ ढंगे केने छह, ओकर बारीकी देखैक अखन समय नै अछि, तँए एकरा राखह। निचेनमे देखबह।”

कॉपी लैत अभिराम अपना जगहपर आबि बैसल। दोसर कॉपी शरबनक, हाथमे लैत श्यामलाल बाबू निहारए लगला। ‘अपराजित फूल’ बगलमे लिखल। फूल देखते मन नचलैन। नचलैन ई जे अपराजितो तँ केते तरहक होइए। एकमुखी, तीनमुखी, पँचमुखी। तैसंग उजरो होइए आ कारियो होइते छइ। जहिना अभिरामक कॉपी देख श्यामलाल बाबू बाजल छला तहिना शरबनोकेँ कहलखिन-

“बौआ, चित्रक तँ नीक चित्रण केने छह मुदा ओते परखैक अखन समय नै अछि, अखन राखह दोसर दिन देखबह।”

कॉपी लऽ शरबन अपन जगहपर बैसलो ने छल आकि तेसर- गिरधरक कॉपी श्यामलाल बाबूक हाथ पड़लैन। विचित्र रूप बनल चित्र। पँजरामे लिखल ‘गामक शकल सूरत।’

शीर्षक पढ़ैथ आ देखैथ तँ कोनो ताले-मात्रा ने मिलैन। शीर्षककेँ नीक मानि लेलैन मुदा वेदरंग वेदचित्र देख मनमे उठलैन जे जहिना कोनो गरीब लोक[11] अपना बेटीक नाओं ‘लछमी’ आ बिनु पढ़ल-लिखल लोक अपन बेटीक नाओं ‘सरस्वती’ रखि लइए, तहिना अछि। घड़ी दिस नजैर देलैन तँ समय ससरल देखलैन। मुदा जाबे घण्टी नै बजल ताबे तक तँ समय अछिए। नजैर खिड़ा देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे केतौ ढिमका-ढिमकी अछि तँ केतौ चौरस, केतौ खादि जकाँ अछि तँ केतौ डाँरि खींचल। खेतक आड़ि-धुर छी आकि कोनो धार-धुर? घुड़छीमे श्यामलाल बाबूक मन घुड़छिया गेलैन। फेर लगले मनमे भेलैन जे आन गोरे फूल, पात, फल इत्यादिक चित्र बनबैए आ ई किए एहेन गामेक शकल-सूरतक चित्र बनौलक! अपनो तँ कहियो एहेन बात बजलो ने छेलौं तखन किए बनौलक?

पुछलखिन-

“बौआ, एहेन चित्र बनाएब केना सीखलह?”

---

[11] खगल लोक

जेना गिरधरक ठोरेपर रहै तहिना बाजल-

“सरजी, परसू रातिमे बाबा कहलैन।”

बाबाक नाओं सुनि श्यामलाल बाबू तरतम्य करए लगला। तरतम्य ई करए लगला जे ने कोनो संगी-साथीक नाओं बाजल आ ने दोसर-तेसर शिक्षकक। बाबाक नाओं कहैए!

तैबीच घण्टी बजल। हाँइ-हाँइ कऽ रजिष्टर खोलि हाजिरी लिअ लगला।

साढ़े चारि बजे जखन विद्यालयसँ श्यामलाल बाबू घर दिस विदा भेला तखने मनमे गिरधरक बात एलैन। मनमे अबिते सोचलैन जे जँ पहिने अपना घरपर चैल जाएब तखन दोसरो-तेसरो एहेन काज उपस्थित भऽ जाएत जे फेर ई काज पछुआ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने गिरधरेक घरपर पहुँच बुझि लेब नीक हएत। घरक रस्ता छोड़ि गिरधरेक संग विदा भेला।

गिरधरक बाबा- सुबल लाल- दरबज्जेपर रहथिन। श्यामलाल बाबूकेँ देखते गिरधरकेँ कहलखिन-

“बौआ, पहिने आँगन जा माएकेँ चाह बनबए कहुन आ अपने लोटा-गिलास अखारि कलक टटका पानि नेने आबह।”

अपन आगत-भागत देख श्यामलाल बाबूक मनमे उठलैन जे धड़फड़ा कऽ पहिने अपन प्रश्ने नै राखब। कुशल-छेम हेबे करत, ताबे गिरधरो निचेन भेल रहत। ओकरे अगुआ किए ने प्रश्न उठाएब। दू गिलास पानि एक गिलास चाह पीला पछाइत श्यामलाल बाबू गिरधरकेँ कहलखिन-

“बौआ, कनी अपन ड्रॉईंग-कॉपी लाबह ते।”

अपन ड्रॉईंग-कॉपी गिरधर आनि आगूमे रखि देलकैन। ऊपरका पन्ना उल्टा, सुबल लालक आगूमे रखैत श्यामलाल बजला-

“बच्चा एहेन चित्र बनौने अछि जे नीक जकाँ अपनो ने बुझि पाबि रहल छी।”

पोताकेँ अपन कहल बात सुबल लालकेँ मन पड़लैन। कॉपी उठा देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना कहने छेलिऐ तहिना हू-बहू चित्र बनौने अछि! मन खिललैन। खिलते बिहुसलैन। बिहुसिते बजला-

“मास्सैब, केहेन बढ़ियाँ तँ चित्र सचित्र बनले अछि तखन विचित्र की?”

एक तँ ओहिना श्यामलाल बाबूक मन चित्र देख चितराएल रहैन तैपर सुबल लालक समर्थन देख आरो चितिर-बितिर भऽ गेलैन। मनमे घमर्थन जगलैन। घमर्थन ई जे सुबल लाल साधारण पढ़ल-लिखल गिरहस्थ छैथ, मुदा

अपने तँ से नै छी, एक तँ बी.ए. पास केने छी तैपर दिनचर्यो तँ पढ़ले-लिखलक अछि, केना बाजब जे नीक जकाँ नै बुझलौं। अपनाकेँ समगम करैत श्यामलाल बजला-

"किछु तँ नजैरपर चैढ़ रहल अछि, मुदा किछु चैढ़े ने रहल अछि।"

बजैक वेगमे श्यामलालक विचार भँसियाइत जहिना कोनो वस्तु धारामे भँसि जाइए तहिना आगू बढ़ि गेलैन मुदा लगले बाजबक प्रवाहकेँ मनक छोड़सँ खिंचलैन। छोर खिंचैक कारण भेलैन जे जँ कहीं सुबल लाल पुछि दैथ जे की सभ नजैरपर चढ़ल आ की सभ नै चढ़ल। तखन तँ आरो जड़ि-तड़ि मुसरा नेने उखैर जाएब! मनमे अबिते जेना मुँहक सुरखी विधुआ गेलैन। मुदा संयोग नीक रहलैन जे सुबल लाल से नै पुछि, बजला-

"मास्सैव, पहाड़, समुद्र, धरती, पताल, अकास सभ मिलि जे एकटा विराट सूरत बनल अछि, सएह तँ छी।"

जहिना पोखैर वा धारक अथाह पानिमे खेलाड़ी उगी-डुमी खेल खेलैए, आ जखन उगि पकड़ा जाइए आ डुमबए लगै छै तखन डुमैसँ नीक हरदा बाजि अपने चोर बनि जाइए तहिना श्यामलालक मनमे भेलैन। मुदा लगले मन कहलकैन अनेरे मनकेँ हारि मनबा रहल छी। ई विचारक दोख छी। नान्हिटा बात अछि जे सुबल लाल हमरासँ जहिना उमेरमे बेसी छैथ, तहिना जिनगियोक भिन्न आनन-कानन तँ छैन्हे। जेहेन जिनगी रहत तहने ने नन-नन्दन बोन-झाड़ हएत। जे सोभाविको अछिए। तहूमे ऐठाम कियो तेसर थोड़े अछि जे अनका देख संकोचो हएत। बजला-

"चाचाजी, हम भलेँ शिक्षक छी, वृत्तिये शिक्षा-दीक्षासँ जुड़ल छी, मुदा कहलो तँ जाइते छै जे जेतए ने जाए रवि, तेतए जाए कवि आ जेतए ने जाए कवि, तेतए जाए अनुभवी। जहिना गिरधरकेँ कथारूपमे गामक शकल-सूरत बुझा देलिऐ, तहिना एकबेर आरो दोहरा दियौ।"

श्यामलाल बाबूक जिज्ञासा देख सुबल लालक मनमे उठलैन, जे जिज्ञासा श्यामबाबूक छैन ओकरा मुहोँमुह[12] पुराएब कठिन अछि। दू मुँहक बात आ दू मनक विचार छी। एके जिज्ञासाक भिन्न-भिन्न रूप होइ छइ। एक भूख ओहन होइ छै जखन जठराग्नि आत्मा जरबए लगै छै, आ दोसर एहनो तँ होइते छै जैठाम खानापुरी होइए। मुदा लगले मनमे उपकलैन जे एक-एक रेखा आ रेखासँ रेखाएल शकल-सूरतक चर्च करैत चलब, जेतए बुझैमे नै औतैन तेतए प्रश्न उठौता, जँ से नै उठौता तँ बुझब जे जिज्ञासाक अनुकूल मन मन्दिर भऽ रहल

[12] उपोउप, लबालब

छैन।

चित्रकलाक कॉपी दुनू गोरेक बीचमे पसारि आँगुरसँ देखबैत सुबल लाल बजला-

"ई समुद्र भेल, समाज रूपी समुद्र। अथाह जलराशिक भण्डार। अहूमे ज़ुआर उठै छै, जे हवा-पानिकेँ अपना पेटसँ निकालि अकासमे पसारैए, जइसँ बर्खाक संग तूफानो उठै छइ। जइसँ पानि आ हवासँ धरती भरि जाइ छइ।"

आगूक बात सुबल लालक पेटेमे रहैन आकि बिच्चेमे श्यामलाल बाबू दोसर रेखापर आँगुर रखैत पुछलखिन-

"ई?"

पहिने सुबल लाल रेखाक सूरत देखलैन फेर श्यामलालक सूरत मिलौलैन, अपन सूरत मिलबैत बजला-

"ई धार भेल। जेकरा जीवनो-धार कहि सकै छिऐ, जे वैदिक धार कहियो कल-कल हँसैत, प्रवाहित होइ छल ओ आब मरण भऽ गेल। तँए पानिक जगह बाउल उड़ैए।"

'पानि-बाउल' सुनि श्यामलाल बाबूक मन सुमैर-धुमैर कऽ घुमड़लैन। कॉपीपर सँ नजैर उठा सुबल लालक नजैरपर फेकलैन। बिहुसैत मन खिलैत रंगाएल चेहरा देख बजला-

"पानियेँ सँ बाउल आ बाउलेसँ ने पाइनो होइए।"

श्यामलाल बाबूक प्रश्न सुनि सुबल लालक मन एक डेग आगू बढ़लैन। बढ़िते बजला-

"यएह तँ दुनियाँक चकरचालि छी जे एक दिस वएह बाउल पानिक सतह बनि ऊपर जल बरसन करैए जइसँ धरतीक कोखि जुड़ाइ छै आ दोसर दिस धरतीकेँ मरू बना मरूआ उपजबैए।"

सुबल लालक बात सुनि श्यामलाल बाबू ठहाका लगा हँसला। जहिना कनितोकाल मन बजैए, तहिना ने हँसितोकाल बजैए। श्यामलाल बाबूक हँसी बाजल-

"ई तँ भेल धरती, समुद्र। मुदा दुनूक जे जोड़ अछि से..?"

श्यामलाल बाबूक बात पकड़ैत सुबल लाल बजला-

"जहिना अकासमे चन्द्रमुखी, सुर्जमुखी फूल फुलाइए तहिना धरतियोमे ज्वालामुखीक लावो-फूल तँ फुलाइते अछि। जेहेन फूल फुलाएत तेहने ने गामक शकल-सूरत बनत।"

जहिना पेट भरलापर ढकार बनि हवा निकलैए, श्यामलाल बाबूक मन तहिना भरि मन ढकरलैन। बजला किछु ने, सूर्यास्तक समय सेहो भऽ गेल छल। मुदा जहिना अर्द्ध-लघुक अवस्था, अर्द्ध-कथाक अवस्था आ अर्द्ध-गीतक विरह अवस्था होइए तहिना श्यामलालो बाबूकेँ भेलैन। मुदा घरोपर, परिवारोमे तँ आन दिनक अपेक्षा अनदेशा होइते हेतैन। मनमे अबिते बजला-

"अबेर भऽ गेल, दोसर दिन फेर गप-सप्प हेतइ।"

अपन मर्यादा निमाहैत सुबल लाल बजला-

"आब तँ बाट-बटोहीकेँ ठौर पकड़बा बेर भऽ गेल, तखन जाएब केना?"

मुस्की दैत श्यामलाल बाबू बजला-

"केतौ अनतए जाएब जे हराइ-भोथियाइक सम्भावना रहत। अपन घर छी, कनी अबेर-सबेर पहुँचब सएह ने।"

❍

तिथि : 20 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या- 2596

समरथाइक भूत

आन गामसँ हमर गाम सात कच्छे नीक अछि से आन मानए आकि नै मुदा अपने तँ मानिते छी। अहीं कहू जे हमरा गामसँ बेसी कोन गाममे चटवाह[13] अछि? भज्जू काकाकेँ देखियौन जे एते दिन अपनेटा सासुरक सीखिसँ ओझहा छला आ आब केहेन खनदानी भऽ गेलैन जे बेटो ओझहा बनलैन आ आब पोतो झाड़-फूक करब शुरू केलकैन अछि। ओना अखन सड़ाना परहक नै भेलैन अछि मुदा दोग-सान्हिमे लोक ओझहा तँ कहबे करै छैन।

हँ तँ कहै छेलौं- गामक गप। रंग-रंगक ओझहा-गुनीसँ भरल गाम हमर अछि तैठाम जे कियो जिद्दे करता तँ पुछबे ने करबैन जे अहाँ गाममे भूत बेसी अछि कि ओझहा? जँ भूतसँ कम ओझहा रहत तखन तँ छजतै, मुदा जखन भूतसँ बेसी ओझहे भऽ जाएत तखन केना छजत! कटौझ हएत की नै? से कटौझ कहाँ कोनो गाममे अछि? तइमे तँ हमरे गाम ने बीस भेल...। ऐबेर जे गाम सबहक नाओं उनटा-फेरी भेल तइमे ओझपुरिया गाम सेहो बना लेलौं। आब सरकारी रेकटमे चलि गेल। जखने रेकटमे गेल तखने ने मालो-माल भेलौं। चलू भाय जे भेल से भेल। सभ अपन-अपन गामक मालिक भेलौं।

जेहेन जे मन बनाएब तेहेन तेकर मैलकियत रहत आ मैलकान चलत। जे जेते भोरमे जागब तेकर तेते नमहर दिन हएत आ जे जेते वसन्ती हवामे अलिसाएल पड़ल रहब, से तेते बैशाखा पान जकाँ अलिसाएल कहिऔ कि मौलाएल आकि अधसूखू, भेल कातमे पड़ल रहब! आन जकाँ तँ ने बेसी हमरा मनतर अबैए आ ने चाटीए चलैए आ ने तुलसी फूलक मुड़ी लऽ कऽ आकि कुश लऽ कऽ आकि करूतेल आकि गंगाजल लऽ कऽ झाड़ऽ अबैए। खाली वतरसिया हूक झाड़ए अबैए। मुदा अपना मंत्रपर सोलहन्नी बिसवास तँ ऐछे, बस किछु ने मूसक माटिमे मंत्र मिला फेकयौ, डाँड़पर दुनू हाथसँ पकड़ल चीरल-कड़चीक दुनू भाग अपने सटए लगत। ओइमे झूकि कऽ हूकवाहकेँ डाँड़ रगैड़ तरे-तर टपए कहिऔ, जँ टपि गेल तँ छुटि गेलै, नै टपि भेलै तँ डँड़-टुट्टा बुझियौ। छुटै वा नै छुटै से ओ जानए, मुदा तत्खनात ओकरासँ कहाइए लइ छिऐ जे अपना मुहेँ बाजह- छुटि गेल। ओहन ओझवाहि करैबला ओझहा हमहूँ छी। मुदा तँए कि

---

[13] साँपक बीख झाड़ैबला

गाम हमर नै छी, हे नै जेबइ झाड़-फूक करए, मुदा जिगेसो करए नै जेबै? से तँ जाइते छी आ जा-जीब जेबे करब। से जँ जाइते छी, तखन ओझहा-लिस्टमे हमर नाओं दर्ज किए ने हएत। द्वारिका-छाप भेटने तँ मुखाग्निसँ छूट भेटै छै, आ गाम-छापकेँ किए नै भेटत? मुदा से अनेरे कहलौं। एते दिन हूकेटा झाड़ैक मंत्र अबै छल, आब जोड़ीक सेहो अबैए...।

पैछला दसमीमे चनौरा स्थानमे सीखलौं। अहाँ सभसँ लाथ कोन, चलती एने चाहो-पान बेसी भेटए लगल अछि। जखन गामक लोक ओझहा मानियेँ नेने अछि, तखन आन गामबला किए ने मानता। आन गामवालीक मुहेँ सुनि जँ नै मानता तँ अपना गामवालीकेँ झूठा बनौता! ऐमे हमरा की। नहियेँ जानता तँ नै जानौथ। अपन अपना गाम-घरक चीनमारपर तसली-बटुकेँ ओहो हड़बड़बौथ, हमहूँ हड़बड़ाएब। तइले हुनकर मन किए कठाइन हेतैन आकि हमरे हएत। आब कि ओ कहबी रहबे कएल जे 'घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे..?'

आब तँ घरोवाली डेरावाली बनि छुच्छे वौआइ छैथ।

गाम तँ गामे छी। किए लोक बुझत जे फल्लाँ जोड़ीए आ हूकेक मंत्रटा जनैए। जहिना एकटा मूसक माटि आ दोसर पञ्चमीक माटिसँ झाड़ल जाइए, हमहूँ तहिना झाड़ै छी। साँपक मंत्र तँ हमर एहेन पक्का अछि जे नब्बे प्रतिशत गारंटी दइ छिऐ, दस प्रतिशत राजा-दैवक हाथक छी। हरहाड़ाक बीख रहौ आकि ढोढ़क, गारंटी दइ छिऐ। दुनियाँक कोन आदमी अछि आकि करखन्ने अछि जे शत-प्रतिशतक गारंटी देत। जँ भगवाने दऽ सकितैथ तँ नेङ्गरा-लूल्हा केतएसँ आएल?

आब तँ तोहूमे तेहेन-तेहेन घटिया कम्पनी सभ भऽ गेल अछि जे पीओ-फेको आ लिखो-फेको माल बनबए लगल अछि। तइसँ तँ सात कच्छे नीक छीहे ने। एकबेर जेकरा झाड़ै छिऐ तेकरा कहाँ कहै छिऐ जे तीन बर्खक पछाइत फेर बीख जगतह। जिनगी भरिक गारंटी दइ छिऐ। भलेँ फेर हौउ।

दिने-देखार मैनजनक अँगनामे भूत लगि गेल। दरबज्जापर बैसल-बैसल टोल-पड़ोसक लोक सभकेँ जाइत देखिऐ। एक मन हुअए जे रस्ते-रस्ते टहैल कऽ अपनो देखिऐ जे की बात छिऐ मुदा फेर धकमका जाइ। धकमका ऐ दुआरे जाइ जे गामेक एक गोरेक घरमे आगि लगलै अपना चुल्हिसँ, आ अरारि चुकबै दुआरे चारि गोरेपर केस कऽ जहल कटा देलक। तेहेन गाममे डेग उठबैसँ पहिने विचारणीय तँ अछिए। मुदा गामक बातक दाब ओते मनमे नै पड़ल, जेते पड़ल छल मैनजनक किरदानीक। आगि लगौ, बज्जर खसौ ओहन लोक आ ओहन परिवारमे जे कुकुर्मी-विधर्मी अछि, तैठामक घटना छी। सात-आठ बर्खक एक बच्चिया बगलेक खेतमे बकरी चरबैत रहए, लोक सभकेँ जाइत देखलक तँ दौग

कऽ ओहो गेल, सुनलक जे मैनजनक पुतोहुकेँ भूत लगल छै, आँखिसँ किछु ने देखलक, एतबे देखलक जे चारू-कातसँ स्त्रीगण सभ बका रहल छइ। मुदा तही बीच ओइ बच्चियाकेँ सोह खिंचलकै जे बकरी केकरो वाड़ीमे किछु खा ने लइ। तँए घुमि कऽ आबि गेल। अपन आ मैनजनक घरो बेसी हटल नहियेँ अछि, बीघा डेढ़ेक हटान छइ।

पुछलिऐ-

"बुच्ची, केतए गेल छेलौं?"

बाजल-

"मैनजन बाबाक पुतोहुकेँ भूत लगल अछि।"

मनमे भेल जे आरो किछु पुछिऐ मुदा अपने मन रोकलक जे ऐ बच्चासँ बेसी पुछबो उचित नहि। तहूमे लगले गेल आ आएल। जैठाम देखनिहारक भीड़ छल, तैठाम जँ एक नजैर ओ बच्चिया देखिये लेलक, सएह बहुत भेल। आगू किछु ने बजलौं। मुदा अपने मनक विचारमे ओझरा गेलौं। ओझरा ई गेलौं जे एकटा मन कहए जे की बात छिऐ से कनी नीक जकाँ बुझिऐ, मुदा दोसर कहए जे एहेन-एहेन पतीतक चरचो करब समैकेँ गोबराएब भेल। मुदा ईहो भेल जे गाममे हजारो रंगक लोक अछि, हजारो रंगक चालि छै, तइसँ हमरा की? मुदा समाज हमरो छी आ हमहूँ छिऐ तइ हैसियतसँ तँ किछु-ने-किछु जवाबदेही बनियेँ जाइए, तँए...।

एक गरे देखी तँ बुझि पड़ए जे अपना चसमसँ जा कऽ देखिऐ, मुदा लगले तमसेलहा मन आगूमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाए, जे आगि लगौ आकि बज्जर खसौ, रीतिकेँ कुरीति बनौनिहारक पीठपोहू नै होइ, तँए देखब कोन जरूरी अछि। मन घिच-पिच करए लगल। दोसरो आफत आगूमे ठाढ़ भऽ गेल! अपनो काज दिस नजैर ढुकबे ने करए..!

मन उड़िया-बिड़िया ओही समरथकी भूतपर चलि जाए! गहबरिया भगता जहिना देवी-देवता बनि स्वर्ग-नर्कक पासपोर्ट बना बँटैए तहिना भूतो ने जुअनकी-जुअनका देहपर चढ़ि कुदबो करैए। किछु फुड़बे ने करए जे की करब की नै करब। मुदा संयोग नीक रहल। लालमणिकेँ ओम्हरेसँ घुरल अबैत देखलिऐ।

चौबगली छिड़िआएल मनकेँ समेट एकबट केलौं। दरबज्जाक आगू जखन रस्तापर लालमणि टपैत रहए आकि सोर पाड़ि बजलौं-

"नेताजी, कनी छहरा लिअ। केमहर-केमहरसँ सवारी एलैए?"

लग अबिते देखलिऐ लालमणिक चेहरा उदास! बिनु किछु बजने

लालमणि चौकीपर आबि बैसल। गुम-सुम। आगू किछु पूछब उचित नै बुझि पड़ल। किएक तँ 'केमहरसँ अबै'क चर्च तँ काइए चुकल छी। जवाब तँ वएह ने देती...।

फेर मनमे भेल जे भऽ सकैए किछु गंभीर बात होइ, जेकरा मने-मन मथैत हुअए। तँए अपनो प्रतीक्षित बनि उनटनक प्रतीक्षा करए लगलौं।

लालमणि गामक बेटी। बच्चेसँ चंसगरो आ चंगलो। मुदा हवा-विहाड़िमे उधिया गेल। मैट्रिक पास नै कऽ सकल, मुदा बजै-भुकैक लूरि भऽ गेलइ। एकबेर जिला-परिषदक चुनावमे पार्षदो बनल। बिआह ताबे धरि पछुआएल रहइ। ओना शुरूहेसँ गाम-समाज देखैक अपन नजैर बनि गेल रहइ। जइसँ जिज्ञासा बच्चेसँ जगि चुकल छेलइ। जेकरा जगत देखैक जिज्ञासा रहत सएह ने दोसरसँ पुछि गुरुद्वार बनौत। आकि जेकरा जिज्ञसे नै रहत ओ तँ अपने ने द्वार-गुरु भेल। सभ किछु ओकरा बुझले रहै छै, खगते की छै जे दुनियाँ दिस देखत। खाली एकटा मोबाइल रहक चाही। चौबीस घन्टा हँसैत-खैलैत तेना कटि जाएत जे दुनियाँ समटा कऽ चारि ओंगरीमे बसि जाइए। ओना, जिला-परिषदक चुनाव जीतने, एते तँ लालमणिकेँ भाइये गेल जे इन्दिरा अवासक घर भेने, रहैक गर स्थायी भऽ गेलइ। ओना माए-बाप बहुत दबल नै रहथिन मुदा बिआहक पछाइत बेटी परधन भऽ जाइ छै तँए मोह-माया छुटिते छइ।

सरकारीए दस कट्ठा परती कब्जा कऽ अपन घरो अलग बनौने अछि। दोहरा कऽ जिला-परिषदक चुनाव लड़ैसँ पहिनहि हारि गेल छलि। जे कोटा आरक्षित छेलै ओ आब सहरगंजा भऽ गेल। अकास उड़ैत चिड़ैकेँ जँ अकास-भोज्य नै भेटै तँ ओ केते दिन रौद-वसातमे जिनगी काइम रखि सकैए। लालमणि भटकल। एकटा विधायक संगे बिआह कऽ लेलक। बिआह तँ कऽ लेलक, मुदा साले भरिक पछाइत दुनूक बीच खट-पट शुरू भेलइ। खटपटक कारण विचार-काजक अन्तर छल। 'बाजल किछु, केलक किछु।' एहेनसँ लालमणिकेँ रीश उठइ। वएह रीश रिसाइत-रिसाइत लालमणिकेँ पतिसँ अलग केलक।

समाजक नजैरमे लालमणि अजाति आ जिनगीक नजैरमे छिड़ियाएल देख अपन आत्म-चेत चेतल। चेतल ई जे ओही दसो कट्ठाक परतीकेँ तोड़ि कट्ठा भरिक बास आ नअ कट्ठाक चास बना एकाकी जिनगी जीब रहल अछि।

शुरूहेसँ लालमणिक संग हमरा गप-सप्प चलैत आबि रहल अछि। सभ रंगक गप, समाजक गप, अपन गप। ओना लालमणिक किछु काजपर तमसाएलो रहै छी, मुदा सबटा तामस तखन मिझा जाइए जखन आँखिक सोझ लालमणिकेँ एकाकी जिनगी जीबैत देखै छी। की दुनियाँ अन्हार छै आकि लालमणि अपने अछि?

किछु समय बीतला पछाइत लालमणि अपन मुँह खोललक-

“भैया, भाए-बहिन जकाँ सभ दिन एकठाम रहलौं तँए कहै छी। जिनगीक अनेको किरिया-कलाप छै..?”

लालमणिक बजैक टोन सुनि मन टोनिया गेल। कुशियारक टोनी जकाँ पोरे-पोर आँखि झक-झक करए लगल। बजलौं-

“गाम-समाजमे कोनो गप केकरोसँ छिपेबा नै चाही। जेते विचार फरिछाएल चलत तेते गामक सीमा मजगूत बनैत चलत।”

हमर बात जेना लालमणिकेँ रूचलै, बजैसँ पहिने मुस्कियाएल। मुस्की देख बुझि पड़ल जे सौनक मेघ उमड़ल। आब किछु बरखा हेबे करत...।

बर्खाक आगम देख लोक जहिना अपन घर-अँगनाक काज सम्हारि लइए तहिना अपनो सम्हारलौं। लालमणि बाजल-

“भाय साहैब, मैनजनक अँगनाक भूत की छी से आन जे बुझौ मुदा हम बुझै छी जे अखन धरि सोतिये-डाह टा होइ छेलै ऐठाम तँ ससुआ-डाह भऽ गेल अछि।”

लालमणि एक संग अनेको बात चालि देलक। कोन बातकेँ केते मानी आ केते नै मानी? मुदा एहनो तँ भाइये सकैए जे लालमणि अपना विचारे बाजल अछि। गामे छी, रोटी जकाँ केतौ मुँह थोड़े छइ। मुदा जखने जेतइ तोड़ब तखने तेतइ मुहोँ बनि जाइए। के की बाजत, केकर बात केते तर पड़तै की ऊपर हेतइ, ई के बुझत? मुदा लगले मनमे भेल जे जँ लालमणि किछु अपन विचार रखलक तँ की हेतइ, अपनो तँ बुधिये-अकीलबला छी किने, किए ने ओकरा मनमे घोंटि दूध-पानि बेरा बुझब। ऐगला बात बुझैक खियालसँ बजलौं-

“लालमणि! एक दिस भूत कहै छहक, दोसर दिस ससुआ-डाह?”

हमर बात सुनिते लालमणि चौंकल। चौंकल ई जे जे बात भाय-साहैबकेँ कहए चाहलयैन से भरिसक नीक जकाँ नै बुझलैन। मुदा बुझबो तँ सहज नै अछि। पुरुख-नारी बीचक जिनगीक समस्या छी। ऐ समस्याक समाधान ताधैर नै हएत जाधैर समकस-समाधान नै हएत। मुदा तइले बोल-बम नै श्रम-बम बनैक खगता अछि। खलिया गोलीसँ शिकार करब नेनमैत भेल।

समकस समाधान-ले ओइ सीमापर लिंग निरमबए पड़त जेतएसँ शिवलिंगक निरमान हएत। मुदा इतिहासक पन्ना विपरीत रहल। ओना कहैले तँ कहलो जाइए जे युग सदैतकाल बदलैत रहल अछि कहियो पुरुख प्रधान इतिहास रहल तँ कहियो नारी-प्रधान। मुदा नारी-प्रधान आकि पुरुख प्रधान भेल केना? जँ एक कोखिक पुरुख-नारी छी, दुनूकेँ अपन-अपन जिनगीक क्रियाक

दायित्व अछि तखन ओकरा जिनगीक दायित्व बना चलब ने दुनूक बीचक जिनगी भेल। तइले फल्लाँ-प्रधान आकि चिल्लाँ-प्रधानक की प्रयोजन? सबहक सोझहामे अपन-अपन गाम अछि, पुरुख-प्रधान परिवारक की गति छै आ नारी-प्रधान परिवारक[14] की गति छै? सेहो कोनो एके सीमामे नै जिनगीक असीम अनन्त किरिया-कलाप सभमे। जेकरा तीन डिसमिल जमीन बासभूमि नै छै ओकर मातृभूमि की भेल? केकरा कहबै?

मुदा खोलि कऽ बजैक[15] साहस लालमणिकेँ नै होइ। ओना मनक सन्तापसँ बुझि पड़ैत रहए जे लालमणि भीतरे-भीतर जरि रहल अछि, मुदा धकमकी तँ रहबे करइ। धकमकीक कारण रहै जे जहिना रंग-रंगक नशाखोर अछि, रंग-रंगक नशासँ प्रेम छइ। केकरो भाँग प्रिय छै तँ केकरो ताड़ी, केकरो अफीम प्रिय छै तँ केकरो दारू। मुदा ऐमे कियो प्रेमी नै भेल, से केना कहल जेतइ। ओना भाँग पीनिहार ताड़ीबाजकेँ कहै छै जे सड़कपर अर्र-दर्र बजबो करैए आ अपनो वेनग्र होइए...। मुदा ताड़ीबला की मुँह बन्न राखत? ओहो ने भाँग खाइबलाकेँ कहत जे वाड़ी-झाड़ीक भाँगक पात आ फूल पीनिहार, मुफ्तक माल चटैबलाक बातक मोजरे केते..? अस्सी रूपैआक कमाइमे साठि रूपैआ, अदहोसँ बेसी भरि दिनमे प्रेमीक ऊपर तियाग हमर आ गलथोथरी करत आन? तहिना लालमणिक मनमे सेहो उठैत रहै, जइसँ मनमे धकमकी अबैत रहए। लालमणिक अपन किरदानी- बिआह- मनमे नचैत रहइ। जँ रणभूमिक विचार करै छी तँ अपनो बेधाएले छी। मुदा तँए कि इतिहास उनटौलासँ थोड़े उनटत, ओ तँ समैक संग जुड़ि गेल अछि। मूल विचार आजुक अछि जे सबहक दायित्व बनैए। लालमणिक धकमकी देख बजलौं-

“नेताजी, गामक कोनो बातक विचार अपने सभ ने करबै। की मुइलहा लोक आकि पचास बर्खक पछाइत अबैबला लोक करत?”

हमर बात जेना लालमणिकेँ करेजमे लगलै। कोनो गाछ लगिते जेना कलशैक टुस्सा दइए तहिना लालमणिक टुसियाएल मन बुझि पड़ल। ओइ टुस्साकेँ जँ बँचौल नइ जाएत तँ रौदमे जरियो सकैए आ पालामे ठिठुरियो सकैए किने! तँए अनुकूल संयोग भेटने ने ओ कलशत। बजलौं-

“नेताजी, मन खनहन नै बुझि पड़ैए तँए एकबेर चाह पीलासँ मनो खनहन हएत आ गपो-सप्प खनखनाइत चलत।”

लालमणि चाहक आग्रह मानि नै बाजल आकि मनमे कोनो दोसर बात

---

[14] पुरुख विहीन, वैधव्य परिवारक

[15] स्पष्ट बजैक

घुरियाइत रहै, से ओ जानए, मुदा बाजल किछु ने। तैबीच अपनो मनमे भेल जे पत्नीकेँ बजा अपन एवजी पञ्च बना किए ने लालमणिक संग उतराचौरी[16] करा दिऐ। अपने गपकेँ सोझ-साझ करैत रहब आ पत्नी-मुहेँ करा-बजा लेब। दोसर ईहो हएत जे धाक लालमणिकेँ हमरा मुहेँ गप करैमे हेतै ओ तँ पत्नीक संग नै हएत। जँ हमर पत्नी तँ ओकर भौजाइए ने...। बहन्ना बना पत्नीकेँ सोर पाड़लयैन।

अबिते पत्नी पुछली-

“किए सोर पाड़लौं। मैनजनक पुतोहुकेँ भूत लगल छै सहए गप लोहनावाली मुहेँ सुनै छेलौं।”

गर भेटल बजलौं-

“ओही गप्पे तँ सोर पाड़लौं हेन। कोनो कि सोर पाड़लौं हेन खाएक नेने आउ। तखन तँ नेताजी दरबज्जापर आबि गेल छैथ तँए हुनकर सुआगतो ने हेबा चाही।”

लालमणिकेँ चौकीपर बैसल देख आकि की, पत्नी दरबज्जेपर सँ पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, तीन गिलास चाह झब-दे पठा दिअ।”

कहि लालमणिक आगू पत्नी बैसली। तीन गोरेक बीच पाबि जेना लालमणिक अलिसाएल मन कनकनाएल तहिना बाजल-

“भाय साहैब, एकटा पुरुख जँ दू-तीनटा पत्नीक बीच रहत ते चाह-पानसँ लऽ कऽ खाइ-पीबैमे किछु-ने-किछु घटी-बढ़ी भाइये जेतइ, जइसँ डाह हेबे करतै। मुदा मैनजनक ऐठाम तँ तेसरे भऽ गेल अछि...।”

कहि फेर लालमणि चुप भऽ गेल। मनमे भेल जे अखनो लालमणि धखा रहल अछि। धखाइक कारण मनमे रहै जे सौतिया-डाह तँ बराबरीक हिस्साक रहैए जे हल्लुक भेल। मुदा ऐठाम तँ सासु-पुतोहुक प्रश्न अछि..!

कनसारक खोंरनी चलबैत पत्नी दिस देख बजलौं-

“की सासु-पुतोहुक भेल, नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छी?”

ओना पत्नियोँ बुझली, तँए हमर इशारा करैत लालमणिसँ बजबए चाहली। सोंगरक सह लगबैत बजली-

“नेताजी तँ आगूमे बैसले छैथ, गामक जेते छ-पाँच हिनका बुझल छैन तेते हमरा थोड़े बुझल अछि।”

---

[16] प्रश्नोत्तरी

तैबीच चाहो आबि गेल। बजैक जगह सेहो लालमणिकेँ भेटल। चाहक चुस्की लैत बाजल-

"भाय साहैब, एहेन-एहेन किरदानीकेँ जाबे समाजमे अड़ौल नै जाएत ताबे भूत-भविस बुझब असान थोड़े अछि।"

लालमणिक बात सुनि मन थकमका गेल। थकमका ई गेल जे महिलाक समस्या छी, जँ महिलाक बीच विचार हएत, बीच-बिचौवैल हएत, तखन जे रस्ता निकलत से ने नीक हएत। तइले पत्नीकेँ सोझामे बैसाइए देने छिऐन तखन किए लालमणि झटहा मरैए? जेना भीतरे-भीतर मन खौंझाएल मुदा फेर भेल जे जँ खौंझ लालमणिपर झाड़ब, तँ वेचारी बेइजती बुझती। मुदा पत्नीक ऊपर तँ पुरुख सदिकाल खौंझ झाड़िते आबि रहल अछि, जेकर घट्टा-पीठ्ठा पड़ले छैन, बेसी असरो ने हेतैन। तँए खौंझाएल बिलाइ जकाँ पत्नियेँकेँ कहलयैन-

"अहाँकेँ जे लगमे बैसौने छी से पिकनीकक तरूआ माछक सुआद बुझैले आकि अपन बातक विचारो करबै!"

जेना पत्नी बुझि गेली जे मैनजनक सासु-पुतोहुक बात खोलि कऽ सुनए चाहै छैथ, सदिकाल तँ दुनू परानीक बीच एहेन-एहेन बात होइते रहैए, तँए मनमे कोनो हलचल नै भेलैन। मुदा ई तँ मनमे रहबे करैन जे कहुना भेलौं तँ गामक पुतोहु भेलौं, जखन कि लालमणि तँ गामक बेटी छैथ। पहिने गामक बेटी तखन ने गामक पुतोहु। मुदा जहिना पत्नीक मन दौड़ैत चलैत रहैन तहिना लालमणिक मन सेहो दौड़ैत चलए लगल। कोनो सघन बोनमे जहिना तीस-चालीस साल पुरान हेराएल संगी अनायास भेटलापर बीचक सभ हेरेलहा समय अपने मेटा जाइए, तहिना पत्नियोँक आ लालोमणिक मन मैनजनक पत्नीक उमेर–24 बर्ख– आ पुतोहुक उमेर- 28बर्ख-पर जा दुनू शिकारीक भेँट भेल। भेँट होइते दुनूक नजैरक मिलानी होइते ठहाकाक लाबा भड़भड़ाएल। मुदा बाक नै फुटलैन। जहिना घरमे आगि लगलापर बकार-हरण भऽ जाइ छै, तहिना। मुदा धधड़ाक इजोतमे जेना दुनू गोरेकेँ देख पड़लै तहिना मुहसँ एक्केबेर अनुभव बनि निकलल-

"केकर बापक मजाल छी जे एहेन भूत छौड़ौत...।"

लालमणि अपन घटना- वैवाहिक घटना-क विचार जे हमरा मुहेँ सुनने छलि तइसँ मनमे बुबकी रहबे करइ। निधोक बजैक साहस मनमे एलै, बाजल-

"भाय साहैब, बहिनक रूपमे जे बात हम समाजक बाजि सकै छी ओ भौजी-मुहेँ बाजब पछाइत उचित हएत, पहिने नहि।"

लालमणिक गंभीर विचार जेना मनमे लागल। लगिते विचार उठल, उठिते समाजक सतरंगी-चेहरा सोझहामे पड़ल। मुदा समाज तँ ओहन बारीक

सुतक जालक ढेरी छी जइमे हजारो-लाखो सुत भिड़ियाएल अछि। तैबीच सभकेँ नीक हौउ से बजलेटा सँ से थोड़े हएत आकि नीकक बाटपर आबि चललासँ हएत..?

विस्मित होइते मनकेँ जेना लालमणि टोबि लेलक। टोबिते जेना बुझि पड़लै जे खेबा-जोकर रसा गेल छैथ। निधोख बाजल-

"भाय साहैब, मैनजनक पुतोहुक भूत सौतिया भूत नै सौसिया भूत छी। मुदा छियैहो तँ अपने लगौलहा ने?"

पुछलिऐ-

"अपने लगौलहा की?"

लालमणिक मन जेना भीतरे-भीतर तुरैछ गेल होइ तहिना तुरछैत बाजल-

"भाय साहैब, भूत नै ओ डाह छी।"

जे भाँज बुझए चाहै छेलौं ओ भाँजे ने खुलै छल। प्रश्न दोहरेलौं-

"की डाह?"

जहिना कोर्टमे गवाह अपन पक्षधरक मुँह-मिलानी करैत, मुस्की भरैत बजैए तहिना लालमणि पत्नीक संग मुँह-मिलानी करैत, मुस्की भरैत बाजल-

"भाय साहैब, जखन दूटा पत्नी मैनजनकेँ अपना समकस जीविते छैन, पोता-पोती सेहो छैन्हे, तखन साठि बर्खक अवस्थामे चौबीस बर्खक पत्नीक संग जिनगी केहेन हएत? तीस बर्खक तेसर बेटा छै आ अट्ठाइस बर्खक पुतोहु। कहू जे तेकरा जिनगीक डाह हएब कोन अनुचित?"

लालमणिक मनक बात जेना मनमे घोंसिया गेल। आगू बढ़बैत पुछलिऐ-

"नेताजी, ओ तेसर बेटा जे छै भुतलग्गुक पति से की करै छै?"

ओना अपनो बुझल जे धोविया कुकुर जकाँ ने घाटक अछि आ ने घरक, मुदा एहनो तँ होइते छै जे साँइक नाओं जनितो 'हइ' 'हइ'क प्रयोग होइए। जहिना कोनो जब्बर औरत कोनो अपराधी पुरुखकेँ ऐंड़सँ ऐंड़ियबैए तहिना लालमणि मैनजनक तेसर बेटा- भागेसरपर बोलीक ऐंड़सँ ऐंड़ियबैत बाजल-

"भाय साहैब, ओहन-ओहन लोककेँ गामक चौबट्टीपर जखन ऐंड़ियाएल जाएत ने तखन नवरंगी आ सतरंगी समाज एक बनत।"

ओना लालमणि एक सूरमे बाजि गेल, मुदा जइ सुरे ओ बाजल तइ सुरे अपने नै बुझि पेलौं। बुझिये ने पेलौं जे की गलती भेल जे चौबट्टीपर भागेसरकेँ ऐंड़ियाएल जाएत। मुदा मनमे ईहो हुअए जे बीखाएल गहुमनकेँ जँ खोंचारियै आ जँ केकरो दोसरेकेँ लपैक लइ तखन तँ खेले चौपट्ट भऽ जाएत। तँए किछु आगू

बजैसँ परहेज केलौं। मुदा चोटाएल साँपक फुफकार जहिना ताधैर चलिते रहै छै जाधैर मन थीर नै भऽ जाइ छै तहिना दोसर फुफकार छोड़ैत लालमणि बाजल-

"भाय साहैब, एहेन-एहेन लोक समाजक कोढ़-करेज खोखैर कऽ खा जाएत। जाबे धरि उतकिरन[17] विचारसँ समाज उत्क्रमित नै हएत ताबे धरि अहिना नितकरन[18] विचार समाजकेँ निच्चाँ मुहेँ नीसकनी बनि ससारैत रहत।"

लालमणिक गम्भीर विचार सुनि मनमे अधलो लगए आ नीको लगए। मुदा किछु बजैक साहस ऐ दुआरे नै हुअए जे कोन दिस लालमणि भँसऽ चाहैए, तेकरा बिनु बुझने-बजने जँ विपरीत दिशाक बात उठि जाए तखन तँ लेनीक-देनी पड़त। मुदा लालमणि सन समाजिक लोकक विचारकेँ समाज केते अङेजलक वा अङेजए चाहैए, ईहो तँ प्रश्न अछिए। मुदा अपन विचार पत्नी बुझि गेली। कठिया लाड़ैन चलौलैन-

"नेताजी, जेहने जेकर बाप रहतै तेहने ने तेकरा बेटोक छीछा-बीछा हेतइ।"

लालमणिकेँ जेना गर भेटलै तहिना बमछल-

"भाय साहैब, बजैकाल सभ बजैए जे देशोक आ परिवारोक कर्णधार जुबा-शक्ति होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। मुदा जुबा केहेन शक्ति पाबि शक्तिशाली बनए चाहैए, ईहो तँ विचारणीय विचार अछिए।"

तेहेन विचार लालमणि पटकली जे मनमे भारी पहपैट उठि गेल। उठि गेल ई जे जैठामक लोके घोर-मट्ठा भऽ गेल अछि तैठाम यशोमतीक मट्ठा पीबैले कृष्ण कोन बाटे औता से बाटे भोथिया गेल अछि। सबहक नीक हौउ, जेकरा पेटमे अन्न नै छै तेकरा अन्न भेटौ, जेकरा देहपर देहवन नै छै तेकरा देहवन भेटौ। जेकरा घराड़ियो ने छै तेकरा-ले चन्द्रलोकक घराड़ी कीनल जाए, तइमे ने सरकारी घर बनत। मुदा तँए कि हजार खण्ड साड़ीवालीक घर, लाख खण्ड साड़ीक घर नै बनौ, तखन विकास की भेल? आठअना पाइक ताड़ी पिआक रूपैआ-डेढ़-रूपैआ बढ़बैत जँ पनरह-बीस हजारक पचास ग्रामक पोंच नै पीलक तँ ओकर विकास की भेल? जँ सभकेँ उठाउ तँ सतरहटा नोकर जखन सभकेँ भेटतै, बेड-टीसँ लऽ कऽ पर-पानिक ठर-ठेकानसँ लऽ कऽ सिगरेट-सलाइ जुमबैत तीन गोरेसँ पकैड़ शौचालयमे बैसा पनिछुआ करबैत, साबुनसँ अपने हाथे अपने मलि-मलि कऽ धोइक इत्यादि, चौबीसो घन्टाक जँ जिनगी नै भेटै तँ ओकर विकास की भेल? आब कि राजा-रजबार रहल जे महींसोसँ नमहरका

---

17 उत्कृष्ट

18 निकृष्ट

पशु- हाथी- तँ पोसै छल मुदा दूध-ले नै, सवारी-ले! ई तँ रच्छ रहल जे पत्नी मनक बात बुझि गेली। जाबे मनमे विचारि अपने किछु बजितौं तइ बिच्चेमे पत्नी लालमणि दिस गुम्हरैत बजली-

"नेताजी, अहाँ सभ तीतो-मीठ जनै छी आ देखबो-सुनबो करै छी। मुदा चीख कऽ आकि खा कऽ देखलिऐ जे केहेन सुआद केना-केना अबै छै, आकि धोविया-पाट जकाँ एकेबेर लगा देबइ? तखन कुश्तीक पैतरा केना बुझबै?"

पत्नीक बात सुनि मन हल्लुक भेल। मुदा तेखा-तेखीमे जहिना पत्नी लोहियाएल तहिना लालमणि करियाएल। गांगी-जमुनीक संगम ने सरस्वतीक संग चलैत त्रिवेणियोँ घाट बनबैए। कहैले तँ सभ धारमे पानियेँ छै, मुदा ओ नीक-बेजा बेड़ौल केना जाएत? कोइ काहू मगन कोइ काहू मगन तँ अछिए। बतहपनीक संसारमे जखन सभ बताहे अछि, तखन कोन-बताह कोन कोणसँ बतहपनी करैए सेहो तँ देखए पड़त...। दुनू गोरेकेँ बाँहि पकैड़ बजलौं-

"कौआ कान नेने जाइए से सुनि अपन कान देखबे ने करब आ कौआक पाछू ई मानि दौगए लगब जे हमरे कान छी! तइसँ हएत? आकि ओइ भुतलग्गुकेँ- जेकरा बाँहि पकैड़ घरमे अनलकै, ओकरा पुछबै जे ओकर पैतपाल के करतै, पैत रक्छक के हेतइ?"

लालमणि बुझि गेल। बुझबो केना ने करितए, किछु छै तँ राजनीतिक जिनगी तँ छैहे ने। तखन तँ हौआमे बौआ भेटल सेहो कौआ लऽ कऽ उड़ि गेल अहाँकेँ की बोनढौआ भेटल। एहेन जिनगी तँ लालमणि देखिये चुकल छलि। जइसँ जिनगीक सभ बाट बन्न देखते छलि। मुदा तैयो जीवैक तँ गर चाहबे करी। जे गरे ने देखा पड़इ। ओना किछु मजबूरियो आ किछु सेवोक धियान तँ छैहे जँ से नै छै तँ अपनाकेँ किए समाजसेविका कहबै छैथ, कहेबे टा नै करै छैथ, मञ्चपर अपने बजबो करै छथिन जे 'अहाँक बीच सेविका अछि तँए हुनको बात कनी सुनि लिअ।'

लालमणि अपने फुड़ने बड़बड़ाए लगलि-

"ई छौड़बा भगेसरा जे अछि एकरे किरदानीसँ एहेन घटना[19] होइए। मानि लेलौं जे बाप अपन इज्जत-आवरू धोइ-पोछि कऽ चाटि लेलक, मुदा जे बाँहि पकैड़ औरतकेँ समाजक बीच अनलक ओकरा के देखत?"

लालमणिक बात सुनि मन ठहकल। पुछलिऐ-

"ओ छौड़बा रहैए केतए?"

---

[19] समरथाइक भूत

लालमणि-

"जहिये बम्बई नाओं छेलै तहियेसँ ओतै रहैए। आब तँ सहजे मुम्बैया जिनगी बना नेने अछि।"

पुछलिऐ-

"की जिनगी?"

'की जिनगी' सुनिते लालमणिक मनमे जेना खौंझ उठलै। खौंझाएल बानर जकाँ झपैट बाजल-

"गामक बाप-दादाक मैनजनीक सुख-भोग भेटने जेहेन होइ छै तेहेन जिनगी ते जीविते अछि।"

लालमणिक विचारक कोनो भाँजे ने गरपर चढ़ल जे नीक जकाँ बुझि पैबतौं। ओना एते बुझल अछि जे बिआहसँ पहिनहि भागेसर बम्बई गेल आ तहियेसँ रहैए। मुदा कोन जरूरी अछि जे लुच्चा-लम्पटक पाछू अमूल्य समैकेँ मूल्यहीन बनाबी। जे समय आबि गेल अछि तइमे जँ देहो चोराएब सेहो केहेन हएत आ केते उचित हएत, से तँ देखए पड़त किने...। बजलौं-

"नेताजी, मुखौटी भाषण छोड़ू, जे ई फल्लाँक विचार आ ई फल्लाँक सिद्धान्त छिऐन। जे समस्या अछि तैपर विचार करू आ हुनको विचार सोझामे आनि भजार करैत डेग उठाउ?"

लालमणि पत्नी दिस देखए लगली आ पत्नी लालमणि दिस। जहिना आँखिक पल खसैत-उठैत रहैए तहिना दुनूक नजैर उठए-खसए लगलैन। उठैकाल मनमे उठैन जे मनुखक जिनगी पाबि जँ किछु समाजो-ले नै केलौं तँ जिनगी अकारथ भेल। ऐठाम दुनूक विचार संगे विचरण करैन मुदा कनियेँ आगू बढ़लापर लालमणिक मनमे आबि जाइ जे पुरुख विहीन परिवार अछि! असगर बरसपतियो फुइस। जखन कि पत्नीक मनमे होनि जे जइ परिवारमे पुरुख गारजन छैथ, तइ परिवारसँ आगू बढ़ि किछु बजबो आकि करबो-ले बिनु आदेशे केना डेग बढ़ाएब। तइले तँ समय चाही। तैसंग ईहो मनमे उठैन जे मनुखेक समूह समाजक परिवारो भेल आ समाजो भेल। परिवारेक समूह गामो भेल आ समाजो भेल। दुनूक बीच तँ जीवन-जापन काइए रहलौं अछि। जँ से नै करितौं तँ ठाढ़ केना छी। मुदा लगले मन आगू बढ़ि भुतलग्गु लग पहुँच गेल। तही बीच एकटा बारह-तेहर बर्खक पड़ोसीक बच्चिया भुतछुट्टु बुझि घुमि कऽ आँगन अबै छल। पुछलिऐ-

"बुच्ची, भूत केना भागल?"

कहलक-

"सातम दिन ढोरबा-मंगला दुनू गोरे मुम्बै जेतइ, ओकरे संगे ओहो[20] घरबला लग जाएत।"

❍

तिथि : 07 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या- 3853

[20] भुतलग्गु

उकड़ू समय

मास डेढ़क करीबसँ सहदेव बाबासँ भेँट नै भेने मन उवियाइत रहए। गाम-घरमे होइतो अहिना छइ। अखनो तँ गाम गामे छी मुदा गामे तँ समाजो छीहे। शहर-बजारसँ फराक अछिए। फराको होइक कारण अछि। जे शहर जेते नमहर तइमे तेते दूर-दूरक लोक आबि बसैए जइसँ ने पैछला कोनो इतिहास रहै छै आ ने वर्तमानक कोनो एकरूपते रहै छइ। सबहक अपन-अपन धंधाक काज, अपन-अपन विधि-बेवहार, जइसँ चालि-ढालिमे दूरी भाइये जाइ छइ। मुदा गाम-समाजक से नै अछि। भूतसँ वर्तमान धरिक उचित-उपकारक सम्बन्ध बनल चलि आबि रहल अछि।

लोकमे एहेन धारणा रहिते अछि जे फल्लाँक बाबा हमरा बाबाकेँ बेरपर काज देने रहथिन तँए हमरो उचित बनैए जे फल्लाँकेँ बेरपर ठाढ़ होइऐ। मुदा से सभ नै रहै, जहिना सभकेँ सभसँ भेँट-घाँट भेने देखा-देखी हूबा बढ़ैए तैसंग मनसूबो बढ़िते अछि। ओना गाम-घरमे चौक-चौराहा भेने पहिलुका अपेक्षा भेँट-घाँट हएब असान भऽ गेल अछि मुदा एहनो लोकक कमी तँ नहियेँ अछि जे अनेरे समय नै गमबै छैथ।

सहदेवो बाबा तेहनेमे सँ छैथ। ओना भेँटो-घाँटक केते उपाय अछिए। आनोसँ भेँट भेने जानकारी भेटते अछि, तैसंग नीक-अधला काज भेने सेहो चरचामे एने भेँट होइते अछि। मुदा जे भेँट मुहाँ-मुहीं कुशल-छेम बुझने होइए ओ तँ दोसर नहियेँ होइए। तहूमे जे सहदेव बाबा एक-ने-एक बेर दिनमे जरूर भेँट भऽ जइ छला, डेढ़ मास तिनकासँ नै भेँट भेने मन उवियेबे करत। सहए भेल। ओना नै भेँट हेबाक कारणो चोराएल नहियेँ अछि। समैये उकड़ू भऽ गेल अछि। सभ अपने-अपने व्यस्त भऽ गेल छैथ। ओना उकड़ू समय भेने व्यस्तता बढ़ितो अछि आ घटितो अछि। जे सोभाविको अछिए। एक दिस हाथक काज छीना गेने व्यस्तता कमैए तँ दोसर दिस दोसर काज उपस्थित भेने बढ़ितो अछि। सहदेव बाबासँ भेँट करैले मन एते उविया गेल जे कोनो काजमे नजैर सन्हियेबे ने करए। जाबे मनमे काज नै सन्हियाएत ताबे देहो-हाथ अलसाएले रहत। मनमे भेल जे अनेरे माथमे भेँट करैक बोझ बनल अछि, से नै तँ जा कऽ भेँट कऽ अबयैन। मुदा फेर हुअए जे भेँटो करैक तँ किछु बहाना होइ छै, से कथी बहाना बनाएब। अनेरे भेँट करए जाइ आ पुछि दैथ जे 'केमहर आएल छेलह' तँ की

कहबैन?

ओना समय जेहेन उकड़ू भऽ गेल अछि तेहेनमे काजक बहाना नइ बल्कि बोल-भरोसक जरूरत तँ अछिए। तकले काजो आ तकले बहन्नो तँ अछिए। विदा भेलौं...।

रस्ता कातमे तीन-चारिटा दोकान एकठाम अछि। सहदेव बाबाकेँ दोकानपर देखलयैन। देखते मनमे खुशी भेल जे रस्तेमे बाबा भेट गेला। भेटला तँ मुदा भेँट होइमे समय लागत। किछु कीनए दोकान आएल छैथ। दोकानक हिसाबे भीड़ बेसी। ओही भीड़मे सहदेव बाबा ठाढ़। हुनका ठाढ़ देख मनमे कनी कठाइनो लागल, कठाइन ई लागल- दोकनदार केहेन अछि जे बुढ़ो-बुढ़ानुसक विचार ने करैए। जुआने-जहान जकाँ ठाढ़ केने छैन। मुदा किए केने छैन से तँ ओ जानए। दोकनदारपर सँ तामस घुसैक कऽ धियो-पुतो आ चेतनोपर गेल। कहू जे केहेन धिया-पुता आकि चेतने भऽ गेल अछि जे सभ अपने-ले हाँइ-हाँइ करैए। जेना सबहक पेटमे मूस कुदैत होइ। आखिर सभ उजि-माइल किए करैए। कनी आगू बढ़ि देखलौं तँ दोकनदार डण्डी धेने बेसाह जोखैमे एते तवाह रहए जे पाइयोक हिसाब नै जोड़ि होइ। तैठाम बुधि-विवेकक हिसाब तँ आरो भारी अछि। वेचारा दोकनदारे की करत। ओकरे चावस्सी दी जे नगद कि उधार गामक पैत बँचौने अछि। तहीकाल एक दस-बारह बर्खक बच्चिया दोकनदारकेँ कहलक-

"हमरा राइतो ने भानस भेल, तँए पहिने हमरा दू किलो आँटा दिअ।"

बच्चियाक बात सुनि मन सहैम गेल। हाइ-रे मनुख! दस-बाहर बर्खक बच्चियाक जँ पेट जरत तँ ओ केहेन जननी बनत। मुदा उपाय? सहदेव बाबा आगू दिस घुमल ठाढ़ रहैथ, मुदा मुँहमे बोल नै रहैन आकि पेटमे घुरिया रहल रहैन से तँ ओ जानैथ, मुदा हमरा बुझि पड़ल जे भरिसक बेसौहुआ सबहक संग बाबा अपन बेथा ने तँ विलैह रहला अछि। अनका पेटक आगिक संग अपनो पेटक आगि जनु बाँटि-विलैह रहला अछि।

पाँच किलो चाउर आ सात किलो गहुमक चिक्कस कीनि दुनू झोरा दुनू हाथमे नेने सहदेव बाबा पाछू दिस घुमला कि हमरापर नजैर पड़लैन।

नजैर मिलते दुनू हाथ जोड़ि बजलौं-

"बाबा गोर लगै छी।"

मुदा हुनका मुहसँ किछु ने निकललैन। आगू बढ़ैत निच्चाँ एला। खसल चेहरा देख मन कलैप गेल। ताबे लग आबि गेल छला। ओना बाबामे ई आदत छैन जे चिन्हारकेँ देखते किछु-ने-किछु पुछि दइ छथिन। एहेन मान-रोख मनमे

छैन्हे नइ जे जे टोकत तेकरे टोकबै। स्पष्ट विचार छैन जे झगड़ा ने दन तँ चुन-तमाकुल किए बन्न। भाय, झगड़े जँ अछि तँ झगड़ा किए अछि, ओ तँ जे जीबैए, सहए करत। ने पैछला देखए औत आने ऐगला भोगए औत। तखन तँ भेल जे झगड़ा कथीक। जँ वैचारिक झगड़ा रहत तँ ओ विचारि कऽ विचार करए पड़त, तहिना जँ खेत-पथारक रहत तँ ओकरो अपन सूत्र छै, तहिना जँ अधिकारक अछि तइले संविधानो अछि आ संविधान बनौनिहारो। तखन कोन कारण शेष रहल जइले समाजमे विग्रह बनल रहत।

मनमे भेल जे केना बाबाकेँ कहबैन जे अहींसँ भेँट करए जा रहल छी। एक तँ अपने बेसौहुआ छैथ तैपर भार किए देबैन। मुदा मनक जे उमकी रहए ओ तँ रहबे करए, जे विचार विनिमय भेनहि हटत...।

कहलयैन-

“बाबा अहीं घर दिस जाएब।”

मनमे भेल जे से कहलासँ एते मनमे हेबे करतैन जे रस्ते-रस्ते कुशलो-छेम कऽ लेब आ जइ काजे जाइए से काजो...। ओना अपना तँ बुझले अछि जे जखन कोनो विचारक गुण बाबा पकैड़ लइ छैथ तखन सिरा-भट्ठा बिसैर जाइ छैथ। ओना भट्ठामे गुनक कोन खगता छै, ओ तँ अनेरे पानिक वेगमे भँसियाइत चलत, मुदा सिरा दिस चढ़ने तँ धारक वेग बुझिये पड़ै छइ। गुणियो तँ गुणीए छी, जखने मनमे गुणकेँ रोपि लेत अनेरे ने गुणीसँ गुनी भऽ जाएत। घर दिस विदा होइते कहलयैन-

“बाबा अहाँक दुनू हाथ बरदाएल अछि चलैमे बाधा हएत।”

ओना बाबाक मनमे जे रहल होइन मुदा बजला-

“कोनो बेसी भारी कहाँ अछि, सात किलो आँटा आ पाँच किलो चाउर अछि।”

बाबाक बात सुनि ओना बहुत आश्चर्य नहियेँ भेल, किएक तँ अपने सेहो ओही रमा-कठोलामे छी। मुदा जबरदस आश्चर्य ई भेल जे जे बाबा अपने सभ दिन अन्न बेचै छैथ, आइ ओ कीननिहार भऽ गेल छैथ, मुदा जिनगीसँ तेते प्रेम छैन, तँए दुखे-कि-सुखे जीबए चाहिते छैथ। रस्ता दुआरे आकि की, अपन घर लग तक गामेक चर्च बाबा करैत रहला अपन बात किछु ने बजला। घर लग तक अपन बात किछु ने सुनि भेल जे समय तँ रीब-रीबेमे चलि गेल। बाबा अपन कहाँ किछु कहलैन। जे सोचि आएल छेलौं सहए हेराएल रहि गेल। मुदा सुतरल, सुतरल ई जे घर लग अबिते बाबा बजला-

“बहु दिनसँ भेँट नइ भेल छेलह दरबजेपर चलह किछु आरो गप करैक

अछि। अखैन कि कोनो काज-परोजन अछि, भने किछु समैयो कटि जाएत। समय तँ काजे काटि लेलक, मुदा अपनो तँ ओकरा काटक अछिए। जाबे से नै हएत, ताबे जीब केना पाएब।"

आँगनमे झोरा रखि सहदेव बाबा दरबज्जापर एला। ताबे चाहो आबि गेल। दुनू गोरे चाह पीबए लगलौं। मनमे हुअए जे बाबाकेँ किछु पुछिऐन, मुदा बाबा अपने बजैमे ओझरा गेल रहैथ, जइसँ अपन घरक बाते हेरा जाइन। मुदा गर लगल। बजला-

"बौआ, गामक दूरदिन आबि गेल।"

बाजि कऽ कनीकाल चुप भऽ फेर बजला-

"जखन गामेक दूरदिन आबि गेल, तखन गामक लोक बँचि केना सकैए।"

गामक की दूर्दिन आबि गेल से बुझिये ने पेलौं। मुदा जँ कोनो विचारक कोनो शब्द भरियाएल रहत तँ ओकरा हल केला पछाइते ने आगू नीक होइ छइ।

पुछलयैन-

"बाबा की दुरदिन?"

शब्दकेँ महियबैत बजला-

"दूरदिनमे दू शब्द छै, दूर आ दिन। दूरदिनक एक माने भेल भविसक दिन, आगूक दिन आ दोसर माने दुतकारैबला दिन सेहो भेल।"

बाजि सहदेव बाबा जेना किछु सुनैक जिज्ञासामे चुप भऽ गेला। मनमे हुअए जे केना काटलपर नोन छीटब। माने जे एक तँ सहदेव बाबाक दिन एते घटि गेलैन जे बेचनिहार से कीननिहार भऽ गेला तैपर अन-पानिक चर्च करब नीक थोड़े हएत। मुदा ईहो हुअए जे ई तँ जिनगीक सत् छी, एकरा छोड़बो नीक नहियेँ...।

अही अग-दिगमे मन पड़ल रहल। मुदा जेना अपने मनमे उचरलैन। बजला-

"अपन गाम नाश भऽ गेल।"

'नाश भऽ गेल' तैपर नजरिये ने पहुँच सकल। किसान लेल पानिक की महत अछि आ ओकर दुरूपयोग भेने केते पैघ खतरा सेहो छइ। तइ दिस नजरिये ने गेल। मुदा एते तँ आश्चर्य लगबे कएल जे गामे नाश भऽ गेल, की नाश भेल? पुछलयैन-

"की नाश भेल?"

बजला-

“गाम देने जे कोसी नहरक शाखा अछि, ओ भारी नोकसानदेह बनि गेल अछि। जहिया गाममे नहरक खुनाइक नाओं लेल गेल तहिया भरि दिन देखते-सुनिते, अपन भूत-वर्तमान आ भविसक विचार करैमे दिन बित गेल, तेते मनक आशाक श्रृंग उपकने खुशीसँ हृदए नाचि गेल रहए जे...। मन भेल रहए अपने नै गामोक सुदिन आबि रहल अछि मुदा सुदिन केना कुदिन भऽ गेल।”

बाजि कऽ बाबा जेना ठमैक गेला। बकार बन्न भऽ गेलैन। मुदा अपन जिज्ञासा एते बढ़ि गेल जे अनेरे मुहसँ निकैल गेल-

“जँ सुदिन कुदिन बनि सकैए तँ कुदिनो तँ सुदिन बनियेँ सकैए।”

सहदेव बाबा बजला-

“हँ निसचित बनि सकैए। अपने गामक जे चुहचुही अछि ओ अहिना रहितए। देखते छहक जे नहैरक एहेन बेवस्था अछि जे धानो दहा जाइए आ गहुमो दहा गेल। ऐबेर की कोनो धारक बाढ़ि आएल कि नहरेक पानिसँ दहार भेल!”

कहलयैन-

“हँ से तँ भेल।”

हमरा बातमे बाबाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा जेना हृदैक धड़कन तेज भेलैन। मुँहक सुरखीमे एकाएक खूनक लाली पसरए लगलैन। बिहुसैत बजला-

“बौआ, जाके मतिभ्रम होइ खगेसा, सो कह पच्छिम उगे दिनेशा।”

❍

तिथि : 27 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 1467

अपन मन अपन धन

भोरहरबेमे सुकल भाइकेँ नीन टुटिते मनमे उठलैन, जहियासँ ठेकान अछि तहियासँ जेतबेटा छेलौं तेतबेटा अखनो छी, तैबीच केते साल, केते मास आ केते दिन ससरैत ससैर गेल तेकर ठेकानो कहाँ अछि। ठेकानो केना रहत, जहिना अपने छी तहिना दिनो-राति तँ अछिए। ओहो कहाँ महिना-सालक संग अछि। मुदा ओ ठेकान औत केना? मिडिल स्कूलमे मास्सैव डायरी लिखनाइ सिखौलैन, हाइ स्कूल जाइत-जाइत छुटि गेल, तहियासँ डायरियो ने लिखै छी जे तेकरो देख कऽ ठेकनाएब...।

ओना नीके भेल जे डायरी लिखब छुटि गेल। आब लोककेँ ओते पलखैत छै जे समय निकालि डायरी लिखत। तहूमे ओकर आब उपयोगिते की रहल? नोकरीक वेतन आकि दिनक भत्ताक खर्च लिखियो सकै छी, मुदा उलफी आमदनियोँ आ काजो लिखब नीक थोड़े हएत। जखन लिखबे ने नीक हएत तँ ओहन शीलापटकेँ राखबे केते नीक हएत?

मुदा लगले सुकल भाइक मन घुरि गेलैन। घुरि ई गेलैन- भाइ! सबहक ई दुनियाँ छी, सबहक दिन राति छी, तैसंग कि लोको-वेद नइ छी। मुदा ओ तँ तखने ने हएत जखन लोक-वेदकेँ खोद-बेद करैत रहब। ओना खोदो-बेद असान थोड़े अछि। खोदो जहिना पहाड़सँ समुद्र धरि अछि तहिना ने वेदो अछि। पहाड़क पाथर खुनी आकि गावीस माटि खुनी, घी जकाँ पीघलैत पाथर खुनी आकि झहरैत झरना- बहैत धार खुनी, चाहे ओइसँ बनल समतल भूमि- गंगा-ब्रह्मपुत्रक मैदान- खुनी आकि सभ धारक संगोरल गंगासागरक घाट खुनी, बंगालक खाड़ी खुनी आकि प्रशान्त महासमुद्र खुनी। केते खुनब..! केते खोदब..! ई खुनब आकि खोदब असान थोड़े अछि? आ तइसँ की कम वेदोक थोड़े अछि? एक्के चिकसकेँ दूध-पीठिया बनाबी आकि दलि-पीठिया, चाहे आगिमे पका कऽ लिट्टी बनाबी आकि तेल-घीमे पका पुड़ी-कचौड़ी बनाबी, चाहे रोइटपक्कामे पका रोटी-सोहारी बनाबी- जेकर एकटाकेँ पपरे ने हएत तँ दोसरमे गुद्दे गाइब भऽ पपरे भऽ जाएत। ई तँ भेल तेल-घीमे मुदा तँए कि पानिमे नइ होइए सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना दूध-पिण्ड होइए तहिना पानि-पिण्डसँ लऽ कऽ भक्खो, बगिया धरि होइते अछि...।

..बगियो की वगिया छी, रंग-रंगक बगिया अछि, जेते लोक तेते बगिया ने

अछि। कियो बगूरक गाछ रोपि बगुरवगिया बनबैए तँ कियो फूलक गाछ रोपि फूलवगिया लगबैए तँ कियो फलवगिया लगबैए। मुदा तँए कि ईहो सोझ-साझ अछि। जँ तीनियेँटा रहैत माने बगूर, फूल, फल- तैयो नीक रहैत। सेहो ने अछि, घोदा-घोदे तीनू अछि। जहिना बगूरमे काँट तहिना तहूसँ मोटगर काँट बेलमे आ टाभ नेबोमे अछि। फूल-पात जहिना बगूरमे तहिना पातो आ फूलो सैनीमे अछि, भलेँ बगूरक लस्सा आकि टुस्सा कहै जे तोरासँ नीक छी, मुदा काँट तँ नमहर ऐछे! तइसँ नीक ने सैनी, जेकर काँट छोट छइ। तहिना ने फूलोक अछि जे एकटा धरतीपर फुलाइए तँ दोसर अकासोमे फुलाइते अछि आ तहिना ने फलोक अछि जे एकटा खेने पेट भरैए तँ दोसर पेनौं तँ मन खुशियाइते अछि..! घुमैत-घुमैत घुमन्तूकेँ आकि चलैत-चलैत चलनिहारकेँ जहिना चालि चलिया घुरिया जाइ छै तहिना सुकल भायकेँ सेहो भेलैन। हाथ-पएर बैसल रहितो मन चलए लगलैन। किनौं ठाढ़े ने होइन, मुदा घीचि-तीरि कऽ थीर केलैन। थीर होइते मनमे वेद उपैक गेलैन। उपैकते भेलैन- वेद तँ वेद छी, अक्षर ब्रह्म। मुदा वेदोमे भेद तँ अछिए। जँ से नै अछि, तँ एते रंगक वेद आ एते वेदवेत्ता केना भेला, कि छैथ? भेदो उचिते ने, जेहेन देश तेहेन भेष। जेहेन उपारजन तेहेन भोजन, मुदा उपारजनो तँ प्रकृते अनुकूल, तँए जेहेन भोजन तेहेन जिनगी...। मुदा जखन देश-देशक माटि-पानि, उपजा-वाड़ी रंग-बिरंगक अछि तखन तँ जिनगियो ने सभ रंगक हएत चाहे लाल हुअए कि कारी! आ जखन जिनगी सभ रंगक हएत तँ जीबैक विधो-बेवहार ने सभ रंगक हएत। जखन बीध-बेवहार फर-फराक हएत तखन तँ वेदोमे भेद हेबे करत किने...।

..पड़ले-पड़ल सुकल भाइक मन घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। मनमे उठलैन जे जे बात बुझए चाहै छी से तर पड़ि गेल आ आने-आने ऊपर भऽ गेल! तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जइ चीजक खेती करब तइमे तइ चीजकेँ छोड़ि बाँकी- ओ चाहे उपयोगीए वस्तु किए ने हुअए- सभटा घासे भेल किने। बिना ओकरा हटौने जजात अपन अनुकूल नइ ने हएत। ओ तँ तखने अनुकूल भऽ सकैए जखन दोसर ओकर माटिक शक्ति नइ लइ...। मने-मन भेल- डायरीसँ ठेकान नै पेब सकै छी। एक तँ ओहुना ओ अधखरूआ होइए, दोसर अपने लिखनाइए छोड़ि देलौं। तखन? हँ! दोसर ठेकान आरो भऽ सकैए। ओ अछि छठिहारीक दूध। मुदा ओहो तँ डुमले पोखैरक पानि भेल! छह दिनक बच्चाकेँ की ठेकान रहतै जे छठिक दूध केहेन होइ छै, भलेँ छठम दिन किए ने ओही दूधपर ठाढ़ भेल रहल हुअए। ओहो बेठेकाने अछि। तखन? हँ, तखन तेसरो अछि- पेटक मल आ जन्मक मल। मुदा ओ तँ प्राण छुटैबेर अपन परिचए दइए...।

ओह! ओहूसँ भाँज नै लगत, ओ तँ भविसक भेल। तखन? तखन तँ यएह

ने हएत जे जहियासँ अप्पन ठेकान अछि तहीसँ ठेकना ली। मुदा ओहो तँ बेठेकाने अछि। सभ दिन नवके-नवके भेँट होइत गेल, मुदा एते तँ ऐछे जे जहिया स्कूलमे पिताजी नाओं लिखौलैन तहिया जे गुरुजी उमेरक उमेद करैत पितेक सोझहामे कहलैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

बच्चा रही मन खाली रहए असथिरसँ मनमे पइस गेल। मन बेसी भरलो ने रहए जे उमटाम होइत। खाली रहए घोरि-घोरि पीबए लगलौं। अखनो मोन अछि। मुदा मोनेटा अछि! मोनेटा किए ने रहत? जहिना दिन-राति लोक अष्टयाम-नवाहमे मंत्र जप तँ करैत अछि, मुदा भीतरक रस-रहस्यसँ तँ हटल रहिते अछि, तहिना अपनो हटल रहलौं। एकर माने ई नइ ने भेल जे सटल नै रहलौं। हँ! मनसँ सटल रहलौं कर्मसँ हटल रहलौं, तेतबे ने भेल? आ तेतबे किए भेल, जनकपुरक जनक बाबाक संकल्पित धनुष उठबैक कुबत नै भेल, सएह ने। अयोध्यासँ सजल आएल बरियाती जनकपुरमे नै हेराएल से कि नै बुझल अछि। बुझले अछि। तँए कि दौजी बरियाती रहैथ सेहो ने। मुड़हन रहैथ, जे जनकपुर आबि ने धोखा खेलैन? जँ नइ खेने रहितैथ तँ डोमक घरकेँ किए जनकक सीता बिआहक बरियातीक बास-स्थल बुझितैथ? ओ की कोनो अयोध्यासँ लऽ कऽ आएल रहैथ आकि जनकपुरेक सज-सजिया, हेल-मेल आ विधि-बेवहार देख बुझलैन। जँ बुझल रहितैन तँ...।

जखन कि लोहाक हथियार गज-फीट-इंचक हिसाबसँ पहुँच सकैए आ देवगणक धुपकाठीक सोझ धुआँ समान्य परिवार आ विशेष परिवारक[21] दूरी नै बुझा सकलैन! एके रंग हएत तेतबो ठेकान नै रहलैन! मनुख तँ मनुखे छी। जेतए मिथिलाक अर्थात् जनकपुरक सुग्गो-मेना शास्त्रार्थ करैए, कोइली बाजा बजबैए आ हरिणक संग मजूरो डान्स करैए..! सभ जनकेँ अपन-अपन जिनगी छैन, ओ पूर केहेन बाटे हुअए? उपारजनोकेँ कमाइए बुझल जाइए, मुदा उपारजन आ कमाइ दू भेल। उपारजन भेल नव वस्तुक सृजन आ कमाइ जेकरा बुझै छिऐ ओ कोनो बाटे किए ने आबए, मुदा दुनूमे अन्तर तँ ई ऐछे जे एक पैदाइशी भेल दोसर फेड़-फाड़केँ घुमा-फिरा एक बढ़ब दोसर घटब भेल...। जाबे तक जन-जनकेँ उपारजनक दिशामे नै बढ़ौल जाएत ताबे तक पुरक निरमाण कठिन तँ नै मुदा असम्भव तँ रहबे करत...।

सुकल भाइक मन आगूसँ पाछू घुमलैन। घुमिते अपनापर पड़लैन। अपनापर पड़िते मन तड़ैप कऽ अपन पढ़ाइ दिस बढ़लैन।

पचपन बर्खक सुकल भाइक नजैरपर एक दिस औझुका आड़ि माने

---

[21] यज्ञ-जपक परिवार

पचपन बर्खक जिनगी पड़लैन आ दोसर आड़ि जइ दिन स्कूलमे नाओं लिखौलैन तइ दिनक गुरुजीक ओ वाक्यवाण अखनो हृदैमे गंगाजल जकाँ हेल रहल छैन- 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।'

..मुदा मनो तँ मन छी। बाल मन, सियान मन, चेतन मन, अचेतन मन इत्यादि-इत्यादि हजारो रंगक मन अछि। जहिना रंग तँ रंग भेल, मुदा वेदरंग आकि कुरंग की भेल? भाय! ओहो रंग भेल, नै भेल एहेन प्रश्न नै अछि। हँ, एते भेल जे जइ रंगकेँ रंग बुझै छिऐ से नै भेल, कुरंग भेल, चाहे वेदरंग भेल, मुदा भेल तँ ओहो रंगे। तखन? तखन यएह जे अनेरे दुनियाँमे केतए वौआएब तइसँ नीक जे अपन आँखि अपना देहमे साटि झरिया कोयला मजूरक नाच किए ने नाची।

जहिना सहस्रकेँ खँतिया दहाइ, इकाइमे आनल जाइए तहिना अपनोकेँ खँतिया ली। अखन किसान छी, जे स्कूल-कौलेज छुटला पछाइत भेटल। एक भेल किसानी जिनगी, दोसर भेल विद्यार्थी जीवन। तइसँ पहिने बाल-बोध छेलौं। प्लास्टिकक गेनो गुड़केलौं आ राइफलो छोड़लौं आ बैटो घुमेलौं। ओकरा छोड़ू। भगवान राम चौदह बर्ख बोनमे वौएला, अपनो सभ ओते मानि लिअ...।

..ओना आइक बच्चा चौदह बर्खमे हाइ स्कूल टपि जाइ छैथ, मुदा सुकल भाइकेँ से नै भेलैन। हाइए-स्कूलमे रहैथ। मुदा चौदह बर्ख जँ छोड़ि देब तखन तँ इसथिते बिगैड़ जाएत! बिगैड़ ई जाएत जे केते बर्खक अवस्थामे रामकेँ बोनबास भेलैन आ केते बर्खक अवस्थामे लंकासँ घुमि कऽ एला? मुदा ओ रामायणिक बात भेल, एतए अपन विचार करैक अछि। चौदह बर्ख चाहे बारह बर्ख जँ निच्चासँ छोड़ि देब तखन तँ गुरुजीक ओ बात जे 'जेहेन अपन मन तेहेन अपन धन।' छुटि जाएत, जैपर जिनगीक दिशा ठाढ़ अछि। हम आगू मुहेँ जाएब आकि पाछू मुहेँ, ई तँ हमरे देखैक वस्तु छी। जइ दिन गुरुजी कहलैन ओइ दिन ओ सूत्र-वाक्य संगीत बनि सुतिया गेल। आइयो ओहिना अछि। मुदा ओइ दिनसँ आइमे एते अन्तर तँ आबिये गेल जे- मनुखकेँ अपन मन-मनुक हिसाबे मुनिक दिशाक बोध होइ। यएह छी मिथिला दर्शन जइसँ अपन उपारजित जिनगी बनबैत, मृत्युक मुहसँ बँचबैत, हँसैत आनन्द लोक पहुँचबैत...।

लगले सुकल भाइक मन डोलि कऽ पत्नी दिस पहुँच गेलैन। ओछाइन छोड़ि उठि कऽ बैसैत पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन-

"केतए गेलौं, एमहर आउ?"

मुदा फुलटुस्सियोकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना उत्तर देलखिन-

"भोरे-भोरे लोक भगवानक नाओं लइए आ अहाँ हमरा सोर पाड़ै छी।"

सुकल भाइकेँ पत्नीक बोल कटलकैन नै आमक चोभ जकाँ बुझि पड़लैन! मुस्कियाइत बजला-

"हम की कोनो तुलसी बाबा छी जे सरजू नदीक तटपर तीन आँगुरक कोपिन पहीरि घर-परिवार छोड़ि मिथिला दर्शन करए जाए पड़त। सद्यः मिथिलामे छीहे। मुदा छोड़ू ई सब बात, एकटा हिसाब दुनू गोरे फरिछा लिअ।"

सुकल भाइक बात सुनि फुलटुस्सी भौजी सहैम गेली। सहैम ई गेली जे दुनू ओहेन खेलाड़ी छी, जैठाम नीक-अधला कटम-कटा होइत चलैए तैठाम हिसाबे की पछुआएल अछि जे फरिछाएब...।

बजली-

"जे अहाँ दिस हमर बढ़ल से हम छोड़लौं आ अहूँक जे आएल से ओही तरे छुटल। चाह बनबै छी, पीब कऽ भक्क खोलैत आगू दुनियाँ देखयौ।"

❍

तिथि : 3 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1532

पसेनाक धरम

जहिना अंग्रेजक जून मास काल्हि समाप्त भेल तहिना अपन जेठ मास सेहो ओरानीपर आबि गेल।

पैछला साल जे दुर्गापूजामे हथिया नक्षत्रक बर्खा भेल, तहियासँ एको बून पानि मेघसँ नै खसल। ओना मघाइर बर्खा भेने जाड़ो किछु बेसियाइये जाइए, मुदा सेहो नहियेँ बेसियाएल। तइसँ जाड़क दुख तँ कनी कमबे कएल मुदा रब्बी-राइकेँ लाही चाटि गेल!

हथियाक पछाइत आठ माससँ अकास धरतीकेँ सरकारी राशन जकाँ पानि बन्न कऽ देलक। जइसँ रंग-रंगक विचार धरतीपर उठऽ लगल। कियो बजैत जे रौदी हएत, तँ कियो कहैत आगूसँ रौदी भेने थोड़े रौदी हएत आ जँ पाछूसँ मेघ फाटि बर्खो हुअए आ बाढ़ियो आबए तखन रौदी कहबै आकि दाही? तहिना कियो ईहो कहैत जे कालियो दास अखाढ़सँ बर्खा-मेघक आगमन मानै छैथ तखन रौदी केना भेल?

मुदा तेतबे थोड़े अछि, केम्हरो कमला पूजा तँ केम्हरो पानिक यज्ञ[22] तँ केम्हरो रौदी भगबैले रामधुन-अष्टयाम-नवाह तँ केम्हरो मनुखदेवा गहवरमे पूजो अनधुन हुअ लगल।

जे भेल कि नइ भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हथियाक बरिसल, माघक गुजरल फागुनक मोजर[23] रौद आ पछिया हवामे तेना झड़कल जे आमे अलोपित भऽ गेल।

चारि बजे भोरेसँ शिवपूजन काका काजमे लगता तँए साढ़े तीनियेँ बजे नीन तोड़ि उठि, प्रभात कर्मसँ निवृत होइत चाह बना पीब घड़ीपर नजैर देलैन तँ चारि बजैत देखलैन। पत्नीकेँ सोर ऐ दुआरे पाड़लैन जे ओ जगि कऽ तैयार भेल छैथ कि नइ, मुदा सुगियो काकी पतिक कोठरीक खट-खुटक अवाज सुनि तैयार भऽ गेल छेली। तैयारो केना ने होइतैथ, काल्हि साँझूए पहर तीनू गोरे[24] एकठाम बैस विचारि नेने छला जे पराते बीघो भरि खेतक चास लगाएब।

---

[22] बर्खा होइबला यज्ञ

[23]आमक मोजर

[2424] पिता– शिवपूजन, बेटा– सोनेलाल आ पत्नी सुगिया

गोरहा खेत छी ओतबो जँ सम्हरि कऽ उपैज जाइए तँ बुतातक साल-माल लगिए जाइए। तहूमे कि आब लोक पहिलुका जकाँ दुनू साँझ भात खाइए, एकसंझू भेने अदहे साल ने भेल। जेठ अखाढ़क सीमा परहक समय छी, माघ मास थोड़े छी जे लोक आठ बजेक पछाइत काज दिस ताकत। अखैन तँ चारि बजे भोरेमे फरीच हुअ लगै छइ। काजक अनुकूल समय तँ बनियेँ जाइ छइ। तहूमे काजो नमहर अछिए। बीघा भरिक चास। एक दिस पहिने खेत पटत, तखन कदबा हएत तहिना दोसर दिस बीआ उखाड़ल जाएत, तखन ने कदबाक पछाइत रोपल जाएत। जेरगर जनकेँ जोड़ियबैयोमे समय लगिते अछि।

तेतबे किए! दमकलसँ पटौल जाएत, ट्रेक्टरसँ जोतल जाएत, दुनू लोहे-लक्कठ भेल, जँ कोनो पाट-पुर्जा गड़बड़ेतै तँ काजे रूकि जाएत।

ओना सुगिया काकीकेँ बूझल रहैन जे अँगनाक काज पुतोहुक हाथे अपने सम्हारऽ पड़त। तेतबे नइ जँ कहीं पुरुख-पातर खेतेक काजमे ओझरा जेता तँ पानि-जलखै सेहो खेत पहुँचबऽ पड़त। तँए भोरेसँ जलखै-खेनाइक ओरियानक पाछू जारैन-काठीक व्योँत-बाँत मने-मन सुगिया काकी करिते रहैथ तखने शिवपूजन काका पुछलखिन-

“बौआ उठल? चारि बजि गेल। घटही गाड़ी जकाँ जँ शुरूएमे लेट भेल तँ टीशने-टीशन लेट होइते जाएत।”

भिनसुरका समय तँए सुगिया काकीकेँ पतिक बोल नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, कौआ जकाँ थोड़े पति बाजल रहैन, काग जकाँ कुचड़ल रहैन किने। मुदा काजक मोड़पर तेना सुगिया काकी पड़ि गेली जे किछु करैत किछु ने बनै छेलैन। मोड़ ई जे सोनेलाल खा-पी कऽ नबे बजे रातिमे पितासँ छिप कऽ ऑरकेस्ट्रा देखए चलि गेल छल जे पौने चारि बजे आपस आबि ओछाइनपर पड़ले छल कि उठबैक आदेश पतिक भेलैन। ओना सुगिया काकीक अपनो मन घिरनी जकाँ नचैत जे चारि बजेमे दमकल चलत तखन ने कदबा बेरमे कदबा हएत आ रोपै बेरमे खेत रोपाएत। कहुना-कहुना तँ सात-आठ घन्टा खेत पटैमे लगत। एक तँ गोलगर खेत तैपर जेठुआ जरल सेहो अछि। तहूमे कि फूलक छीच्चा छी, आ कि तीमन-तरकारीक जैड़पनियाँ छी, कदबाक पटौनी छी किने, जइमे कहुना तँ भरि घुट्ठी पानि लगौल जाएत। तँए ओहो समय खिंचबे करत।

पत्नीक उत्तर नहि पाबि शिवपूजन काका कनी कड़ैक कऽ दोहरबैत बजला-

“की कहलौं, नइ सुनलिऐ?”

पतिक दहकैत अवाज सुनि सुगिया काकीक नजैर नचलैन। नचिते मनमे एलैन, एक दिस पति परिवारेक नीक-ले आफन तोड़ि रहला अछि, दोसर दिस ई

छौड़बा किए भरि राति जागि कऽ गमा लेलक..!

..आब ओ सूतत आकि जगि कऽ काज सम्हारत। अखैन जे ओकरा उठबऽ जेबै तँ ढोँढ़ साँप जकाँ फुफकार छोड़त..! जँ नइ उठेबै तँ अपने आरो बेसी दहकता! ऐ परिस्थितिसँ निबटब केना..? परिस्थितिसँ वैचारिक दौड़मे निपटियो सकै छी मुदा काजक जे जाल पसैर गेल अछि, माने रोपनिहारकेँ कहि देने छिऐ, जे अपन समांगक गलतीसँ ओकर काज बाधित हेतै! कहुना छी तँ पेट-बोनियाँ छी, भरि दिन थाल-पानिमे लेटाएत तखन जा कऽ बाल-बच्चाक संग दुनू साँझ खाएत। अपनो परिवारमे जेते जोड़ि-बन्हन कऽ नेने छी, माने दमकल चलैक ओरियान, खेत जोतैक ओरियानक संग जलखै-चाहक ओरियान, ओहो तँ राइए-छीती भऽ जाएत..!

..मने-मन साहस बटोरि सुगिया काकी सोनेलालक कोठरीक मुँह लग जा ठाढ़ भेली। केबाड़ बन्न रहने बाहरेसँ बजली-

"बौआ, बौआ सोनेलाल?"

कनी पहिने सूतल सोनेलालक मोनमे ओहिना ऑरकेस्ट्राक सीनो सभ आ गीतो-नाद नचिते रहै जइसँ नीन गहराएलो नहियेँ छेलइ। मुदा माइक बोलकेँ अनसुन करैत सोनेलाल हँ-हूँ किछु बजबे ने कएल। जइसँ सुगिया काकी केबाड़ लग ठाढ़ छेली। ने आगू ससैर पति लग जाइक साहस होइ छेलैन आ ने बेटाकेँ जोरसँ दबारि उठबैक साहस होइन। एक तँ ओहुना भोरुका समय छी, शीताएलमे केतौ अगियाएल दौड़ै...।

..शिवपूजन काका पत्नीकेँ कहला पछाइत, पत्नीएपर नजैर रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे काजक दौड़मे जँ काजक सूत्र मनसँ ससैर जाएत तखन तँ काजो ओही लाथे ससरऽ लगत। जइसँ काज या तँ भरियाएत या ओझराएत। पत्नीक क्रिया-कलाप देख शिवपूजन कक्काक मन ठमैक गेलैन। जैठाम ठमकलैन तहीठाम ठाढ़ सेहो भऽ गेलैन। तँए मिसियो भरि आगू-पाछू नइ डोललैन। असथिर भेल दरबज्जाक मुँह लग ठाढ़ भेल पत्नीपर आँखि गरौने रहलैथ। मुदा नजैर घुमि कऽ काजक बीच सीमानपर आबि अँटैक गेलैन। अँटैक गेलैन ई जे कियो पसेना चुबा श्रम करैए आ कियो श्रमसँ छिटैक श्रमचोर बनि जाइए जे मेहनतक पसेनाक धरम नै बुझि, श्रमहीन बनि जाइए। एना किए एक्के मनक दुनू क्रिया भऽ जाइए? क्रिया तँ कर्मक अनुकूल चलैत अछि, कर्म चलैत अछि विचारानुकूल, आ विचार चलैत अछि धर्म-धारणक अनुकूल। माने जे जेहेन जिनगीकेँ धरम बुझि धारण करैए...।

..मुदा लगले मन नाचि गेलैन जे पसेनाक धरम की? जहिना एक-बट्टी, दू-बट्टी, तीन-बट्टी, चरि-बट्टी, पँच-बट्टी लग पहुँच अपन जीवन यात्राक पथ जखन

कियो देखए लगैए तखने ने देखैए जे पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए। से कहाँ सोनेलालमे देख पाबि रहल छी? धिया-पुता जकाँ जेना कोनो धनियेँ-ढेकार ने छै, तहिना बुझि रहल अछि! जीबैले जीबैक उपाय सेहो तँ करए पड़ै छइ। से कहाँ देखैमे आबि रहल अछि..!

विचारैत-विचारैत शिवपूजन कक्काक मन अपन औझुका काजमे ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे जे गर्भे नाश भऽ जाएत ओकर जिनगीक आशा केते कएल जाए सकैए। फेर मन घुमलैन, जून मासक अन्त भऽ गेल, जइ बीआकेँ बीस-पचीस दिनक बीच रोपैक छल, ओ अदहा मइमे छीटने छेलौं, जेकरा आइ डेढ़ माससँ बेसी भऽ गेल, जे समय ओकर वृद्धिक छेलै, तइमे अदहा समय ओहिना चलि गेल। जाइक कारण भेल बर्खाक आशा-आशी देखब।

जहिना शिवपूजन काका दरबज्जाक मुँहपर ठाढ़ भेल घड़ी दिस देख-देख निराश भऽ रहल छला, तहिना सुगिया काकी सूतल बेटाकेँ देख-देख उतरीत भऽ रहल छेली। मुदा दुनूक मनक प्रश्न अन-उतरीत छेलैन। उतरीत तँ केला पछाइत भेलापर होइ छइ। निराशमे आस भरैत शिवपूजन काका सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

“सोनेलाल सुतले अछि! चारि बजि गेल! अखैन जँ ओकरा चरिया कऽ नइ उठाएब तँ ओ सुतले रहि जाएत।”

अपन मनक बात खोलैत सुगिया काकी बजली-

“भरि राति अरकेस्ट्रा देखै छेलै, अखैन जँ उठेबो करबै तँ काजमे भकुआएले रहत।”

‘ऑरकेस्ट्रा’क नाओं सुनि शिवपूजन कक्काक मनमे उठलैन, अखन तँ खेती-बाड़ीक समय छी, कोनो उत्सवक समय तँ नहियेँ छी, अखुनका उत्सव तँ सभसँ पैघ खेती-बाड़ीक भेल। तहूमे काल्हि साँझूए पहर काजक सभ व्योँत लगा नेने छेलौं, तखन किए एना केलक। बजला-

“जखन औ काजक सभ व्योँत बूझल छेलै, तखन किए देखऽ गेल। जँ गेबो कएल तँ घन्टा-दू-घन्टा देखैत आ आबि कऽ सुति रहैत, जइसँ काजमे बिथुत नइ होइतै।”

मुदा सुगिया काकी चुपचाप पतिक बोल बेटा निविते सुनि रहल छेली। कोनो उत्तर नै छेलैन। छेलैन सिरिफ एतबे जे आँखिक ज्योति झूकल छेलैन।

❍

तिथि : 16 मार्च 2015, शब्द संख्या : 1263

मधुमाछी

जेठ मासक चिलचिलाइत रौदमे छिलमिलाइत मधुमाछीक समूह तरसैत-तलपैत रानीमाछी लग जाए रहल अछि।

सौनक सुहावन आ आसिनक मनभावन समैक विपरीत मास अछिए। ओना माघक गुज्जर, फागुनक मोजर, चैतक टिकुला आ बैशाखक कोषा पाबि जहिना गुलाबखासो, बम्बैयो आ सिनुरियो आम अपन कड़कड़ाइत जुआनीमे रंग-रूप-रस भरैक फेड़मे रहैए तहिना जमुनियाँ जामुनसँ गुलजामुन धरि करियाएल-ललियाएल रंगसँ सेहो अपन मुहोँ-कान आ देहो-दशा रंगि-रंगा रस-रसा गेले अछि। तँए कि पोखैर-झाँखैर अपन दिन-दुनियाँ-ले मत्थाहाथ दऽ नहि झखि-झखि झमान होएत सेहो बात तँ नहियेँ अछि। आसिनक आस पैबते जे पोखैर-झाँखैर भादोमे जलजलौ होइत जाठि-सँ-घाट धरि समगम बनि घाटक शोभा-सुन्दरसँ पवित्र नहान-घाट त्रिवेणी बनैत रहल, से आब अपन हहरैत जिनगीसँ खसैत-खसैत मुर्दघाट बनि बालुक तर पड़ि हेराएल जा रहल अछि। तहिना अथाहमे गड़ल जाठिक दशा सेहो बिगड़ले अछि। जे जाठि जौमुठिसँ संलग्न लबालब रहै छल से आइ धुर दसेक आँट-पेटक काद-कादोमे सिमैट गेल अछि आ आरो सिमटल जा रहल अछि..! सोभाविक अछि जे जे पानि अपने कानि रहल अछि ओ केना मनुखसँ माछी धरिक पेय भऽ सकैए। जे वसन्ती-गुलाब वसन्ती-रस पीब चमैक उठल छल, चमकैत रहै छल, आइ ओकर एहेन दिन भऽ गेल जे अपने रस विहीन भेल असोथकित अछि। माने ई जे माटिक बेरसतासँ गाछक अपन अंग-अंग बेरस होइत-होइत फूल-कोढ़ी धरि एहेन बेरस बनि गेल जे..!

जेकर अपने मुँह-ठोर झड़ैक-झड़ैक झूड़ भेल छै, ओ केना मधुमाछीकेँ रस दऽ सकैए!

दिन भरिक थाकल-ठेहियाएल माछीक समूह एक राय बना- रानीमाछी लग पहुँच अपन निवेदन निवेदित करैत बाजल-

"काल नहि महाकाल, महाकाल नहि दुरकाल, दुरकालो नहि अकालक स्थितिमे पड़ि गेल छी! फूलक रस संचय करैत मधुरस बनबै-सिरजै छेलौं, रौदकल्लामे पड़ि कर्तव्यहीन भऽ रहल छी, तँए..?"

मधुमाछीक चिन्त्य मनक बेथासँ रानीमाछीकेँ चिन्तासँ चिन्तित केलक। चिन्तित होइते रानीमाछीकेँ चिन्तन चेतन जगौलक। जगिते चेतन मन बिचड़ऽ लगल। बाजल किछु नहि पुछलक-

“आरो किछु कहैक छह?”

आने समूह जकाँ मधुमाछियो एक-मुहरी छल, मुदा हवाक विषयमे चर्च करब छुटि गेल छेलै तँए ओ[25] अर्जीसँ फर्जी रहल। मुदा से भेल नहि। समूहेक एकटा माछी तनल। ओना समूहो ओकरा बातपर प्रतिरोध ठाढ़ नइ केलक मुदा एते चेतावनी तँ दाइए देलकै जे ‘चर्चमे आएल प्रश्न दोहरौल नइ जाए।’ ओना ओकर प्रश्न उठबैक कारण भेल जे जखन माछीक समूह ‘सबजन विचार’ बनबै छल तखन ओइ माछीक मन विर्ड़ोमे उड़ल विचारमे डुमि गेल छेलइ। भेल ई छेलै जे फुट-फुट सभ माछी चरौर करए गेल रहए, तहीकाल भुरकी जकाँ हवामे भूर भेल जइसँ विर्ड़ो जकाँ उठल, जे सुरकुनियाँ मारि अकासमे पहुँच गेल, ओही विर्ड़ोमे वेचारी माछी पड़ि गेल छल। जे बात मनमे उठलै। बाजल-

“जखन हवा तक संग दइले नइ अछि, सदिकाल विष-वर्षन करैए, तखन केना जीब आ अपन काजक पुरौनी केना करब?”

ओना रानीमाछी समूहक बेथा-कथा सुनलक मुदा बाजल किछु ने। बाजल एतबे-

“विचारल जाएत।”

विचारपर अपनो सहमैत मधुमाछीक समूह देलक। तत्काल सभ शान्त भऽ गेल। शान्तो केना ने होइत, कोनो कि गाम-गामक जत्था-जुलूस थोड़े छेलै जे राजधानी घेरऽ गेल छल, एक्केठाम छत्ताक समूह छै जइमे सभ बास करैए। मुदा रानीमाछी अपन परिवार, धन- सम्पैतक रक्षाक उपाय नइ करत तँ वंशो नाश हेतै आ सम्पैतोक क्षय हेतइ, तही डरसँ किछु विचारि काजो करब तँ छइहे।

सखी-सहेलीक बीच रानीमाछी भरमए लगल। पहिने अपन सखी सबहक बीच बिचड़ल। सखी भेल जे जे माछी मधु बनबैत आ सहेली ओ भेल जे भ्रमण करैत रस चूसि-चूसि पीबैत मुदा मधु संचय नहि करैत।

जइसँ मधुमाछीक शकल-सूरत रहितो विष-वमनेटा करैए संगे मधुमाछीकेँ कलंकित सेहो करैए। मुदा तैयो रानीमाछी ओकरा बिढ़नी-माछीक श्रेणीमे रखितो संगे रखिते अछि।

तँए कि ओ रानीमाछीक रक्षक नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि। ओकरे

---

[25] हवा

चलैत छत्तोक रक्षा होइ छै आ माछियोक। नइ तँ तेहेन बीजकाठी लोक भऽ गेल अछि जे मधुक संग माछियोकेँ उला-पका कऽ खा जाएत।

रानीमाछी अपन सखी सबहक बैसार कऽ बैसकमे प्रस्ताव रखलक-

"हम सभ केना जीब, जइसँ धरतीपर अपन वंशो रहत आ मधुसँ जनसेवो जीबित रहत।"

बुढ़-पुरान मधुमाछी रानीमाछीक संग बैसार करऽ लगल आ जुआन-जहान आन-आन माछीक संग। एकसँ एक योद्धाक बीच बैसार गरमा-गरमीक संग शुरू भेल। एकटा माछी बाजल-

"राजाकेँ राजक फीकिर रहै छै रानीकेँ किए ने रहतै।"

कहि वेचारा चुप भऽ गेल। आगू किछु बजबे ने कएल जइसँ समूहक बीच प्रश्न-पर-प्रश्न लदा गेल। भाय, राजा-रानीमे कि फरक छै, राजाक पत्नी जीबितमे रानी भेल आ मुइला पछाइत माने विधवा भेला पछाइत राजा। मुदा से भेल नहि, पहिल प्रश्न उठा प्रश्नकर्ता चुप भऽ गेल छल। चुप कि ओहिना भेल आकि अपन विचार पुरा कऽ भेल। समूहमे सभ रंगक माछी रहबे करए। पहिल प्रश्नक समर्थनमे दोसर बाजल-

"हँ केहेन बढ़ियाँ तँ प्रश्न अछि। प्रश्नकर्ता अपन मनक वेग नइ बहौत तँ अनका वेगे काज चलतै। सुनिनिहार सुनलक कि नइ सुनलक, आकि सुनि कऽ अनठौलक तेकर दोखी प्रश्नकर्ता थोड़े भेल!"

एक तँ ओहिना दोसराक बले बल अबै छै, तैपर विचारक संगबे तँ आरो रंग पकड़ा देलकै। प्रश्नपर विवाद उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। भाय, बैसार छिऐ, एके आदमी घरक विचार अपना विचारे अपन जीवन-मरण देखैत करैए, मुदा वएह जखन कोनो समाजिक बैसारमे जाइए तखन ओ समूह बनि समस्याक समूल तकैए। जाबे समूल नइ भेटत ताबे जे किछु विचार हएत ओइमे कचड़ा रहबे करत...।

देखते-देखते बैसारमे घोल-फचक्का शुरू भेल। ने केकरो बात कियो सुनिनिहार रहल आ ने एको मुँह चुप रहल। सभ अपने सूरे अनधुन बजैत। कियो सुरसा जकाँ सुरसुराइत तँ कियो गबदी मारि खुरखुराइत। सभ अपन-अपन ताकक तकिया बना घरक ताख दिस नजैर गड़ौने। मुदा बैसारो कि बैसार भेल, महादेवक बरियाती जकाँ सभ रंगक माछी बैसने देव-दानव एकत्रित भेल। देव मन्दिरमे जहिना हजारो-लाखो-करोड़ो अपन-अपन बेथा ऐ आशासँ कहैत जे सुफल पएब, तहिना।

सभकेँ अपन जिनगी अपन भविस छइ। सामंजस करैत एकटा अधवेसू

बिढ़नी माछी बाजल-

“भाय, सभकेँ अपन-अपन ढोलो आ घेघो अपना-अपना गरदेनमे लटकल छह, केकर के सम्हारबहक! तँए सभ मीलि एहेन बाट बनाबह जइसँ सभ बटोही बनि बटगवनी गबैत अपना घरवारमे शान्त-चित्त जीबैत रही।”

तेसर माछीक ऐ विचारसँ गुलगुलाइत शोर शान्त दिसक बाट पकड़लक। मुदा बीच-बीचमे तैयो ओहिना उठि जाइ जहिना झगड़ाक पछाइत गारि-गरौबैल होइ छइ। भाय, गारि-गरौबैल चलैत मारि-मरौबैल भेल, मारि-मरौबैल भेला पछाइत फरिछा गेल। जे जेरगर छेलह से पटका मारलह। मुदा जे गारि-गरौबैलक पाछू पड़ि गेल तेकरा छत्तामे किए खोंचारै छहक आकि गोला मारै छहक। मुदा से भेल। गुलगुली गुणगुणी दिस बढ़ल। सभ अपन-अपन बेथा-कथा अपने-अपने गुणऽ लगल। मुदा ओझरी तेहेन रहै जे सोझरेबे ने करै, जइसँ गुण-गुणी कखनो-कखनो गुलगुली दिस बढ़ि जाइ तँ कखनो-कखनो सुनसुनी दिस। पोखैरक पानि जकाँ थीर होइत अवाज देख चारिम माछी बाजल-

“भाय, ओना ओझरी नइ छुटतौ। छुछुनरिक मंत्र जकाँ उनटा गिनती करए पड़तौ।”

कहि चुप भऽ गेल। मुदा तेकर असैर भेल। भेल ई जे अधिजन ओहने रहै जेकरा साए तक गनऽ अबै। मुदा अभ्यास नइ रहने थोड़े-थोड़े धकमकेबो करइ। किछुकेँ जे अभ्यास रहै ओ दुनू हाथे थोपड़ी बजा देलक। जेकरा साए तक गनल अबै ओ सहजे कनी धकचुका गेल मुदा जेकरा साफे नइ गनऽ अबै, ओ रामधुन जकाँ थोपड़ी बजबए लगल। मुदा चारिम माछी जे बाजल छल ‘छुछुनरिक मंत्र’ ओकरा बुझैमे अपने धकमकी आबि गेलै जे थोपड़ीकेँ तँ दू-दिसिया मुँह होइ छै! नीको काजकेँ लोक थोपड़ीक संग सुआगत करैए आ अधलोक संग सेहो थोपड़ी बजा खिल्ली उड़बैए! विचारमे विचड़न करैत चारिम माछीक रंग-रूप देख पहिल माछी, जेकर पहिल सबाल छेलै, वएह समैक किल्लतक दोख लगबैत बाजल-

“भाय, दुखे कि सुखे मुदा भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल सभ छह, सुतै बेर भऽ गेल तँए सुतनहि सभ दुख बिसरबह। ऐगला दिनक आगूक विचार करैक समय राखह।”

पहिल माछीक बात सुनि बेदम भेल मुरजन माछी सभ साँस छोड़लक। हरे-हरे कऽ बैसारसँ उठि सभ अपन-अपन शयनकक्ष दिस विदा भेल। सभ अपन-अपन हन्नामे पहुँच मनमना गेल मुदा तीनटा माछी नै मनमनाएल। अपन-अपन हन्ना छोड़ि तीनू निकलल। निकलबो केना ने करैत, जेठ मासक जरनी काजेटा नइ ने जरबै छै, पेटो जरबै छै आ सुतनियोँ जरबै छइ। जहिना बाट-घाटमे नवको यात्री आ पुरनो यात्रीक आ संगियोँ साथीक भेँट होइत तहिना

तीनूक भेल। परिचय होइते तीन मन एकठाम ओहिना भेल जहिना बरियातीकेँ होइत। बरियातीमे जहिना बाघ-बकरी एके घाट नहाइत तहिना तीनू एकठाम बैस अपन जीवन-लीलाक चर्च शुरू केलक। पहिल बाजल-

"जखन मरैयेक बेर आबि गेल तखन मछही तराजूपर जे जोखाइत रहब तइसँ नीक ने जे सोना-चानीक तुलापर तौलाइ?"

दोसर-तेसर बाजल किछु ने, बजबो केना करैत अगुतेलहा पंच थोड़े छल जे पहिनहि बाजि दैत जे 'बुझि गेलियह बुझि गेलियह, तोहर मनक बात बुझि गेलियह।' तेतबे नइ रहै, मनमे ईहो उठैत रहै जे केहनो दुख आकि बिपैत किए ने हुअए दोसर-तेसरक बीच बजने ओकर भार कमऽ लगै छै, आ कमैत-कमैत ओइठाम पहुँच जाइ छै जैठाम मानव-जनित दुख आ दैव-जनित दुखक सीमा पकड़ा जाइ छइ। तँए जे प्रश्न प्रश्नकर्ताक अछि ओइ प्रश्नक निदान सेहो ओकरा मनमे हेतइ। भलेँ ओ नइ बाजि पबैत हुअए।

किछु काल चुप रहला पछाइत दोसर माछी बाजल-

"भाय, तोहर विचार कनी-मनी बुझि पेलियह, कनी-मनी नइ बुझि पेलियह।"

'कनी-मनी बुझि पेलियह' सुनि पहिल माछीकेँ सवुर भेलइ। ओना सोलहन्नी सवुर नइ भेल, मुदा किछु तँ भेबे कएल। सवुर होइते मन विचड़ए लगलै। मनमे उठलै जे भरिसक भाषा दुआरे नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। तँए जँ सोझ-मतिया सोझ-बतियामे कहबै तँ नीक जकाँ बुझि जाएत। बाजल-

"भाय देखहक, अपना सभ तँ सहजे माछीक श्रेणीमे छी, बुझिते छहक जे एकटा माछी ओहन होइए जे गाछपर रहैए, एकटा ओहन होइए जे तीसी फूलपर बास करैए, एकटा ओहन होइए जे गंदगीमे लेपटाएल रहैए, आ एकटा अपना सभ छह जे मौध सन अमृत बनबै छी मुदा कहबै छी माछीए।"

पहिल माछीक विचार सुनि दोसर माछीक मनमे जेना उपाय उपकलै तहिना बाजल-

"भाय, देखा-देखी संसार चलै छै, अपना सभ तँ सहजे माछी छी आ जे देश-दुनियाँक जनगण-ले अमृते पैदा नहि स्वर्णमय संसार बनबैक शक्ति सेहो रखने अछि ओकरो तँ माछीए बुझल जाइ छइ।"

दुनूक विचार सुनि तेसर माछी बाजल-

"देखह भाय, ई बात मानि गेलियह जे देखा-देखी संसार चलै छै, मुदा संसार तँ बहुरंगी अछि, तइमे तूँ केकर देखसी करबह से ते तोरे ने विचारऽ पड़तह?"

तेसर माछीक विचार सुनि पहिल-दोसरकेँ जेना झकझोड़ि देलक, तहिना दुनू एकेबेर मुँह खोलि बाजल जइसँ कियो सुनिनिहारे ने भेल। केकर के सुनत।

दुनू दिससँ विचार तेना उठल जे सबहक कानमे विचारक बदला झड़े पड़ल। तेसर बाजल-

"एना जे सभ बजबे करबह तँ कहबहक केकरा आ सुनतह के? घेघ छल तोरा उछटि गेल मोरा! अपन-अपन गरदेनक घेघ अपने सम्हारने हेतह।"

तेसर माछीक बात सुनि दुनू माछीक मुँह बन्न भेल। मुदा जहिना तेसर अपन विचारपर विराम देलक तहिना पहिल आ दोसर सेहो देलक। जइसँ गुमा-गुमी, चुपा-चुपी पसरल।

मुदा किछु कालक पछाइत पहिल माछी गुमा-गुमी, चुपा-चुपी तोड़ैत बाजल-

"एना जे चुपा-चुपी, धुपा-धुपी करबह तखन एकठाम बैसलह किए?"

पहिल माछीक विचारकेँ दोसर टीपलक-

"भाय, तूँ तँ एक नम्बरमे छह तँए पहिने तोहीं अपन विचार बाजह।"

बोलेसँ विचारो आ दिशो अबै छइ। मुदा फरिछाएल मन पहिलक तँए बिनु बिलमेने बाजल-

"भाय, सभकेँ अपन-अपन जिनगी-ले अपन-अपन काज स्वतंत्र करए पड़तह, तखने अपन स्वतंत्र बुधि स्वतंत्र काज दिस बढ़तह। जखने स्वतंत्र काजक संग स्वतंत्र विचार चलऽ लगतह तखने जिनगीक मर्म बुझबहक।"

पहिलक विचार सुनि दोसर एते गम्भीर भऽ विचारए लगल जे बकारे बन्न भऽ गेलइ। मुदा तेसरकेँ जेना नीन आबऽ लगलै तहिना हफुआइत बाजल-

"भाय, आब सुतैबेर भऽ गेल, काल्हि-ले ऐगला विचार राखह।"

तेसरक बात सुनि दोसरक धियान खुजलै। खुजिते बाजल-

"एना जे कोनो चीज विचारै काल ओंघी लगतह, तखन तँ ई आशा तोड़ि लएह जे ऐ बेटासँ पोता हएत!"

दोसरक बात जेना तेसरकेँ कबौछ जकाँ लगलै, तहिना लोहछैत बाजल-

"तूँ केना बुझै छहक जे हमरा ओंघी लागल अछि?"

सामंजस करैत पहिल बाजल-

"भाय, तोरा के कहै छह जे ओंघी लागल छह।"

तेसर बाजल-

“सुनलहक नइ?”

पहिल-

“ओ अपना मने कहलकह। तीन गोरे जखन ऐठाम छी तखन तीनूक ने एक मन हएत जइसँ तीनू तीन मन भारी हएब।”

तेसर माछीक तामस कमल। कमिते बाजल-

“अपन भार हम तोरे दइ छिअ। जे कहबह अन्ध-भक्त जकाँ सेवामे लागल रहबह।”

अपन विचार दैत पहिल बाजल-

“काल्हि भिनसुरका समय रहलह। तीनू गोरे संगे चलि रानीकेँ अपन सभ दुखनामा सुनेबै, तखन जे बाँहि-बगल करत तेकर विचार पछाइत करब।”

थोपड़ी बजा तीनू बैसारक विसरजन केलक।

❍

तिथि : 07 मई 2015, शब्द संख्या : 1892

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

किरिण फुटलो ने छल कि चौकक चबूतराबला चापाकलपर हल्ला भेल। ओहन हल्ला नइ भेल जेना सात गामक लोक एक्केबेर करैए, मुदा ओहनो नइ भेल जे दू पथियासँ कम होइ।

मोहनपुरवाली अपन पड़ोस गामवाली- माने लालपुरवाली-कैँ झटकी मारि कहलकैन-

“ओ बुढ़िया! खाली भभटपन लधने अछि, मरैके मन ने ते उठि-उठि आगि तपै छी।”

पड़ोसिनीक विचारमे हुँहकारी भरैत लालपुरवाली टोकारा भरलैन-

“जेकरा जे घिनाएब लिखल छै ओ कियो बाँटि लेत।”

चबूतराक निच्चाँमे सकुनी दादीक परपोती- सुदामा- दतमैन करैत टहलैत ठाढ़ रहए। पूर्ण जिनगी जीनिहारि अपन एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीक खिदहाँस सुनि सुदामा ललैक गेल।

झटैक कऽ चबूतरापर चढ़ि मोहनपुरवालीकैँ गट्टा पकैड़ बाजल-

“अहाँ सभ जे एना केकरो अकची-दोकची जहपटार छीटने फिड़ै छी से पहिने हमरा ई बुझा दिअ जे दादीकैँ जनै केना छिऐन?”

एक तँ मोहनपुरवालीकैँ पड़ोसिनी लालपुरवालीक भर, दोसर एके तरपानमे सात समुद्र सेहो पार करैत रहए। माने एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीपर थाल-कादो फेकैत रहए। जे बात सुदामा बुझि गेल।

परिस्थिति विषम होइत गेल, तेकरे हल्ला भेल। अन्तमे यएह फरिछौट भेल जे सात दिनसँ सकुनी दादी बेमार छैथ, एक्केटा रट लगल छैन जे गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब तखन प्राण छुटत। सएह चरचा गाममे पसैर गेल। जेकरा व्याख्याकार सभ अपना-अपना ढंगे कियो हाथीक नाँगैर छुबि हाथी बुझैए तँ कियो सूढ़ छुबि...। मुदा बात से नइ अछि। बात अछि भरल-पुरल परिवारमे सकुनी दादीक पति पचासे बर्खक अवस्थामे मरि गेलखिन, पचास बर्खसँ ऊपरसँ घरक भार उठौने सकुनी दादी आइ एक साए तीन बर्खक अवस्थामे ओछाइन धेने खाली ओतबे बात बजै छैथ, दोसर कोनो बात नहि बजै छैथ। अन्तो-अन्त सभ चुप होइत गेली।

जखन हल्ला भेल तखन अपनो नीन टुटि गेल रहए, मुदा ओछाइन नइ छोड़ने रही। नइ छोड़ैक कारण छल जे बिनु बुझने केना जाएब। ओना बुझैयोक केते रस्ता अछि। जहिना एक कानब ओहन होइए जे मृत्युक सूचना दइए तँ दोसर हँसैक सूचना सेहो दइते अछि। तहिना ने हल्लोक अछि, केतौ चोर-चोरक हल्ला होइए, तँ केतौ अगिलग्गीक हल्ला, केतौ झगड़ा-झंझटक हल्ला होइए तँ केतौ नाच-तमाशाक। मुदा से हल्लाक अकान नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए अनकासँ पुछब जरूरी भाइये गेल।

ओछाइन छोड़ि चौक दिसक रस्ता पकड़लौं। चौको तँ चौके छी। ने गामक ठेकान आ ने चौकक ठेकान। केतौ साहित्यिक चौक, तँ केतौ राजनीतिक, केतौ संगीतक तँ केतौ सिनेमा-सर्कसक, केतौ ताड़ी दोकानक महराइ तँ केतौ दारू दोकानक बुबकी।

लोक चौकपर किए बैसत? जँ नइ बैसब तँ दस गोरेक विचारक आदान-प्रदान केना हएत, आ जँ से नइ हएत तँ अपन-अपन गाम भेल, जेना मन फुरए तेना राखू।

दरबज्जापर सँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि झबड़ी दीदीकेँ अबैत देखलयैन। मनमे खुशी उपकल, खुशी ई उपकल जे लोको तँ लोके छी, केकरो फुटल लोटा जकाँ पेन फुटल छै तँ केकरो दहीक तौला जकाँ कान ओदरल छै...। मुदा से नइ झबड़ी दीदी गामक बेटी छैथ। दुरागमनक मासे दिनक पछाइत पीसा मरि गेलखिन। तहियेसँ वैधव्य धारण केने पिताक परिवारमे आबि बसली। गामक बेटी झबड़ी दीदी, तँए गामक केकरोसँ अनोन-विसनोन किए हेतैन।

सबहक ऐठाम आएब-जाएब काज-उदेममे अदौड़ी-बरी खोंटब इत्यादि समाजिक काजसँ जुड़ि समाजी रूपमे रहि रहली अछि। एकटा पैघ गुण ईहो छैन जे जेही नजैरसँ समाजकेँ भाए-बोन बुझै छैथ, तहिना विचारोक मिलानी रखने छैथ जइसँ शत-प्रतिशत बात सत् लग तक पहुँचल रहै छैन । तँए दीदीक भेँटकेँ शुभ मुहूर्त बुझि पुछलयैन-

"दीदी, केम्हर हल्ला भेल छेलइ?"

जेना दीदी ओइ झगड़ाक पनचैतिये केने अबैत होथि तहिना बजैक सुर-सार मुँहपर चमकैत रहैन। होइतो अहिना छै, पञ्च जँ अपन पनचैती लोककेँ जना नइ देलक आ पेटे-पेट रखि लेलक तँ गोल-माल नइ किए हएत। दीदी बजली-

"बौआ, गामक ते तोहीं सभ ने पुरुख-पातर भेलहक, सोल्होअना गलती मोहनपुरवालीक छेलइ, मुदा समाजो तँ समाज छी, एहेन तँ नइ ने जे समाजिक बन्हने टुटि जाए।"

दीदीक सहगर विचार सुनि आरो बुझैक विचार भेल, विचार ई भेल जे ठाँहि-पठाँहि केकरो दोखी कहि देब आ बात बुझले ने रहत, तखन तँ अनेरे तेसर बखेड़ा बखारी बनौत। पुछलयैन-

"दीदी, कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

जेना एकतोर महराइ गाबि महरैया साँस छोड़ैए आ मरसिया एकटा खतम करैत एके धुनमे दोसर शुरू करैए तहिना झबड़ी दीदी बजली-

"बौआ, तूँ सभ बेटा-भातिज भेलह, तोरा लग नइ बाजब तँ केकरा कहबै।"

दीदी जेना अपन पनचैतीक भारक कान्ह बदलैत होथि तहिना बुझि पड़ल। कान्ह बदलब दुनू होइए। एक कान्हपर सँ दोसर कान्हपर लेब आ दोसरकेँ कान्हपर देब सेहो होइए, से बुझि पड़ल। कहलयैन-

"कनी तखन जैड़ेसँ कहियौ, दीदी?"

झबड़ी दीदी बजली-

"सकुनी दादी ओझाइन पकैड़ लेलैन जे दिन छैथ से छैथ। हुनके-ले लोक सभ रसगुल्ला, लालमोहन, अमीरती सभ लऽ जाइ छैन तँ देखते कहै छथिन- 'गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब।' तही बातक झगड़ा भेल।"

दीदीक गपसँ बुझि पड़ल जे सभ बातक भाँज नइ लगत। तहूमे जँ पुछि दैथ जे एकर की हेबा चाही, तखन तँ तेहेन गरगट ने गरगोटिया देत जे आरो बेसी पहपैट हएत। तइसँ नीक जे ऐठामसँ आगू ससैर ओतइ चलि जाइ। मनमे ईहो उठल जे भने भोरे-भोर दादीक दर्शनो हएत आ कौल्हुका भोरक भेँटक असीरवाद सेहो माँगि लेब। कहलयैन-

"दीदी, अहूँ अँगना-घरक काज देखियौ आ हमहूँ कनी आगू बढ़ि देखै छिऐ।"

दीदी मानि तँ गेली मुदा मानितो-मानितो बजली-

"एहेन होइ जे एकटा नव-नौतारि कनियाँ गामक सीरे चाटए? कियो अपना बौहकेँ सम्हारि किए ने रखैए!"

दीदीकेँ तरडैत देख निकैले जाएब नीक बुझलौं। विदा होइत कहलयैन-

"घुमि कऽ अबै छी तखन सब गप फरिछा कऽ करब।"

हमर गप झबड़ियो दीदीकेँ नीक लगलैन। बजली-

"ओम्हरसँ एला पछाइत हमरो सब बात कहिहह।"

प्रश्नसँ बुझि पड़ल जे भैरसक दीदीक मन जेना भीतरे-भीतर जरि रहल

छैन । कहलयैन-

"चाहक ओरियान कऽ कऽ राखब। अपना गामपर जाइसँ पहिने अहाँक भेँट कऽ लेब।"

सकुनी दादी बीस बर्खक अवस्थामे निरोग कनियाँक रूपमे अपना गाम एली। शरीरेसँ निरोग नहि, लूरि-बुधिसँ सेहो। निरोगक एक अर्थ होइए डॉक्टरी जाँच-परख केला पछातिक निरोग आ दोसर होइए रोगसँ लड़ैक उर्जवान निरोग। ऐठाम दोसर तरहक निरोग दादी सभ दिन रहली। गाम अबिते गामक समाज कियो पुतोहु, कियो काकी आ कियो भौजी मानि अपना-अपनीकेँ सभ हथिया लेलकैन।

ओना सकुनी दादीक पिताक परिवार आ ससुरक कहियौ आकि पतिक परिवारमे एक जाति रहितो स्पष्ट दूरी बनल छेलैन, अर्थक नजरिये। मुदा दुनूक दूरी मेटा गेल, जातिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैमे। बेटा-बेटीक बिआह तँ लोक जातियेमे करैए।

श्रमशील परिवारसँ निकैल दादी निम्नवर्गीय किसान परिवारमे आबि गेली। नैहरमे अपन खेत-पथार नइ रहने सकुनी दादी अनका खेतमे चौदहमे बर्खक अवस्थासँ माता-पिताक संग काज करैत आबि रहल छेली। जइसँ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखि नेने छेली। अगहन-पूसक धानक लड़ती-चड़ती- माने धान काटब, तैयार करब, नार-पात समटब इत्यादि- निमाहला पछाइत धानक कुट्टी सेहो अपना ढेकीमे करै छेली, जेकर निर्धारित बोइन तँ भेटते रहैन जे तैसंग गुड़ो-खुद्दी सोल्होअना भेट जाइ छेलैन। ओही महिक्का गुड़ाकेँ खुद्दीक चिक्कसमे मिला रोटी बनबै छेली जे अपनो आ परिवारोक लोक खाइ छेलैन।

सकुनी दादीक सासुरक परिवार निम्न वर्गक किसान परिवार। ओहन परिवार जे रूढ़िवादी सोचसँ जकैड़ अपन बाड़ी-झाड़ीसँ लऽ कऽ चर-चास धरि बटाइ लगा, परश्रमावलम्बी बनि चुकल छल। अपन मूल पूजीमे ह्रास हएब सोभाविके छइ। मूल पूजीक माने भेल अपन श्रमक संग अपन अर्थो। जँ से नइ तँ ओ मूल पूजीसँ इतर भेल। ओना महाजनो आ बैंकोसँ लोक कर्ज लऽ पूजी निरबैत अछि, मुदा ओ अलग भेल।

सासुर परिवारमे अबिते सकुनी दादीक अपन लूरि चीज[26] देख मनमे औढ़ मारऽ लगलैन। औढ़ ई जे अपने सभ पुरुख-पात्र बैस गप-सप्पमे दिवस गूदस कऽ रहला अछि मुदा जिनगीक ठेकाने ने छैन। अपने दरबज्जापर पाहुन-परक जकाँ पुरुखकेँ बैसैक आदत आ महिलाकेँ अँगनाक भीतर बान्हि कऽ राखब।

---

[26] सम्पैत

अधिकांश काजकेँ निषेध कहि निषेध केने छैथ। आँगनसँ बाड़ी घुमै-देखैक विचार ससुरक सोझ सकुनी दादी रखलैन। विचारेटा नइ रखलैन ईहो कहि देलखिन जे ऐ घरमे हमरो साझ़ी अछि तँए अपना घरकेँ अपना लूरिये-बुधिये चलाएब। पाछू हटैत ससुर निर्णय देलखिन-

"जेहने बास तेहने अगवास, किए ने घुमब-फिरब। कोनो कि अनकर छिऐ अपन छी, अपने नइ देखब तँ आनक आशा केतेकाल।"

तीन बर्ख धरि बाड़ी-चौमास घुमि-फिरि सकुनी दादी देखैत रहली। मने-मन समैनुकूल विचारैत रहली। मन कड़कैत रहलैन, तरसैत रहलैन, दहलैत रहलैन...।

..चौमास सन खेत जइमे फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक धनमण्डल लगबैक शक्ति अछि ओ कुरथी-तेवखा, भाँग-धथूरक बोन-झाड़ बनि घरक अगवास बनल अछि!

तीन बर्खक पछाइत सकुनी दादी आँगनसँ छलांग लगा बाड़ीमे कुदली। अखन धरि जे परिवार अपना हाथे भूमि छेदनकेँ वर्जित केने छल ओइमे झमार पड़ल।

सकुनी दादीकेँ खेतमे पदार्पण भेने परिवारमे भूचाल उठल। भाँग-बथुआ उपजैबला खेत फल-फलहरीसँ भरि गेल। मुदा से विचारोक क्षेत्रमे परिवारमे उठबे कएल। श्रमहीन आ श्रमशीलक परीक्षा आँखिक सोझ हुअ लगल। सकुनी दादीक बगावत परिवारमे आगि पजारि देलक। अन्तो-अन्त ससुर अपन निर्णय सुनबैत सकुनी दादीकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, हम चौथापनमे आबि गेल छी, ऐगला जिनगीक कोनो ठेकान नइ अछि, मुदा तँए अहाँक विचारक कदर नइ करब सेहो नीक नहि, तहूमे अहाँ अपन बाँहि-बलक परिचए दऽ देने छी।"

कहि ससुर चुप भऽ गेलखिन, मुदा सकुनी दादी खरिआरि कऽ पुछलखिन-

"इतिहास बुझू आकि वंश ओ एक क्रम अछि, चलैत रहत, मुदा समैनुकूल विचारो आ काजो तँ बदलबे करत। तइले काज केनिहारो ने चाही।"

सकुनी दादीक विचार सुनि ससुरक मन वौआ गेलैन। मनमे रंग-रंगक विचार उठऽ लगलैन। अपन सबहक सात्विक जिनगीमे जबरदस धक्का लगल। वैचारिक क्षेत्रमे सात्विक्ता बनल रहल मुदा बेवहारिक क्षेत्रमे- माने कर्मक क्षेत्रमे- ओकर ह्रास भेल। जइसँ जिनगीक दूरी बनैत गेल। ओ बनैत-बनैत एते दूर भऽ गेल जे एक दिस सात परदाक संग नारीक बास भूमि बनल तँ दोसर दिस

विभत्सता बढ़ल। खेत-पथारक बीच किसान-जमीनदारक बीच झीका-झीकी चलैत रहल खेतक उपज-सम्पैत नष्ट होइत रहल, गरीबी बढ़ैत रहल, पेट पोसैले-माने पेटक पोस खातिर लोक- पड़ाइत रहला। अन्तो अन्त निर्णयपर पहुँच ससुर कहलखिन-

“जाबे धिया-पुता बाल-बोध छल सेवा करैत परिवारक गाड़ीकेँ चलबैत रहलौं, मुदा आबक परिवारक गाड़ी तँ अहीं सभपर ने चलत।”

पिताक विचारक प्रभाव बेटोपर आ पुतोहुओपर पड़लैन। दुनूकेँ जिनगीक महान संगी बनैक अवसर भेटलैन।

पचास बर्खक अवस्थामे सकुनी दादीक पति मरि गेलखिन। सासु-ससुर पहिनहि मरि गेल रहैन। पाँच सन्तान- चारि बेटी एक बेटा-क संग सकुनी दादी परिवारक रंगमंचपर आबि गेली। पतिक बेमारीक इलाजमे परिवार खिलैच गेलैन, तैपर पतिक मृत्यु सकुनी दादीक आँखिक सोझ- माने जिनगीक सोझ-मे अमावसियाक अन्हार जकाँ दुनियाँ अन्हार भऽ पसैर गेलैन। एक दिस पतिक मृत्युक पछाइत विधवाक कलंक देखैथ जे देखौआ, चोरौआ दुनू होइए, आ दोसर दिस छअ आदमीक ओहन परिवार अछि जइमे चारि बेटीक बिआह-दानक संग पाँचम अपन बेटाक परिवार ठाढ़ करब अछि।

पाँचो बेटा-बेटीक परिवार बसबैत दादी तेसर पीढ़ीक परिवारमे पहुँच गेली। अपना संग अपन पुतोहु, पीठपोहू भेलैन। पीठपोहुओ केना ने होनि, जे काज एक नारी कऽ सकैए ओ दोसरो तँ काइए सकैए। तेतबे किए जे समैक संग बहुत आगूओ कऽ सकैए।

तीन सीढ़ीक निच्चाँ परिवारक जे अचार-विचार रहलैन ओ एकपुरखियाह रहलैन। एकपुरखियाह भेनौं आगू ससैरते रहलैन। ससरबो केना ने करितैन, सभ घरमे ओते काज तँ ऐछे जेते लोक अछि। अपन-अपन खाड़ी बनल काज, सभ अपन-अपन जिनगी ओइमे रमौने रहल...।

आइ चारिम पीढ़ीमे चारिटा पोता सकुनी दादीकेँ छैन, जे तीन भाँइ अपन-अपन परिवारक संग एक भाँइ गौहाटी, दोसर बंगलौर, तेसर दिल्लीमे रहै छैन। एक भाँइ- माने जेठका बेटा- अपन टेक धेने छैन। टेक ई जे चारि पीढ़ीक बीचक परिवार अछि, माए-बाबू, दादी, तैपर सँ सकुनी दादी। वंशक जेठ सन्तान हमहीं छिऐ तँए नइ सेवा केने सभसँ बेसी पाप हमरे लागत। मुदा एकसंग जँ सभ मिलि रहब नीक-अधलामे संगे रहब, तखने ने ओइ पापसँ मुक्ति पाबि सकै छी।

सकुनी दादी ऐठाम पहुँचते देखलौं जे दादी टहैल रहली अछि। मुदा बिनु पएर छूने असीरवादो केना माँगब? तइ बीचक जे रस्ताक दूरी अछि तइमे मुहोँ

केना चुप रहत। ई बात बुझल अछि जे दादी सभ दिन जहिना काजमे टनाटन रहली तहिना बोलो टनाटन रहलैन, मुदा आब तँ अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छैथ, केना बोलीमे टनटनी औतैन। आ जँ से टनटनी नइ औतैन तँ केना बुझब जे असली चानी छैथ आकि नकली? तँए झटहा फेकैत बजलौं-

"दादी, आबो अहाँकेँ कठीए लाड़ैन नीक लगैए?"

'कठिया लाड़नि' केते रंगक होइए, ऐ फरिछबैमे दादीकेँ ओते देरी लगलैन, जाबे हम लगमे पहुँच पएर छुबि नेने छेलिऐन। पएर छुबि संकल्प करबैत पुछलयैन-

"दादी, काल्हियो अहिना गप-सप्प करब किने?"

केना हमर मन दादी तोड़ितैथ तँए जोड़ैत बजली-

"हँ-हँ काल्हिये किए परसुओ गप-सप्प करब।"

ओना दादी अँगनेमे घुमैत-फिरैत रहैथ, मुदा हुनक घुमब-फिरब देख अपने मनमे भेल जे रोगाएल-बुढ़ाएलक तँ थरमे-मीटर छी चलब-फिरब, से किए ने दादियोक बोखार अही थरमा-मीटरसँ नापि ली। चुप देख दादीकेँ चुपी नीक नइ लगलैन, बजली-

"बौआ गोबर गणेश, आब कखनो-के अपनो मन कहैए जे बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।"

मनमे भेल जे जँ दादियो अपन परिवारक धारी आ अपना जन्मक बर्ख मन रखने हेती तँ अपनो बुझिए पड़ैत हेतैन जे हम केतए छी। मुदा लगले मनमे भेल जे छौड़ा-माड़रि हम सभ छी तखन एते गपक खोंट-खाँट करै छी आ जोजन[27] भरि देखनिहारि ओहिना थोड़े बाजल हेती?

विचारैमे देरी भऽ गेल। दोहरबैत दादी बजली-

"बौआ, किछ बजलह नहि?"

मने-मन किछु निर्णय काइए ने पेने रही। भाय जखन बुझले अछि, जहिना इन्टरभ्यूमे प्रश्नोत्तरी नइ होइए, मात्र प्रश्न-उत्तरक बीचक गतिक दूरीक जाँच होइए तहिना तगेदा सुनि हमहूँ ओही सूदिया जकाँ महाजनक आगू अपनाकेँ उपस्थित करैत कहलयैन-

"दादी, जे बात अहाँ बजै छी, से अपना सन भेल?"

हमर बात सुनिते दादीक मन जेना नीचाँ उतरलैन। बजली-

"से की, बौआ?"

---

[27] साए बर्खक जोजन

कहलयैन-

“दादी, अखन अहाँक एक जिनगी पछुआएले अछि आ कहै छिऐ बड़ बुढ़ भऽ गेलौं?”

चौंकैत दादी बजली-

“से की बौआ?”

दादीक चौंकब देख मन नाचि उठल। बिजलोका खसैकाल जहिना चमकी अबैए तँ कियो चौंक जाइए आ कियो चौक मारि लइए। मुदा दादीक चौंकब से नइ छी, फेर मन भेल जे जँ चुप रहब तँ चौंकल दादी फेर तगेदा करती। तइसँ नीक जे जहिना ओ बजली तहिना कहिऐन, कहलयैन-

“दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़क आड़ियोपर ने पहुँचलौं हेन आ कहै छी बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।”

एकटा पछुएलहा जिनगी दादीकेँ ओइ नोकरिहारा जकाँ धएल भेटलैन जिनका कोनो हेरेलहा-पछुएलहा एरियर एक-ने-एक दिन भेट जाइए। लपकि कऽ दादी बजली-

“बौआ, जखैन बजबे करै छह तँ मुँह झाड़िकऽ किए ने बजै छह, हम कोनो आन छिअह जे तूँ हमर अधला करबह।”

जिनगीक सिनेह दादीक देख कहलयैन-

“दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़ कहाँ भेलौं हेन?”

विस्मित होइत दादी बजली-

“झुनकुट बुढ़ केकरा कहै छै?”

आश भरल दादीक जिनगी देख आस भरैत कहलयैन-

“दादी, जेना धानक सीस पूर्ण जिनगी पाबि रेहे-रेहे टुटि-टुटि, टूर बनि-बनि धरतीपर खसैए, से तँ अखन पछुआएले अछि।”

दादी बजली-

“से तूँ केना बुझै छहक?”

कहलयैन-

“अखनो देखै छी जे बोलीमे टनकी अछिए। चानी छी कि रंगा से बुझैले हाथक औंठामे टनटनी रखनहि छी।”

मनमे भेल जे जँ कहीं दादीक जिनगीक धारमे बोहिया गेलौं तखन तँ अपन काज तरे पड़ि जाएत...।

गाममे झगड़ा बझि गेल अछि...।

मुदा से भेल। 'हाथक औंठामे रखनहि छी' सुनि दादी एते मगन भऽ गेली जे बोल्तीए बन्न भऽ गेलैन। गाछी-बिरछी जकाँ सौंसे रस्ते बुझि पड़ल।

कहलयैन-

"दादी, जइ काजे आएल छेलौं से तँ बिसरिये गेल रही।"

चौंकैत दादी बजली-

"बिसरैबला गपकेँ पहिने बाजि लएह, तखन जे बिसैरो जेबह ते बिसैर जइहह।"

कहलयैन-

"दादी, गुड़ा-खुद्दीक रोटी केना बनै छै?"

चारि पीढ़ीक जिनगीक ऊपर ससरैत-छलकैत दादीक नजैर अपन नैहरक बीसम बर्खमे पहुँच गेलैन। बजली-

"बौआ, ओही गुड़ा-खुद्दीक पोस खा सासुर एलौं। मुदा आब ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहल। मुदा हीक ओही सीकपर टाँगल अछि।"

दादीक बात सुनि मनमे उठल- आब ते लोक पंजबिया छाँटल अरबा चाउर खाइए तैठाम दादीक गुड़ाक ओरियान केना हेतैन?

मुदा फेर भेल जे गछि लइ छिऐन, दस बीस बर्खे कोटो-कचहरीक गप फरिआइए, हम तँ सहजे ओइसँ बाहर छी।

कहलयैन-

"अहीले अहाँक हीक लटकल अछि। अखन जाइ छी, जोगाड़ केने आएब।"

❍

शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई- 2015

फलहार

चारि बजेक समय। सुर्ज अपन प्रखर प्रतिभा समटैक ओरियानमे लैग गेला। जइसँ कटुतामे कनी-मनी कमी आबि रहल छेलैन आ मधुताक सिरजन हुअ लगल छेलैन। उष्णता सहिष्णुता दिस बढ़ए लगल छेलैन। जहिना कोनो फल फूलसँ निकैल कलीसँ कलियाइत अपन पूर्ण जुआनीक बाट पकैड़ अन्तिम सीढ़ीपर पएर रखिते मधु-मधु मधुर बनि जाइए तहिना बाल सुर्ज डेगे-डेग बढ़ैत ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल छैथ जेतए उष्णसँ सहिष्णुक ढलान ढुलकैत शीतपनमे प्रवेश पबैए।

दिन भरिक उपासल रूक्मिणी अपन पूर्ण होइत उपास देख फलहार-ले माएकेँ कहलक-

“माए, फलहारक बेर लैगचाएल अबैए...?”

ओना रूक्मिणीक मनमे संगी-साथीक मुँहक सुनल अनेको रंगक फलहार-वस्तुक बात छल जे मनो छेलइ। माने ई जे टोलक आठ बर्खसँ ऊपर आ चौदह-पनरह बर्खक बीचक जे बारहो-चौदहो विवाहित-अ-विवाहित बाल कन्यासँ चिष्टाएल कन्या धरि संगे-संग काजो-उदेम, मेलो-ठेला देखब-सुनब आ धारो-पोखैर नहाइले जाइ-अबै छल। तैसंग अपन-अपन खिस्सो-पिहानी सुनबो-सुनैबितो छल। जइसँ समयानुसार किछु विचार जगबो करै छल आ मेटबो करै छल।

सुगीताक मुहेँ पैछला मासक उपासक फलहार सुनि चुकल छल जे भरि दिनक उपासक पछाइत साँझमे गाइक दूध आ केदली वनक फलसँ फलहार केने रही। पछुलका मासक उपास। नइ हमर तँ ऐ मासक पहिल उपास औझुका छी। दस बर्खक रूक्मिणीक मनमे उपैक गेल।

जिनगीक पहिल उपास रूक्मिणीक छल। ऐसँ पहिने संगी सबहक मुँहक बात रूक्मिणी शास्त्र–पुराणक कथा जकाँ बुझै छल। मुदा आइ तँ रूक्मिणी अपना आसे-आस चाहि रहल अछि। लगले रूक्मिणीक मनमे दोसर संगीक उपासक फलहार जैग गेलइ। जगलै ई जे कलिया बहिन सेव-अंगुरसँ फलहार केने रहैथ। बजारसँ सत्तैर रूपैए किलो अनने रहैथ, जेकर फलहार केने रहैथ।

फेर लगले रूक्मिणीक मनमे उठल जे ओहो फलहारकेँ तँ आइ छह

माससँ ऊपर कलिया बहिनकेँ केला भऽ गेलैन।

फलहारक अपन-अपन विहीत अछि। से खाली उपासेक नै माँ दुर्गाक चारू पूजा- माने आसिनक, माघक, चैतक आ अखाढ़क- एक रहितो विहीतमे भेद अछिए।

रूक्मिणीक मनमे भेल। हमर उपास तँ औझुका छी, ने पैछला छी आ ने अगुलका हएत। आगूले आगू हएत आ पाछू तँ सहजे तर पड़ि गेल।

बेटीक बात सुनि अनुराधा विस्मित भऽ गेली। जिनगीक पहिल उपास बेटीकेँ करैत देख मने-मन मन-मन्दिरमे विचड़ए लगली। किए ने जिनगीक आराधनाकेँ उपाससँ अराधि-अराधि लेत आ दिनक विसरजनक पछाइत फलहार करत...।

परिवारमे एक नव शक्ति अबैत देख अनुराधा रूक्मिणीकेँ अपन परदादीक कहल बात सुनबए लगली-

"बुच्ची, उपासक फल दुखहाल नइ सुखहाल भेल, तैबीच विश्राम भेल फलहार। तेकर पछातिक समय जिनगीक समान्य भेल जे अनवरत चलैए। चलैत आबि रहल अछि आ चलैत रहत।"

जहिना रूक्मिणीक विचार सोझ-साझ नै तहिना अनुराधाकेँ सेहो भऽ गेल रहैन। मुदा तैयो जेना रूक्मिणीक मन मानि गेल जे फलहारक बेरमे ने फलहार करब। अखन तँ महादेव बाबाक पूजाक बेर अछि, संगी सभ संग करैले अबैत हएत। अनेरे हमहूँ नहा-फुलडालीमे फूल लऽ पहिने फलहारेक बात माएकेँ कहलयैन। ओ की कोनो बाल-बोध छैथ जे भरि दिनक अन-पानिक तियाग नइ देखलैन। किछु भेली तँ माए भेली। माए कखनो बेजाए थोड़े करती। तैबीच अँगनाक पछुआरक बाटपर सँ सुनन्दा जोरसँ हाक दैत बाजल-

"केते सिंगार-पेटारमे रूक्मिणी लगल छेँ, आकि जल्दी बाबा दरबार चलमेँ।"

अपन लाड़-झाड़ बढ़बैत रूक्मिणी अँगनासँ निकलैत बाजल-

"केते कालसँ तोहर बाटा-बाटी तकैत अँगनामे ठाढ़ छेलौं, तोहीं सभ पछुआएल छेलेँ।"

कहैत-कहैत सखी-बहिनपाक बीच रूक्मिणी मिझिरा गेल। बाबा दरबारक सेन बनि बोल-बम, बोल-बम करैत विदा भेल।

सखी-सहेलीक बीच रूक्मिणी फलहारक बात बिसैर शिवदानक कथा बहिन- सुफली-क मुहेँ सुनए लागल।

जहिना भगवान रामक दरबारमे हनुमान सन वीर आ जामबन्त सन प्रेरक

छला तहिना तँ दूध-मुँह, बाल-मुँह बानरोक समूह तँ छेलैहे। जहिना शिवसेनाक बीच आठ बर्खक अबोध-बोध कन्या रमणी-रैमणी छल आ तहिना साढ़े चौदह बर्खक सुफली सेहो छेलीहे आ रूक्मिणी दस बर्खक। ओना रूक्मिणी सेहो अपन आने-आने संगी जकाँ मुँह बन्न केने सुफली बहिनक बात- शिवदानक कथा-सुनि रहल छल। बीच-बीचमे कखनो-कखनो मनमे आनो-आनो बात उपैक जाइते रहइ। मुदा तेकरा रूक्मिणी समैट-समैट पँजिया-पँजिया अगहन मासक धानक पाँज जकाँ बगलमे रखि-रखि सुफली बहिनक बात सुनए लगैत रहए।

सुफली बहिनक बिआह पैछला सालक अही मासमे भेल रहैन। साल लैग दोसर सालक पहिल मास छी, मुदा तैबीच एक पनरैहिया सासुरोसँ भऽ आएल अछि। माता-पिताक परिवारसँ सासु-ससुर-पतिक परिवार सेहो देख चुकल अछि। ओना उमेरोक हिसाबे आ विचारोक हिसाबे सुफली सभसँ ऊपर अछिए। तहूमे अपनो किछु खास गुण देहमे झलैकते छइ। एक तँ विधाता अपन सोल्होकलाक उपयोग सुफलीकेँ सिरजैमे लगा देने छैथ, जइसँ जेहने देहक गढ़ैन माने सुचिन्त शरीर, तेहने चेहराक शकल-सूरत आ जेहने शकल-सूरत तेहने बोली-वाणी आ तेहने विचारो। तहूमे शिवपथक यात्रीक बीच शिव दर्शनक दर्पण सभकेँ वाणीक ऐनामे देखा रहल अछि। सभ, माने बारहो-चौदहो देव कन्या बताहि जकाँ विभोर भेल, रमैत शिव-दरबारक सीमान लग पहुँच महादेव बाबाक त्रिशुलकेँ प्रणाम केलकैन। तखने शिव कथामे विश्राम दैत सुफली बाजल-

"जेतए जइ कामनासँ चलल छेलौं, तेतऽ पहुँच गेलौं। आब अपन-अपन सभ पूजक ओरियान करै जाउ।"

रूक्मिणीकेँ सखी-सहेलीक बीच प्रवेश करैत देख अनुराधा आँगनक मुहथैरपर सँ ताधैर देखैत रहली जाधैर ओ सभ आँखिक परोछ नइ भेलैन। परोछ होइते अनुराधा आँगन घुमि ऐबे केली आकि ओसारक ओछाइनपर पड़ल रोगग्रस्त पति-दीनानाथ कहलकैन-

"बच्चीक पहिल उपास छी किने?"

पतिक बात अनुराधाक करेजमे तेना लगलैन, जे कटि-कटि निच्चाँ खसऽ लगलैन। मुदा अखन तँ दुनू भारक बीच छैथ। एक दिस पति ओछाइन पकड़ने छह माससँ रोगाएल ओहन किसान जकाँ छैथ जिनकर छह मासक उपजा या तँ रौदी खा गेल होइ चाहे बाढ़ि आबि चाटि गेल होइ...। आ दोसर दिस सुकुमारि सुशील रूक्मिणी भरि दिनक उपासल बाल कन्या...।

अनुराधाक मन तिलमिला गेलैन। जेना देहसँ शक्ति पड़ा गेलैन, हूब-टूटू जकाँ देह भारी बुझि पड़ए लगलैन। भेलैन जे खसि पड़ब। एको क्षण ठाढ़ रहब

भारी...।

दीनानाथक ओछानिक बगलेक खुट्टामे ओङैठ बैस अनुराधा पतिक मुँहक बातकेँ तहियबैत बजली-

“दवाइक बेर भऽ गेल, पानि लगमे अछि आकि आनि देब।”

पत्नीक बात सुनिते दीनानाथ उठि कऽ बैसैत, सिरमा तरक गोटी निकालि बगलक लोटा उठा पानिक संग खेलैन।

पतिकेँ दवाइ खाइत देख अनुराधाक मनमे औझुका एक प्रकरण काज भेल देख खुशी उपकलैन। खुशी अबिते जेना देहक शक्तियो सबल भेलैन। ओछाइनपर बैसल दीनानाथ अनुराधाक ओइ जवाबक ताक-हेर करए लगला जे पहिने पुछने छेलखिन। प्रश्न-पर-प्रश्न उठबैत चलू, ने केकरो जड़ि भेटत आ ने छीप, से दीनानाथ बुझै छैथ, तँए आगू बजैसँ परहेज केने छला।

पतिक प्रश्न आँखिक सोझमे अनुराधाकेँ नचै छेलैन। एक दिस पतिक उचिती-विनती बाल कन्या-रूक्मिणीक पहिल उपासक, तेकर फलहारक ओरियानक बेर आबि रहल छेलैन। आ दोसर, बेटी शिवघाटसँ औतैन, ताबे मेघमे तरेगनो अपन मुँह उठा लेत। मुदा लगले मनकेँ आरो नचा देलकैन-फलहार की? फलहार केहेन?

नचैत मन अनुराधाक असथिर भेलैन- जँ मैट्रिक-कुलेशनक विद्यार्थी हरिवासय सन महान उपास काइए किए ने लिअए, तँए कि ओकरा एम.बी.बी.एस.क; इंजिनियरिंगक आकि एम.ए.क उपाधि तँ नहियेँ भेट सकै छइ। भेटतै तँ ओतबे जेतेमे ठाढ़ अछि।

अनुराधाक मातृत्व-मन माए-दादी होइत परदादीपर पहुँचलैन। जइ समय कनी-मनी चेष्टगर भेल रहैथ, तहियाक तहियाएल बात मन पड़लैन। पड़िते मन जेना फुरफुरेलैन। मनमे फुरफुराइत परदादीक ओ आसिरवचन उड़ि कऽ एलैन जेकरा देखते अनुराधाक मन बिहुसि गेलैन।

दीनानाथक टकटकी-नजैर अनुराधाक बिहुसैत-नजैर देख मधुएलैन। मधुआइते मनमे भेलैन जे भरिसक हमरे उचिती पुरबैले बोने-बोन ओ ओइ खोजी जकाँ खोजैले चलि गेल गेली! लगैए भरिसक केतौ भेटलैन अछि। ओतएसँ अबैमे जेते समय लगतैन तेते समय तँ रस्ता निङ्हारए पड़त।

अनुराधाक मनमे एलैन- जखन दस-बारह बर्खक रही तखन परदादी अस्सी बर्ख टपि चुकल छेली। गामक उपास केनिहारिमे हुनको गिनती छेलैन। पुछने रहिऐन-

“दादी, एते जे उपास करै छिऐ से फलहार केना पुरबै छिऐ?”

हमर बात सुनि परदादी पहिने तँ दिल खोलि कऽ हँसल छेली। ओहिना मन पड़ैए- सभटा दाँत झलकैत रहैन। ओहनो अवस्थामे एकोटा दाँत नै टुटल छेलैन जे कनी शंको होइत। शास्त्रीय संगीतक धुनक धुन जकाँ जखन उड़ैत अकास गेली तखन ताल टुटलैन। ताल टुटिते कहने रहैथ-

"दाय, हमरा बापकेँ बेसी खेत-पथार नइ रहैन, मुदा ई बुझल रहैन जे खेतमे केते उपजा होइ छइ। तइ हिसाबक फसिल उपजा अपन साल-माल लगबै छला। तही दिनक बात छी।"

हम धियानसँ सुनि रहल छेलौं। हमर जिज्ञासा देख झमैर कऽ परदादी कहलैन-

"अहिना धियानसँ सुनिले। धड़फड़ेने सभ बात नै बुझबीही। संच-मंचसँ बैस। केकरा-ले राखब तोरे सभकेँ ने देने जेबो।"

संच-मंच भऽ बैसते दादी पुन: बजली-

"बुच्ची, सासुर अबैसँ सात-आठ बर्ख पहिने नैहरेमे उपास करैक आदैत पकैड़ लेलक। ता नइ बुझिऐ। बाबूकेँ पुछलयैन जे फलहार की करब? ओ कहलैन जहिना अपन उपास छी तहिना ने खेतोक उपज फलहार छी, तइले चिन्ता किए करै छह।"

मुदा खुजला नइ जे कथीक फलहार करब। दोहरा कऽ जखन पुछलयैन तँ कहलैन-

"बुच्ची तीन कट्ठा अल्हुआ-सुथनीक खेती कऽ लइ छी, जइसँ सालक छह मास परिवारक खोरिस पुरि जाइए। माटिक उपज छी, मीठपन छइहे तखन ओहो ने फले भेल। सएह करब शुरू केलौं।"

अनुराधाक मनमे पतालक पानिक स्वच्छतापर बिसवास जगलैन। केना ने जैगतैन मेघमे केतबो शुद्ध पानि किए ने हौउ मुदा अकासक बाट गुजरने दूषित भाइये जाइए, मुदा पतालक पानि धरती सन छन्नासँ छानलो रहैए आ समुद्री लहैरसँ फरिछाइतो रहैए।

जहिना कोनो नटुआ नचैत-नचैत केकरो कोरामे बैस लाड़-झाड़ करए लगैए तहिना अनुराधोक मनमे एलैन। मनमे अबिते चारीमपनक परदादी जेना आगूमे आबि ठाढ़ भऽ नाचए लगलैन। चाकर-चौरस देह, हाथ-पैरमे ओहिना फुनफुनी जेना बाल-बोधक हाथ-पएर होइए। ने एकोटा दाँत टुटल आ ने देहक कोनो अंग भंग भेल। जेहने देहक पानि, तेहने आँखिक संग नजैरो पनियाएल। मुदा लगले दादीक बात मनमे तहे-तहे तहियाइत तहिया गेलैन। आ नजैर सोझमे बैसल पतिपर आबि गेलैन। अबिते बजली-

"आब केहेन मन लगैए?"

ओना अखन धरि दीनानाथ, रूक्मिणीक उपासक जवाब पबैक रस्ता-बाट तकै छला मुदा अनुराधाक प्रश्न पाबि बजला-

"आब बुझि पड़ैए जे रोग दबि गेल। भुखोक तृष्णा बेसियाएल बुझि पड़ैए आ हाथो-पएर लाड़ै-चाड़ैक मन होइए।"

पतिक आस भरल बात सुनि अनुराधाक मनमे खुशीक लहैर लहैर गेलैन। आगूक कोनो बात नै पुछि अनुराधा पैरसँ चाइन धरि पतिकेँ निहारए लगली। जाड़-पालासँ दबल जहिना बोन-झाड़ आकि जंगल-झाड़ सुर्जक उष्मा पैबतो तिरपीत हुअ लगैत तहिना अनुराधोक मन फुरफुरेलैन-

"बेटीक पहिल उपास छी, अपने तँ जिनगीमे कहियो जानि कऽ उपास नहियेँ केलौं मुदा..?"

'उपास नहियेँ केलौं' मुहसँ निकैलते अनुराधोक नजैर निच्चाँ उतैर गेलैन आ दीनानाथोक।

नजैर निच्चाँ उतैरते अनुराधाक मनमे उठलैन- की एहेन हमहींटा छी आकि हमरा सन औरो सभ छैथ जे जानि कऽ उपास नै केने हेती। ई दीगर भेल जे गाम-समाजमे महिलासँ बेसी बुझनिहार पुरुख, उपासक बेर कम पड़ि जाइ छैथ। जइसँ महिले बेसी हिस्सा नेने अछि। कहाँ कहियो मन गवाही देलक जे केकरोसँ कम उपास केने छी। सालक साए दिन ओहन बीतबे करैए जइ दिन पानि छोड़ि अन्नाहारो भेल हुअए। मुदा तेकर फल की भेटल?

जहिना पत्नी अनुराधा अपन विचारक दुनियाँमे निच्चाँ मुहेँ विचरण करै छल तहिना दीनानाथक मन छह मासक रोगसँ दबाएल निकैल ऊपर मुहेँ उधिआइ छल। आइ छह माससँ जइ परिवारक बोझ बनल छेलिऐ, काल्हिसँ अपन बोझ अपने उठबैक शक्ति शरीरमे आबि गेल। आब रूक्मिणियोँ दिन भरि सहि कऽ दीनानाथक आराधना करै-जोकर भऽ गेल। अखन ओकर भविसक कोन भरोस छइ। मुदा वर्तमान तँ आगूएमे छइ। परिवारक भरण-पूरनक बाट देखते जहिना परिवारक सिरजनक आशा-बाट मनमे दौगए लगै छै, तहिना दीनानाथोकेँ मनमे भेलैन। बिहुसैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"बेर लहैस गेल! बैसने काज चलत?"

पतिक बात सुनिते अनुराधा चौंक गेली। चौंकते मनमे उठलैन, केतेक जतनसँ बेटी उपास केलक अछि। की सभ मनमे उपकल छै से तँ भोला बाबा जनता मुदा हमहूँ तँ ओकर माइए छिऐ। भरि दिनक भूखल-पियासल दस बर्खक बेटी लहालोट भेल औत, तखन जँ ओकरा फलहार नइ हेतै से केहेन हएत?

ओना अनुराधाक मनमे बिसवास जमले रहैन। बिसवास ई जमल रहैन जे दादी बच्चासँ बुढ़ धरि अल्हुआ-सुथनीक फलहार कऽ उपास निमाहि लेलैन तखन रूक्मिणी ने किए निमाहत।

मुदा समाजक रंग-रंगक फलहार देख एते तँ मनमे उठिते रहैन जे हमरो बेटीकेँ नीक फलहार हुअए। छिड़ियाइत मने अनुराधा पतिकेँ पुछलखिन-

"बुच्ची-ले फलहारक ओरियान की करब?"

एक तँ छह मासक रोगाएल दीनानाथक मन, जे जिनगीक आसक कलशसँ कनखियाएले रहैन, तैपर सँ तेहेन बोझ माथपर पड़ि गेलैन जे दरदे माथ दुखाए लगलैन। माथमे दर्द उठैक कारण भेलैन, अनुराधाक संग अपनो ने कहियो उपासक भीड़ गेल रही आ ने फलहारक बात बुझने छी...।

झखैत पतिक नजैर देख अनुराधा बुझि गेली। बुझिते मनमे झमार उठलैन। झमार ई जे दर्दपर जेते दर्द देल जाएत ओ अपना अकारे पैघ होइत जाएत...। ई तँ अनेरे पतिकेँ कष्ट देब हएत! बिहुसैत बजली-

"एके दहारमे जे परान बहार भऽ जाएत तखन सालक साल दहार केना बुझबै?"

ओना कोनो एहेन स्पष्ट विचार स्पष्ट भाषामे अनुराधाक नै रहैन, मुदा कोन काग-भाषासँ दीनानाथ की बुझि गेला से तँ ओ जानैथ। मुदा मन बिहुसैत-बिहुसैत कलशए लगलैन। कलशैत फूलक मुँह देख मालिनि जहिना मने-मन माला बनबैत कलशए लगैए, तहिना अनुराधो कलशैत बजली-

"अपन नैहरक समाद कहै छी।"

'नैहरक समाद' सुनि दीनानाथक मनमे भेलैन जे, मर्र ई की भेल! अखन फलहारक ओरियानक काज अछि, तखन ई की बीचमे सुनबै छैथ!

दीनानाथक मनमे किछु फुरबे ने केलैन जे किछु बैजतैथ। बकर-बकर पत्नीक मुँह दिस ताकए लगला।

मुदा अनुराधाकेँ अपन परदीदीक समाद मनकेँ तेहेन समदिया बना देलकैन जे हुअ लगलैन कखन एहेन झमटगर समाद सुना दिऐन।

जहिना शिक्षक आँखिक इशारासँ ऐगला पन्नाक प्रश्न चटियासँ पुछै छथिन तहिना अनुराधा आँखिक टुस्कीसँ दीनानाथकेँ टुस्कियाबए लगली। जहिना लहनाक लहनदार आगूमे ठाढ़ भऽ तगेदा करए चाहैत तहिना अनुराधा, दीनानाथकेँ बुझि पड़ए लगलैन। मुदा दीनानाथक मनमे ईहो एलैन- तगेदाक उत्तर तगदार किछु-ने-किछु देबे करैए। चाहे 'हँ' कहह कि 'नइ' आकि 'अखन नै आगू।' किछु-ने-किछु तँ कहिते अछि मुदा ओहन तगेदा केनिहारि पत्नी तँ नै

हेती। बड़ बेसी हेती तँ परिवारक कोनो तगेदा करती जे सझिये छी। तइले मत्था-पच्ची करैक जरूरते की। दुनू गोरे मिलि विचारि आगि-पानिमे जाइले तैयार भऽ जाएब। दीनानाथक मनक गाछमे जेना फुनगीपर पोनगी देलकैन तहिना डम्हाएल फूलक कली जकाँ बिहुसैत बजला-

"किदैन जे कहने छेलिऐ, 'नैहरक समाद..' से अधेपर छोड़ि देलिऐ?"

पतिक बात सुनि जिज्ञासु अनुराधाकेँ आरो जिज्ञासुपन बढ़लैन। मने-मन अख्हिासए लगली। माइयो दादियेक उतारा छेली, दादियो परदादियेक उतारा छेली। जेना-जेना हुनको अवस्था चढ़ैत गेलैन तेना-तेना अपनो सियान होइत सासुर एलौं। एला पछाइत ओ मुइली...।

परदादीक मृत्यु मनमे अबिते अनुराधाक नजैर बाड़ीक सुथनीपर गेलैन। बजली- "ताबे शिवधामसँ बुच्चियो अबैए। अदहा घन्टा समैयो बँचल अछि, तैबीच सुथनी उखारि अनै छी, संगे-संग रातिमे सुथनियेँ खेबो करब।"

पत्नीक बात सुनि दीनानाथक मन खटाइन-खटाइन भऽ गेलैन, मुदा लगले मन आगू बढ़ैसँ रोकि देलकैन। अखन फलहारक शुभ घड़ी अछि, तैबीच किछु बात बाजि बाधक नै बनब। की बेटी नै देख रहल अछि जे पिता ओछाइनपर अपने दिन गनि रहल छैथ। तहूमे बेटीक दुख जेते माइक हिस्सामे अछि तेते बापक हिस्सामे थोड़े अछि। मनकेँ आगूसँ घेरि दीनानाथ थीर केलैन।

अस्ताचलगामी सुर्ज अपन पतालक घाटपर पएर दऽ देने छला मुदा बोन-झाड़ आ पहाड़पर ओहिना झलकै छला।

संगीक संग रूक्मिणी अपना घर लग अबिते फुटि कऽ आँगन पहुँचल। आँगन पहुँचते पहिने हिया कऽ ओसार दिस तकलक। मुदा केतौ किछु ने देख रूक्मिणीक नजैर ओछाइनपर बैसल पितापर गेल। दीनानाथो ओहिना रूक्मिणी बेटीपर आँखि गड़ौने देखै छला जेना किछु सनेस लऽ कऽ बेटी आएल होइन। तैबीच अनुराधा वाड़ीसँ सुथनी उखारि कलपर चिक्कनसँ धो-धा खुरपीक संग आँगन पहुँचली। रूक्मिणीकेँ देखते कहलखिन-

"बेटी, अहींक फलहारक ओरियानमे लागल छी। मनमे भेल जे बेटिये संग किए ने सभ परानी फलहारे करब।"

मिथिलांगना होइक नाते रूक्मिणी बाजल किछु ने मुदा मन झुझुआइत रहलैन।

❍

शब्द संख्या- 2350, 25 अगस्त 2015

खसैत गाछ

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँच पुरन ठाकुर ओइ गाछ सदृस भऽ गेल छैथ जे ने अकास दिस मुँह उठौने ठाढ़ अछि आ ने धरतीपर बिछाइन भेल पड़ल अछि।

सौन मास, बादलसँ छाड़ल मेघ, सुर्जक केतौ पता नइ, उमड़ैत-घुमड़ैत ओहन हूंकार भरैत जे बरिस कऽ धरतीकेँ जलमग्न कऽ देत, रहि-रहि बिजलोका सेहो दिशा बदैल-बदैल कखनो अपन पीरौंछ रंगें तँ कखनो हल्लुक लाली नेने तँ कखनो आल लाल रंगें तड़तड़ेबो करैत आ गोटे-गोटे बेर ठनैक-ठनैक ठनका बनि खसबो करैत। ओना अदरे नक्षत्रसँ बर्खा अपन रूप पकैड़ नेने छल जइसँ पोखैर-झाँखैरक संग धारो-धुर फुला अपन तेज गति पकैड़ लेलक। चर-चाँचरक संग ऊँचरस-नीचरस खेतो जल-प्लावित भेल। अस्सी-बिरासी बर्खक पुरन ठाकुर आबि दरबज्जाक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ थर-थर कँपैत ने किछु बाजैथ आ ने कोनो चाले-चुल...।

दरबज्जाक दछिनबरिया खिड़की टुटि गेल अछि, जइ होइत हवो आ झटको घरमे अबैए, ओकरे बन्न करैले प्लाष्टिकक बोराकेँ बाँसक फट्ठीमे काँटीसँ ठोकि-ठोकि ठीक करैत रही।

कखन पुरन ठाकुर दरबज्जापर आबि गेल रहैथ से तँ ठीक-ठीक नै बुझि पेलौं मुदा पनरह-बीस मिनट पहिने दरबज्जाक खिड़कीक काजमे लगल रही, तइसँ पहिने नइ आएल रहैथ। तइसँ अनुमान केलौं जे दस-पनरह मिनटक भीतरे आएल छैथ।

थरथर कँपैत स्वरमे पुरन ठाकुर बजला-

"बौआ!"

ओना एकबेरक अवाजकेँ जहिना लोक अवाज नै मानैए तहिना हमरो भेल जे भरिसक अन्तुका अवाज छी। तँए कानक बातपर मन नइ उठल। जहिना अपन-काजमे लगल रही, तहिना लगले रहलौं। दोहरा कऽ पुरन ठाकुर बजला-

"बौआ, बौआ राधेश्याम!"

नाओं सुनिते घरेसँ कहलयैन-

“के छिआ! अबै छी।”

अवाज तँ सुनि नेने छेलौं, मुदा बोलीक अकान नइ भेल छल। जँ बोलीक आकन होइत तँ आरो किछु कैहतिऐन। मुदा से नइ भेल। जहिना खिड़कीक काज पसरल छल तहिना छोड़ि घरसँ निकललौं तँ पुरन काकाकेँ देखलयैन। नाट कद, गाढ कारी रंग, गोल मुँह पचकल, आँखि धँसल, धोती, गोलगला आ कान्हपर तौनी नेने ठाढ़।

देखते पुछलयैन-

“पुरन काका, एहेन समैमे घरसँ किए निकललौं?”

देहक वस्त्र भीजल, जइसँ टप-टप पानि धरतीपर खसैत। बजला-

“बौआ, आइ हम मरि जाएब!”

ओना मनमे भेल जे पहिने सुखल कपड़ा दिऐन मुदा पुरन कक्काक बात ‘आइ हम मरि जाएब’ मनकेँ ठनका देलक। ठनका ई देलक जे कोन थर्मामीटरसँ पुरन काका नापि लेलैन जे आइ मरि जेता? मरणक पीड़ा आ जन्मक पीड़ा तँ जिनगीमे लोककेँ एकेबेर होइ छै, ओ केना अनुमान कऽ लेलैन? फेर भेल जे भरिसक जाड़सँ देह ठिठुर गेल छैन तँए एहेन बात मुहसँ निकैल गेलैन। मुदा लगले भेल जे सौनक पानिमे ओहन ठिठुरन होइ कहाँ छै जेहेन माघक पानिमे होइ छइ। तही बीच पुरन कक्काक परिवार दिस नजैर उठि गेल। उठिते भेल जे भरिसक घर ने खसि पड़लैन अछि, जइसँ एहेन बात बजला।

घरपर नजैर पड़िते मन पड़ल- पुरन काकाकेँ परिवारे कहाँ छैन, घर ते खसले छैन। हाथ पकैड़ पुरन काकाकेँ घर लऽ जा चौकीपर सँ एकटा धोती दैत कहलयैन-

“पहिने सुखल कपड़ा देहमे लगा लिअ। हमरो काज लगिचाएले अछि, पछाइत दुनू गोरे चाहो पीब आ गपो-सप्प करब...।”

मन बहटारै दुआरे कहलयैन-

“ऐ बेर इन्द्र भगवान खुशी छैथ!”

धोती पहिरैत पुरन काका बजला-

“धु: कोन भाँजक बात बजै छह। अन्हराकेँ जेहने जगने तेहने सूतने।”

पुरन कक्काक बातक कोनो अरथे ने लगल। अपना मनमे भेल जे भरिसक देहक वस्त्र ने सुखल पहिर लेलैन मुदा मन सिमसले छैन।

पुछलयैन-

“काका, अहाँक बात नइ बुझलौं?”

पूछ होइते जेना पुरन कक्काक मनमे पुछड़ी लगि गेलैन तहिना मन कलैश उठलैन, बजला-

“बौआ! जागब आ सूतब भेल, जरूरतसँ कम-बेसी।”

पुरन कक्काक बात फेर नै बुझलौं। ऐठाम इन्द्र भगवानक गप अछि तखन बीचमे ‘जागब आ सूतब’ केतएसँ आबि गेल?

पुछलयैन-

“की जागब आ सूतल कहलिऐ, काका?”

बिहुसैत आसिन मासक सिंगहारक फूल जहिना साँझ पड़िते भकराड़ भऽ जाइए तहिना पुरन कक्काक मन फुला कऽ भकराड़ भऽ गेलैन। बजला-

“जैबेर इन्द्र भगवान बरिसला तैबेर बाढ़ि चाटि-पोछि लैत आ जैबेर सूतला तैबेर रौदी सुखा-टटा दैत तैबीच मारल जाइए खेत आ खेतक बले जीवैबला लोक। मुदा खेतपर जीनिहार लोको की भगवानकेँ गुदानै छैन, मन खुशी रहलैन तँ कोहवरक गीत सुनबै छैन आ जँ खिशियाएल रहलैन तँ मरजादियो बेर मुहेँ-काने गारिसँ एकबाहि कऽ दइ छैन। भाय! घरबैयाकेँ सुननौं ओ गारि किए लागत, हुनके बहिन-माए ने बरियातीकेँ सोझा-सोझी गरियबै छैन। सएह छैथ खेतपर जीनिहार भगवान, जे अपने शक्तिये जीबै छैथ, समुद्रक डपौरे-शंख किए ने अनघोल करौ मुदा अनठौआ बहीर जकाँ कानमे या तँ आँगुर लऽ साहोर-साहोर करत आ नइ तँ तूर-तेल लऽ असुआ कऽ सुइत रहत।”

हाँइ-हाँइ कऽ खिड़की लगा, हथौरी-काँटी, बैशला सभकेँ कातमे रखैत, बाहरब छोड़ि, जखन पुरन कक्काक आँखि-पर-आँखि देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे चाह सुनि पुरन कक्काक मनमे तृप्ति नइ एलैन। जँ तृप्ति आबि गेल रहितैन तँ मन जरूर तिरपित जकाँ बुझाइत। मुदा से नइ, भरिसक पुरन काका अन्नक भूखल छैथ, तँए चाह सुनि तृप्ति नइ जगलैन। सोभाविको छै, अन्न आ पानि तत्काल भरि सम्हारि सकैए मुदा अन्नक सोलहन्नी भार पानि तँ नहियेँ सम्हारि सकैए। एहनो तँ भाइये सकैए जे तबधल वायुकेँ आरो तबधा मनकेँ बेपीड़ित कऽ दिऐ। मुदा पुरन कक्काक मन जहिना तन-मन भग्न भेल छैन, तइसँ कनियेँ नीक ने अपनो छी। एहेन समैमे चाहोक निवेदन कम नइ भेल। जैठाम बिजलीक चुल्हि वा गैसक चुल्हि नइए तैठाम भानसक चुल्हि माने गोड़हा-चेड़ा जरैबलापर चाह केना बनत। चाह तँ जेहने पीबैमे रसगर लगैए तइसँ की ओ कम रसिक अछि, गाछक सुखल ठौरही, सुखाएल कड़चीक टुकड़ी आकि सुखाएल बत्तीक

टुकड़ीक चुल्हि छी। एहेन समैमे[28] ओहो चाहक चुल्हि नरमाएले रहैए। एतबो आग्रह कम नइ भेल।

फेर भेल जे किए ने एकबेर पुरने काकाकेँ पुछि लिऐन। मुदा मनमे ईहो उठल जे बूढ़-पुरान लोक छैथ, जँ कहीं एहेन व्रती जिनगी रहल होनि जे की खाएबकेँ अधला बुझैत होथि आ कहि दैथ जे तूँ हमरा बड़ धड़खनाह बुझै छह! तखन तँ आरो पहपैट हएत। समय भिनसुरके रहै, जलखै नइ केने रही। मुदा चुल्हि पजैर गेल रहै से धुइयाँ-धुकुरसँ आगम भऽ गेल रहए। लगले मनमे बिचैड़ गेल। जखन चाहक आग्रह पुरन काकाकेँ केने छिऐन, ओना रोटीक संग चाहक चलैन तँ नइ अछि आ ऐछो तँ गाम-घरमे अखन नइ अछि मुदा शहर-बजारमे कम पाइ कमेनिहार चाहक संग चाहकेँ तीमन बना खाइते अछि। गाममे चाहक तीमन तीमनक मान्यता नइ पौलक अछि। सभ जिनगीक सब रंग भोजन होइए, ओइ भोजनक संग ओकर जिनगी चलै छै आ जिनगीक संग रहन-सहन सेहो चलै छइ। तँए भोजन संस्कृत प्रभावित भाइये जाइए जेना चाहक आगमनक संग बिस्कुटो आबि गेल...।

मन पड़ल, घरमे बिस्कुट ऐछे कनी अहगरसँ बिस्कुटो जँ आगूमे देबैन तँ जरूर मनमे तृप्ति औतैन। जखन मनमे तृप्ति औतैन तखन ने आइए जे मरैले तैयार भेल एला हेन, हुनको दस बर्ख जीबैक इच्छा जगतैन। लगले देहक भुलकल रूप आ जाड़सँ सिरसिराइतपर नजैर पड़ल। मन ठमैक गेल।

तीन सालसँ जेते कपड़ा बदलने रही, ओ सभ अछिए। किए ने मोटरीए सुमझा दिऐन जे जेतेसँ देह झँपाएत तेते लऽ लिअ। सएह केलौं।

गंजी, अंगा आ चद्दैर देख पुरन कक्काक मनमे तृप्तिक संचार भेलैन। जिनगीक मूल आवश्यकता जे अछि ओइमे वस्त्रो तँ अछिए। जँ मनसँ भोजन, रहैक घर, पहिरैक वस्त्र, बेर-बेगरतामे दवाइ-विड़ो भऽ जाए तँ के चाहत जे लगले अछियापर चलि जाइ। दुनियाँ तँ नन्दन कानन छी, जइमे के नइ बास करए चाहैए। सभ तँ चाहिते अछि।

ओना मोटरीमे बहुत कपड़ा तँ नइ मुदा तीनटा गमछा, चारिटा लूँगी, दूटा धोती आ एकटा चद्दैर तँ छेलैहे। कपड़ा देख पुरन काका अपन जिनगीकेँ दरजी-नप्पासँ अपन जिनगी नपला तँ बुझि पड़लैन जे आब अपन औरुदे केते दिनक बाँकी अछि, तहूमे तेहेन जिनगीमे जीब रहल छी जे होइए आइए मरि जाऊँ। मुदा जँ दसो बरिस आरो जीब तैयो वस्त्रक दुख नइ हएत। द्रोपदी जकाँ भगवान तेहेन वस्त्रक ढेरी आगूमे रखि देलैन जे जिनगीक कोन बात असमसानक

[28] बरसातक समैमे

अछियो धरि नइ घटत।

लगले मन घुमि गेलैन। घुमिते उठि बैसला। बैसते मनमे एलैन राधेश्यामकेँ जे रखलाहा छल से सभटा आगूमे दऽ देलक। एकर माने ई नइ ने भेल जे मोटरीए दऽ देलक। जेतबे अखन खगता अछि तेतबे ने लेब, मुदा तइसँ ते साले दू साल ससरब...।

पछाइत फेर मनमे उपकलैन, राधेश्याम ईहो तँ नहियेँ बाजल जे ऐमे सँ एकटा निकालि लिअ आ बाँकी हमर मोटरियेमे छोड़ि दिऔ।

आगू-पाछू नजैर दौड़बैत पुरन काका गर अँटकारि कऽ बजला-

“बौआ, अपने हाथे दाए।”

‘अपने हाथे दाए’ सुनि मन तड़ैप गेल। मन तड़ैप ई गेल जे जखन वेचारेकेँ मोटरीए सुमझा देलिऐन, तखन अपने हाथे दैक माने भेल जे किछु दिऐन आ किछु रखि ली। रखैक माने भेल- झिंगुर काटत चाहे पानिक चुवाठसँ भीज कऽ सड़त आकि मूस-मुसरी खाएत तेकर कोनो ठीक थोड़े अछि, तइसँ नीक ने जे एकटा वस्त्र-विहीनकेँ वस्त्र भेटत...।

कहलयैन-

“काका, अहाँ जड़ाएल छी, जेतेसँ देह गरमाए तेते पहीरि लिअ आ जे रहि जाएत ओहो लऽ लिअ।”

हमर बात सुनि पुरन कक्काक मन ओहन इनार जकाँ भरि गेलैन जेकरा खुनैयेकाल खुननिहार कहि दैत जे ऐमे पाँच हाथ आकि सात हाथ पानि रहत। तहिना ने अपनो जिनगीक हिसाबे सभ वस्त्र भाइये गेल। तइमे लूँगी तँ तेहेन अछि जे मुँह फाड़ि देबै कि एकटासँ तीनटा भऽ जाएत। ओइढ़ो लेब, बिछाइयो लेब आ पहीरो लेब।

वस्त्र विहीन खसल पुरन कक्काक मन जेना बेपीड़ितसँ पीरित दिस बढ़लैन। पिरौंछक आगमन होइते मन मुस्कियेलैन। कहि कऽ चाह आनए आँगन गेलौं। अँगना-दरबज्जाक दू आँगन अछि, तँए आँगन टपैमे कनी देरी लागल। तैबीच पुरन काका देहमे गंजी, कुरता पहीरि माथमे तौनीक मुरेठा बान्हि चद्दैर ओढ़ि लेलैन।

कागजेक टुकड़ीपर दूटा डिब्बा ट्वेन्टी-ट्वेन्टी बिस्कुट उझैल देलिऐन। बिस्कुट देख पुरन काका बजला-

“बौआ, हमरा कोनो बेसी भूख नइ लागल अछि, तहूमे भिनसुरका उखड़ाहा छी, हम कि कोनो करखन्नाक रौतुका ड्यूटी करि कऽ आएल छी जे नीनाएल-भुखाएल रहब। मुदा हम केना...।”

पुरन कक्काक अधबोलिया बात सुनि मनमे भेल जखन पुरन कक्काक मुहसँ एहेन विचार खसल तँ मानि लइ छिऐन। मानैत कहलयैन-

“काका, बीचमे रहऽ दियौ आ दुनू दिससँ दुनू गोरे उठा-उठा खाएब।”

ओना मनमे रहए जे अपन खाएबकेँ सरकारी करमचारी जकाँ हाजरी पुड़ाएब आ भुखाएल पुरन काका छैथे तँए भूखक लहैरमे बेसी खेता।

चाह-बिस्कुट खेला पछाइत बुझि पड़ल पुरन काका आब पतालसँ ऊपर उठि धरतीपर आबि गेला। यएह तँ तीनू दुनियाँक खेल छी, कियो अकासमे उड़ैए तँ कियो पतालक सात सीढ़ी-निच्चाँमे दबाएल अछि। एकर माने ईहो नइ ने जे बीच बसल धरतीपर कियो ने अछि। सेहो तँ ऐछे, से कोनो आइए अछि सेहो बात नहियेँ अछि, अदौसँ रहल आ ताधैर रहत जाधैर अकास-पताल एकबट्ट भऽ धरतीपर आबि ठाढ़ नइ हएत। विचारोक दुनियाँ एहने अछि। खसल मन, टुटल जिनगीक विचार आ ऊपर उड़ैत जिनगी जाबे एकठाम आबि एक दिस नइ चलत ताबे एकरस भऽ केना सकैए।

मुदा से नइ, चाह बिस्कुट खाइते-पीबते पुरन काका, चौमासी खेत जकाँ जोतल-चौकियाएल एक रसमे बुझि पड़ला।

कहलयैन-

“काका, एना किए टाँहि देने छेलौं जे बौआ आइ हम मरि जाएब। अहीं कहू जे आइ धरि जे सुख-दुख गमेलौं ओ अपना घरमे आ मरैले चलि एलौं हमरा दरबाजापर?”

जहिना विचार विचारकेँ छुबैत, प्रेम प्रेमकेँ छुबैत तहिना पुरन कक्काक मनकेँ छुलकैन। छुबाइते बजला-

“बौआ, तोरे सबहक- माने समाजेक- मुँह देख अहू अवस्थामे ठाढ़ छी, नइ तँ अपन कहि के रहल। तखन तँ जइ समाजक मुँह देख जीबै छी, सेवा करै छिऐ, वएह समाज ने मुँहक चहरो अखैन तक दैत आएल अछि।”

पुछलयैन-

“से की?”

‘से की’ सुनि पुरन कक्काक मनमे मौलाएल गाछ जकाँ नव कलश जगलैन। जगिते मुँहक रंग बदललैन। रंग बदलैक कारण भेलैन जे भरिसक हमरो सन लोकक बेथा-कथा सुननिहार समाजमे कियो छैथ। मुस्की दैत बजला-

“बौआ, शुरूमे जहिया ऐ गाममे आबि बसलौं, तहिया अखुनका जकाँ ने एते नमहर गाम छल आ ने एते लोके छल। पिताजीक संग दुनू भाइयो आ माइयो आबि बसल रही। अपन तँ ने खेत-पथार रहए आ ने घरे-घराड़ी, मुदा

समाज मीलि रस्ते-कातमे घराड़ियो देलैन, खढ़-बाँसक घरो बना-देलैन आ रोजगारक रूपमे केश-दाढ़ी कटैक काजो देलैन।"

जिज्ञासा करैत पुछलयैन-

"तइसँ पहिने गाममे नौआ नइ छला?"

कहलैन-

"नइ। पड़ोसी गामक नौआ आबि दाढ़ियो-केश आ बिआहो, मुड़नो आ सराधोक काज सम्हारै छल। मुदा संख्यामे कम रहने बेर-बेगरतामे काज खगिये जाइ छेलइ। ओना गामो-समाजकेँ नौआक जरूरत छेलैन आ अपनो उजरल-उपटल जिनगीकेँ ठौर भेटल।"

पुछलयैन-

"जेकर रोजगार लेलिऐ ओ सभ किछु कहलक नइ?"

बजला-

"की कहितए। वेचारा सबहक अपने जान हल्लुक भेलै, तहूमे ओहो सभ की आन छला, बाबूक मसियौत भाइये छला।"

"काजक बोइन केना भेटै छल?"

'बोइन' सुनि पुरन कक्काक मन बिहुसलैन। मुस्की दैत बजला-

"दू रंगक कमाइल दइ छला। जिनका केश-दाढ़ी कटै छेलिऐन ओ एक धाड़ा माने एक पसेरी दाढ़ीक आ एक पसेरी केशक कमाइल दइ छला आ जिनका खाली केशेटा कटै छेलिऐन ओ एक पसेरी कमाइल दइ छला।"

पुछलयैन-

"एक धाड़ा केते भेल?"

कहलैन-

"बौआ, पहिने कच्ची सेर चलै छल। ओना पक्की सेहो छल मुदा कमाइल कच्ची सेरसँ दइ छला। पक्की पान सेरक पसेरी छल आ कच्ची छह सेरक।"

पुछलयैन-

"तैसंग आरो किछु दइ छला?"

'आरो' सुनि पुरन कक्काक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसिते बजला-

"समांगे जकाँ सभ बुझै छला। ओना कमाइल दइ छला अगहनमे। मुदा मुड़न-उपनैन, बिआह-सराधमे खैयोले दइ छला आ कमाइलक अतिरिक्त लतो-कपड़ा आ सिदहो भेटै छल। जइसँ कहियो गुजर-बातमे दिक्कत नइ हुअए।"

पुछलयैन-

“दुनू भाँइक परिवार केते दिन शामिल रहल?”

कहलैन-

“जाबे बाबू-माए जीबै छला, ताबे सभ शामिले छेलौं। शामिलेमे दुनू भाँइक बिआहो-दान भेल। हम भैयारीमे छोट रही आ भैया जेठ छला। हुनका चारिटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। हमरा दूटा बेटेटा भेल।”

पुछलयैन-

“अखन के सभ छैथ?”

कहलैन-

“भैयाक परिवार तँ दिनो-दिन बढ़िते गेलैन मुदा हमर एकटा बेटा दस-बारह बर्खमे मरि गेल आ दोसर तहेन चालि-चलैनक भऽ गेल- माने गांजा पीअ लगल- जे भरि-भरि दिन ओही पाछू तेना वौराएल रहै छल जे किछ कहि नहि। एक दिन खिसिएलिऐ। दुनू परानी पड़ा कऽ सासुरेमे बसि गेल। तेकर किछु दिनक बाद घरोवाली मरि गेल। मुदा तैयो जाबे देहमे हूबा छल ताबे तँ केकरो ने गुदानलिऐ मुदा जेना-जेना हूबा घटैत गेल तेना-तेना सभ किछु बिलटैत गेल! सोल्होअना जजमैनको भातिजे सभकेँ दऽ देलिऐ। दऽ देलिऐ बड़बढ़ियाँ, मुदा तेहेन-तेहेन जनीजाति सभ घरमे आबि गेल जे कियो देखैबला नइ रहल।”

पुछलयैन-

“आब की सोचै-विचारै छी?”

कहलैन-

“आब की सोचब-विचारब। तखन तँ...।”

मनमे भेल, एक आदमीकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ कोन बड़ भारी काज भेल...।

कहलयैन- “अहीठाम रहि जाउ।”

‘अहीठाम रहि जाउ’ सुनि पुरन कक्काकेँ जेना जान-मे-जान एलैन। मुदा बजला किछु ने, मुस्कियाए लगला। बुझि पड़ल जेना नव जिनगी भेट गेलैन तहिना खुशीसँ मुस्कियाइते रहला।

❍

शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टुबर 2015

एगच्छा आमक गाछ

सुन्दरपुर गाममे सोनमा बाध अछि। ओना चारू बाधक बीचमे गाम अछि मुदा दछिनबरिया बाध माने गामक दच्छिन जे बाध अछि जइ बाधमे प्रवेश करिते दच्छिन मुँह डेग उठत, ओइ बाधमे एकटा आमक गाछ अछि जेकरा लोक एगच्छा सेहो कहैए।

ओना सोनमा बाध नमगर-चौड़गर अछि, नमगरे-चौड़गर नइ, ऊँचगर-नीचगर सेहो अछि। तेतबे किए, जहिना खेत-खेतक माटि एकरंगाहो अछि तहिना भटरंगाहो तँ ऐछे, तँए ने दसो-पनरह रंगक माटियो अछि आ नीचाँ-ऊपर रहने आड़ियो तँ सीढ़ी जकाँ बनले अछि किने। खएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे गाछक कमी नइ रहितो वृक्षक कमी तँ बाधमे ऐछे, माने खेती-पथारीक तँए ऊँचगर खेत रहितो अन्नेक खेती होइए जइमे गाछियो-बिरछी तँ भाइए जाइए। से गाछी-बिरछी नहि। डेढ़ कट्ठा परतीपर मात्र एकटा आमक गाछ अछि। एकर माने ईहो नइ जे गाछ-पात नइ अछि। अन्नोक गाछो होइते छै, पातो होइते छइ। तहूमे माटिक जे भटरंगीपन छै ओ तँ आरो बेसी रंगक गाछ-पात उगबैए। जँ एकरंगाह रहैत तँ किछु समटल कारोबार, माने माटिक अनुकूल उपजा रहितै, से नइ बेसी रंगक रहने बेसी रंगक होइते छइ। खएर जे छै, मुदा बाधमे एकटा आमक गाछ तँ अछिए। एकरा नकारलो नहियेँ जा सकैए।

बाधमे असगर एगच्छा आमक गाछ, खूब चतरलो अछि आ नम्हरो अछि। ओना ओ गाछ कियो रोपलक आकि अपने जनमल, से अखैन तक गौंआँ नइ फरिछा सकल अछि। कियो कहै छै बाधक जे रखबार छल ओ रोपलक, मुदा ओ बुढ़बा तँ मरि गेल। रोपलाहा गाछे ने रहि गेल, मुदा से माननिहारो हुअए तब ने...।

किछु गोटे ईहो तँ कहिते अछि जे कौआ पाकल आम आनि गुद्दा खा लेलक आ आँठी-खोंइचा छोड़ि देलक, ओही आँठीक गाछ छी...।

मुदा लोकक मनमे जे होइत हौउ, ओ परतीपर जनमल तँ ऐछे, केकरो खास जमीनमे छै नहि, तँए सबहक छी, सबहक छीहे नइ सभ छाहैरमे छहरेबो करैए आ आमोकेँ चटनीसँ पाकल धरि खेबो करिते अछि। गाछो तँ सभ रंगक होइए मुदा से नइ, ओ आमक गाछ मनुखक केतेको पीढ़ी देखलक आ केते आगूओ देखत। ओना आगूक निसचित बिसवास नइ कएल जा सकैए, जेना

पैछला अछि, मुदा बिसवास नहियोँ कएल जाए सेहो तँ उचित नहियेँ हएत।

ओना, जहिना सौंसे बाधमे एकटा गाछ रहने एगच्छा भेल, तहिना हजार बीघाक आमक गाछीमे एकटा बेलक गाछ सेहो तँ एगच्छा भेबे कएल। आमेक गाछी किए, तहिना फुलवाड़ियो सभमे होइते अछि...।

एगच्छा रहितो ओ आमक गाछ बुर्ड़ाक तँ अछिए। अपन चालि-बाइन धेनहि अछि। बुर्ड़ाक ई जे अनरनेबा आ धात्री जकाँ बिनु जोड़े[29] जीबैक आशो नहियेँ रखने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। असगरे बाधमे अछि, फड़बो करैए, मोजरबो करैए, हरियेबो करैए, फतझड़ो होइए, मुदा जीबठ बान्हि जीबो तँ करिते अछि। नइ-ते असगरे जेना बाधमे अछि तेना अनरनेबा आकि धात्री जकाँ वंशो उपैट गेल रहितै। सभ बबाजीए बनि गेल रहितै। होइतो अहिना छै जे जे समैक मुकावला नइ करैए ओ मेटा जाइए। ओकर वंशक बाढ़ि रूकि जाइ छै, मटियामेट भऽ जाइ छइ। पंचतत्वमे विलीन भऽ जाइए।

द्वापर युगीन एकलव्य जकाँ ओ एगच्छा आमक गाछ अपनाकेँ बुझैत। जहिना शक्त-शील एकलव्य अपनाकेँ शक्तिवान बनबैले शक्तिशालिनीक आराधना केलैन तहिना ओहो आमक गाछ असगरे बाधक बीचला डेढ़-कट्ठबा परतीपर ठाढ़ भेल अपनाकेँ बुझैत। गाछो-बिरीछक दुनियाँ तँ अछिए। हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछक बोनाएल दुनियाँमे की सबहक वंशो आ वंशवृद्धियो एके रंगक थोड़े अछि। कोनो बीआसँ जनमैए तँ कोनो फूलसँ, कोनो पत्तासँ जनमैए तँ कोनो गाछक सीरसँ...। केकरो सिर माटिक तरमे रहै छै तँ केकरो पानिक तरमे। केकरो डारियेमे सिर होइ छै तँ केकरो फुनगीपर...।

वेचारा आमक गाछकेँ मन ठहिअए लगलै। ठहियाइते मनमे उठलै अनेरे दुनियाँक बोनमे मनकेँ वौआबै छी। तइसँ नीक जे अपन दिन-दुनियाँक बात बजबो करब, करबो करब आ जीबो करब। मन फेर ठमैक गेलइ। मुदा ठमैकते जेना तीन-बट्टीपर दिशांश लगितो छै, जइसँ पूब-पच्छिम भऽ जाइए आ पच्छिम पूब, तहिना दिशांश, छुटबो करै छै, जइसँ उत्तर-दच्छिनक बोध हुअ लगै छइ। जे केमहरसँ एलौं आ केमहर जाएब। तहिना आमोक भक्क कनी खुजल। खुजल ई जे अपनामे अनरनेबो आ धात्रियोसँ बेसी शक्ति तँ अछिए। ओकरा दुनूकेँ जे जोड़ नइ भेटतै तँ छेहा नंगा बबाजी जकाँ भऽ जाएत, वंशो रूकि जेतै आ दुनियोँ ओकरा बिसैर जेतइ। मुदा अपना तँ से नइ अछि, सभ किछु अछि...।

सभ किछु मनमे अबिते एनामे जेना अपन मुँह अपने देखाइत तहिना अपन शक्ति अपना शकलमे देखलक।

[29] प्राग क्रिया

अपना धुनिमे गाछ धुनियाँक धुनकी जकाँ जिनगीक रूइयाकेँ धुनए लगल। हजारो-लाखो रंगो, भटरंगो आ चितकाबरो वंशक गाछ सभ तँ ऐछे, तहीमे ने हमहूँ एकटा भेलिऐ। जखन एकटा भेलिऐ, तखन एकेटा ने भेलिऐ। तखन दोसराइत जे ताकब से अपने दोसराइतमे किए ने इजोते-इजोत जाएब...।

जिनगीक ओ बटोही जे नमहर जिनगीक बाट टपि आबि असोथकित भऽ जाइत तहिना वेचारा आमक गाछक मन असोथकित होइत ठमकल। देहमे शके ने बुझि पड़ै जे ठाढ़ रहत। हब टुटु साइकिल जकाँ मनक चक्का ने आगूए घुसकै आ ने पाछूए ससरै। जेना आइ ओ जिनगीक हारि कबूल कऽ लेत। मुदा से भेल नइ, भेल ई जे हुब टुटू मन बाजल-

“आब, ई दुनियाँ देखब कठिन भऽ गेल।”

पजरेमे ठाढ़ हूब घटू बाजल-

“बुड़ि कहीं के रे! ब्रह्मा सन-सन केते ब्रह्माकेँ देखनिहार लोमस बाबा लोहिया ओढ़ि कऽ देखलैन आ तूँ एतबेमे धौना फेड़ै छेँ। एकटा पएरबला कनी नेंगरा कऽ चलत, मुदा चलत किए ने। कोनो कि लोथ छी।”

हूब घटूक आ हब टुटु विचारकेँ वेचारा आमक गाछ विचारणीय बुझि विचारए लगल। मनमे एलै- गाछ-बिरीछक बोनाएले दुनियाँमे एकटा हमहूँ छी। रंग-रंगक रूप, रंग-रंगक चालि-ढालिक जिनगी सभकेँ अपन-अपन छइ। कियो बीआसँ गाछ होइए, तँ कियो फूलसँ...।

‘फूलोसँ गाछ’ मनमे अबिते एगच्छा आमक गाछ ठमैक गेल। ठमकल ई जे अपन वंशक रस्ता की अछि। एकटा भेल पाकल आमक सक्कत आँठीसँ, दोसर भेटबे ने करइ। मनमे उठै जे हमर वंश कि एक भग्गुए रहि गेल...। आगू-पाछू किछु भेटबे ने करइ। भेटबो केना करितै, अखन तकक नजैर बीये-बाइलिक देखल-सुनल छेलइ। मुदा नजैर जखन आगू बढ़लै तखन बुझि पड़लै जे नै हमरो उपैतक दोसरो रस्ता अछि। ओ अछि बच्चा गाछक छातीसँ कलशल डारि सटा देने नव गाछ बनि नव जीवन सेहो तँ अछिए। तखन जिनगीसँ निराश किए हएब। मुदा जिनगी लेल जे समय-शक्तिसँ मुकावला करए पड़ै छै ओकर अनेको रूपमे दूटा कारण प्रमुख अछि। एक अछि समय-शक्ति जइमे जिनगी निहीत अछि आ दोसर अछि दानब-मानब वृति...।

एका-एक ओइ एगच्छा आमक गाछक मन फुला गेल। फुलाइते बाजल-

“हम लाल छी।”

जुहियाइत जूही बाजल-

“जेहने सतरंगी रंग तेहने सतरंगी चालियो ने छौ। मरदक लाल जहिया

बनमेँ, तहिया बुझबौ।"

मनमे उठैत खौंझकेँ रोकैत गाछ विचारए लगल। भाय सात अरब लोकमे केकरो एते फुरसैत छै, जे दोसरो दिस ताकत आकि देखत। जे बाप भरि दिन बेटा-ले पसेना चुवबैए ओकरा तँ एते फुरसैते ने छै जे अपना बेटाकेँ कम-सँ-कम अपनो वंशक इतिहास आ समाजिक सरोकार बुझा सकत आ अनका कोन मतलब छइ।

जहिना कोनो बिसरलहा बात, सोचै-विचारै काल जखन मन पड़ै छै, तखन अपनो मनमे फुलाइत हँसी उठै छै तहिना ओइ एगच्छा आमक गाछकेँ सेहो भेल। मन पड़लै अपन लगौनिहार रखबार, केना असकरे बाधमे ठाढ़ छी, जहिना सभ-ले अन्हर-विहाड़ि, झाँट-पाथर छै तहिना ने हमरो-ले अछि...। एगच्छा आमक गाछक मन आगू घुसैक बुदबुदाएल-

"अपन सर्वांग जिनगीक रक्छा अपने करैक लूरि-बूधि हएत तखन ने रकछित रहि सकै छी।"

लगले दोसर मन टोकलक-

"मातृभूमि केकरा कहै छै, ओकर रकछक के छी?"

अनुत्तरित प्रश्न आमक गाछक मनमे उठए लगल। मुदा कलशक डारिक नव गाछक रोहानी देख मन रहैम गेलइ। रहैमते फुला गेलइ। फुलाइते उठलै-

"अदौसँ जीव-जन्तुक संग रमैत एलौं अछि आ आगूओ अहिना रमता जोगी बनि रमैत एगच्छा नइ सत्-गच्छा बनि इन्द्रधनुष जकाँ अकासमे फुलाएब।"

❍

शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

शुभचिन्तक

खुशीलाल भाइक मुँहक रूप ओहन बुझि पड़ल जेना अस्सी मनसँ ऊपरे अछियाक मुरदा जकाँ लदाएल होइन। ओसारक ओरिआनीक चौकीपर चद्दैर ओढ़ि पड़ल रहैथ, अदहा मुँह उघारने रहैथ आ अदहासँ कनी बेसी झँपने छला, मुदा आँखि आ चाइन सोलहन्नी उघारे रहैन।

ओना एके-गामक एक समाजक बीच सेहो छीहे, मुदा जेहेन सम्बन्ध मनुख-मनुखक बीच हेबा चाही से नइ रहने भीतरिया सम्बन्ध खुशीलाल भाइसँ नहियेँ अछि, मुदा एक-ठाम रहने सदिकाल झगड़ो करब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। जिनगीमे काज करैले समय चाही से जँ गप-सप्प आकि झगड़ा-झाँटीमे चैल जाएत, तखन तँ जिनगी आरो ओझरा जाइए। जहिना डोराक पुलियामे डोरा ओझराइए तहिना ने विचारमे बुधियो ओझरा जाइए, तहिना हुअ लगल, मुदा हाँइ-हाँइ–के मनकेँ धोपलौं। माने असथिर करैत ऐ सीमापर अनलौं जेतए लोक अपन जिनगीक दैनंदिनक क्रिया अपन परिस्थितिये करैत नियम बनौने रहैए, जइ बीच समैक विशेष भाग कटि जाइए, तइसँ आगू बढ़ैत समाजमे ने काजक[30] दिशामे कनी-मनी तोड़-जोड़ होइए तइले सदिकाल मुहोँ फुला-फुली नीक नहियेँ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे खास-खास विचारक खास-खास सम्बन्धो तँ होइते अछि। ओना आइक जुगमे केकरा एते फुरसत छै जे मामा-नाना आकि दादा-परदादाक समय-सालक चाल-चूल बुझत। बुझले बात छै जे मुइलापर भोजो करैले तँ पाइये चाही तही पाछू ने बेहाल अछि, यएह तँ भेल अखुनका लोक, मुदा अही लोकक बीचमे ने 'सतलोको' अछि, 'मनलोको' अछि, 'परलोको' अछि आ तैसंग 'भुतलोको' तँ अछिए। एतबे किए, आरो केतेको लोक अछि जेना- 'मृत्युलोक', 'जीवितलोक' आदि-आदि...।

जिनगी अही सीमापर ने बेकतीगत आचार-विचार समाजक आचार-विचारमे बदलैए। अही बदलैक मोड़पर जिनगी जिनगीक बीच कट-कूट सेहो होइए आ यएह कूट कखनो पहाड़ बनि जाइए तँ कखनो कूटम[31] बनि जाइए...।

भिनसुरके समय रहै, भोरका चाह पीबैत रही कि पत्नी छमकैत लगमे

[30] उन्नैतक

[31] छल

आबि बजली-

"खुशीलाल भैया ने मरै छैथ आ ने जीबै छैथ, हुकुर-हुकुर करै छैथ।"

भिनसुरका समय, शान्त वातावरणमे चिन्तो शान्त रहबे करए, पत्नीक शब्दवाण सोझे कानक कनगोजकेँ छेदैत बेध देलक। मन हलचला गेल। हाइ रे बा! कौआ जकाँ पत्नी की बीचमे आबि कड़कड़ा गेली? मुदा लगले मन पत्नीक बातक बिसवासपर पहुँचल। ओना केते झूठ आकि केते सत् बजै छैथ से तँ ओ जानैथ, मुदा हम चारियोअनासँ कम बिसवास करै छिऐन, एकर माने ई नै बुझब जे ओ बड़ झूठी छैथ। छैथ ई जे कोनो बातोकेँ आ कोनो काजोकेँ तेना ने मुँह-कान गढ़े छैथ जे गोटेकेँ मुँह नमहर बना नाङेर कपैच लइ छथिन तँ कोनोकेँ नाङेर मोट बना मुँह कपैच लइ छथिन। तेकरे कपचैत बनबैत सुढ़ियबैत-सुढ़ियबैत गोटे चौअनियोँसँ कम भऽ जाइए तँ गोटे अठन्नी भरि रहैए, तँए बीचक सीमा चौअन्नी रखने छी।

मने-मन पत्नीक बातकेँ औंटए-पौड़ए लगलौं। औंटै-पौड़ैमे कनी समय लगबे करै छै किने, से लगैत रहए। मनमे ईहो हुअए जे कहुना छैथ तँ शिक्षकक बेटी छैथ, अलंकार सुनने-पढ़ने हेबे करती तँए बजैमे कनी कम-बेसी हएब सोभाविके छइ। मन मानि गेल जे अलंकार शास्त्र पढ़निहार ओकील थोड़े हएत, ओ तँ करामाती कलाकारे ने भऽ सकैए...।

सोच-विचार कैरते रही कि बिच्चेमे पत्नी फेर टभकए चाहली। दस मिनट पहिलुका सुनल समाचार रहैन तँए मनमे घुरघुराइत रहैन। दोहरा कऽ बजली-

"भैयाक टीक उखैड़ गेलैन!"

पत्नीक बात मारूख जकाँ बुझि पड़ए। मुदा डर ईहो हुअए जे अखन पत्नीक मन उड़ियाएल-पुड़ियाएल छैन, ऐ बीचमे जँ किछु बाजब आ ओ चिल्होरि आकि बाझ जकाँ लपैक लेती, तखन तँ अनेरे बाता-बाती बढ़त। तइसँ नीक जे चुपे-चाप सुनैत रही। मनमे ई हुअए जे कोनो एकेटा समाचारक ने उमकी हेतैन, बड़ बेसी तँ जेठ मासक पोखैरक उमक जकाँ दस मिनट रहत। चाहे पीबैकेँ कनी नमरा लेब। जखन मुँहमे चाह रहत तखन मुँह बजबे की करत, तँए एते तँ गर अछिए। तँए कान पत्नी दिस पाथि निच्चाँ मुहेँ चाहो पीबए लगलौं आ पत्नीक बातकेँ औंटौ-पौड़ौ लगलौं। आ गोटे-गोटे बेर आँखि उठा पत्नियोँपर दिऐन तँ बुझि पड़ए जे बजैक सनमनी अखनो ओहिना जगजगार छैन्हे। तँए आरो मुँह दाबि-दाबि चाह पीबैत रही।

तेहरा कऽ पत्नी बजली-

"सभ छिनरपना घोंसैर गेलैन।"

मने-मन जखन पत्नीक भाषाकेँ अँकलौं तँ बुझि पड़ल जे अखनो चढ़ंत मन छैन्हे। बीचमे बाजब कौआसँ खैर लुटाएब हएत। अनेरे अनकर घेघ, आभूषण बुझि, अपना गरदैनमे लटका लेब! यएह ने अखन होइए जे पत्नी झझकारि-झझकारि बाजि रहल छैथ आ हमरा सन पुरुखक झड़ गजर-गजर सुनि रहल अछि। मुदा भाय अहीं कहू जे हाल-चालक जड़ि बुझबे ने केलौं आ घरेमे झगड़ा बेसाहि कऽ लऽ आनी तँ वएह ने जलखैयो बेर आ कलौओ बेर खाएब? तइसँ नीक ने चुप रहब हएत! भाय, दुनियाँ जनैए जे महिलाकेँ बराबरीक अधिकार भेटक चाही तैठाम पत्नीक भावनाकेँ सोलहन्नी मेटा देब, सेहो तँ उचित नहियेँ अछि, बर-बेसी हएत तँ एतबे ने हएत जे सोनारक आभूषण कहि कखनो रूपकेँ रूपक अलंकार बना देती तँ कखनो भुजंग कहि भुजंग प्रयात छन्द कहि देती...।

अग-दिगमे भोरे-भोर तेना मन ओझरा गेल जे किछु फुरबे ने करए। घरक बेसाहल झगड़ा भरि दिन लधाइते रहैए, तँए झग्गरमुँह घरसँ निकलब दिगशूल भेल, मुदा तइ दिगशूलमे एकटा आरो दिगशूल ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ ई भेल जे घरसँ निकैल नइ जाएब तँ पत्नीक रूखि गड़बड़ बुझि पड़ैए। हो-न-हो खुशीलाल भाय दिसक हवा अपने दिस ने चैल आबए। घरसँ निकलै दिससँ जखन मन घुरल तँ विचार उठल जे पत्नी जे 'छिनरपन' बजली तेकर माने की भेल? ओना सबदिना जिनगी एकठाम रहने पत्नीक बात बुझि जाइ छी, मुदा जखन पिताक शैलीमे बजै छैथ तखन भुतिया लगै छी। छिनरपन तँ उ ने भेल जे केकरो इज्जत-आवरू छीनए चाहैए। मुदा एतबे तँ नइ भेल, ईहो तँ भेबे कएल जे कियो केकरो धन-सम्पैतक छीनताइ करैए। ओना खुशीलाल भाइक जे करनी-धरनी छैन तइमे दुनू माने बैस जाए।

किछु काल पत्नीक गंजनक पछाइत मनमे भेल जे से नइ तँ खुशीलाले भाय ऐठाम जा नीक जकाँ सभ बात बुझि, पत्नीक विचारक संग मुँह-मिलानी कऽ लेब। भाय परिवार छिऐ किने, विचारक सामंजससँ ने चलत। जाबे विचारक सामंजस नइ हएत ताबे गति-विधिमे थोड़े सामंजस हएत। मुदा घटनाक पछाइत जे जिगेसा होइए ओहो तँ दू रंगिया अछि। कोनो शुभ तँ कोनो अशुभ, माने कोनो नीक तँ कोनो अधला। जइ ढंगे पत्नी बाजि रहल छैथ, तइ हिसाबे जाएब नीक नइ बुझि पड़ैए। तहूमे ओहो बुझै छैथ जे हमहूँ अपन किछु बात पेटमे रखि-जोगा अपनो खुशीलाल भाय लग बजै छी आ खुशीलालो भाय बजै छैथ। गंगा धारक बाढ़ि जकाँ नइ ने नीचाँ-ऊपर सरपट करैत झलकैए। हँ! जैठाम एकबट्ट झलकैए तहूठाम तीत-मीठ फलो आ विचारोक अँटावेश भाइये जाइए। मुदा से तँ खुशीलाल भाइक संग नइए। जखने चेहरापर नजैर पड़तैन कि मन कहि देतैन, कटलपर नोन दइले पहुँच गेल..!

जाइ आकि नइ जाइ, तइ असमनजसमे उठैक मने ने हुअए मुदा तइसँ एकटा भेल जे पत्नीक तामस ऐ दुआरे कमि गेलैन जे मनमे हुअ लगल रहैन जे हमरे बातक चोटसँ बेदम भेल छैथ। फेर जे कोनो घटना भेल जगहपर नइ जाएब कायरता भेल। खुशीलाल भायकेँ जेतए जे भेल होइन, मुदा हमर जे सम्बन्ध अछि तइमे केतौ काट-खोंट कहाँ अछि, तखन जाइसँ किए मुँह मोड़ब..?

फेर हुअए जे जँ ओइठाम जाइ आ ओकर अर्थ जँ दोसरकेँ ई लगै जे दुनू सीखा-बुधी करैए। तखन तँ भेल अधलाक संग देब। ओना नीक-अधला दुनू होइए; जेकर लक्षण हवामे उड़ै छइ। नीकक नीक आ अधलाक अधला। मुदा एकाएक मनमे भेल जे खुशीलाल भाय ऐठाम, टेङारी मंगैक बहन्ने जाइमे कोनो बाधा नइ अछि। सभ दिन सभ देखबो करैए आ काज एलापर हुनके टेङारीसँ काजो करै छी। संजोगो नीक बैसल। जेहने झमारल बोल पत्नी पहिने बाजल छेली तेहने झुमैत फेर बजली-

“घरमे बैसने काज चलत। पुरुख-पातर छी, घरसँ निकैल दुनियाँ देखब आकि घरेमे घोंसियाएल रहब..?”

कहि अपन अँगनाक काजमे लगि गेली। अपनो नमहर साँस छुटल। मन हल्लुक भेल।

ओना ओ अँगनाक काजक बहन्ने काज करए लगली, मुदा मन रहैन हमरेपर। किए तँ देखिऐन जे पाछू उनैट-उनैट हमरा दिस तकै छैथ। मुदा की कैरतौं, हारल-मारल बटोही जकाँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। जखन ठाढ़ होइत रही कि तही काल पत्नी उनैट कऽ फेर तकली। जोग कहियौ कि संजोग, हमरो आँखि ओम्हरे घुमल रहए, दुनू गोरेक नजैर-मिलान भऽ गेल। भाइ! किछु छी तँ पुरुख छी किने, नजैर मिलान होइते जेना खुशी आबि खुशिया देलकैन तहिना खुशियाइते बजली-

“पुरुख छी ते पुरुखारथ जगाउ। गाम-समाजक जे कोनो तीत-मीठ घटना होइए ओकरा बुझब अहूँक दायित्व होइए। अपन दायित्व निमाहबे पुरुखपनाक पुरुखारथ भेल।”

एक तँ ओहिना पत्नीक झमार सुनि मन पानि-पानि भेले रहए तैपर तेहेन रंग घोरि देलैन जे मने रंगा गेल। उत्साह जगल। आँगनसँ निकैल दरबज्जापर एलौं आ हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे कियो केतौ ने अछि। मुदा ‘असगर तँ वरस्पैतो फूइस।’ जखन कि ‘जमात करए करामात...।’

फेर भेल जे घरसँ असगरे ने निकलै छी, मुदा रस्ता-बाटमे केतेको भेटत, नइ तँ अपन पड़ोसियाकेँ डेढ़ियापर सँ शोर पाड़ि पुछबैन जे भाय, पत्नी अन्ट-

सन्ट किदैन-कहाँ बाजि-बाजि उपराग दइ छेली, से गाममे किछ भेल अछि की। अनेरे तँ ओ किछु बजबे करता, जँ किछु कहता तँ बुझि लेब, नइ किछु कहता तँ कहबैन टेङारी-ले खुशीलाल भाय ओतए जाइ छी, जँ किछु भनक लागत तँ अहूँकेँ कहने जाएब...।

मन मानि गेल जे रस्ता चिक्कन बुझि पड़ैए। मुदा लगले ईहो हुअ लगल जे तीर्थस्थानक पोखैरक घाट बड़ चिक्कन होइ छइ, मुदा नहेलहा देहक पानिसँ ओहो भीज कऽ पीछराह भाइये जाइए...।

फेर भेल जे अपनाकेँ एते बड़का कलामी किए बुझै छी जे जाएब तँ अपन इज्जत बेरवाद भऽ जाएत! जँ सोझा-सोझी बात बुझैक अछि तँ सुहरदे-मुहेँ कहबैन, “भाय, किछ बात सुनलौं हेन?”

..बात कि कोनो काज छी जे काजक चोट लगतैन। बड़ बेसी हेतैन तँ एतबे ने हेतैन जे अनकर दोख देखबैत अपन निरकटुआ कहता, सुनि लेब। जइ काजक बहन्ने जा रहल छी, सएह बहन्ना बनबैत कहबैन-

“भाय साहैब, अखन काजक औगताइ अछि, तेहेन ने डेढ़िया परहक बगुरक गाछ चतैड़ गेल अछि जे रस्ता चलैबला सभ गरियबैत रहै छैथ, तेकरे पाँगब जरूरी भऽ गेल अछि...।”

मनमे हूबा जगल। विदा भेलौं। रस्तापर पएर दइते घोड़थानक घोड़ा जकाँ मन आगू-पाछू करए लगल। करए ई लगल जे जँ कोनो बाते खुशीलाल भाय कहि दैथ जे ‘तों की करबह?’

‘तों की करबह’क एक माने भेल जे ‘तूँ कोन भार उठेबह’ आ दोसर भेल ‘बलउमकी’ जे तोरा बुते की कएल हेतह...।

किछु फुरबे ने करए जे की करी। फेर भेल जे जखन घरसँ निकैल गेलौं, तखन बिनु काज केने घुमबो तँ नीक नहियेँ हएत। की कैरतौं, आगू बढ़लौं।

आगू बैढ़ते खुशीलाल भाय मनमे नाचि उठला। नाच देख बाहबाही करैक बात सोचिते रही कि बिच्चेमे तुलसी बाबा आबि बजला-

“सबै नचावे राम गोसाई...।”

मुदा तुलसी बाबा लग मन अँटकल नइ, आगू बढ़ि खुशीलाल भाइक खुशीपर पहुँच गेल। ओना ईहो मनमे हुअए जे रामे-धाम ने खुशीक जगह छी, मुदा से नइ, पहुँच ई गेल जे अनका देख हम जनिते छिऐन, काल्हि धरि वएह खुशीलाल भाय गाममे शुभचिन्तक रूपमे पूज छला मुदा एकाएक आइ

अपूज भऽ गेला, से ओहिना थोड़े भेल हेता आकि तइ पाछू कोनो रहस्यमय काजक विचारो छीपल अछि। वएह रहस्य ने रहस्यमयी बनैत रसमय

बनि गेल अछि।

बहुरंगी लोक जहिना सभ समाजमे अछि तहिना हमरो गाम-समाजमे खुशीलाल भाय सन नइ छैथ से बात नहियेँ अछि, छैथे। मन आगू बढ़ि खुशीलाल भायपर पहुँचल। भरि दिन खुशिये-खुशीक बीच दिवस गुदस होइ छैन, जेहेन अरामदेह जिनगीक जरूरत अछि से तँ बनौनहि छैथ। अरामो तँ अरामे छी। कियो देहक अरामकेँ अराम बुझै छैथ, कियो मनक अरामकेँ आत्माराम बुझै छैथ...।

मन आगू घुसैक खुशीलाल भाइक जिनगीपर गेल, रजिष्ट्री ऑफिसमे मुंशीगीरी पचीस बर्ख पहिने शुरू केलैन। क्षेत्रक हिसाबसँ रजिष्ट्री ऑफिस बनले अछि। पढ़ै-लिखैमे किछु जातीय समाज अगुआएलो अछि आ पछुआएलो अछि। जइ समाजक खुशीलाल भाय छैथ ओ पछुआएल अछि। खेत-पथारक लिखा-पढ़ी रजिष्ट्रीए ऑफिसमे होइए तँए लिखा-पढ़ीक जगहो छीहे, जेतए क्षेत्रक सभ गामक लोकक बैसारो होइते अछि, तेजगर खुशीलाल भाय बच्चेसँ। ओना मैट्रिकसँ आगू नइ बढ़ि सकला, मुदा बजैमे फड़कोर छैथे। जेतबे दिन खुशीलाल भायकेँ कागज आ ऑफिस चिन्हैमे देरी लगलैन, तेतबे दिन अपनाकेँ बेरोजगार बुझलैन। मुदा से समय कम्मे दिनक रहल। रंग-रंगक कारोबारक अड्डा मुंशी सबहक ऑफिस छीहे। जहिना आन-आन मुंशीक ऑफिस तहिना खुशीलाल भाइक सेहो छैन्हे। बच्चाकेँ जहिना देहमे गुदगुदी लगौने हँसी, तहिना हाथमे भोज्य पदार्थ एने खुशी सेहो होइत तहिना ने कोनो मधुर बोल कानमे एने मधुरो लगैत, तँए मन खुशी हेबे करैत, तहिना खुशीलाल भाइक खुशीक कारण सेहो अनेको रहैन। मोटा-मोटी कहब जे जहिना ऑफिसमे हाकिमसँ लऽ कऽ चपरासी तकक लेन-देनक हिस्सामे कमसँ कम चौथाइ नइ तँ ऊपर जेते सुतैर जाइ, तहिना अपन लिखाइक रूपमे जँ दुइयोटा दस्तावेज लिखा गेल तँ दू हजार तँ ओकर फीस ओहिना भेल, आ स्टाम्प जे ब्लैकसँ भेटै छइ, ओ ब्लैकमे अपन ब्लैक केते भेल से तँ ब्लैकक बात भेल, ओ ब्लैक-कर्ता जानैथ। ई तँ भेल एक पक्ष। दोसर पक्ष छैन जे गाम-गामक जमीनक खरीद-बिकरीक आमदनी सेहो छैन। ने पाइबला केकरो कहि सकैए जे तूँ खेत बेचह हम कीनब, आ ने बेचिहार सभ लग मुँह खोलि कऽ कहि सकैए जे हम खेत बेचब...। से कहियो केना सकैए। जँ बजबे करत तँ पहिने अपना दियाद-वाद लग ने अपन दुखनामा कहि खेत बेचैक चर्च करत। जइसँ अपना घरक; माने दियाद-वादक, कोठीक चाउर अपने घरक कोठीमे ने जाएत। ई अधले की भेल। मुदा एना हुअए तब ने, होइ तँ अछि खेत कीननिहारक बीच मोछक भीरानी। तखन डाक-डकौबैल किए ने हएत। आ जखने डाक-डकौबैल शुरू भेल आकि बीचमे मदारी करामात कैरते अछि, तेहने मदारी खुशीलाल भाय सेहो छैथे...।

मनमे भेल जे अनेरे पाइ-कौड़ीक जड़िकें जड़िया कऽ पकड़ने छी। सभ राम-राम कहि, ऐ छिआ, ऐ छिआ कैरते छैथ आ हम ओहीमे मुड़ी गोंतने छी। मन घुमल।

घुमिते मन खुशीलाल भाइक मान-प्रतिष्ठापर पड़ल। रबि दिन हौउ आकि छुट्टी दिन, गामक दरबज्जा हुनकर मंचक चौखरी छिऐन। ऑफिसक चर्च शुरू करैत बेटा-बेटीक बिआह-दानक गप-सप्प पसारैत, चाह-जलखै होइत विरामक सीमा; माने उपसंहार, लग पहुँच मुहसँ निकलै छैन-

“जिनगीमे किछु धाएल अछि, जँ पाँचोटा कन्यादान नइ करेलौं आकि कोनो काजक उपकार केकरो नइ केलिऐ तँ ओ जिनगी वेकार अछि।”

दरबज्जापर बाहरी लोकक आगमनसँ परिवारक संग पड़ोसियो परिवारक लोक आबि आगत-भागत कैरते छैथ। खुशीलाल भाइकें घरक चारू-कातक दू-चारि गोरे आबि बैसबे करै छैन। ओहीमे ने टोक्करो देनिहार रहिते अछि जे टोकारा दैते छैन-

“हँ, से तँ अछिए।”

टोकारा सुनि जेकरा जे हौउ, मुदा खुशीलाल भाइक मन तिलकोरक फड़ जकाँ लाल तँ भाइये जाइ छैन। केकरो पातक पूछ फलक नहि, केकरो फलक पूछ, पातक नहि। मुदा तँए कि फूल फड़ो आ पातो नइ बनैए, बनिते अछि। मन फुलाइक कारण छेलैन, कन्यादानक नाओं बेचि, की सभ रोग समाजमे पसारलैन से सबहक सोझहेमे अछि। मुदा जे अछि, खुशीलाल भाइक भाषणक उसार तँ अही शब्दसँ ने होइ छैन जे समाजक कियो शुभचिन्तक अछि तँ ओ छैथ खुशीलाल।

डेग आगू बढ़ल। खुशीलाल भाय ऐठाम पहुँचलौं। दरबज्जाक ओसारक उत्तर भागक चौकीपर मुँह झाँपि खुशीलाल भाय निसवद भेल पड़ल रहैथ। चद्दैरसँ मुँह झाँपि सूतब तँ ओ अवस्था छी, जैठाम माछी-मच्छर तकक रोक रहैए। तैठाम केना कऽ उठेबैन। तहूमे जँ काँच नीन हेतैन आ भकुआएलमे जँ किछु कहिये दैथ, सेहो केहेन हएत। मन छह-पाँच कैरते रहए कि रभसलाल खेत दिससँ आएल। रभसलाल खुशीलालक छोट भाए। हमर एक उमेरिया सेहो अछि रभसलाल आ हम दुनू गोरे स्कूलोमे संगे पढ़ने छी। अबिते पुछलक-

“भाय, केम्हर-केम्हर सवारी चललैए?”

दुनू गोरे दछिनबरिया चौकीपर बैसलौं। बैसते फेर रभसलाल बाजल-

“भाय, चाह पीब किने?”

मनमे ठहैक गेल, एक चुटकी सतनारायण भगवानक परसाद बाँटि कऽ तँ

लोक समाजमे अपन पानि चला लइए, तैठाम जँ हम चाह पीब आ जँ पानोक आग्रह भेल तखन तँ सोलहन्नी फूल-पान उठा लेब...।

कहलिऐ-

"भाय, भिनसुरका चाहमे पत्नी पंजाबी जकाँ अफीमक रस मिला दइ छैथ, तेहीपर ने दुपहर तक बमकी धेने रहैए, अखन चाह पीबैक मन नइ अछि आ पान मुहेँमे अछि, से सभ परहेज करह।"

फेर दोहरबैत रभसलाल बाजल-

"केम्हर-केम्हर?"

कहलिऐ-

"खुशीलाल भायसँ बहुत दिन भेँट भेना भेल अछि, सेहो भेँट कऽ लेबैन आ कनी टेङारियो लेब। मुदा से तँ भायकेँ देखै छिऐन जे मुँह-तुँह झाँपि कऽ सुतल छैथ।"

'मुँह-तुँह झाँपि' सुनि रभसलालक मन जेना विकृत भऽ गेल। बाजल-

"की मुँह झाँपि सुतता, नाक-कान कटौलैन!"

ओना रभसलालकेँ ने कहियो खाइ-पीबैक दिक्कत भेल अछि आ ने कोनो आने खाँहींस खगलै। भाइक अम्बोही आमदनीसँ परिवारक खर्चसँ उठले अछि। ओना खर्च-बर्चक अभाव नइ भेने आ पाइ-कौड़ीक आकर्षण नइ भेने रभसलालकेँ अर्थक अपराध वृत्ति नइ पनपल, मुदा परिवारक जे ढाँचा बनि गेल अछि तइमे आन-आन अपराध वृत्ति नइ पनपत सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा जे हौउ, धनक उमकी तँ रभसलालमे छैन्हे...। 'नाक-कान कटौलैन' सुनि मनमे आरो उत्सुकता जगल। मुदा परिवारक भीतुरका बात छी; माने भाइक मुँहक बात छी, तैबीच अनका घर पैसब कनी गड़बड़ अछिए। मुदा पैसबो तँ जरूरी ऐछे, गाम-समाजक बात छी,

जँ नै पैसब तखन घटनाक कारणो तँ नहियेँ बुझि सकै छी। किछु फुरबे ने करए जे की केने की नीक हएत आ की नइ केने की अधला हएत...।

ओना रभसलाल बजैमे फड़कोर अछिए। फड़कोरक मुँह सदिकाल पकले रहै छै तँए फुइट कऽ निकलैक डरो तँ रहिते छइ। खएर जे छइ, मुदा रभसलाल मुस्की देलक...।

रभसलालक मुस्की देख मनमे कनी हरियरी जगल। हरियरी ई जगल जे एक्के हँसी केतौ खुशी उपकबैत आनन्द दइए तँ केतौ मजाक बनि मजाकक पात्र सेहो तँ बनैबते अछि। मुदा से नइ, रभसलालक मन ओहन चौमास-खेत जकाँ बुझि पड़ल जे तेखार जोत कएल आ तेखार चौकीसँ मिलौल बीआ पबैले तैयार

रहैए...।

कहलिऐ-

“रभस, सदिकाल तोहर रभसलेहे गप रहै छह, एना कियो जेठ भाइक विषयमे बाजए!”

अपना जनैत असथिरसँ ऐ दुआरे बजलौं जे चारिये हाथक दूरीपर खुशीलाल भाय छैथ, ओना मुँह झाँपने सूतल छैथ कि पड़ल छैथ से नै कहि मुदा शब्दकेँ कनी लसलसा बना ऐ दुआरे बजलौं जइसँ दुनू दिस सटल रहइ। मुदा से भेल नइ, रभसलालकेँ जेना परिवारक इज्जतपर नजैर अँटैक गेलइ। समाजमे नाक-कान कटल बेकती हुअए आकि परिवारक प्रतिष्ठाक हनन भेल हुअए दुनू गरतेमे गिरबैए किने...।

रभसलाल बाजल-

“भाय, तूँ तँ लंगोटिया संगी छिअ, तोरा लग कोन लाथ।”

बिच्चेमे टोकारा देलिऐ-

“से की कोनो छीपल अछि।”

मौध जकाँ रभसलालक मन पैघलल नहि, मोम जकाँ सक्कतक सीमापर अँटकल रहल। बाजल-

“भाय, काल्हिखन समाजक बीच एकटा बुझारत भैयाकेँ कनकलालसँ रहैन। पाइ-कौड़ीक बात रहइ। समाजमे अहिना केकरो माल-जालक बुझारत, तँ केकरो लेन-देनक बुझारत, तँ केकरो गप-सप्पक बुझारत सदिकाल होइते रहैए आ आगूओ होइते रहत। तँए विषयक गम्भीरताकेँ नइ बुझि पेलिऐ। ओहुना पाइ-कौड़ीसँ परिवारोमे हटले रहै छी, बुझारत लग नइ गेलौं।”

कहि रभसलालक मुँह बन्न भऽ गेल। खेतमे जहिना नव सिरौर कटै काल बीचमे ठाढ़ हएब, तखन तँ बरद सिरौरेकेँ टेँढ करैत आगू बढ़ि जाएत..! तँए मुँह बन्न होइते रभसलालकेँ टोकलिऐ-

“चुप किए भेलह, कियो आन थोड़े अछि, जँ अपन बात कोनो तेहल्ला मुहेँ सुनबह तखन ने शंका करबह, आ जखन दुइये गोरेक बीचक बात छिऐ तखन बजैमे किए हिचके छह।”

ओना घटनाक धार रभसलालक मनमे बहिते रहइ, मुदा ले-ऊँचक बीच अँटैक गेल रहए। बाजल-

“भाय, सौंसे समाजक लोक एकठाम बैसल। तैबीच भैयाक बुझारत कनकलालसँ रहैन...।”

बिच्चेमे बजलौं-

"हमरा नइ बुझल अछि। तोरे मुहेँ अखने सुनै छी।"

जहिना कोनो नव समाचार से चाहे खुश-खबरी हौउ आकि दुख-खबरी, दोसरकेँ कहैले मनमे उड़ी-बीड़ी लगा दइ छै तहिना रभसलालक मनमे लगले रहइ। बाजल-

"एते दिन नइ बुझै छेलौं जे भैयाक कृत्ति की सभ छैन। जँ पहिने ऐपर धियान देने रहितिऐ तँ एना नइ होइत। भाय, परिवारो तँ परिवार छी। अनेको सदस्यक वंशगत संगठन छी। अनेको तन अनेको मनक तँ अछिए। मुदा समूह रूपमे परिवारमे बेकतीगत रूपमे जँ कियो परिवार विरोधी होइ, जे परिवारक प्रतिष्ठापर चोट करए, एहनो छूट तँ केकरो नहियेँ देल जा सकै छइ।"

चद्दैर तरसँ खुशीलाल भाय उकासी केलैन। ओना उकासियो उकासीए छी। नीनोमे होइए, अधनीनोमे होइए आ जगलोमे होइते अछि। मुदा से नइ, आगमसँ बुझि पड़ल जे रभसलाल निर्भिक जकाँ अपन मुँह खोलि कऽ राखए चाहि रहल अछि...।

कहलिऐ-

"एना गजपटमे नइ बुझब कनी सोझरा कऽ बाजह।"

'सोझरा कऽ' सुनिते रभसलालकेँ बुकौर लगि गेल, बकार जेना बिला गेलइ। आँखि उठा खुशीलालपर देलक। देखते दुनू आँखि कड़ुआ गेलइ, नोर ढबढबाए लगलै। ढबढबाइते नजैर निच्चाँ धरती दिस देलक, धरती ससरल बुझि पड़लै। लगले आँखि उठा हमरापर देलक। मुदा आँखि अँटकलै नइ, अपने निच्चाँ ससरए लगलै...।

रभसलालक दशा देख मन राँग जकाँ गलए लगल। कहलिऐ-

"रभस, समाज समुद्र छी। समुद्रेमे रंग-रंगक पानियोँ अछि आ आनो-आनो जीव-जन्तु सेहो अछि। तूँ किए अपनाकेँ कसूरदार बुझै छह।"

हमर बात सुनिते रभसलालक हूबा जगल। हूबा जैगते हुअ लगलै जे पेटक जेते विकार अछि, वमन कऽ दिऐ। नीक रहौ कि अधला, जिनगीक बीच-बीचमे मोड़ अबैए जे जिनगीक सीमांकन करैए। अही सीमांकनक पछाइत नव जिनगीक सूत्रपात सेहो होइए...।

रभसलाल बाजल-

"भाय, मनक बेथा-कथा तँ लोक हँसिये-कानि ने मनसँ निकालत, जइसँ मन हल्लुक हेतइ।"

रभसलालक बात नीक लागल। कहलिऐ-

"एकरा के काटत।"

'एकरा के काटत' सुनि रभसलालक मन आरो पनपल। पनैपते बाजल-

"भाय, जड़ियेसँ कहि दइ छिअ। रजिष्ट्री ऑफिसमे भैया काज करै छैथ, से ते बुझले छह।"

कहलिऐ-

"हँ।"

"हमहूँ अखन तक सएह बुझै छेलिऐन। मुदा कल्हुका बुझारतमे जे गामक लोक अपन-अपन बेथा निकाललैन, से सुनि मने टुटि गेल।"

कहलिऐ-

"से की?"

बाजल-

"चाहे केकरो बेटा-बेटीक बिआह हौउ, तइमे हिनका अगो चाही, अपन लिखाइ फीसक अतिरिक्त, ऑफिसक कमीशन चाही, ब्लैकक नाओंपर टिकटक कमीशन चाही, तैसंग सभसँ पैघ तँ ई छैन जे खेत केकरो रहै छइ, लेबाल कियो आन रहैए आ बीचमे लेबालो-बेचबालोकेँ गरदैन हलालि दइ छथिन।"

पुछलिऐ-

"की गरदैन हलालि दइ छथिन?"

बाजल-

"कौल्हके बुझारतक बात लैह। कनकलालकेँ बेटीक बिआह सिरचढ़ भेलइ। जमीन-जत्थाक कारोबारी बुझि भैयाकेँ पुछलकैन जे भाय साहैब, बान्हक कातमे जे सबा कट्ठाक कोली अछि ओ बेचा दिअ। गछि लेलखिन। समाजक रूपमे हिनका तँ दुनू गोरे–लेबाल-बेचबाल–क बीच ने बात-चीत करक चाहिऐन?"

रभसलालक बात नीक लागल। कहलिऐ-

"हँ।"

बाजल-

"तेतबे नइ ने, वेचारा सुधंग आदमी कनकलाल हिनकेसँ खेतक दामो करौलकैन। हमहूँ कनकलालकेँ चिन्है छिऐन। वेचारा झूठ-फूसक भीर कखनो ने रहै छैथ, डेढ़-दू बीघा खेतो छैन आ दूटा मालो खूटापर छैन। तही पाछू लागल

रहै छैथ। दुनियाँ-दारीसँ कम मतलब रहै छैन।"

बजलौं-

"हँ से तँ कनक भाय छथिये।"

बाजल-

"साठि हजार दामक चीज कहलखिन। वेचारा मानि गेल। तेकर बाद खुशीलाल भैया दू गोरेकेँ पीठ ठोकि–दुनू पाइबला लोक अछि आ दुनूक बीच पुश्तैनी दुश्मनी छै– ओइ खेतपर कुश्ती करा देलखिन। सभ कियो समाजेक, मुदा कुश्ती भऽ गेल खेत-ले..!"

रभसलालक बात सुनि हँसी लगि गेल। केतबो हँसीकेँ मुँहमे रोकए चाहलौं मुदा नइ रोकाएल। जोरसँ हँसा गेल। हँसी सुनि खुशीलाल मुँह परहक चद्दैर उतारि बजला-

"ऐमे हमर केतौ ने दोख अछि।"

रभसलाल छोट भाए रहितो खुशीलालकेँ दबैत बाजल-

"काल्हि वकार बन्न भऽ गेल आ आइ फुफकार छोड़ै छी।"

खुशीलाल दबि गेला। मुदा रभसलालक मनक उमकी जेना आरो उमकए चाहै। कहलिऐ-

"की कुश्ती भेल?"

बाजल-

"साठि हजार चीजबलाकेँ देलखिन आ दू लाख चालीस हजार अपना जेबीमे रखि लेलखिन! तीन लाख डाकपर दाम भेल।"

रभसलालक बात सुनि आश्चर्यसँ क्षुब्ध भऽ गेलौं। क्षुब्ध ई भेलौं जे जिनकर खेत छेलैन हुनका साठि हजार आ जिनकर किछु ने, तिनका दू लाख चालीस हजार! मनमे बिसवासो भेल आ नहियोँ भेल। नइ ऐ दुआरे हुअए जे एते नम्हर कारोबार रहितो माछियो-मच्छरक अवाज जकाँ नइ सुनने छेलौं, आ तरे-तर केना भाइयो गेल आ बिसानियोँ भऽ गेल। हुअए ऐ दुआरे जे जखन अपन छोट भाए अपना मुहेँ बजै छैन जे समाजक संग हमर संगियोँ छी, केना कहबै जे ई बिसवास करै जोकर बात नइ अछि। मुदा अनके-टा बातसँ नइ हुअए अपनो मन मानि लिअए तखन ने...।

गुनधुनमे पड़ि गेलौं। मुदा तैबीच खुशीलाल चद्दैर उतारि ओछानियेँपर पल्था मारि बैसला, बैस तँ गेला मुदा मनमे एकटा भ्रम पैसल रहैन। भ्रम ई जे आइ तक रभसलाल मुँह दबने खुशीलालसँ बजै छल, जे खुशीलालक मनमे

समाएल छेलैन्हे। मुदा प्रकृतोक तँ अद्भुत खेल अछि, अनकर बहिन-बेटीक इज्जत मुँह चुकरियबैत बिलाइ जकाँ लइए मुदा ओकरो जखन अपन बहिन-बेटीक इज्जतक प्रश्न उठै छै तँ बाघ जकाँ झपैट पड़ैए...।

अपन विचारपर जोर दैत खुशीलाल बजला-

"सौंसे गामक लोक एकमुहरी भऽ गेल, तँए कौल्हुका बुझारतक बैसारमे चुप भऽ गेलौं, नइ तँ...।"

रभसलालक मनमे जेना आगि पजरले रहै तहिना उत्तर देलकैन-

"नइ ते की! की कैरतिऐ?"

छोट भाइक मुँहक बात 'की कैरतिऐ' सुनि खुशीलाल भाइकेँ एहेन धक्का लगलैन जे धकधका कऽ धड़धड़ा गेलैन। धड़धड़ा ई गेलैन जे केकरा पोसि-पालि कऽ जवान बनेलौं। पाँचे बर्खक रहए तखने बाप-माए मरि गेल रहइ...।

मुदा पेटक घुरियाइत बात पेटेमे घुरिया लगलैन। वकार फुटबे ने करैन जे मुहसँ निकैलतैन। ओना अपनो मन कखनो धड़धड़ा जाए तँ कखनो धकधका जाए जे आन परिवारक आन्तरिक काजमे हाथ देब नीक नहि। मुदा समाजमे जे गन्दगी पसारैए ओ नीक समाज बनए केना दऽ सकैए। इतिहासक घटना इतिहासक भेल मुदा वर्तमानक तँ सबहक वीर्तमान अछि, एकरो तँ आँखिक कात नहियेँ कएल जा सकैए। ओना अखनो ई बात नइ बुझि पेलौं जे समाजेक बीचक चीज, समाजेक बीचक लेन-देन समाजेक हाथे भेल, तइमे एहेन गोल-माल भऽ गेल आ लोक अपना ताले वेहाल केना..! ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मत्थापर ने हाथ लइए, मुदा ईहो तँ बुझए पड़तै जे जे ठनका कपार फोड़ि सकैए ओ हाथक रोकने रोकाएत...।

समय बेसी खटिआइत देख रभसलालकेँ कहलिऐ-

"संगी, तूँ सभ दिन संगी रहलह तँए तोरा हम संगियेँ बुझबो करै छिअ आ बुझबो करबह, मुदा तोहूँ एते अपन नामक साकार करह जे रभैस-रभैस नीकक अनुकरण करैत चलैक कोशिश करह। जखने जागी तखने परात। टेङारी दएह, आगूक गप आगू दिन करब।"

❍

शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016

गाछपर सँ खसला

ओछाइनेपर रही, माने नीनसँ सूतल रही। ओना किरिण नइ फुटल रहै मुदा गामक लोक जगि गेल रहै, पोसर चरौनिहार महींसवार बाधसँ घुमि गेल रहए, गाछीक अखड़ाहापर कुश्ती समाप्त भऽ गेल रहै, मुदा चलती बेरक सवारी कसा-कसी होइते रहइ। पत्नियोँ आँगन-घर बहारि चुल्हि नीपैक सुर-सार करिते रहैथ कि पड़ोसिनी आबि कहलकैन-

“मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!”

कहि पुछाड़ि-भाड़क बेन जकाँ आगू बिल्हए बढ़ि गेली।

‘गाछपर सँ खसब’ सुनि जे पत्नी अवाक भेली से पड़ोसिनी परोछ भऽ गेलैन मुदा बकार नइ फुटलैन जे कनी आरो सेरिया कऽ बुझितैथ। घर-निप्पा चुल्हि लग रखि पत्नी सोझे लगमे आबि बजली-

“मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!”

ओना पहिनहि जगा देने छेली। जगला पछाइत कहलैन। मनोज बाबाकेँ गाछपर सँ खसब सुनि मनमे उड़ी-बीड़ी उठि गेल। मुदा तखन तँ पत्नियेँ सोझमे रहैथ, आन रहितैथ तँ आनो मने बाजल जा सकैए मुदा पत्नी लग से केना हएत। पति जकाँ ने बाजए पड़त। की करितौं सहए केलौं। तमसा कऽ तँ नइ मुदा गरमा कऽ बजलौं-

“कुकुर कटने छेलैन जे भोरे-भोर गाछपर चढ़ि गेला।”

ओना कहब जे अठबजिया ओछाइन छोड़निहारकेँ अहिना भकइजोते होइत रहै छै से बात नइ, छअ बजेसँ पहिनेक बात छी। उठै बेर हमरो भऽ गेल रहए मुदा उठल नइ रही। मनक खौंझक कारक दोसरो भेल। दोसर भेल जे जखन गाछेपर सँ खसला तखन केते जखम भेल हेतैन तेकर कोन ठेकान। तइमे तेलेक मालिशसँ नीक भऽ जेता आकि डॉक्टर ऐठाम जए पड़तैन आकि अक्सीजन-घर पहुँचबए पड़तैन, तेकर कोन ठीक अछि। तइले तँ तैयार भऽ कऽ ने निकलए पड़त, से तँ अखन ओछाइने छोड़लौं अछि। अखन नित्य-कर्मक संग पाइयो-कौड़ीक बेंत-बाँत ने करए पड़त। तहूमे जखन डॉक्टरे-इलाजक भाँजमे पड़ब तखन केते दिन लागत आ की सभ करए पड़त तेकरो की थाह अछि। अथाहक भरोसे केते...।

मुदा फेर भेल जे सोझे मने-मन नक्शे-खतियान बनबैत रहब तहूसँ तँ नहियेँ हएत। कोसी-नहैर जकाँ मने-मन नक्शा बना लेब आ खुनैकाल ई ठेकाने ने रहत जे पानिक बहान ऊपर-सँ-निच्चाँ दिस दौड़ैए, तैठाम जँ मुहेँपर निच्चाँ उतारि देबै आ आगूमे ऊँचका खेत रहतै तखन ओइ खेतकेँ पटैक केते आशा कएल जाएत, ई तँ इंजीनियरक काज भेल, सबहक तँ छी नइ। तहूमे अपन नक्शा-खतियान तँ अखन यहए ने हएत जे मुहसँ पत्नीकेँ घरक भार सुमझबैत, अपने मुँह-कानमे पानि लऽ ली आ जेते जल्दी बाबा लग पहुँच सकब ओते मुस्तैदी करी। जानक कोनो ठेकान अछि जे परान छुटि जाएत आकि...। चाह पीब विदा भेलौं। थोड़बे हटि कऽ टोलेमे दछिनवारी कात घर छैन। मनोज बाबा दरबज्जेपर भेटला। ओना गामक लोकक देखब पतरा गेल रहै मुदा गोटि-पँगरा आबा-जाही रहबे करइ।

गामक बातावरणमे पसैर गेल रहै जे फुलेक गाछपर सँ खसला, फुलडाली नेनहि ठाढ़े खसला।

पुछलयैन-

“बाबा, किछु विशेष समाचार?”

अपने तँ लाभर-जीभर बजलौं मुदा सियाखी बाबा नीक जकाँ बुझि गेला। जएह बात गामक वातावरणमे पसरल तही टोनमे मनोज बाबा बजला-

“आने दिन जकाँ अपन नियमसँ फूलक बेर फूल तोड़ए गेलौं। कनैल फुलक फड़ी[32]क मास छीहे सएह ठिकिया कऽ चढ़लौं, थोड़बे ऊपर गेलौं कि पएर पीछैड़ गेल, हाथमे फुलडाली लटकौनहि निच्चाँ-मुहेँ ससरैत ठाढ़े खसलौं।”

गपक आभाससँ बुझि पड़ल जे बाबा अपन बेथाकेँ छिपा कऽ बाजि रहला अछि जँ से नइ अछि तँ बोलीमे किए अवरोध भऽ रहल छैन।

मुदा अपनो तँ हुनके बेथा मेटबैले ने जिज्ञासा करए आएल छी, तखन जँ जोतले-चौकियाएल खेत भेट गेल तँ बीये छिटैमे किए देरी करब।

कहलयैन-

“फुलडाली मजगूत छल किने?”

ओना बाबा बोली परेख लेलैन, मुदा बाउक भाउ जेना दुनू अछि- पितोकेँ आ पुत्रकेँ सेहो ‘बाउ’ कहल जाइ छै, तहिना मुस्की दैत बजला-

“एह! फुलडाली तँ फुलडालीए अछि, ओना छी पितरिया मुदा रंग-रूपसँ

[32] फड़ी-क माने भेल जहिना पानक पात पानक फड़ी कहबैए तहिना फूलक सघन पैदावार फूलक सघन फड़ी भेल।

सोने जकाँ झलकैए।"

घन्टा भरि पहिलुका चोटपर मनोज बाबा केतबो झाँपन दैथ तैयो ओछ धोती-साड़ी जकाँ एक-भाग उघारे भऽ जाइन। अपनो मन गवाही दिअए- भाय! कियो कनबैत-कनबैत हँसबैए, कियो हँसबैत-हँसबैत कनबैए, मुदा जीवन-धार तँ से नइ छी, ई तँ हँसैत-खेलैत बहैत धारा छी। तैठाम मनोज बाबा अपने जे नुका रहला अछि तखन कनी किए ने एकटा ओढ़ना आरो ओढ़ा दिऐन। सहए करैत पुछलयैन-

"बाबा, साँप जकाँ जे गाछपर सँ ससैर कऽ निच्चाँमे उतैर ठाढ़े रहलिऐ, एकर तँ कोनो मानैयेँ ने भेल?"

पारखी मनोज बाबा धाँइ-दे बात परेख लेलैन। बजला-

"बेसी-सँ-बेसी तूँ यएह ने कहबह जे गाछपर सँ साँपे ससैर कऽ निच्चाँ अबैए आकि गनगुआरिये?"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ, एकटा टाँगक झोंझबला आ दोसर बिनु टाँगबला।"

बातकेँ सम्हारि बाबा बजला-

"थोड़बे ऊपर चढ़ल रही, जेते ऊपरसँ धिया-पुतामे कुदनाइ सीखने रही तँए ससरलौं नइ पीछड़ए लगलौं आकि कुदि गेलौं।"

'कुदब' सुनि चपाड़ा भरैत कहलयैन-

"अपने कहुना भेलिऐ ते पुरान हाड़-काठक ने भेलिऐ, मुदा हड्डीक जोड़क जे पएरमे छिटकिल्ली अछि ओ ने ते ससरल।"

एकेबेर नीपैत-पोतैत बाबा बजला-

"यएह बुझह जे जहिना पहिने फ्रेश रही तहिना अखनो छी।"

कहलयैन-

"बाबा, जखन पूजा करै छी, फूलक जरूरत होइए तखन एहेन-एहेन जे बड़का फूलक गाछ लगौने छी, जैपर चढ़ि कऽ तोड़ए पड़ैए तइसँ नीक ने जे फुलवाड़ी लगा छोट-छोट गाछक फूलसँ बेगरता सम्हारि लेब।"

ई बात जेना मनोज बाबाकेँ मनमे गड़ि गेलैन तहिना तिलमिलाइत बजला-

"बौआ, तोरासँ लाथ की करब। साठि बर्खक उमेर भऽ गेल, चालीस बरख सँ पूजा करै छी, जखन जुआनी छल आ घरसँ खेत धरि कर्मभूमि बनौने छेलौं, सभ किछु सोझेमे नचै छल, आब ओ हूबा अछि जे ओते मनसूबा करब,

मुदा...।”

हरमुनियाँक अन्तिम पटरी जकाँ अवाज बदलैत रहैन मुदा केकरा कहथीन आ कहने हेतैन की तँए ऐठाम आबि बाबाक बोली पलटैत रहैन।

मनमे भेल जे ई तँ केकर दिनक परि भऽ गेल, जे गेलौं करहर उखाड़ए आ आगूमे चलि आएल केशोर! माने भेल जे करहरो आ केशौरो पनिगर माटिमे होइए, मुदा होइए दुनू दू परिस्थितिमे। जखन पानि रहै छै तखन करहर होइए आ जखन पानि सुखि माटि सकताइए तखन केशौर होइए जे हाथसँ नइ खुरपीसँ उखाड़ल जाइए, तइले खुरपीक प्रयोजन पड़ै छइ। ऐठाम सएह भऽ गेल, मनसूबा बना आएल छेलौं जे बाबाक कुशल-छेमक पछाइत, चाहे साइकिलेसँ आकि टेम्पूएसँ डॉक्टर ऐठाम जाएब, दादीकेँ सेहो संग कऽ लेब, बर-बेमारीमे पत्नियेँ ने अर्द्धांगिनी बनि अदहा दुख बँटतैन। मुदा से तँ बाबा गाछ परहक खसब बिसैर अपन जिनगीक खसब दिस बढ़ि रहला अछि..!

पुछलयैन-

“की कर्मभूमि कहलिऐ बाबा?”

एक तँ ओहिना बैसारी मनोज बाबा, भरि दिन विचारेक परसादी बँटिते रहै छैथ, तैपर कर्मभूमि सन शब्द भेट गेलैन, भेटते जेना मनसूबा जगलैन। बजला-

“बौआ, यएह देह छी जे हट्ठामे बैशाख-जेठ मास सन दिनमे हर-बरदक संग बारह बजे तक कोदरबाहि करै छेलौं मुदा थाकैनसँ मिसियो भरि मुँहो मलिन नइ होइ छल, जइक चलैत घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेतो-पथार धरि हँसैत रहै छल मुदा आइ..!”

‘आइ’क पछाइत सभ कानि रहल छी, से मुहेँमे रहि गेलैन।

बाबाक बन्न होइत बकार देख अपनो बकार बन्न हुअ लगल। मुदा संजोग नीक रहल। दादी सेहो लगमे आबि गेली। जहिना बाल-बोधकेँ अगुआ पुतोहु वा परपुतोहु अपन जेठजन[33]केँ अपन समाद पठबै छैथ तहिना समदिया भेट गेल। मुदा दादी-आगू बाबाकेँ अपन बेथा व्यक्त कराएब मन नइ मानलक। ओना लग्गासँ मरखाहो मालकेँ घास खुऔल जाइए से तँ मनमे रहबे करए। बजलौं-

“बाबा, अखनो अहाँक जे हड़गर-कठगर देह अछि ओ जुआनी-जवानीमे केहेन रहल हएत।”

पत्नीकेँ आगूमे देख आकि की से तँ बाबा जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे

[33] ससुर, ददिया-ससुरकेँ

बाँहिक कुरता समेट-समेट गट्टासँ बाँहि दिस लऽ जा रहला अछि। ओना नजैर पत्नीपर नइ हमरेपर रहैन, बजला-

"बौआ, कर्मभूमियेँ धर्मभूमियोँ छी जे सातो दुनियाँमे अछि। चाहे ओ भावभूमिक कर्मभूमि हुअए आकि जन्म भेल जगहकेँ जन्मभूमि-मातृभमि कहि कर्मभूमि बुझियौ.., अहिना सभ माने- सातो दुनियाँमे अछि, आ सभ दुनियाँक अपन कर्मभूमियोँ छै आ मर्मभूमियोँ छइ।"

अपना झोंकमे बाबा बजैत रहला, बजैत रहला जे सून-अनसून दुनू हुअ लगल। तँए नीक जकाँ बाबाक बात नइ बुझि पाबी। मुदा गुरु ने एक भेला, चेलाक कोन ठेकान अछि। एको भऽ सकैए, एकसँ बेसी दोसरो-तेसरो भऽ सकैए आ एकोमे उत्थरसँ गहींरगर भऽ सकैए। बजलौं-

"बाबा, एक दिनक बेरा पार करैमे जे एना लाख कोसक रस्ता देखए लगबै तहूसँ तँ काज नहियेँ चलत। जरूरत तँ एतबे ने अछि जे काल्हि जे कौल्हुका सूर्जक उदए हएत ओ सीमा भेल आ अस्त धरिक कर्म आ कर्मक सीमा- जिनगी भेल। तेतबे जँ ठेकानसँ ठेकाइन ठेकनबैत चली सएह ने?"

ओना दादी अखैन तक ठाढ़े छेली, मुदा कड़चीक साँगह परक लत्ती जहिना हवामे डोलैत रहैए तहिना दादीक देह अखनो तक डोलिये रहल छेलैन। डोलबो केना ने करितैन, बेटा-पुतोहुक कोनो अशे ने छैन, लऽ दऽ कऽ साठि बर्खक खाली पतिक छैन, सेहो भोरे-भोर तेहेन अन्हरगरेमे गाछपर सँ खसला जे अन्हरगरे केना चलि जइतैथ, तेकर कोनो ठीक छेलैन। जँ बाबाक पेटे-पाँजर टुटि गेल रहितैन तँ दादीक गति की होइतैन...। मनमे भेल जे अछैते बेटा-पुतोहु कष्टमे किए छैथ? दादीकेँ पुछलयैन-

"दादी, अछैते बेटा-पुतोहु जे एना कष्टमे छी से नीक लगैए?"

हमर बात सुनिते दादी तँ सहैम गेली मुदा मनोज बाबाक मनक फुनफुनी ओहिना जगलैन जहिना रणभूमिमे रणाकेँ जगैए। बजला-

"बौआ, जइ पुरुखकेँ आइन-अपगराइन नइ अछि, ओहो कोनो पुरुखे भेल।"

बाबाक मजगूत विचार सुनि मनमे भेल जे भरिसक मनमे कोनो दमगर व्रत छैन, जे पुरबै पाछू अपन सभ किछु बलिदान करैले तैयार छैथ। मुदा से तँ सुनला पछाइते ने बुझब। ओना मनोज बाबाक परिवारक सभ भाँजो तँ नइ भाँजल अछि मुदा दुनू बापूतक बीचक बात नइ बुझल अछि सेहो तँ नहियेँ अछि। कहब जे जखन बुझले अछि तखन सएह ने किए कहलयैन। समाजक बीचमे ने बसल छी, समाजक बीच बहुत एहेन बातो आ काजो अछि जे

सीमाबद्ध अछि। जे सीमाबद्ध अछि ओकर अतिक्रमणो तँ अतक्रमणे भेल, तँए। बजलौं-

"बाबा, अहाँ ते तेहेन उमकीमे उमैक कऽ बाजि देलिऐ जे बुझबे ने केलौं?"

बाबाकेँ जेना सह भेटलैन, मुदा दादीकेँ कठाइन लगलैन से ठोरक बिजकीसँ बुझि पड़ल, मुदा बातो-विचारक तँ अपन क्रम होइ छै, ई तँ नइ जे आमक गाछे रोपैकाल चूड़ा कीन कऽ लऽ आनी जे आम सेने खाएब। एक तँ परिवारक विवाद छी तहूमे बाप-बेटाक बीचक जे कखनो नाहपर गाड़ी जकाँ आ कखनो गाड़ीपर नाह जकाँ चलि अपन जिनगीक बाट-घाट पार होइए। तेहेन विवादकेँ तँ, जहिना गोहि अपन मुँह खोलैत-खोलैत शिकार लग पहुँच पकड़ैए, तहिना करब ने जरूरी अछि।

मनोज बाबा बजला-

"तोहीं कहह जे बेटाक ई उचित भेल जे कोन-कहाँ देशमे जा कऽ बिआह कऽ लेलक।"

ओना किछु लोकमे एहेन बजैक आदत होइए जे अपन विचारक बातकेँ टुकड़ी-पुरजी बना, एक-एकटा कहैत बीचमे पुछैत रहत जे की हेबा चाही। मुदा नीक अधला दुनू पक्ष अछि, से सभ बात बुझला पछाइते ने कियो उचित निर्णायक मोड़पर आबि सकैए। तैबीच जे टुकड़ी-टुकड़ीक निर्णय कऽ नेने रहब तखन तँ अपने निर्णये ओझरा जाएत तँए बजलौं-

"बाबा, अपने कनीकाल मुँह बन्न रखियौ, दादियो कोनो ऐसँ फराक नहियेँ छैथ तँए हिनको बाजए दियौन।"

जेना हमर बात बाबाकेँ काँट जकाँ मनमे गड़लैन तहिना बिसबिसाइत दुनू ठोर बिदकलैन। ओना मुँह बन्न केने रहैथ। भऽ सकैए जे मनमे ईहो आबि गेल होइन जे तीन गोरेमे एक बजनिहार दू सुननिहार ने होइए, तैठाम बिनु सुननिहारक बाजबे की हएत। ओना, दादीक मनमे अपन बेटा-पुतोहुक सिनेह अखनो मनक धारे-धार चलिये आबि रहल छेलैन, तैठाम समाजक रूपमे हमरा देख आरो गतिमान भऽ गेलैन जे आक्रोशित होइत बजली-

"सोल्हैनी दोख हिनके छैन!"

दादीक बात सुनिते बाबाक नरसिंह तेज भेलैन, जे मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल। मनमे भेल जे कहीं दादीपर हाथ ने उठि जाइन। मुदा तइसँ पहिने बीचक जे समय अछि जँ ओकरा अनुकूल बना लेब, तखन रूप बदैल सकैए।

दादीपर सँ नजैर हटा बाबाक आँखिपर गाड़लौं। जहिना गहुमन साँप

आकि बाध-सिंह आँखि-पर-आँखि पड़िते ठकुआ जाइए तहिना भेल। मनोज बाबा ठकुएला। बजलौं-

"दादी, जड़िसँ कहियौ।"

'जड़ि' सुनिते मनोज बाबाक मन पिनपिनेलैन। मुदा तैपर दादी मिसियो भरि धियान नइ दऽ बाजए लगली-

"बौआ, तोरो बुझल हेतह आ गामोक लोककेँ बुझल छैन जे एकटा बेटा अछि। कौलेजसँ पढ़ि नोकरी करए कलकत्ता गेल। ओइठाम बिआह कऽ लेलक।"

बिच्चेमे टोनि देलिऐन-

"हँ, ओ तँ अहाँ दुनू बेकतीक बड़का भार उतारि देलक किने।"

बजैले दादी लुसफुसाइते रहैथ कि बीचेमे मनोज बाबा बजला-

"गामसँ जाइकाल बेटाकेँ एना बुझा कऽ कहलिऐ जे बौआ, कामरूप कहाँ-दन ओम्हरे छै, जैठाम पुरुखकेँ जहुरी मौगी सभ गदहा-घोड़ा बना बाधमे चरैले ठोकि दइ छै, तइ सभपर नजैर रखिहह।"

बाबा तेना टोनमे बजला जे हँसी लगि गेल, हँसए लगलौं जइमे बाबाक बातो उधिया गेलैन। बिच्चेमे दादी फेर बाजए लगली-

"बौआ, जहिना अपना सबहक गाम-घरक लोक अछि तहिना कनियाँक छीछा-बीछा सेहो छैन, तखन बीचमे कोन काँट अछि जे बुड़हाक आँखिमे गड़ि गेलैन जे कहलखिन- जाबे जीब ताबे तोहर ने कमाइ खेबौ आ ने मुँह देखबौ।"

एकाएक मनक विचारमे उलट-फेर हुअ लगल मुदा जइ परिवारक समस्या छी ओ परिवार केना समस्याकेँ बुझि रहला अछि ओ ने...।

बजलौं-

"बेटा की उत्तर देलकैन?"

बेटाक पक्षमे दादी उत्तेजित होइत बजली-

"बेटो ते कहिये कऽ गेल छैन जे- भेले जाइ छी।"

❍

शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016

डभियाएल गाम

आने गाम जकाँ हमरो गाममे पंचायत चुनावक अवाज पहुँचल। लोकक मने उड़ि गेल जे जिला-पार्षद भेल, मुखिया भेल, पंचायत समिति भेल, सरपंच भेल, सरपंचक संग-संग मुखियोक पंच भेल, ओहीमे उपमुखिया आ उप-सरपंच सेहो भेल, तहूमे आरक्षण भेने तँ आरो घरे-घर पद-प्रतिष्ठा सेहो पहुँचत। जखन सभकेँ लड़ै आ पद पबैक अधिकार छै तखन किए ने एके परिवारक सभ बनत। एक गोरे मुखिया, दोसर सरपंच, तेसर पंचायत समिति, चारिम पंच आ जखन सभ अपने हाथ चलि औत तखन जे गाड़ीक-गाड़ीक चाउर-गहुम सरकार दइ छै, अन-पानि उपजबैक खगता की रहत।

दोसर दिस बान्ह-सड़कक कमीशन[34] नगदा-नगदी सेहो एबे करत, तखन किए ने एक धक्का देखिऐ। यएह धक्का मारि धकियबैक मन दर्जनक-दर्जन नेताकेँ एके बेरे ठाढ़ कऽ देलक। जइसँ बुझि पड़ए लगल जे राजनीतक जेना बिड़ों गाममे उठि गेल। मुदा दूरभाग कहियौ आकि अपन भाग कहियौ मरलाही पंचायत जे अखन वीर्तमान अछि, ओइ क्षेत्रक (जमीनी) कियो अखन तक पंचायतिक जे पद-भार होइ छै, से पौने नै छला। तेकर अनेको कारणमे प्रमुख भेल पंचायत क्षेत्रकेँ असथिर रहब। मरलाहीए गाम जकाँ सरलाही, जरलाही, हरलाही इत्यादि बीस गाम मिला एकटा पंचायत बनल, जइमे ऐ सभ गामकेँ बिना दगने सोनबैरसा पंचायतक नाओं पड़ि गेल।

ओना, जहिना ऐबेर गामे-गाम समाजक विकासक काज केनिहार उठि कऽ ठाढ़ भेल अछि तहिना देशक अजादीक समय सेहो गामक विकासक बात उठल छल। मुदा दुनूक दू परिस्थिति दू मन: स्थिति पैदा केलक। ओइ समय, माने आजादीक समय सबहक मनमे रहैन जे गाममे रहब अछि तँए गामक विकास ओते तँ जरूर भऽ जाए जे रहै-जोकर होइ। मुदा हुनका सबहक संगे आरो विषम स्थिति रहैन। गामक-गाम डभियाएल पड़ल अछि। किसानक देश भारत, जेकर अधार कृषि, जे सालक-साल बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ैत रहैए। मुदा बाढ़ि-रौदीक तँ अपन हिसाब छइ। बेसी बरखा भेल तँ बाढ़ि आएल उपज दहा गेल आ रौदी भेल तँ उपज जरि गेल। मुदा दुनूक अपन-अपन बान्हल समय

[34] पंचायत टैक्स

छै, बाँकी तँ बिसवासू समय अछि। तइले किछु ने भेल। किसान आन्दोलनसँ पछिमी कोसी नहर बनैक योजना बनल। मुदा केते खेतकेँ नहैरसँ लाभ होइ छै आ केते उपजाउ खेत मारल गेल? खएर जे भेल से भेल मुदा चुनाव सनक महापर्वकेँ नीक जकाँ सफल करब मरलाही गामक लोकक मनमे जागले अछि। टोले-टोल, जातिये-जाति पंचायत चुनाव लड़ैक क्रममे आबिये गेल अछि। मुदा कोनो उम्मीदवारकेँ मुद्दा नइ भेट रहल छै, जे एक उम्मीदवार दोसरकेँ पछाड़ि केना जीतत। सभ एक रंगाहे एक चलिये...।

आजादीसँ पहिने हजारो बर्खक शासन देशक बाहरी लोकक रहल जइसँ जनतांत्रिक पद्धैतक विचार लोकक मनमे कहियो जगबे ने कएल। बाहरी शासक रहने देश गुलामीक जंजीरमे जकड़ल रहल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत पंचायतिक रूप-रेखा तैयार भेल, जे गामक लोकक माध्यमसँ संचालित हएत। ओना, आजादीसँ पूर्ब गामक सीमांकन वित्तीय गामक[35] रूपमे छल, जमीनक मालगुजारियो आ देखो-भाल जमीन्दारक हाथमे छल।

देश आजाद होइते जमीन्दारोक जमीन्दारी आ रजो-रजवार ढहल। पंचायतक सीमांकान नव सिरासँ भेल। बीस गाम मिला कऽ सोनबैरसा पंचायत सेहो बनल। सभ गाम सभ रंगक अछि, कोनो गाम रकबो आ जनसंख्योक हिसाबसँ नम्हरो अछि आ कोनो छोटो अछि। मुदा जे अछि से अछि पंचायतमे एकटा मुखिया आ एकटा सरपंच तँ बनबे कएल।

किछु दिनक पछाइत किछु गाम कटि कऽ दोसर पंचायतमे गेल, फेर किछु गाम कटि तेसरमे गेल। अखन ओ बीसो गाम पाँच पंचायतमे विभाजित भऽ गेल अछि जइसँ जनसंख्यो आ रकबोक हिसाबसँ पंचायत छोट बनि गेल अछि, मुदा तैयो मरलाही गामक ने एकोटा मुखिया बनल आ ने सरपंच।

ओना, असगरो मरलाही गाम ओहन अछि जे जनसंख्या-हिसाबे पंचायतिक शर्त पूरा केने अछि। जइसँ पैछला सालक सीमांकनमे पंचायत बनियोँ गेल। अखन तक आने-आने गामक मुखियो आ आनो-आन पद आने-आने गामक लोकक हाथमे रहलैन। गाम-घरमे अखनो पंचायतिक शासनक माने लोक चीनी-गहुम-मटिया तेलक कोटा आ गमैया पनचैतीक अलाबा किछु ने बुझैत।

तीन हजार भोँटरक पंचायत मरलाही गाम, ओना धिया-पुता लगा पाँच हजारसँ ऊपरे जनसंख्या छइ। मुदा भोँट देबाक अधिकार अट्ठारह बर्खसँ ऊपर

---

[35] *Financial Village*

रहने, तीन हजार भोँटर अछि। कहैले दस-एगारह जातिक गाम अछि, मुदा छह-सात जाति ओहन अछि जे एक-घरासँ लऽ कऽ सत-घरा धरि अछि। आरक्षण भेने किछ-ने-किछ सब जातिक हिस्सेदारी पंचायतमे हेबे करत तँए सभ जातिक बीच पंचायतिक जिम्माक उनमुनी तँ आबिये गेल अछि। जे एको घर अछि ओहो कोनो पदक अधिकारी बनियेँ जाएत।

चारि जातिक संख्या कशम-कश अछि, माने पान साएसँ हजार भोँटरक। ओना, अखन तक समाज-संचालनक जे पद्धैत आबि रहल अछि ओ मैनजनी-पद्धैतक अनुकूल अछि। जे जमीन्दारी पद्धैतसँ जुड़ल अछि। मुदा ओ तरे-तर दिवरलग्गु-घुनलग्गु भऽ गेल अछि जेकरा जीब कठिन अछि। मुदा तैयो जाति-धर्म हाबी नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामे-गाम कि सौंसे राज्येमे चुनावक घोषणाक संग आचार-संहिता सेहो लगि गेल। नोमीनेशनक तारीख सेहो तँय भेल

अन्हराकेँ महींस बीएला पछाइत जहिना गामक लोक, माने दुहनिहार डाबा सोन्हबए लगैत तहिना पंचायत चुनावक चर्च सुनि गामक लोक सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ो केना ने होएत, जनतंत्र छिऐ किने, सभकेँ ने भार सम्हारैक अधिकार अछि। ओना, गामक जे अल्प-संख्यक छैथ हुनका सभकेँ जे आरक्षण भेटलैन तइसँ सभ जातिक, माने पाँचो-छबो जातिक लोक मने-मन संतुष्ट छला। सन्तुष्टक दुनू कारण- पहिल जे एक परिवारसँ उठल दू-चारि समलित परिवारक जे श्रेष्ठ-जन छैथ, हुनकापर सभ सहमत। तेकर बेवहारिक पक्ष ई जे अखन तक परिवार-विभाजनक पछाइतो ओ सिरजन अपन परिवार जकाँ सभकेँ बुझै छैथ। दोसर कारण ईहो जे जैठाम अधिक मतक महत हएत तैठामक महते केते। ऐठाम विपरीत विचार अछि। एक विचार अछि जे एक वैदिक साए अवैदिकसँ श्रेष्ठ, जे बेवहारिक ज्ञानक हिसाबे नीको अछि, जनतंत्रमे मतक विचार भेने अनाड़ी विचारोक महत बढ़ि जाइए। जे हजार जनसंख्याक अछि, ओइमे खुटे-खुट माने दियादे-दियाद पंचायतिक मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो लेल ठाढ़ भऽ गेल। जइसँ अठारह-अठारहटा केन्डिडेट मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो-पदक लेल ठाढ़ भऽ गेला। ओना, मरलाही गामक आइ धरि ने कियो पंचायत चुनाव लड़ल छल आ ने गाममे राजनीतिक हवा बहल छेलइ। ओना, एम.एल.ए; एम.पी. चुनावमे सेहो आ पंचायत चुनावमे सेहो भोँट खसबैत जरूर आएल छल मुदा ओकर प्रभाव सीमित छेलइ। सीमित ई जे एम.एल.ए.-एम.पी. चुनाव जाति-धर्मक हिसाबसँ होइ छै तइमे वएह भेल राजनीति आ पंचायितक चुनावक अधार ई भेल जे बीस गामक पंचायत भेने विकास नइ होइए, तँए छोट भेने बेसी हएत, जे पंचायत तीन बेर कटान भेल, वएह अधार बनल रहल जे

राजनीति बनल रहल।

ओना, गाममे तेते केन्डिडेट भऽ गेला जे जँ एक-एको छअ कोदारिक माटि उठा कोनो सड़कपर देथिन तँ ओ नीक सड़क बनि जाएत, मुदा से नइ दू दाँतक बच्छा जकाँ सभ हरछुटू, तँए ने ओकरा हर लागएब सिखबैक अछि। मुदा तेहेन ने जातिये-जाति आ खुटे-खुट लड़ाइ ठाढ़ भेल जे पहिने जाति-जातिक बीच फरिया लिअ। मुदा जे भेल से भेल, पैछला सेवाक[36] कोनो अधार कोनो केन्डिडेटकेँ नहि, तँए सभ मोगलक हींग वेपारी जकाँ जे चैतक करारीपर जहिना हींगक वेपार करैए तहिना सभ केन्डिडेट आगूक काज परचारक अधार बनौलक। मुदा एकटा गुण अछि, गुण ई जे सभ पहिल-पहिल जवाब-देहीक विचार रखि रहल छला, किनको पैछला खएल-पीअल अनुभव नहि जे केना कोटाक चाउर-गहुमक आमदनी अछि, आ केना इन्दिरा आवासमे कमीशनक जोगार। केना रोडक कमीशन होइ छै आ केना तरे-तर स्कीम गोल होइए।

सत्तासँ अलग रहल सभ केन्डिडेट, तँए सत्ताकेँ जुआ बुझि किए पाशापर बैसता। मुदा एते तँ सभकेँ बुझले रहैन जे आब जाति-धर्मपर भोँट नइ होइ छै जँ से होइतै तँ एके-जातिमे चारि-चारिटा केन्डिडेट होइत, जाति केकरा भोँट देत? तहिना धर्मोक भऽ गेल अछि एके धर्मक पँच-पँचटा उम्मीदवार भऽ गेला, तइमे किनका नमहर धरमात्मा मानल जाए? समाज-ले तँ अखन तक कियो एकटा माछियो ने रोमलैन अछि! आन-आन गाममे केतौ साए रूपैये भोँट तँ केतौ हजार रूपैये भोँट खरीद-बिकरी होइ छइ। ओना, मरलाही गाममे अखन तक खरीद-बिकरीबला हवो नै आएल छल, तँए जहिना राजनीतिक दृष्टिसँ तहिना खरीद-बिकरीक दृष्टिसँ मरलाही गाम डभियाएले रहल अछि। जाबे ओइमे ताम-कोर नइ हएत, ताबे उपजाउ केना बनत?

देशक स्वतंत्रताक समय गामक विकासक प्रति जे जन-जागरण छल ओ तँ नहि अछि मुदा एते तँ ऐछे जे नव-नव योजना गाम तकक हुअ लगल अछि, जइसँ आर्थिक समृद्धता एबे करत।

पनरह साए बीघाक रकबाबला गाम मरलाही। जहिना उपयोगी जातिक बस्ती, माने समाजक जे जरूरत-मन्द जाति जेना- बरही, नौआ इत्यादि– मरलाही गाम, तहिना चौरीसँ घराड़ी धरिक माटिक बनाबट सेहो। सातटा पोखैर अखनो गाममे ऐछे, जे माल-जाल गाममे नइ रहने आ चापाकल भेने नहाइयो-जोकर नइ रहल, तहिना पानिक उपजा नइ भेने ओहिना लिढ़ियाएल, केचिलियाएल पड़ल अछि। दर्जनो इनार जे कहियो बैशाख-जेठ मास

[36] गामक लेले कएल गेल विकासक काज

पनिसल्लाक धरमशाला बनल रहै छल ओ आइ अपने ढहि-ढनमना गेल अछि। जे अपन उपयोगी पजेबोकेँ माटि तर गरल देख-देख कानि रहल अछि। माने हजारक-हजार पजेबा माटिक तर दबल अछि। ओना, आठ साए बीघाक जे चौर-चाँचर अछि ओ, ओना, भरोसगर खेत नहियेँ अछि, चपगर जमीन रहने जँ अगते गोटे नमहर बरखा आबि बाढ़ि आएल तँ भरि छाती पानि लगि जाइए, ओना किछु जिबठगर किसान चौरियोमे बोरिंग गड़ा लेलैन अछि, जे सालक छह मास जे खेत सुखैए तइमे एक-दू बेर एहेन जजातिक खेती कऽ लइ छैथ जे बारहो मासक उपज तँ नहि मुदा छह मास तँ जरूर ओइ खेतकेँ उपजाइये लइ छैथ।

ओना, ने कोनो गाम सोल्होअना डभियाएल अछि आ ने सोल्होअना उपजाउ। थोड़-थाड़ जहिना डभियाएल अछि तहिना थोड़-बहुत उपजाउ सेहो तँ अछिए। जहिना आन गाम अछि तहिना ने मरलाही पंचायत कहियौ कि मरलाही गाम सेहो अछिए। आने गाम जकाँ मरलाहियो गामक लोक, गाममे स्कूल नइ रहने आनो गाम आ आनो ठाम जा-जा पढ़बे करै छैथ। भलैँ ओ नाम-मात्रे किए ने होइ। तहिना बर-बेमारी भेने आनो गामक डॉक्टर ऐठाम आ दरभंगो-पटनाक अस्पताल जा-जा लोक इलाज करैबते छैथ, भलैँ ओकर जेहेन परिणाम हौउ। विचारोक तँ दुनियाँ अछि। जँ कियो अपन बाल-बच्चाकेँ समुचित शिक्षा नइ दऽ पेलक वा नइ पेब रहल अछि तँए कि ओकर मनक विचार थोड़े दोखी हएत। जेकरा कपारमे[37] विद्या लिखल रहतै, ओ कहुना-ने-कहुना भाइये जेतइ, सभ काञ्चीनाथ किरणे नइ ने हएत जे घसन विद्या आ लपट जोड़सँ दुनूक उपारजन बुझत।

सात साए बीघा जमीन मरलाही गामक ओहन अछि जइमे एगारह साए परिवारक बासो अछि आ जीविका-ले खेतियो तँ अछिए। ओना, ईहो बात सेहो ऐछे जे आने गामबला जकाँ मरलाहियो गामक लोक नोकरी-चाकरी करए पंजाबसँ लऽ कऽ बंगलोर तकमे रहिते छैथ। तैसंग सरकारियो नोकरी करिते छैथ। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छैन आ अपन-अपन विचार छैन, जे जेतए छैथ ओ ओतए खुश छैथ। जहिना सभ गाममे सार्वजनिक काज[38] होइए तहिना मरलाहियो गाममे होइते अछि। सालमे एकबेर दुर्गापूजा आ ब्रह्मस्थानमे नवाह-कीर्तन सेहो होइते अछि। ओना, ई दुनू काज सार्वजनिको होइए आ घरे-घर सेहो होइते अछि। तेतबे किए सालक अनेको पाबैन आ व्रत-उपास सेहो होइते अछि। तैसंग परिवार-परिवारमे मूड़न, बिआह आ श्राद्धो नइ होइए सेहो थोड़े नइ

---

[37] (भागमे)

[38] सबहक सझिया काज

कहल जा सकैए, सेहो तँ होइते अछि। केतबो अपनामे भोज-भात-ले बारा-बारी आकि झगड़ा-झंझट होइए, तँए कि केकरो रान्हल भात सड़ि थोड़े जाइए।

प्रश्न अछि आजुक समेनुकूल विचारक संग समेनुकूल जिनगीक। जइ खेतपर गाम ठाढ़ भेल अछि ओइ खेतक दशा-दिशा की छइ? की गामक लोककेँ उदर-पूर्ति खेतीसँ होइ छै वा आन-आन उपाय करए पड़ै छइ? मनुख तँ भोजनेपर ठाढ़ अछि जे अन्नेसँ पूर्ति हएत आ अन्न औत खेतसँ। तँए दुनियाँक ऐनामे देखैक जरूरत अछि जे गामक जमीन केते उपैज सकैए आ तइले की सभ खगता अछि। जाबे से नइ हएत ताबे गामक खेतीक उन्नैत केना हएत, तहिना जाबे जिनगीक अनुकूल रहैक बेवस्था नइ हएत ताबे जिनगी चलि केना सकैए। कहैले एगारह साए परिवारक गाम छी, मुदा केते परिवारकेँ अपन घराड़ी छै आ रहै-जोकर घर..?

रोग-वियाधिक निराकरण अखनो झार-फूक आ ओझाइसँ होइए, की यएह विचार एकैसमी सदीक मनुखक होय? मुदा डाभियो तँ डाभी छी किने जे एक दिस[39] जहिना खेतक जोत कोड़ नइ भेने स्वत: जनैम खेतकेँ डभियार बना दइए, तहिना दोसर दिस नव-नव ढंगसँ डाभी रोपि-रोपि डभियार सेहो ने बनौल जा रहल अछि, मुदा से बुझत के? पंचायत चुनाव परसू हएत मुदा गाममे जेना तना-तनी बढ़ि गेल अछि ओ चुनाव हुअ देत कि नइ हुअ देत, ई तँ परसूक पछाइत बुझब। मुदा एते तँ गामक लोक सुनियेँ रहला अछि जे जातिक बाधक जाति छी आ धर्मक बाधक धर्म। जँ से नइ तँ मानव जाति आ मानव धर्म की भेल, ई तँ मरलाही गामक लोको ने बुझता।

दस चरणमे पंचायत चुनाव हएत। पहिल चुनावसँ दसम चुनावक दूरी, सबा मास भऽ गेल। पहिल-दोसर चरणक चुनावकेँ प्रचार करैक कमे समय भेटल। ओना, कम समय ओकरो नइ भेटल किए तँ जखन एम.पी.क ओते नमहर क्षेत्रक प्रचार-प्रसार ओतबे दिनमे सम्भव अछि, तखन पंचायत-ले कम समय नइ भेल। जेना-जेना चुनावक चरण बढ़ैत गेल तेना-तेना प्रचार-प्रसारक समय बढ़ैत गेल। मरलाही पंचायतक चुनाव दसम चरणमे हएत तँए प्रचारक समय खूब भेटल।

परसू सोम छी, चुनावमे भाग लेबा-ले माने भोँट दइले सरकारी छुट्टी भेल। आइ पाँच बजे तक प्रचारक समय अछि। पाँच बजेक पछाइत लॉड-स्पीकरक अवाज एकाएक थमि जाएत। रघुनाथ सेहो शनियेँ दिन आठ बजे रातिमे गाम आबि गेला। गामसँ पाँच कोस हटि मोहनपुर हाइ स्कूलमे रघुनाथ

[39] इतिहासक अनुसार

शिक्षक छैथ। आठ बजे गाम पहुँचला पछाइत अपन पितियौत भाए- सुजीतकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुजीतोकेँ बुझल जे सभ शनिकेँ रघुनाथ भैया गाम अबै छैथ। अबिते सोर पाड़ि गामक हाल-चाल पुछिते छैथ। अबिते सुजीत रघुनाथकेँ गोड़ लगि बाजल-

"भैया, भोँट की हएत जे गाममे बड़का झंझट ठाढ़ भऽ जाएत।"

सुजीतक बात सुनि रघुनाथ तारतम करए लगला जे पंचायतिक गठन कल्याण-ले भेल अछि, तैठाम सुजीत बुझैए जे बड़का झंझट ठाढ़ हएत। ओना, सुजीत हाइये स्कूल तक पढ़ने, मुदा कौलेज तकक शिक्षा होइ आकि स्कूलक आकि नहियेँ होइ, मुदा सभकेँ तँ अपन-अपन बुधिक अनुकूल विचारो होइ छै आ देखैक अपन नजैर सेहो तँ होइते छइ। बजला-

"बौआ, की झंझट ठाढ़ हएत?"

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ल प्रश्न भेटने परीक्षा भवनमे मन खुशी होइ छै तहिना बुझले बात सुनि सुजीतक मन सेहो खुशी भेल। खुशी होइते सुजीत मने-मन विचार करए लगल जे भैयाक प्रश्न एकेटा ने छैन, मुदा हमरा तँ अनेको उत्तर बुझल अछि। मुदा अनेको बुझल बात मे ई तँ समस्या ऐछे जे अपन पसन्दक उत्तर जे रहत आ ओ जँ प्रश्नकर्ताकेँ ओते रूचिगर नइ लगैतन जेते उत्तरकर्ताकेँ लगैए, तखन।

मुदा संयोग नीक बैसल, तखने चाह नेने रघुनाथक दस बर्खक बेटी–रूकमिणी–पहुँचल। चाह देखते हाँइ-हाँइ सुजीत अपन मनक बात-विचारकेँ समटैत अकछाइत बाजल-

"भैया, कोनो कि एकेटा कारण अछि, अहाँ तँ गाममे नइ रहै छी तँ की बुझबै, मुदा सुनैत-सुनैत हमर कान बहीर भऽ गेल अछि, तँए कहलौं।"

सुजीतक सुढियाएल मन देख रघुनाथ बजला-

"अच्छा, गप-सप्प हेबे करत पहिने चाह पिबह।"

एक तँ ओहिना सुजीतक मन बजैले तनफनाइत तैपर भफाएल चाह देख मनो भफाएल। बाजल-

"पहिने अहाँ पीब तखन ने हम पीब।"

सुजीतक सुविचार देख रघुनाथक मन पघिल गेलैन। पघिल ई गेलैन जे जे विचार अखनो समाजमे जीवित अछि- माने पहिने अहाँ तखन हम- ओ मरि जाए, सेहो नीक नहि। मुदा काल्हिये भरि दिन समय अछि, एकबेर जँ सभ उम्मीदवारकेँ एकठाम बैसा एक विचारमे आनि समाजक उन्नतिक दिशा दिस बढ़ब नीक हएत। मुदा से सम्भव कहाँ अछि। जिनकेसँ भेँट करए जाएब वएह

बजता जे झगड़ा करैबेर जहिना धरहरिया केकरो पकैड़ मारि खुआ दइए, सएह ने बुझत। आब देखौआसँ चोरौआ धरि सभ अपन-अपन मैनेज करैमे लागत, तइमे जँ हम किछु केकरो कहबै तँ सएह बुझत..। रघुनाथक मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले भेलैन जे रोगसँ बँचैक दुनू उपाय अछि। बेमारी होइसँ पहिने संजम आ बेमारीक पछाइत नीक इलाज। तँए जेते चिन्तनीय समस्या बुझै छी, से नइ अछि। मुदा अही समाजक तँ अपनो छी किने तँए किछु दायित्व तँ बनिते अछि।

चाह पीब रघुनाथ बजला-

“बौआ, गाममे तँ हमहींटा हाइ-स्कूलक शिक्षक छी, तूँ कहै छह जे गाममे झंझट ठाढ़ हएत, तैबीच हम की करी?”

सुजीत बाजल-

“आब अखन किछ ने करू, मन हुअए तँ भोँट खसाएब नइ हुअए तँ नइ खसाएब, किए केकरोसँ अहूँ दुश्मनी करब।”

सुजीतक विचार सुनि रघुनाथक मन मानि गेलैन जे अखन सबहक मनक चढ़न्त बेर अछि तँए चुपे रहब नीक। बजला-

“से सएह?”

सुजीत-

“हँ ते और की।”

❍

शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

गुलेती दास

अन्तिम जेठक दस बजेक समय। चारि दिन पहिने गुलेती दासकेँ दूटा छिट्टा दइले कहने रहिऐ। आइ भोरे समाद पठौलक, 'छिट्टा तैयार भऽ गेल से लऽ जाह।'

..समैमे तीखपन, ओना पूर्बा हवा सिहकैत रहइ मुदा तैयो जेना बुझि पड़ैत जे धरतीसँ आगि उठि रहल अछि, खास कऽ दस बजेक पछाइत आ चारि बजेक बीचक समैमे। रोहनियाँ बर्खा नइ भेल, ओना पनरह दिन पहिने बिहड़िया पानि भेल, मुदा ओहो छीच्चे जकाँ भेल जइसँ समैक तापकेँ दाबि नइ सकल। छिछियाएले जकाँ रहि गेल। गोटि-पँगरा रोहनियाँ आम पकए लगल मुदा समय नइ पेने ओकरो सुआद पकाइने जकाँ, माने रौद-पक्कुए सन बुझि पड़ैत। गुलेती दास ऐठाम छिट्टा आनए विदा भेलौं।

गुलेतीक पुश्तैनी जातीय टाइटिल 'मुखिया' छिऐ। माने मल्लाह परिवारमे गुलेती दासक जन्म भेल। पचीस बर्ख पूर्ब गुलेती मुखिया कबीर पंथी वैष्णव भेल, जइसँ 'मुखिया' टाइटिल बदैल 'दास' भऽ गेल। पचास बर्खक गुलेती दासक जिनगीक अपन रूटिंग बनल छइ। दस बजे ओ भानसक पाछू लगि जाइए, जे एगारह-सबा-एगारह बजे भोजन तैयार कऽ लइए। भानसक पछाइत नहा कऽ, मंत्र-जाप तँ किछु अबै नइ छै, मुदा तैयो 'जय सत्-नाम, जय-जय सत्-नाम' करैत चानन सेहो करैए। चानन केला पछाइत भोजन करैए। बारह-सबा-बारह बजे थारी-बरतन धो-धा चीनमारपर रखि अराम करए चलि जाइए। तीन बजे ओछाइन छोड़ि मुँह-हाथ धोइ, पानि पीब, तमाकुल चुना कऽ खा, अपन काजमे लगि जाइए...।

भिनसुरका उखड़ाहाक काज सम्पन्न करैत गुलेती भानस करए विदा होइक ओरियान करिते छल कि पहुँचलौं। हमरा देखते गुलेती दास बाजल-

"भैया, तोहर काज काल्हिये बेरू-पहर सम्पन्न भऽ गेल, भने आबिए गेलह।"

कहि दुनू छिट्टा आनि आगूमे रखि देलक। दुनू छिट्टाकेँ निहारि-निहारि देखलौं तँ बुझि पड़ल जे जहिना कहने छल, तहिना छिट्टा बनौनौं अछि। पुछलिऐ-

"गुलेती, दुनूक केते दाम भेलह?"

ओना शुरूहेमे, माने जखन छिट्टा दइले कहने रहिऐ तखने डेढ़-डेढ़ साए रूपैयेक हिसाबसँ कहने रहए। मुदा ईहो कहने रहए जे जखन छिट्टा बनि जाएत तखन दस-बीस कमे करि कऽ दिहह। ..छिट्टा देख मनमे भेल जे जेहेन वौस देलक अछि तइमे दामक अतिरिक्त किछु उपड़ा सेहो दिऐ, मुदा लेबाल-देबालक विचार मनमे जोर मारि देलक तँए दोहरा कऽ कहा गेल 'केते दाम भेलह।'

गुलेती दास बाजल-

"भैया, कहनहि रहिहह जे तीन साएमे दस-बीस कमे दिहह।"

साए-साए रूपैआक तीनटा नमरी जेबीसँ निकालि गुलेती दासक हाथमे दैत कहलिऐ-

"गुलेती, तूँ जेते दस-बीस कम करहब, ओते दाम कम भेल, मुदा तोहर कारीगरी देख मन खुशी भऽ गेल तँए तोरा ओते इनाममे दइ छिअ, ओहो रखि लएह।"

'इनाम' सुनि गुलेती मुस्कुराइत कहलक-

"भैया, पाइ-कौड़ी कोनो वौस छी, असल छी जे मनसँ असीरवाद दएह जे अहिना काज लगल रहए जइसँ समाजक उपकार करैत रहिऐ। भानस करैक बेर भऽ गेल तँए अखैन बेसी गप नइ करबह।"

अपनो गुलेती दासक रूटिंग बुझले अछि तँए बेसी गप-सप्पकेँ आगू नहि बढ़ा, दुनू छिट्टा हाथमे लऽ विदा भेलौं।

जहिना कोनो गाममे जे जेते पहिने आएल रहल ओ ओते नीक बासभूमि अपनबैत बसैए, आ जे जेते पछाइत आएल ओ ओते आगू बढ़ैत बास बनबैत जाइए, तहिना गुलेती मुखियाक पिता–दोरिक मुखिया सेहो हरिपुरमे आबि बसला। से खाली दोरिके मुखिया नहि, आठ-दसटा मलाह परिवार कोशिकन्हासँ उपैट आबि बसल छला। करीब साठि बर्ख पहिने...।

जइ समय दोरिक मुखिया हरिपुरमे आबि बसला, तइ समय मात्र तीनियेँ गोरे परिवारमे छला। दोरिकक माए- रूपनी, पत्नी- तेतरी आ अपने दोरिक। गैरमजरूआ आम जमीन, करीब पाँच कट्ठाक परती रहै तेहीपर आठो-दसो परिवार बसला।

हरिपुरक अवादी पतराएले छल, खेती-पथारी करैबलाक खगता छेलैहे। ..जहिया आठो-दसो परिवार आबि बसला, तहिया हरिपुरमे जे सुभ्यस्त किसान सभ छला ओ भरपुर सहयोग केलखिन। चारि-पाँच परिवार दू-दू-तीन-तीन परिवारकेँ अपना बीटक बाँस, खढ़ आ साबे दऽ दऽ घर बनबा देलखिन। ओहू

दसो-बारहो परिवारकेँ बोनि-बुत्ता करैक गर सेहो भेटलैन।

ओना, रूपनी उमेरदार मुदा तैयो बेटा-पुतोहुक संग अखाढ़मे धनरोपनी आ अगहनमे धनकटनीक संग रब्बियो-राइ उखाड़ए-काटए जाइते छेली। जे किसान दोरिककेँ घर बनबैमे बाँस, खढ़ आ साबेक मदैत केने रहथिन, हुनके हरवाहि दोरिक करए लगला।

सालक बारह मासमे दू मास हरवाहि चलै छल, जइमे एक मास सुख-जोत आ एक मास कदबा चलइ, बाँकी दस मास हरवाहिक काज बन्ने रहइ। खेतियो असान छेलइ। अखाढ़मे धनरोपनी, भादो-आसीनमे खरहाएल धानक खेतमे कमठौन आ अगहनमे धनकटनी चलइ। दौन-दोगौन किसान अपने कऽ लइ छला।

समय आगू बढ़ल। दोरिक मुखियाक माए मरि गेली। दोरिककेँ सेहो पहिल बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। सात सालक जेठ बेटा- फुदी मुखिया। फुदियाक बिआह सेहो भऽ गेल।

दुनू बेटी, जे एकटा पाँच बर्खक छल आ दोसर अढ़ाइ बर्खक छल, ओ आ फुदिया लगा पाँच गोरेक परिवार दोरिक मुखियाक छेलैन। ओना, बेटाक बिआह भऽ गेल मुदा ओइसँ परिवारक जनसंख्यामे कोनो बिरधी नइ भेल। होइतो अहिना छेलै आ अखनो केतौ-केतौ होइते अछि जे बच्चेमे बेटा-बेटीक बिआह भेल आ दस-बारह बरिसक पछाइत दुरागमन।

बाल-विवाहक कारण छल, बेटा-बेटीक बिआह माए-बापक अनिवार्य कार्य मानल जाइत रहल अछि जेकर पुरती करब सेहो अनिवार्य बुझल जाइत रहल अछि। एक तँ ओहुना मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक जिनगीक कोनो निसचित ठेकान नइ अछि। मर्त्त लोक छी, जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। मुदा तोहूमे जैठाम जिनगी-ले अनुकूल परिस्थिति नइ रहल तैठाम तँ आरो जिनगी बेठेकान भऽ जाइए। ओना, जँ मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक अनुकूल परिस्थिति रहल तँ जिनगीकेँ ठेकनौले जा सकैए। बच्चासँ वृद्धि होइत वृद्ध बनैत-बनैत साए बर्ख भाइये जाइए।

चारि साए बीघाबला गाम हरिपुर। चारियो साए बीघा जमीन चारि किस्ममे बँटल अछि। ओना माइटिक अनेको किस्म अछि मुदा से नहि, साइजिक हिसाबसँ हरिपुरमे चारि किस्मक जमीन अछि। पहिल अछि- ‘उपराइर’, जइमे बासो-अगवास अछि, बाड़ियो-चौमास अछि आ गाछियो-बिरछी अछि। दोसर अछि- ‘मध्यम जमीन’। मध्यमोमे दू रंगक किस्म अछि। पहिल ‘ऊँच मध्यम’ आ दोसर अछि ‘नीच मध्यम’। आ चारिम अछि ‘चौरी’, ‘चौर’।

चारि साए बीघा जमीनमे दू साए बीघा चौरी अछि, बाँकी दू साए बीघा मध्यमसँ बास धरिक अछि। ओना, चौरियोमे धानक खेती होइए, मुदा अबिसवासू। जइ साल अगते नमहर बर्खा भेल आकि बाढ़ि आएल पानिसँ चौरी भरि गेल, तहन तँ दहार भेल तँए एको कनमा धान नइ उपजत।

हरिपुरक उत्तर-पच्छिम कोण होइत सुपर्णा धार प्रवेश केने अछि। जे उत्तर-पच्छिमसँ शुरू होइत गामक उत्तरबरिया बाध देने उत्तर-पूब कोण पकैड़ दच्छिन-मुहेँ होइत गामसँ बहराएल अछि। गामक चारू-कात माने चारू बाधमे चौरियो अछि आ आनो-आनो किस्मक जमीन। ओना, जँ समय नीक रहल, माने दाही-रौदी नइ भेल, तखन तँ एते उपजा भाइये जाइए जइसँ सालो भरिक बुतातमे कटमटी नइ अबैए मुदा दाही-रौदी भेने तँ आबिए जाइए।

दोरिक मुखिया, जिनका अपन घर छोड़ि किछु ने छैन, सेहो अपन काजकेँ बढ़ौलैन। बारह मासक सालमे तीन मास काज रहने, तीन मास तँ परिवारक गुजर चलि जाइ छेलैन, मुदा बाँकी मासमे भुखमरी आबि जाइ छेलैन। ओना, परिवारमे गुलेतीक जन्म सेहो भऽ गेल। गुलेती माने दोरिक मुखियाक चारिम सन्तान।

गामक दछिनबरिया चौरीक बगलेमे पूबसँ पच्छिम-मुहेँ बान्ह अछि। जे बीचमे टुटल अछि। सुखार मासमे तँ सुखले-सुखल लोक टपैए मुदा जखने बर्खा भेल आकि बाढ़ि आएल तहन रस्ता बन्न भऽ जाइए। ओना सोलहन्नी तँ बन्न नइ होइए, मुदा भरि-जाँघ-भरि-डाँड़ पानिमे टपए पड़ै छइ।

करीब एक कट्ठामे बान्ह टुटल अछि। जइ देने चौरियोक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो बरसातमे बहैत रहैए। जेकरा लोक खोरबन्हा सेहो कहै छइ। ओही टुटलाहा बान्हमे दोरिक टौहकी पहटासँ घेर मछबारि सेहो करै छैथ। जइसँ साओन-भादोसँ लऽ कऽ कातिक तक मछबारिक रोजगार चलिते छैन। ओना, पोखैरक पोसा माछ जकाँ तँ नहि मुदा अनेरूओ आ पोखैर-झाँखैरक जे पुरना माछ बाढ़िमे भँसि-भँसि पड़ाइए ओहो तँ होइते छैन।

बाँसक छिट्टा-पथिया आ टौहकी-पहटा सेहो बनबैक लूरि दोरिक मुखियाकेँ छैन्हे। टौहकी-पहटाक बिकरी तँ बेसी नहियेँ होइ छेलैन मुदा छिट्टा-पथियाक बिकरी तँ होइते छेलैन। ओहीठाम माने खोरिबन्हाक पुबरिया भित्तामे, खोपड़ियो आ मचानो बना दोरिक मुखिया सौनसँ जे रहए लगै छला ओ कातिक तक बाधेमे दिन-राति बितबै छला।

एक-बेर-दू-बेर टौहकी चाहि माछो ऊपर करै छला आ भरि दिन छिट्टा-पथिया सेहो बनबै छला, जेकर बिकरी गामोमे होइ छेलैन आ आनो-आनो गामक लोक आबि-आबि किनै छल।

जहिना दुरागमनक पछाइत दुनू बेटी सासुर चलि गेल तहिना जेठका बेटा–फुदिया सेहो दुरागमनक पछाइत घर-जमाए बनि सासुरेमे रहए लगल। कारण भेल, ससुरकेँ मात्र एकेटा बेटी दोसर कोनो सन्तान नहि। सासुरमे घराड़ीक संग दू कट्ठा बाड़ियो...।

ओना, गुलेती सेहो पनरह बर्खक भऽ गेल, मुदा अलबटाह जकाँ रहने बिआह नइ भेलइ। अलबटाह ई जे देहक हिसाबे माथो नमहर रहै आ बोलियो साफ नइ निकलै। ओना बाजै सभ किछु मुदा स्पष्ट बोल नइ रहने सुननिहार साफ-साफ नइ बुझैत। तैसंग दुनू पएरो झखाइ।

भादो मास, सूर्यास्तक समय। टौहकी चाहैत दोरिक मुखिया भरि डाँर पानिमे रहैथ। बड़का टौहकी रहइ। ओइमे एकटा साँप फँसि गेल। मेघौन समय, दोरिककेँ बुझि पड़लैन जे अन्है छी। टौहकीक मुँह खोलि साँपकेँ अन्है बुझि पकड़ए चाहलैन।

टौहकीमे फँसल साँप छटपटाइते रहए। जहाँ दहिना हाथे साँपकेँ पकड़ए लगला कि हाथेमे साँप काटि लेलकैन। जखन हाथमे साँप काटि लेलकैन तखन दोरिककेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक ढोढ़ साँप छी, वएह काटि लेलक।

ढोढ़क बिख माल-जालकेँ तँ लगै छै मुदा मनुखकेँ नइ लगै छइ। ओना, हाथसँ छर-छर खून बहए लगलैन मुदा तेकरो चिन्ता मिसियो भरि दोरिकक मनमे नइ भेलैन।

टौहकीक मुँह बान्हि दोरिक ऊपर एला आ जैठाम खून बहैत रहैन, तैठाम चुनौटीसँ चून निकालि लगा लेलैन। ओना, बिख तरेतर देहमे पसरए लगलैन मुदा तेकरा अनठा देलखिन। चून लगा फेर पानिमे पैस टौहकी उठौलैन। टौहकीक मुँह खोलि साँपकेँ निकालए लगला कि फेर दोहरा कऽ साँप काटि लेलकैन। टौहकी चाहिते-चाहिते दोरिक पानिमे खसि पड़ला। दोसर कियो ओइठाम नहि। पानियेँमे दोरिक मरि गेला।

एक घन्टाक पछाइत जखन गुलेतियो आ ओकर माइयो पहुँचल तँ दोरिककेँ खोपड़ीमे नइ देखलक। चारू-कात तकलक तँ केतौ ने नजैरपर पड़लैन। अन्हार सेहो भऽ गेलइ। गुलेती कपड़ा बदैल पानिमे पैसल तँ पिताकेँ मुइल पड़ल देखलक। देखते जोरसँ माएकेँ शोर पाड़ैत बाजल-

“माए! बाबू मरि गेल!”

‘मरब’ सुनि तेतरियो पानिमे पैस कऽ देखलैन जे पतिक साँस बन्न भऽ गेल छैन।

पानिपर ताबे अलगल नइ रहैथ। गुलेतीकेँ कहलखिन-

"बौआ, पहिने दुनू गोरे पकैड़ कऽ ऊपर लऽ चलह।"

भरि राति दुनू माय-पुत माने गुलेतियो आ तेतरियो दोरिककेँ खोपड़ीमे रखि ओगैड़ कऽ बैसल। भोर होइते दुनू माय-पुत खोपड़ीए-मे कानए लगल। ओना गामसँ हटल खोपड़ी, मुदा रहै तँ गामेक दछिनबरिया बाधमे। ..दुनू माए-बेटाक कानब सुनि एके-दुइए गामक लोक पहुँचए लगल। अन्तमे मचानेक फट्ठो आ बल्लोक चचरी बना दोरिकक लाशकेँ उठा धारक कात लऽ जा गाड़ि देलकैन।

अखन धरि तेतरीक मनमे मिसियो भरि ई चिन्ता नइ पैसल छलैन जे निसहाय छी। बुझियो केना पड़ितैन, सोझमे पति, बेटा, बेटी सभकेँ देखैत। तैसंग जे जिनगी बनल आबि रहल छेलैन सेहो तँ रहबे करैन। माने ई जे जइ सुख-दुखक बीच जिनगी बनल छैन सेहो तँ छैन्हे, जइसँ अपन ऐगला शेष जिनगीपर नजैर किए जइतैन। मुदा पतिक परोछ भेने तेतेरीक मनो आ शरीरो हरहरा कऽ जेना बैसए लगलैन। ओना तेतरी सत्तैर बर्ख टपि चुकल छैथ मुदा अखन तक मनसँ मृत्युओ आ दुखो हेराएल छेलैन।

पतिक परोछ भेने जेना एकाएक तेतरीक मनकेँ चिन्ता दाबए लगल। दाबबो केना ने करितैन। एक दिस गुलेती सन अलबटाह बेटा सोझहामे देखैत तँ दोसर दिस जेठ बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीकेँ अपनासँ दूर हटल दोसर गाममे देखैत। जे कहियो एको कौर खाइक आकि एको बीत वस्त्रक जोगार नइ करैत। बेटी तँ सहजे जन्मदाता माए-बापसँ हटि दोसर घर बसिते अछि, तँए ओकर आशे कोन...।

साल बितैत-बितैत तेतरीक शरीर जड़ि कटल लत्ती जकाँ अलिसा-अलिसा सुखैत-सुखैत सुखि गेलैन। माने तेतरी मरि गेली।

पिताक मृत्युक पछाइत गुलेती मुखियाक ऊपर परिवारक भार आबि गेल। ओना, गुलेतीक बुधि ओते परिपक्व नहि जे अपन पूर्ण दायित्व बुझैत मुदा तैयो तँ एते बुझबे करै छल जे जहिना पिताक अमलदारीमे माछक कारोबार करै छेलौं तहिना आबो करब। जइसँ तीन-चारि मास गुजर चलिए जाइए। तैसंग पिताक संग बाँसक बीटसँ बाँस काटि अनै छल आ ओकरा पाँगि-पुईंग कऽ टुकड़ी बना-बना, माने ओकरा टोनि-टोनि, चीर-फारि छिट्टा-पथियाक कड़ो आ बीनैबला कैमचियो बनबै छल, तैसंग छोट-छोट पथियो-टौहकी आ पहटो गुलेती बना लइ छल। ओना पहटा बनाएब सभसँ सोझगर अछि मुदा आब ने ओकर खगता गाममे अछि आ ने बिकरीक वस्तु बनल अछि।

जहिया दोरिक कोशिकन्हासँ पड़ा कऽ हरिपुर आबि बसला तहिया तीन गोरेक परिवार रहैन–अपने, माए आ पत्नी, जे समय पेब कलशल। बेटा-बेटी भेने

पाँच गोरेक परिवार भेलैन। मुदा बेटा-बेटीकेँ सासुर बास भेने फेर तीनियेँ गोरे–तेतरी आ गुलेतीपर आबि अँटैक गेलैन। ओना, बेटो-बेटी जे सासुर बसैए, जीवित छैन आ तैसंग पोतो-पोती आ नातियो-नातीनसँ परिवार झमटगर भाइये गेल छैन, जइसँ दुनू परानी दोरिकक मनमे खुशी रहबे करैन। मने-मन बजबो करिते छला जे जहिना कोशिकन्हासँ पड़ा आबि हरिपुरमे बसलौं तहिना भगवान एकसँ एक्कैस परिवार बना देलैन। आगू की हएत से लोक थोड़े देखैए। बड़ देखैए तँ वर्तमान देखैए आ अतीत देखैए। अतीतो तँ अतीते छी जे अपन चुगली अपने करैए। चुगली ई जे जहियासँ मनुख ऐ धरतीपर जन्म लेलक आ लतड़ैत-चतड़ैत आगू बढ़ल तहियासँ हमरो वंश जीबैत आबि रहल अछि, जँ से नइ जीबैत रहल अछि तँ आइ हम केना छी। समैक चपेटमे, माने समैक उतार-चढ़ावमे परिवारक डारि-पात जे टुटल हुअए आकि झड़ल हुअए मुदा शील रूपमे वंशो तँ जीवित अछिए।

ओना, गुलेतीक परिवार असगरक भऽ गेल। माने परिवारमे गुलेती असगरे रहि गेल। मुदा असगरो रहल तैयो तँ परिवार रहबे कएल, भलेँ अलबटाह रहने गुलेतीक बिआह नइ भेल, तइसँ परिवार आगू नइ बढ़त, मुदा असगरोक परिवार तँ अछिए। जखने परिवार रहल तखने ओकरा जीवित रखैले परिवारक सभ विहीत करए पड़ै छइ।

परिवारो तँ परिवार छी। एको गोरेक होइए आ पचासो गोरेक होइते अछि। एक गोरेक परिवार ओ भेल जे गुलेतीक छइ, आ गोटे-गोटे ऋृषि-ऋृषिकाक सेहो होइए, जइमे असगरेक जिनगियो आ परिवारो होइए आ दुइयो-तीनियोँ आ चारियो-पाँचोक होइए। तैसंग जँ दू भैयारी आकि तीन भैयारी आकि चारि भैयारीक रहल, तँ पाँच-दस-पनरह-बीसक सेहो होइए। तहूसँ बेसी जँ पिताक परिवारसँ आगू बढ़ि बाबा तकक रहल तँ तीसो-चालीस गोरेक भेल आ जँ तहूसँ पाछू परबाबा तकक संयुक्त रूपमे रहल तँ पचासो-साठि गोरेक परिवार होइते अछि जेकरा 'संयुक्त परिवार' सेहो कहै छी। ओना, संयुक्तो परिवार केते रंगक होइए। जँ दू-तीन भैयारीक रहल तँ ओहो संयुक्त परिवार भेल आ जँ तइसँ पाछू बाबा तकक भेल तँ ओहो भेल आ जँ परबाबा तकक भेल तँ ओहो संयुक्ते परिवार भेल।

मुदा तँए कि एक गोरेक आकि दू गोरेक परिवार नइ अछि, एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए किएक तँ सेहो अछिए। ओना, एक-पुरखिया परिवारकेँ संयुक्त परिवार बनैक अनुकूल परिस्थिति बनितो नहियेँ अछि तँए ओ नमहर जड़ि रहितो ताड़-खजूर जकाँ एक-पुरखियाहे रहैए। माने ई जे जँ परबाबा धरिक परिवार अछि। ओइ परिवारमे परबबो असगरे भैयारी छला आ बेटो एकेटा

भेलैन, बेटी भलेँ बेसीए रहल होनि जे सासुर चलि गेलैन ओ परिवार तँ एक-पुरखियाहे आगू बढ़ि बाबापर पहुँचैए। आ जँ बबोक वएह गति भेलैन जे एकेटा बेटा भेलैन जइसँ फेर एक-पुरखियाहे परिवार आगू बढ़ल...। तँए ओहन परिवार तँ कहियो संयुक्त नहियेँ बनि पाऔत, बेसीसँ बेसी एतबे ने हएत जे बबो-दादी आकि माइयो-बाप आकि बेटो-पुतोहु एकठाम रहि गुजर-बसर करैथ। ओना, अकसरहाँ लोकक मुहेँ यएह निकलैत जे 'संयुक्त परिवार नष्ट भऽ गेल वा जेहो अछि से नष्ट होइक बाट पकैड़ नेने अछि।' मुदा ऐठाम हमरा भ्रम भऽ गेल अछि। भ्रम ई भऽ गेल अछि जे हम समयक गतिकेँ नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।

जहिना समैक गति अछि जे भिनसरसँ दुपहर, दुपहरसँ साँझ पड़ैए तहिना सभ कथुक अछि, जइमे परिवारो आ समाजो अछि। समाज परिवर्तनशील अछि। कोनो क्षण एहेन नइ होइ छै जइमे परिवर्तन नइ होइए। मुदा प्रति क्षण होइबला परिवर्तन जाबे तक पुरान स्थितिमे रहल माने पुरान सीमाक बीच रहल– ताबे तक मात्रात्मक परिवर्तनक बीच रहल मुदा जखन ओ धीरे-धीरे बदलैत ओइ सीमापर पहुँच लांघए चाहैए वा लांघैए तखन स्थिति बदलौ चाहै छै आ बदलियो जाइ छै जइसँ बदलावक एक नव रूप धारण करैए जेकरा गुणात्मक परिवर्तन कहै छिऐ, अहीठामसँ परिवारो आ समाजोमे एक नव रूपक उदय होइ छै जे विकास कहबैए। उदाहरणक रूपमे हम देखै छी जे जहिना केटलीमे पानि भरि चुल्हिपर चढ़बै छी, ओइमे निच्चासँ आँच दइ छिऐ, जइसँ पानि गर्म होइत खौलए लगैए। जाधैर पानि खौलैत रहैए ताबे धरि ओ मात्रात्मक परिवर्तनक रूपमे रहल मुदा जखने खौलैत पानि वाष्प बनि उड़ए लगैए तखन ओ गुणात्मकमे बदैल जाइए, जइसँ पानिक रूप वाष्पक रूपमे बदैल जाइए।

अहिना परिवारोक संग अछि। जेकरा हम 'संयुक्त परिवार' कहै छिऐ ओ अखनो अपन बदलैत रूपमे जीवित अछि आ आगूओ रहत। अखनो एहेन परिवार तँ ऐछे जे पचीस-पचास जनक अछि। परिवारक जे श्रमशील लोक छैथ ओ अपन-अपन जीविका-ले अपन-अपन उत्पादनमे दसठाम छिड़ियाएल रहै छैथ, आ जखन परिवारमे कोनो पैघ काज– विवाह, श्राद्ध इत्यादि भेल तखन सभ एकठाम भऽ दस-दिन-बीस-दिनमे काज निवटा अपन-अपन जगह पुन: पकैड़ लइ छैथ। ..जाबे धरि परिवारक सभ जनकेँ जीबै जोग उपार्जन नइ रहतैन ताबे ओ परिवार ठाढ़ो केना रहि सकैए तँए जेकरा नष्ट होइत संयुक्त परिवार बुझै छी ओ पाछूक विचार आ ढाँचा छी। मुदा नव ढाँचाक रूपमे 'संयुक्त परिवार' अखन नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, एते जरूर भेल अछि जे ओ नव रूप पकैड़ ठाढ़ अछि।

गुलेती मुखियाक परिवारक जे पैछला रूप छल ओ बदैल गेल मुदा जीवित भाए-बहिनक बीचक सम्बन्ध अखनो जीवित अछि। माने ई जे गुलेतीक जेठ भाइयो आ बहिनो–जे सासुर बास करैए, अपन के कहए जे दुनू बहिनो आ भागिनो-भगिनीक आवा-जाही छइ। तैसंग ईहो छैहे जे गुलेतियो कहियो काल अनदिनो माने बिना कोनो काज-उदेमक सेहो–जाइते अछि आ तैसंग जँ कहियो कोनो विशेष काज–बिआह आदि- भेल तँ तहूमे जाइते अछि। ओना, माता-पिताक मुइने गुलेतीक परिवार असगरेक रहि गेल, मुदा परिवार तँ ठाढ़ रहबे कएल। नमहर परिवार रहने परिवारक जे जरूरतक वस्तु अछि ओकर जरूरत बेसी होइ छइ, आ जेते छोट रहल तेते कम होइ छइ। माने ई जे रहैक घर हुअए आकि भोजनक सिदहा-समर, आकि देहक वस्त्र आकि रोग-वियाधिक दवाइ-दारू ऐ सभ चीजक खगता कम आ बेसी रहने बेसी होइ छइ।

जाबे तक दोरिक मुखिया जीबै छला ताबे तक शकलदेवकेँ गिरहत मानि हुनके काज-उदेम करैत रहलैन। शकलदेवे दोरिककेँ घर बनबैक बाँसो-खढ़ देने रहथिन आ अपन गिरहस्तीमे काजो देने रहथिन, तैसंग मौका-कुमौकामे दू सेर आकि दू टाका दऽ मदैतो करै छेलखिन। ओना, शकलदेवो मरि गेला। बेटा सुरतलाल छथिन जे पितेक सीख-लिखे अखनो धरि परिवार चलबै छैथ।

हाथ-पएर टेँढ़ रहने गुलेतीकेँ ने हर जोतल होइ आ ने धनरोपनी कएल होइ, जइसँ सुरतलालक संग सम्बन्धमे कमी आबि गेल। ओना, सुरतलाल हर जोतैले दोसर गोरेसँ सम्बन्ध बना लेलैन मुदा गुलेतीकेँ सेहो सोलहन्नी नहियेँ छोड़लखिन। अखनो जइ दिन सुरतलाल खेती शुरू करै छैथ, माने पहिल दिन, जइ दिन जन-हरबाहकेँ नति कऽ खुअबै छथिन- तइ दिन गुलेतीकेँ सेहो नौत दऽ खुऐबते छथिन।

दोरिकक अमलदारीमे परिवारमे तीन दिसक आमदनी छल, पहिल छल हरबाहिक संग रवियो-राइ उखाड़ै-काटैसँ लऽ कऽ धनकटनीक बोइन सेहो, तैसंग सौनसँ लऽ कऽ कातिक तक माछोक छल आ टौहकी-पहटा-छिट्टा-पथिया जे बनबै छला सेहो छेलैन। से गुलेतीक परिवारमे नइ रहल। मुदा तैयो मछबारिक आमदनी आ छिट्टा-पथियाक रहबे कएल। टौहकी-पहटा बनाएब छोड़ि गुलेती सोलहन्नी छिट्टा-पथिया बनबैए।

सुरतलाल गामक सुभ्यस्त किसान छैथ, जिनका दस बीघा जोतो, खढ़ो-खरहोरि आ वेखो-बुनियादि छैन। पाँच कट्ठाक जे बँसवाड़ि छैन ओ ओहन जइमे दस-बीसटा बाँस सभ दिन सुखले रहैए। गदिआह माटिपर बँसबाड़ि छैन जइसँ एक-एकटा बाँस पचास-पचास हाथक होइ छैन। तहूमे जीवनी किसान शकलदेव, रंग-रंगक बाँसो लगौने छला आ ओकर तरद्दुत सेहो साले-साल करिते

छला। तरद्दुत ई जे बाँसक बीटमे साले-साल बैशाख-जेठमे माटियो दइ छेलखिन आ खाली जमीनक तमनी सेहो करिते छला, जइसँ पुरान बीट रहितो बुझिए ने पड़ैत जे ई एते पुरान अछि। ओना, नवो बीट पुरान बीट जकाँ बिना तरद्दुतक भाइये जाइए। हेबो केना ने करत जहिना गरीब परिवारमे समुचित भोजन आ बर-बेमारीमे समुचित दवाइ नइ भेटने जुआनो-जहान झखड़ल बुझि पड़ैए तहिना नवको बाँसक बीटमे भाइये जाइ छइ।

गुलेतीक परिवारक सम्बन्ध जे शकलदेव परिवारक संग अखन धरिक छल ओइमे काजक कमी भेनौं कमी नइ आएल अछि। जइ समय दोरिक जीबै छला तहू दिनमे छिट्टा-पथिया बनबैले शकलदेवक बाँस कीनि बनबै छला आ गुलेती जखन करए लगल तखनो सुरतलालेसँ बाँस कीनि-कीनि बनबैए। ओना, गुलेतीक परिवार आ सुरतलालक परिवारक सम्बन्धमे मिसियो भरि विघटन नहि भेल मुदा सम्बन्धक रूपमे परिवर्तन तँ भेबे कएल। होइते अहिना छै जे समैक संग बेकतियो, परिवारो आ समाजोक सम्बन्धमे परिवर्तन भऽ जाइए।

जहिना दोरिककेँ हरिपुर एलापर शकलदेव बिसवासक संग बाँस, खढ़, खरही दऽ घर बनबा बसौलखिन आ अपन मदैतक लेल हरबाहिक संग गिरहस्तीसँ जोड़ि जिनगीकेँ बिसवासक संग आगू बढ़बैत रहलखिन तहिना सुरतलालो गुलेतीक संग अपन बिसवासकेँ जीवित रखनहि छैथ। माने ई जे गुलेतीकेँ जे छिट्टा-पथिया बनबैले बाँसक खगता होइ छै तइले कहि देने छथिन-

“गुलेती, बाँसक बीट अपने बुझिहह, तँए जखन तोरा खगता हुअ तखन परोछोमे काटि सकै छह। दामक कोनो बात नहि, तोरो बुझले छह जे बीस रूपैआ एगो-बाँसक दाम होइए, जे तूँ पहिनौं दऽ सकै छह आ पछातियो दऽ सकै छह।”

ओना, गुलेतियो इमानदारीसँ ई बुझिते अछि जे बिसवासो तँ पुरनाइये गेल अछि जइसँ कमी आबिए जाइ छइ। तँए जखन बाँसक खगता होइ छै तखन ओ अपन जीवनक जीविकाक काज बुझि पहिने सुरतलालकेँ जानकारी दैत काज करैए।

अन्तिम जेठ, टहटहौआ रौद। गुलेती मुखिया तीन बजे अपन छिट्टा बीनैक सभ समचाक संग एकटा डाबामे पानि नेने घरसँ थोड़े हटि रस्ता परक पाखैर गाछ लग पहुँचल। ओना, ओ आइए-टा नहि, सभ दिन ओही गाछक निच्चाँक छाहैरमे बैस अपन काज करैए।

गाछक निच्चाँमे काड़ा, कैमची, पगहरिया आ पानिक डाबा रखि बौगुलीसँ तमाकुल निकालि चुनबए लगल। तही काल लोहिया पट्टीवाला श्याम सुन्दर दास अपन दूटा चेलाक संग पहुँचला। तीनू गोरे भनडारा पुरए दीप जाइ

छला। ओना, तीनू गोरे छत्ता सेहो ओढ़ने रहैथ मुदा तैयो रौदा गेले छला। रौदेबो केना ने करितैथ, एगारहे बजे खा-पी कऽ गामसँ विदा भेला। लोहिया पट्टी आ दीपक बीच पाँच-छह कोस जमीन अछि। चारि बजेसँ भनडाराक कार्यक्रम पहुँचनहि शुरू हएत।

भनडरो नमहर छइ। एगारह साए टूक बँटने छैथ। सातटा महात्माक जुटानी अछि। तैसंग परोपट्टाक जे कण्ठीधारी कबीर पंथी छैथ, तिनको सभकेँ दल पड़ले छैन। एक-सँ-एक गबैया सभ सेहो एबे करता। ओना, कम कि बेसी जे साधु-महात्मा छैथ, सभकेँ किछु-ने-किछु भजन कीर्तन अबिते छैन, जे कियो खौजरीपर गबै छैथ तँ कियो ढोलक-हरमुनियाँपर तँ कियो ओहिना थोपड़ी बजा-बजा सेहो गेबे करै छैथ।

जहिना छोट-पैघ कबीर पंथी महंथक जुटानी अछि माने दल पड़ल छैन, तहिना छोट-पैघ गबैयोक जुटानी अछिए। रहबो केना ने करैत, अखुनका जकाँ कि अपन-अपन फीस बना गबैया चलै छैथ, एक टूक सुपारी अपना पंथक भेट जाइ छैन कि अपन सेवा दइले तैयार भऽ जाइ छैथ, जइसँ नीकसँ नीक भजन-कीर्तनक कार्यक्रम, कम-सँ-कम खर्चमे चलिते अछि। ..इलाकाक पैघ गबैया सरिया दासीन जे डोम परिवारक छैथ, जिनकर कहब छैन जे सात-दिन-सात-राति एक-सुरे जँ गबैत रहब तैयो दोहरा कऽ एक भजन नइ गाएब। गबैया नमहरक दोसर कारण ईहो अछि जे अपने-आपमे ओ पूर्ण छैथ। माने ई जे ने हुनका दोसर संग पुरनिहार गबैयाक खगता होइ छैन आ ने कोनो बजन्त्रीए-क। माने ई जे एहनो गबैया तँ छैथे जिनका नीक माईक आ आधुनिक बाजाक संग नीक बजौनिहारोक खगता होइ छैन, तैठाम सरिया दासीन अपने मुहेँ गेबो करै छैथ आ अपने हाथे खौजरियो बजबै छैथ। चेहरा-मोहरा भलेँ देखनुक नइ होनि मुदा ज्ञान ज्योतिक प्रखर गबैया तँ छैथे जे पारखी लेल आकर्षणक कारण अछिए। तँए खाली पंथाइयेक सुननिहारटा नहि आनो-आन कला-पारखीक जुटान तँ भाइये जाइए। तहूमे सरिया दासीनक संग छट्ठू दास, हिताइ दास, राम अशीष दास, रामजी दास इत्यादि अनेको गबैयाकेँ टूक भेटले छैन। सभ कियो जुटबे करता।

एक तँ ओहिना गोसाँइ साहैबक सेवकान तहूमे नमहर कार्यक्रम ऐछे तैठाम जँ कार्यक्रम शुरू होइसँ एको घन्टा पहिने नइ पहुँचता सेहो केहेन हएत। ..यएह सोचि लोहिया पट्टीबला महात्मा श्याम सुन्दर दास एगारह बजे खा-पी कऽ गामसँ विदा भेला जे तीन बजे तक दीप पहुँच जाएब। मुदा से भेलैन नइ शुरूमे तँ एक झोंक खूब चलला जइसँ घन्टे भरिमे दू कोस टपि परसा लगिचा देलखिन। मुदा एक तँ खेलहा-पिलहा परहक चालि, दोसर जेठुआ रौद, परसा

अबैत अबैत बेदम भऽ गेला। कटोरिया धोधि थुलथुल देह, थकानसँ ई बुझि पड़लैन जे जँ एको डेग आगू बढ़ब तँ खसि पड़ब। ओना, अपनोसँ तबाह दुनू चेला भऽ गेलैन। चेलाक तबाहीक कारण भेल जे दुनू गोरेक काँखमे नमहर-नमहर झोरो, जइमे कपड़ा-लत्ताक संग झालि-खौजरी इत्यादि छेलैन, तैपरसँ एक हाथे छत्ता सेहो पकड़ए पड़ल रहैन। मुदा मुँह फोरि अपन बेथा गोसाँइ साहैबकेँ कहबो केना करतैन। कहैक माने भेल अपना संग गोसाँइयो साहैबक समय लेब। एक तँ ओहिना समैपर पहुँच पएब कि नहि, तैपर सँ आरो समय खटियाएब उचित नहि। ..संजोग नीक बनल। परसा धामक आगू पहुँच गेला। केना गोसाँइ साहैब श्याम सुन्दर दास कहितथिन जे 'थाकि गेलौं, कनी अराम करब।' तँए बोल बदलैत बजला-

"छीतन दास, भने नीक जगहपर पहुँच गेलौं। सूर्य मन्दिर छी। चलू कनी दर्शन कऽ लेब।"

एक तँ ओहिना सबहक मनकेँ रौदक थकान दबने, तैपर गोसाँइ साहैबक विचार कटलो तँ नहियेँ जा सकैए। छीतन दास बजला-

"हँ-हँ सरकार, फेर कहिया ऐ रस्ते आएब कहिया नहि, तँए जिनगीक जे काज अगुआइत भऽ जाए ओ ओते बढ़ियाँ किने।"

ओना, दोसर चेला–दुखी दास बुझि गेला जे दुनू बहन्ना कऽ रहला अछि, भरि दिन निरगुने-सगुनक विचार करैत रहै छैथ आ अखन दर्शन करैक मन भऽ रहल छैन! तँए दुखी दासक मुँह बिजकैत रहैन। जे बात श्याम सुन्दर दास बुझि गेला। दुखी दासकेँ पछुअबैत पुछलखिन-

"की दुखी दास अहाँक की विचार अछि?"

गोसाँइ साहैबक विचार कटलो तँ नहियेँ जा सकैए तखन तँ भेल गुरुकेँ अनुकूल बना चली जइसँ अनुकूलता औत। ..मुस्की दैत दुखी दास कहलकैन-

"साहैब, अहाँक ने पहिल दिन छी। मुदा हमर तँ सासुरे परसा छी। जखन सासुरमे रहै छी तँ भोरे सुति उठि नहा कऽ पहिने एक लोटा जल सूर्ज भगवानकेँ चढ़बै छिऐन, तेकर पछाइते चाहो-पान करै छी आ दुनियोँ-दारीक गप-सप्प।"

सभ गप करिते तीनू गोरे मन्दिरक आगूक आँगनमे पहुँच अपन-अपन झोरा-झपटा रखि अराम करए लगला।

ओना, तीनू मुरतेकेँ निन सेहो दाबए लगलैन मुदा चारि बजेसँ पहिने दीप पहुँचैले कछमछी सेहो मनकेँ रेबारिते रहैन। पनरह-बीस मिनट अराम केला पछाइत श्याम सुन्दर दास बजला-

"छीतन दास! अराम केने समैपर नइ पहुँचब, आगू बढ़ू।"

छीतन दास बिना किछु बजने उठि कऽ झोरा काँखमे लटकौलक। तीनू गोरे परसा धामसँ टहटहौआ रौदमे छाता तानि विदा भेला।

परसा धामसँ दू कोस आगू हरिपुर। हरिपुर अबैत-अबैत तीनू मुरते फेर बेदम भऽ गेला। तीनूक मन लुस-फूसाए लगलैन जे केतौ बैस कनी काल अराम करी। मुदा श्याम सुन्दर दासक नजैर जखन घड़ीपर पहुँचैन तँ मन कड़ुआ जाइन। एके घन्टा समय बँचल अछि आ कोस भरिसँ बेसी जमीन चलबो अछि। मुदा आगू बढ़ैक डेगे ने ससरैन। तैपर पियाससँ मन छटपटाइत रहैन। तहूमे गामो तेहेन अछि जे अँगने-अँगने सभ चापाकल गरौने, रस्ता कातमे एकोगो कल नहि, पानियोँ केतेए पीब। केकरो ऐठाम जँ पानि पिबए पहुँचबो करब तँ तेते ने आगत-भागत करए लगता जे आरो बेसी समय लगत। अपन सेवकानमे भनडारा छी, गेला पछाइते कार्यक्रमक श्री गणेश हएत। ..श्याम सुन्दर दासकेँ कोनो रस्ते ने सुझैत रहैन जे की केने की नीक हएत। ततमत करैत तीनू गोरे पाखैर गाछ लग पहुँचला।

गाछक जड़िमे गुलेती डाबाक मुँहपर लोटा औन्ह कऽ रखने रहए। जहिना प्रियतमक प्रेममे प्रेमीक नजैर चकोनो होइत रहैए तहिना श्याम सुन्दर दासक नजैर पाखैर गाछक जड़िमे राखल माटिक कलशपर अँटकल रहैन। मुदा ताकमे रहैथ जे चीजबला किछु बाजत तखन ने बातक सोरि पकैड़ अपन बात राखब। से गुलेती दास किछु बजबे ने करैत। मतलबे वेचाराकेँ की रहइ। तहूमे रस्ता-पेरा चलनिहारकेँ उपकैर कऽ टोकबो नीक नहि। जँ कहीं टोकाइन लगि जानि तँ अनेरे गुम्हरता। तँए, तइसँ नीक ने जे 'ने मारी माछ आ ने उपछी खत्ता।'

ओना, श्याम सुन्दर दासकेँ नमगर चानन देख गुलेती बुझि गेल जे ई सभ बबाजी छिआ। किएक तँ श्याम सुन्दर दासकेँ मोछ-दाढ़ी ने झमटगर नइ छैन मुदा चानन तँ नमगर-चौड़गर छैन्हे। छीतन दास आ दुखी दास ने झोंटो बढ़ौने छैथ आ मोछो-दाढ़ी बढ़ौने छैथ, भलेँ कण्ठी गमछे तरमे किए ने झँपाएल होनि मुदा छैथ सभ बबाजीए।

समयक गतिकेँ अँकैत श्याम सुन्दर दास गुलेती दिस तकैत बजला-

"बाउ, दीप केते दूर हएत?"

ओना, श्याम सुन्दर दासकेँ बुझल रहबे करैन, किए तँ केतेको दिन अही रस्ते दीप गेल छैथ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे लग-पासक गामक दूरी बेसी आबा-जाही भेने छोट भऽ जाइए आ बाहर-बलाक लेल माने दस-कोस-बीस-कोस चलनिहार थाकल लोक-ले बढ़ि जाइए।

गुलेती मुखिया बाजल-

“बाबा महराज, किरिण डुमैत दीपक हाट तीमन-तरकारी-ले जाइ छी आ दोसर साँझ होइत-होइत घुमि कऽ आबि जाइ छी, तेतबे दूर अछि।”

गुलेतीकेँ कोस आकि किलोमीटर बुझब कोन जरूरी छइ, अपन काजसँ मतलब छइ, तँए अपन काजक नापसँ दीपकेँ नापि बाजल। ओना, गुलेतीक इमान श्याम सुन्दर दासक मनकेँ मोहि लेलकैन। मोहि ई लेलकैन जे अखनो जँ केतौ इमान बँचल अछि तँ एहने-एहने लोकक बीच अछि। ऐठाम जँ सम्बन्ध नइ बनाएब तँ नीक सम्बन्धीसँ भेँट हएब कठिन अछि। विचारकेँ आगू बढ़बैत श्याम सुन्दर दास बजला-

“बाउ, डाबामे जल छी?”

‘जल’ सुनिते गुलेतीक अपनो मन जलजला गेलइ। जलजला ई गेलै जे भूखलकेँ एक कौर अन्न आ पियासलकेँ एक लोटा जलदान करब धरम छी। मुदा अपनो तँ धर्म अछि, जँ धर्म-धर्म अपनेमे लड़त तँ अधर्मक राज हेबे करतै। अपन धर्म बँचबैत गुलेती मुखिया बाजल-

“बाबा महराज! हम साँकठ छी। मलाह सेहो छी, सालमे चारि मास मछबाइरे करै छी। हमर घैलक जल केना पान करब?”

गुलेतीक बात सुनि श्याम सुन्दर दासक मनमे एकाएक अनेको प्रश्न उठि गेलैन। मुदा समैकेँ देखैत अपन विचारकेँ दाबए चाहैथ। मुदा जे रणक्षेत्रमे प्रश्न उठि गेल अछि ओकरा छोड़बो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा प्रश्नो तँ एहेन जटिल अछि माने पेरासूत जकाँ तेहेन घुरछी लागल छै जे धड़फड़मे सोझराएबो कठिन अछिए। जँ कहबै जे ‘बौआ माछ खाएब छोड़ि दहक सेहो नइ हएत। किए तँ कैतकी गैंचीक सुआद मनमे हेबे करतै। हमर बात किन्नौं सुनत। ..जाबे केकरो अनुकूल नइ बना पएब ताबे ओ संग थोड़े आबि सकैए। मुदा ‘पियास ने मानए धोबी घाट...।’

..पियाससँ तीनू मुरतेक मन माटिपर पड़ल माछ जकाँ छटपटाइत रहैन। श्याम सुन्दर दासक मनमे ईहो उठैन जे हमर जे पूर्व महापुरुष सभ भेल छैथ ओ भूखलमे कुत्तोक मौसुकेँ अमृत मानि भक्ष वस्तु कहने छैथ...।

श्याम सुन्दर दास मने-मन विचारए लगला जे की कहलासँ गुलेती अनुकूल हएत। जाबे अनुकूल नइ हएत ताबे जे जल पियौत तँ मन अपन गवाही देबे करतै जे पाप केलौं! एक दिस ‘साधु-महात्मा’क सेवा, दोसर दिस ‘पाप’, दुनू सिरापर ऐछे! तैबीच ईहो तँ ऐछे जे दुनियाँमे सभकेँ अपन इष्टदेव छै आ ओही इष्टदेवक आदेशानुसार अपन-अपन बुधि-विवेकसँ काज करैए। तत्काल जँ किछु आदेशो देबै आ परिस्थितिवश जँ मानियोँ लेत तँ पछाइत अपन मन कहबे करतै जे ई अनुचित भेल। माने ई जे बटोही-अभ्यागत बुझि कहबै आ तेकरा जँ

ओ सेवा बुझि काइयो लेत तैयो मने-मन गुनधुन करबे करत। मुदा जाबे ओकर मनकेँ मोड़ि अपना मनोनुकूल नइ बना लेब ताबे आगूओ केना बढ़ब। ..एकाएक श्याम सुन्दर दासक मनमे भेलैन कहाँ एक लोटा 'जल' आ कहाँ जलसँ भरल अथाह समुद्र.., तैठाम जँ पछैड़ जाइ सेहो नीक नहि, तँए नीक ई हएत जे अनकर मनकेँ मोड़ैले कनी अपनो मनकेँ लियौन करी।

अपन मनकेँ लियौन करैत श्याम सुन्दर दास गुलेतीकेँ कहलखिन-

"बौआ, परिवारमे के सभ अछि?"

'परिवार' सुनि गुलेती मुखियाक मन चौंकल। चौंकल ई जे आइ तक कियो एहेन शुभचिन्तक नइ भेला जे हमरा सन गरीब लोकक परिवारक खोज-खबैर लथि। ओना गुलेती काज करैक सुर-सार करिते रहए, हाथ नइ लगौने रहए, तइ बिच्चेमे परिवारक बात उठि गेल। ..गुलेती बाजल-

"बाबा महराज, असगरे छी माइयो आ बाउओ मरि गेल।"

'असगर' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे उठि गेलैन जे एक दिस लसगरक बीच जा रहल छी आ दोसर दिस बाटेमे असगरसँ भेँट भऽ गेल। किए ने एकरो ओही लसगरमे लसका दिऐ जे समूहमे समाज बनि समाजिक जीवन धारण करत। तैबीच मनमे ईहो उठलैन जे लसगर जँ बोनो-झाड़ आकि धारो-समुद्रमे रहैए तँ ओकर जिनगीक अपन आनन्द छइ, मुदा असगर जँ से रहत तँ बोन-झाड़मे बाघ-सुगरक डर हेतै जे कहीं किम्हरोसँ आबि चाभि ने दिअए। तहिना धारो-समुद्रमे हेबे करतै जे कोनो मोइनमे ने डुमि जाइ...।

विचारकेँ आगू बढ़बैत श्याम सुन्दर दास बजला-

"असगरे परिवारक सभ काज सम्हारि केना लइ छी। परिवारमे काज तँ बहुत होइ छइ, उपैतसँ विपैत धरि?"

ओना, श्याम सुन्दर दासक विचार गुलेती नीक जकाँ नइ बुझलक। माने उपैत-विपैतक अर्थ नइ बुझलक। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे दू गोरेक गप-सप्पमे बिनु बुझलो प्रश्नक उत्तर लोक दइते अछि। ..गुलेतियो मुखिया सहए बाजल-

"बाबा महराज, गरीब लोकक परिवारे की! 'आगू नाथ ने पाछू पगहा।' तखन तँ पेट अछि ते भूख लगबे करत, तइले कमा कऽ खाइ आकि भीख माँगि कऽ आकि ठकि-फुसिया कऽ, लोक कहुना तँ जीबे करत।"

ओना, गुलेती अपना धुनिमे बाजल। मुदा श्याम सुन्दर दासकेँ जिनगीक

एकटा पन्ना[40] भेटलैन, जेकरे पकैड़ पुछि देलखिन-

"कमाइ की सभ अछि?"

'कमाइ' सुनि गुलेती मुखियाक मनमे ठहकल। पहिने काज तखने कमाइ। काज करब तखन ने कमाइ हएत..। बाजल-

"बाबा महराज, सालो भरि बाँसक छिट्टा-पथिया बनबै छी, ओकरे बेच कऽ खाइ-पिबै छी।"

श्याम सुन्दर दास-

"एकेटा काज करै छी आकि दोसरो?"

गुलेती-

"ई भेल सालतनी काज आ बीचमे एकटा दोसरो काज अछि। सालक चारि मास मछबारि सेहो करै छी।"

श्याम सुन्दर दास-

"जखन मछबारिक काज करैत हएब तखन तँ छिट्टा-पथियाक काज छुटि जाइत हएत?"

ओना, गुलेती मुखियाक मोट बुधिक मन तँए मेही बात सभ बिसैर-बिसैर जाइते अछि। मुदा अखियास करैत बाजल-

"बाबा महराज, आसिन-कातिकमे जहिना पावैनक धुमसाही रहैए तहिना काजोक भऽ जाइए। एक तँ जनमारा मास दुनू छी, केकरो मलेरिया बोखार धरैए तँ केकरो साँप-बिच्छूसँ छुबबैए, तैपर दिनो कनी छोट भाइये जाइए। मुदा..?"

'मुदा' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे ठहकलैन। ठहैकते मुहसँ

मुस्की छुटलैन। मुस्कियाइत बजला-

"तखन पार केना लगैए?"

जहिना कोनो भारी माने चौड़गरो आ गहींरगरो धार टपै काल मनमे समोह उठैए तहिना गुलेतीक मनमे समोह उठल, जइसँ बोली लटपटाए लगल। बाजल-

"गरीब लोकक जिनगीक कोनो लज्जैत रहैए। ने खाइ-पिबैक ठेकान आ ने रहै-सहैक, तखन तँ कहुना मनकेँ मारि नहि रहत तँ..।"

ठमकैत गुलेतीकेँ देख श्याम सुन्दर दास बिच्चेमे पुछि देलखिन-

"जखन असगरे छी तखन एते लन्द-फन्द काज किए करै छी? काजकेँ

---

[40] पोना

समैट जतबे खगता अछि तही हिसाबसँ करू।"

श्याम सुन्दर दासक विचार जेना गुलेती मुखियाक मनमे भरि गेल तहिना तीर लगल चिड़ै जकाँ छटपटाइत बाजल-

"से केना हएत?"

श्याम सुन्दर दास बजला-

"जँ साल भरिक रस्ता भेट जाए तँ चारि-छह मासक रस्ता छोड़ि दी।"

हँसैत गुलेती बाजल-

"से तँ नानियोँ-मुहेँ सुनने छी जे बेसी काल बजै छेली जे छह मासक रस्ता नइ चलि साल भरिक चली।"

सुढ़ियाइत गुलेतीक मनकेँ देख मोहैन चलबैत श्याम सुन्दर दास बजला-

"जखन रूख-सुखमे बैस छिट्टा-पथियाक काज कऽ लइ छी तखन जँ पानि-झाड़क काज करै छी से नीक लगैए?"

'पानि-झाड़' सुनिते गुलेतीक मन पनियाइत झहरल-

"बाबा महराज, हमर बाउओ पानियेँ-मे मरल।"

'पानिमे मरल' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे उपकलैन- मुर्दघट्टीए ओहन जगह छी जैठाम लोक अन्तिम साँस लइए। जखन जिनगीक अन्तिम साँसक समय अबैए तखने नव साँस पौने मनमे परवेशो करैए...।

जहिना मरैत रोगीकेँ कोराइमिन दऽ किछु समय प्राणकेँ ठहरौल जाइए तहिना जिनगीक कोराइमिन दैत श्याम सुन्दर दास बजला-

"बाउ, जखन साल भरिक उपैतिक काज लगले अछि तखन दू-मसुआ आकि चरि-मसुआ काज छोड़ि देब नीक। ओना, टुकड़ी-पुरजा काज जे होइए ओ थोड़े लभगर होइते अछि मुदा ओइ लभगरक लोभमे नइ पड़ी।"

जहिना धुर-झार श्याम सुन्दर दास अपन विचारकेँ व्यक्त करैत गेला तहिना गुलेतीक जिज्ञासा सेहो बढ़ैत गेल, जेकरा ओ ठाढ़ कानक कोन बात जे मुँह-बाबि सुनबो करए आ अखियासो करए, मुदा जड़िक मूल लग नजैर जेबे ने करइ जे श्याम सुन्दर दास की कहि रहला अछि। खएर.., एते तँ जिज्ञासा जगिए गेलै जे बाजल-

"बाबा महराज, अहीं सेने हमहूँ जाएब। केतए जाइ छिऐ आ कहिया घुमबै?"

अपन मेहनतक फल देख श्याम सुन्दर दासक मन ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ होइते हियाबए लगला जे 'की केने की नीक हएत' तँए किछु बजैमे बिलम होइत

रहैन। बिच्चेमे छीतन दास टीपलक-

“गुलेती भाय, करीब बीस बर्ख पहिनहि हमरो घरवाली मरि गेल, आ जेठका बेटा जे पनरह सालक रहए ओ गौंआँ सबहक संगे बिराटनगर पड़ा कऽ चलि गेल।”

बिच्चेमे गुलेती बाजल-

“दोसर-तेसर धिया-पुता बीचक नइ अछि?”

गुलेती मुखियाकेँ धड़फड़ाइत देख छीतन दास बाजल-

“छह मास अल्हुआ माटि तर रहैए से धड़फड़ेबे ने करैए आ अहाँ लगले धड़फड़ा गेलौं। पहिने भेख लिअ तखन आरो भीख भेटत।”

लगले सूरमे गुलेती बाजल-

“अहाँक विचार मानि गेलौं। पहिने एक लोटा जल पीब लिअ जे थाकल-ठेहियाएल छी, बजैमे कण्ठो सर्रास हएत।”

कहि गुलेती पाखैर गाछक जड़िमे माटिक डाबा लग आबि लोटा अखारि कऽ पानि भरि श्याम सुन्दर दासक हाथमे दैत बाजल-

“गरीब लोक छी, ऐसँ बेसी ऐठाम उपाइए की अछि। जँ आइ ठहैर जैतिऐ तँ सौंझुका भनडारा चलितै।”

लोटो भरि जल पीब श्याम सुन्दर दास बजला-

“अखनसँ अहाँ ‘गुलेती मुखिया’ नइ ‘गुलेती दास’ भऽ गेलौं।”

अपन बदलैत नाउक-नाँगैर सुनिते गुलेतीक मन भगवान रामक धनुषपर पहुँचल। ..पियाससँ छीतनो-दास आ दुखियो दासक कण्ठ सुखिते रहैन। तैबीच गुलेती दासकेँ देखलैन जे हाथ बागि माने पानि पियाएब छोड़ि विचार सुनैमे वौआ रहल अछि। अपनो-ले अपने मुँह नइ उठाएब तखन तँ अन-पानि बेतरे मरिए जाएब आ कियो पुछनिहारो ने हएत। बजला-

“गुलेती भाय, पहिने जल पिआउ तखन गुलेतीक फट्ठाकेँ धनु-

षक फट्ठा बनाएब।”

छीतन दासक व्यंग्य-वाण सुनि श्याम सुन्दर दासक मसुएलहा मन मकइ जकाँ जे खापैड़ पड़िते भरभरा जाइए तहिना बत्तिसो दाँतकेँ छिटकबैत भरभरा गेलैन। बजला-

“छीतन दास, बहुत दिनक पछाइत एहेन संगी भेटल।”

गोसाँइ साहैबक वाणीक वाण जेना छीतन दासक छातीकेँ पघिला देलकैन। मनमे एलैन- जहिना असगरूआ अपने छी, तहिना गुलेतियो दास अछि

मुदा जाबे अपन बात गुलेतीकेँ कहि नइ देबै ताबे ओ ओते लग केना औत। माने ई जे जाबे अपन हृदयक दर्द कहबै नइ ताबे अनका दर्दक संग अपन छातीक दर्द घुलत-मिलत केना।

..छीतन दास बाजल-

“गुलेती भाय, पहिलुका जे पनरह बर्खक बेटा रहए जे पड़ा कऽ बिराटनगर चलि गेल ओ जीबैए कि मरैए से अखनो ने बुझै छी। तैबीच डेढ़-साल-दू-सालपर पान-सातटा धिया-पुता भेल, नीक जकाँ मनो ने अछि।”

बिच्चेमे गुलेती टोकलकैन-

“अपनो धिया-पुता मन नइ अछि?”

मुस्कियाइत छीतन दास बाजल-

“एकोटा जीबैत रहितए तखन ने। कोनो तीनियेँ मासमे, तँ कोनो साल भरिपर, तँ कोनो तीन सालक भऽ भऽ कऽ मरि गेल।”

मुस्की दैत गुलेती बाजल-

“घरवाली अछि किने?”

छीतन-

“सएह ने कहै छी, अन्तिम बेर जौंआ बेटा भेल, मुदा बेटाक संग घरोवाली सोइरीए-मे मरि गेल। तेकर पछाइत हमहूँ गोसाँइये साहैबसँ भेख लऽ बेरागी बनि साधु-सेवामे लगल छी।”

धड़फड़ाइत गुलेती बाजल-

“बाबा महराज, अपन सभ अरजाल-खरजाल समैट कऽ अखने आँगनमे रखि अबै छी। अही पाखैरक गाछक निच्चाँमे अपनेसँ भेख लेब आ अपने संग सेहो जाएब।”

❍

शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016

मुड़ियाएल घर

जागेश्वर काका दुनू परानी दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस बेरुका चाह पीबै छला। फागुनक समय, परसू शिवराति छी। जाड़क सरपोख नहाएल समय वसन्ती रौद पेब सोलहन्नी तँ नहि मुदा अदहासँ बेसी जाड़क जकड़न तियागि चुकल छल। एक तँ अढ़ाइ-तीन बजेक बेरुका समय, तैपर मन्द-मन्द पुर्बाक लहकी सेहो लहलहाइत। ओना चाहक रंग-रूप आ सुआदो आन दिनसँ नीक अछि। नीकक कारण अछि एक तँ बकेन महींसिक दूध तैपर जागेश्वर कक्काक भातीज जे दार्जिलिंगमे रहि चाहे कम्पनीमे नोकरी करै छैन, ओ अदहा किलोक चाहक पॉकेट देने रहैन, वएह टटका चाहपत्ती।

ओना, बनौनिहारि पुतोहुक लूरिमे कोनो बढ़ोत्तरी नइ भेल छेलैन। मुदा काजोक तँ शुभ संजोग होइते अछि। भरिसक सएह सुधनीकेँ भेलैन, जइसँ चाहक सेखियो आ रंगो-सुआद नीक बनलैन।

जिराएल मन जागेश्वर कक्काक, तँए पहिने चारि-पाँच घोंट चाह एक-लखाइत पीलैन। चारि-पाँच घोंट चाह पीला पछाइत जागेश्वर कक्काक मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजला-

"चाह तँ निम्मन बनल अछि मुदा एहेन सभ दिन हुअए तखन ने।"

जागेश्वर कक्काक बात सुनि रमणीकाकीक मन रमकलैन नहि, असथिरे भेलैन। असथिर होइते पुतोहुक लूरिपर मन पहुँच नचलैन। नचिते उठलैन- जँ परिवारक भनसिया नीक भोजन, नीक भोजनक अर्थ नीक वस्तुए-टा नहि सुआदो, बनबैथ तँ भोजन केनिहारक मनो आ पेटो परिपूर्ण हेबे करत। जखने मनो आ पेटो परिपूर्ण हएत तखने ने बातो आ विचारोमे परिपूर्णता एबे करत, जइसँ खाइ-पीबैक झगड़ा परिवारसँ मेटेबे करत।

मुँहक चाहकेँ कण्ठसँ निच्चाँ उतारि रमणीकाकी बजली-

"गामक बहुत गोरे काल्हि जतरापर जेता।"

ओना जागेश्वर काकाकेँ सेहो केते गोरे तीन-चारि दिनसँ कहलकैन अछि जे शिवराति दिन वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करए चलू। तीन-चारि घन्टाक रस्ता टेम्पूसँ अछि। शिवरातिसँ एक दिन पहिने दुपहरक पछाइत विदा हएब आ चारि-पाँच बजे तक पहुँच जाएब। ओत्तै रातिमे विश्रामो करब आ साँझमे शिव

उपासक फलहारो करब। मुदा जागेश्वर काका सबहक बात सुनैत गेला, किनको किछु कहलखिन नहि।

नइ कहैक कारण रहैन जे मने-मन उदयपुरक सभकेँ चिन्हते रहैथ, माने गौंआँ सभकेँ। जे केकरो जड़ि-छीपक ठेकान नइ अछि। बाजत किछ आ करत किछ। करनी-धरणी एहने रखने अछि आ दर्शन करत वाणीश्वरी भगवतीक।

मुदा विचारसँ उतैर जागेश्वर कक्काक मनमे एलैन जे जखन गामक लोक सभ जाइए रहला अछि आ अपनो केते दिनसँ विचारैत आबि रहल छी जे वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन दुनू परानी मिलि करब, मुदा ने कहियो गर लागल आ ने जा भेल।

..ओना रमणीकाकी वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक चर्च नइ केने छेलखिन, मुदा जतरासँ वएह मतलब रहैन। तैपर, जवाबमे जागेश्वर काका कहलखिन-

“जखन गामक भेड़िया-धसान लोक दर्शन करए जेबे करता तँ अपनो दुनू परानी अही लाटमे चलि कऽ दर्शन कऽ लिअ।”

पतिक विचारसँ सहमत होइत रमणीकाकी मुड़ी डोलबैत बजली-

“भेल तँ शिवरातिसँ एक दिन पहिने जाएब आ शिवरातिक परात भने चलिए आएब। मोटा-मोटी दू दिन भेल।”

पत्नीक विचारमे सहमत जतबैत जागेश्वर काका बजला-

“हँ से तँ सएह भेल। काल्हि बारह बजेक पछाइत निकलब आ तेसर दिन बारह बजेसँ पहिने घुमि कऽ आबिए जाएब।”

पतिक विचारमे अपन विचार सटबैत रमणीकाकी बजली-

“जखन दुनू परानी घरसँ निकैल बाहर जाएब तखन बेटो-पुतोहुकेँ जना देब नीक हएत। ओना अपनो दुनू परानी बहुत दिनसँ, बहुत दिनसँ कि सभ दिने वाणीश्वरी भगवतीक आराधना-उपासना करिते आबि रहल छी तँए भगवतीए धाममे उपासक फलहारो करब तँ जिनगीक परीछे देब हएत किने।”

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर कक्काक मन फुला गेलैन। फुलाइते बजला-

“जखन उदयपुरक लोक जाइक मन बना लेलैन तखन संग-साथमे अपनो दुनू परानीक जाएब उचिते हएत। मुदा ओ सभ अपन-अपन सवारीक बेवस्था करता, अपना दुनू गोरे अलग बेवस्था करब।”

ओना जागेश्वर काका पत्नीक अभ्यन्तरक बात अपनो बुझै छला। अपना बुझैक कारण बेवहारिक छेलैन। बेवहारिक ई जे कहैले तँ सभ (गौंआँ)

वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करए जेता मुदा घरसँ बाहर धरिक जे बोली-वाणीक रूप बना नेने छैथ, से की अपने वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन करता, ओ तँ अप्पन दर्शन भगवतीकेँ देथिन। मुदा जे हौउ, एके गाममे सभ रहै छी, मुदा...।

अपन विचारकेँ तहियबैत अबोध जकाँ जागेश्वर काका बजला-

“जेना-जे विचार हएत से करब।”

शुरूमे उदयपुर छोटे गाम छल। मुदा मिथिलांचलक घर-घराड़ीकेँ कमला-कोसीक बाढ़ि कम उपटान उपटौलक सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। केतेको निम्मन गामक मनुखक घराड़ी चौर भऽ माछ-कौछुक घराड़ी बनि गेल अछि जेकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे बत्तीसोअना गाम अहिना भऽ गेल अछि। खएर जेतए जे भेल से भेल, मुदा उदयपुरक उदयमे सभ दिन बाढ़ि अछिए। ने यमुना तीरक उपद्रव आ ने कोसी-कमला घाटक घटवारिसँ भेँट, जइसँ गाममे कहियो कोनो विघटन किए हएत। तँए दिन-दिन बढ़िते गेल। आने-आन गामसँ उजरल-उपटल लोको आ उदयपुरक महत् बुझनिहारो तँ आबि-आबि उदयपुरमे बसले छैथ। तैसंग नव-नव एबो करिते छैथ। गाममे वास-भूमिक कमियोँ छइहे नहि जे घराड़ीक अभावक दुआरे कियो बसि नइ सकै छैथ, आकि अपनामे रग्गड़े-झग्गड़ करता। तँए कि गाममे निचरस खेत नइ अछि, कोनो धार-धूर नइ अछि, ओ गामे ने वास-भूमि भेल। तँए केतबो परिवार आन गामसँ आबि बसता तैयो उदयपुरमे वासक कमी नहियेँ हएत।

..अनुकूल मौसम बनने जहिना बरखा होइए, अनुकूल मौसम बनने जहिना वसन्त अबैए, अनुकूल मौसम बनने जहिना ठनका खसैए तहिना वास-भूमिक अनुकूलते ने घरवासकेँ गामवास सेहो बनबैए। जखने घरवास गामवास बनए लगैए तखनेसँ ने विचारवासी विवेकवासी बनि वास करए लगैए। से तँ गाममे अछिए।

जहिना श्रीपंचमीमे वीणा पुस्तक-धारिणी सरस्वतीक आ हाथ सजलक संग लक्ष्मीक पूजा[41] एके दिन एके समय– प्रभात वेलाक शुभ मुहूर्त्तमे लोक करै छैथ तहिना ने जिनगियोक प्रभात वेला अछि।

वाणीश्वरी भगवती धामक धरमशालामे दुनू परानी जागेश्वर काका एकटा कोठली सबा रूपैआ दैछना दऽ कऽ लेलैन। तीन मंजिला मकानक नमहर धरमशाला ऐछे, जइमे छोट-पैघ अनेको कोठली भीतर अछि। उदयपुरक तँ मात्र पनरहे-बीसटा यात्री छैथ जे आनो-आनो गामक अनेको यात्री रहितो

---

[41] कृषि कार्य हेतु हर ठाढ़ कएल जाइए

धरमशालाक किछु कोठली खालीए अछि।

ओना, धरमशालाक भाड़ा होटल आकि भाड़ाबला आन मकान जकाँ बेसी नहियेँ अछि। तेकर कारण अछि ई धरमशाला वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक छिऐन। जे स्थानक चन्दा-चढ़ौआसँ बनल अछि। भाड़ा नामक किछु ने छै मुदा ओकर रख-रखावक जे बेवस्थामे खर्च होइ छै, बस ओही रूपक भाड़ा बनल अछि।

सूर्यास्त भऽ गेल। स्थानक अप्पन बिजली बेवस्था, माने जेनरेटरक बेवस्था तँए स्थान भरिमे माने वाणीश्वरी भगवती-मन्दिरक संग आरो केते छोट-पैघ मन्दिरो तँ अछिए। तैसंग पण्डा-पुजेगरीक रहैक वासक संग नमहर धरमशलो अछि आ बीचक जे आँगन अछि, जइमे रंग-रंगक दोकान-दौरी अछि, तैबीच भरि राति एके रंगक इजोतक बेवस्था तँ चाहबे करी, जे अछिए। पावर-हाउसक बिजली जकाँ नहि, जे कखन रहत आ कखन नइ रहत।

..होइतो तँ ऐछे जे दिनमे जखन बिजली इजोतक जरूरत नइ रहै छै तखन बिजलियो रहैए आ रातिमे जखन अन्हार होइ छै तखन रहबे ने करैए। तइसँ सैयो कच्छे वाणीश्वरी भगवतीक स्थानक तँ अछिए। दिनमे जखन इजोतक खगता नइ रहै छै तखन जेनरेटर बन्न रहल आ जखन जेते काल खगता भेल, तेते काल चलल। यएह ने जिनगीक ओ उपलब्धिक पड़ाव छिऐ जेतए लोककेँ अपन जिनगीक काज अपना हाथमे आबि जाइए, जइसँ अपन मनोनुकूल कार्यक्रमक बीच जिनगीक चक्की चलैत रहैए।

सूर्यास्त होइते भगवतीक सिंह दुआरिक घड़ी-घण्ट बाजल। घड़ी-घण्ट बजिते सभ उपासी–शिवक उपास केनिहार आकि केनिहारि–क मनमे उपासनाक फलहारक आशा जगलैन। जहिना तुलसी बाबा कहने छैथ जे, जेहने जेकर मनक भाव रहत तेहने रामक दर्शनसँ भेँट हएत। 'रामो रामो' कहनिहारक कमी अछि, केतौ ठक-ठाकुर-चोर मिला जपैए तँ केतौ रस्ता-पेरामे रामक जप लुटाइए! लूटि लिअ जेकरा जे लूटैक अछि। भगवती स्थानक घण्टीक अवाज सुनि रमणीकाकीक मन चपचपाइत थलथला कऽ जलजला गेलैन। जलजलाइते पति दिस तकैत रमणीकाकी बजली-

"गामेसँ फलहारक सभ फल अनने छी। पहिने दुनू परानी नहा कऽ नव वस्त्र पहिर लिअ, पछाइत डाली साजि भगवतीक मन्दिरमे फल चढ़ा दुनू गोरे शिवरातिक उपासनाक फलहार कऽ लेब।"

होइते अहिना छै जे भूखल आगू किछु खेबाक वौस आ पियासल आगू पानि आबि गेलापर जहिना मनमे सब्रक बीजक अंकुर जगैए तहिना जागेश्वर काकाकेँ सेहो भेलैन। कोठलीक खिड़की खोलि जागेश्वर काका गौंआँ यात्रीक

कोठली दिस तकला तँ देखलैन जे किनको अपन घरक फलहारक फल नइ छैन, तँए सभ झोरा लऽ लऽ दोकान दिस जा रहल छैथ...।

अवसरक लाभ उठबैक परियास करैत, समयक उपयोग करैत जागेश्वर काका बजला-

"नहेला पछाइत ने भगवतीक डाली सजब। अखन सभ यात्री फलहारक फल कीनैले दोकान-दौरी टहैल रहल छैथ, स्नानक घाट खाली अछि...।"

दुनू परानी जागेश्वर काका नहेला पछाइत नव वस्त्र धारण केलैन। पुरना वस्त्र घाटपर खीच-फखारि कऽ पानि गाड़ि कोठरीमे पसाइर लेलैन।

थर्मशमे गाइक दूध, पाकल केरा, दारीम, आ खीरा मोटरीसँ निकालि रमणीकाकी काकाकेँ कहलखिन-

"सभ अपने चास-वासक छी।"

एक तँ यात्राक पछाइत स्नानक सुख, तैपर सँ वाणीश्वरी भगवतीक सरोवरक घाट टपल जागेश्वर काका रहबे करैथ, मन गुदगुदा गेलैन। गुदगुदाइते बजला-

"भगवतियोकेँ अपन-चास-वासक फल देख मने-मन खुशी हेबे करतैन।"

ओना जागेश्वर काका संगी-साथी जकाँ वाणीश्वरी भगवतीकेँ बुझि बजला मुदा से रमणीकाकीकेँ नीक नइ लगलैन। ओना, अनसोहाँतो नहियेँ लगलैन, मुदा एक धान एक चाउर होइतो किछु एहनो तँ ऐछे जे सुगन्धित अछि, एकर माने ईहो नइ जे सभ सुगन्धिते अछि। मुदा ईहो केना कहल जाएत जे चाउरक जे अपन सुगन्ध अछि ओ कोनो चाउरमे नइ अछि। ओ तँ उपरारिमे उपजल सतरिया धानक चाउर हुअए कि तुलसी फुलक आकि चौरीमे उपजल बेलौर-दसरिया आकि पाखैरे-पिच्चैर किए ने हुअए मुदा चाउरक जे अपन गुण-धर्म-सुगन्ध छै ओ तँ छइहे।

ओना मने-मन जहिना जागेश्वर काका चाउर-गुड़ चिबबै छला तहिना रमणियोँ काकी चिबैबते छेली, मुदा बजली नहि, अपन फलहारक ओरियानमे अपनाकेँ लगौने सभ फलकेँ ओरिया-ओरिया सैंत-सैंत डाली सजबैत रहली।

..डाली सजिते जागेश्वर काका टोन मारलैन-

"जे सभ फल वाणीश्वरी माएकेँ चढ़ेबैन से तँ मंत्र जकाँ कहि देबैन किने?"

ओना जागेश्वर कक्काक मनमे होइत रहैन जे भरिसक पत्नीकेँ ईहो बात नीक नइ लगतैन, मुदा से विपरीत भेल, रमणीकाकीकेँ नीक लगलैन। दुनू खीरापर हाथ रखि बजली-

“ई भेल लत्तीक फल। जेकरा डाँड़मे, अपन फल जकाँ तागतो ने छै जे अपने भरे ठाढ़ो हएत मुदा फल तँ एहेन ऐछे जे गाछक सैयो फलसँ नम्हरो आ सुअदगरो अछिए।”

बिच्चेमे टोन दैत जागेश्वर काका बजला-

“मुदा खीरा मीठ कहाँ होइए?”

रमणीकाकीकेँ सुतरलैन। बजली-

“मीठ केकरा कहै छै से अखैन नइ कहब। जाबे आन यात्री नहेता-सोनेता तइसँ पहिने अगुआ कऽ भगवतीक दर्शन करब बेसी नीक हएत।”

हत्थो भरि गौरिया केराकेँ दहिना हाथसँ उठा रमणीकाकी निंगहारि-निंगहारि देखए लगली जे पाल परक कलकतिया-आम जकाँ ठाम-ठीम खोंइचा दगि गेल अछि।

..बिच्चेमे जागेश्वर काका टोनियबैत बजला-

“केरा सड़ल जकाँ बुझि पड़ैए!”

झपटैत रमणीकाकी बजली-

“सड़ल नइ अछि, परसाएल अछि। असल तँ यएह भेल जे परसाद बनि परसाइबला सेहो छी। तोहूमे आम-लतामक गाछ जकाँ कि कोनो हड्डी-पसलीबला गाछक फल छी। जल-जल, थल-थल, पल-पल गाछक पेटसँ निकलल फल छी।”

ओना रमणीकाकीक बात सुनि जागेश्वर काका भकचका गेला। भक-चकीमे पड़ल मनकेँ जाबे सोझरबैथ-सोझरबैथ तइ बिच्चेमे दारीमकेँ देखबैत रमणीकाकी बजली-

“केते सुन्दर पृथ्वी अकारक गोल फल झाड़-झाड़ीमे नुकाएल रहैए।”

रमणीकाकीक मुहसँ निकैलते जागेश्वर काका बजला-

“कोनो कि झाड़ीक-झाड़मे फलेटा नुकाएल रहैए, फलक तरोमे फलहार नुकौने रहैए। तेहेन भारी चोर अछि जे खीरा आकि लताम जकाँ गुद्दा-बीआ आकि रस-खोंइचा एकबट्ट केने रहैए, सजनी जकाँ कोठरी बना-बना अपनाकेँ सजने रहैए।”

ओना रमणीकाकीक मनमे उपकैत रहैन जे कहिऐन- मुँहक दाँत जहिना रजो छी आ चोरो छी, तहिना ने दारिमो अछि, मुदा बकबासमे समैकेँ हाथसँ छोड़ब नीक नहि, तँए रमणीकाकी चुपे रहि थर्मश निकालि दूधक रंग देखए लगली। बकेन गाइक दूध...।

डाली साजि रमणीकाकी जागेश्वर काकाकेँ कहलखिन-

“चलू, भगवती-माइक दर्शन काइए ली। फलहारोक बेर उनैह जाएत।”

रमणीकाकीक बात सुनि जागेश्वर काका बजला-

“हम तँ नहेला पछाइतेसँ दर्शन करैले तैयार छी मुदा बीचमे अहीं ने लटघाँइ लगौने छी।”

पतिक बात रमणीकाकी सोल्होअना नइ सुनि पेली। आँखि उठा तकली तँ सोझे पतिक मुँह पटपटाइत देखली, जेना मने-मन कियो मंत्र-जप करै छैथ, तहिना। वाणीश्वरी भगवती जेना आगू आबि ठाढ़ भऽ अपन रूप दर्शन करबए लगल होनि तहिना रमणीकाकी अनसून भऽ गेली। अनसून होइते मन नाचए लगलैन। नचिते आँखिक सोझमे भगवतीक तीन रूप चमकए लगलैन। मनुखमे देव जोग वएह ने भेल जे विचारकेँ विवेकक कसौटीक मुखाड़ी बान्हि बाइन बना भूमिक रणभूमिमे जीवन यात्रा करैत चलए।

वाणीश्वरी भगवतीक दर्शन आ फलहार केला पछाइत दुनू परानी जागेश्वर काका धरमशालाक ओइ कोठरीमे आबि बैसला, जे सवा रूपैआ दैछना दऽ दू दिन रहैले नेने छला। भरल मन दुनू परानीक रहबे करैन। रौतुका खेबोक खगता नहियेँ बुझि पड़ैन।

जागेश्वर काका पत्नीकेँ कहलखिन-

“एक बेर गौंओं-घरूओकेँ देख अबए चलू।”

एक तँ ओहुना रमणीकाकी पति भक्त, तैपर वाणीश्वरी भगवतीक स्थान, बिनु ‘हँ’ ‘हूँ’ बजने उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। दुनू परानी जखन कोठरीसँ निकैल आनो-आनो यात्री आ अपन गौंआँ-यात्रीकेँ देखलैन तँ मने-मन हँसी लागए लगलैन। मुदा ने कियो हँसबे केला आ ने किछु बजबे केलैन। चुपचाप देख-सुनि कऽ अपन कोठरी आपस आबि गेला।

जहिना अनुकूल मौसम पौने प्रकृतिमे सेहो अनुकूलता आबि जाइ छै, तहिना दुनू परानी जागेश्वर काकाक बीच सेहो ऐलैन।

..पत्नी दिस देखैत जागेश्वर काका बजला-

“अनेरे दुनियाँक नीक-अधला देखै पाछू अपन जिनगी आ कर्तव्य छोड़ि मुँह तकैत रही, हमरा बुझने से नीक नहि।”

जहिना केकरो-केकरो ठोरेपर बरी पकैए, माने कोनो बातक विचार लगले कऽ देब, तहिना रमणीकाकीकेँ सेहो भेलैन। बजली-

“एकरा के काटत।”

पत्नीक समरथनमे जागेश्वर कक्काक मन हरिया गेलैन। हरिया ई गेलैन जे विधातो नारी-पुरुखक भेद रचि दुनूकेँ दू दिशामे मोड़ि देलैन। तैठाम जँ पति-पत्नी ओइ भेदकेँ सहीट बनबैत जिनगीक संगी बनि जीवन-यात्रा करै छैथ तँ ओ निसचिते ने नीक भेल। जागेश्वर काका बजला-

"बेकती रूपमे नर आ नारी भेल, दुनूक सम्बन्धे ने घर-परिवारक निर्माण करत। जे सभ नरक जिनगीक दायित्त्व बनिते अछि।"

बिच्चेमे रमणीकाकी बजली-

"पुरुख-नारीक सम्बन्ध ओइ परिवार-ले अनिवार्य भेल जे अतीत-सँ-भविस धरिक परिवार भेल, मुदा परिवार तँ असगरोक होइ छै आ निसचिन्तसँ लोक जीवन-यात्रा करैए।"

पत्नीक विचार सुनि जागेश्वर काका बजला-

"हँ, से तँ भेल मुदा ओ चलन्त परिवार भेल। चलन्त परिवार ई जे जेत्तै रहब तेत्तै परिवार भेल, कोनो गाम-समाज आकि देश-कोस नइ भेल। मुदा जे भेल से भेल, अपना तँ से नहि अछि। तँए जे अछि तहीले ने विचारबो करब आ करबो करब।"

जागेश्वर कक्काक विचार रमणीकाकीकेँ जँचलैन। जँचिते बजली-

"अखन जइ धाममे छी ओ तँ तखने धर्मस्थल हएत जखन ओइ मर्मकेँ मर्मस्थलमे बसा कर्मस्थलमे समरपित करब।"

रमणीकाकीक विचार नीक जकाँ जागेश्वर काका नइ बुझला। एकर माने ई नहि जे जागेश्वर काकाकेँ बुझैक अवगैत नइ छेलैन। विचार व्यक्त कएल जाइए पात्रक माध्यमसँ। जँ एक रंग पात्र रहल तँ एक-धारामे चलैए आ जँ पात्रमे भेद रहल, अन्तर रहल तँ केतौ-केतौ बाधा-रूकाबट होइते अछि। सएह जागेश्वर काकाकेँ भेलैन।

मुदा कनियेँ-कालक पछाइत जेना मनक ओझरी सोझरा गेलैन तहिना मन बिहुसलैन।

बिहुसैत जागेश्वर काका बजला-

"जहिना नर-नारीक बीच परिवार बनल अछि तहिना ने एक नर दोसर नरक धारा भेल।"

ओना रमणीकाकी अखन तक नरक माने 'पुरुख' बुझै छेली आ नारीक माने 'महिला'। मुदा जागेश्वर काका नरक अद्वैत रूपमे चर्च केने छला, द्वैत रूपमे नहि। माने ओकर खण्डित रूपमे नहि। तँए रमणीकाकीकेँ कनी बुझैमे भेद भेबे केलैन।

निर्मल-निरजल रमणीकाकीक हृदय, बजली-

"नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं।"

हँसैत जागेश्वर काका कहलखिन-

"द्वैत-अद्वैतक बीच परिवार चलैए। करवन 'द्वैत' 'अद्वैत' हएत आ 'अद्वैत' 'द्वैत', यएह ने..?"

पतिक विचार सुनि रमणीकाकी रमैत जिनगीमे रमि गेली।

❍

शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016

बीरांगना

पूस मासक अन्हरिया पखक दोसर दिन माने दुतिया-अन्हार। दिनक दू बजे रघुनाथ काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस आजुक घटनाक पूर्ण विवरण मने-मन समटैक विचार कऽ रहल छैथ। रंग-बिरंगक चर्च परिवारो आ गामोमे उड़िये रहल अछि, तैबीच सहीकेँ पकड़ब ओतेक असान नहियेँ अछि, मुदा असम्भवो अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओ तँ रस्ताक रस्सा पकैड़ बिटियौनहि हएत, तइले दोसराक संग संलग्न बेकतीसँ बुझब जरूरी अछिए।

अपन कानूनीक ऐगला बाट रघुनाथ काका सम्हारि चुकल छला, जइसँ भविसक तँ उपाय भऽ गेल छेलैन मुदा परिवारोक बीच तँ तोष-भरोस दैत असथिर तँ करबाके छेलैन। जइले परिवारजनसँ रायो-विचार करब आ अपन घटित घटनो सुनब तँ छेलैन्हे।

घटना एहेन विकराल भेल छल जे परिवारोजन आ टोलो-पड़ोसक लोक विचलित भाइये गेल छला।

रघुनाथ कक्काक पत्नीक संग पोती–रीना कुमारी–ठमकैत ठहकैत पहुँचलैन। ठमकैत ऐ दुआरे जे परिवारक सभ बेथाएल, तँए केकर बेथा के सुनि निमरजन करत। मुदा परिवारक श्रेष्ठजन भेने ऐगला मुँहरीक विचार तँ रघुनाथे काका ने करता, तँए। ओना पोतीक काज देख रघुनाथ कक्काक मन बेहद खुशी छेलैन, मुदा किछु अछि तँ बाल-बोध अछि, ओकरा जँ मनोनुकूल विचार नइ देल जाएत, सेहो नीक नहियेँ। आँखि उठा रघुनाथ काका रीनापर देलैन। माघ मासक अन्हरियाक तिरोदसीक भोरक चान जकाँ जे लाखो-लाख पाला-कुहेसक बीच अपन लालिमा बरकरार रखैए, तहिना रीना कुमारीक ललौन चेहरा दमकैत.., मुदा जहिना पोतीक चेहरा दमकैत रहैन तहिना पत्नीक मन हतास् भेल उड़ल बुझि पड़लैन। लगमे अबिते पत्नीकेँ कहलखिन-

“बैसू, जेना जे भेल सभ बात कहू।”

आगूक सोझमे सुदामा आ तिरछिया कऽ रीना आगूमे बैसलैन, सुदामा बजली-

“पोतीक तँ जान बँचि गेल, नइ तँ नाक-कान सभ कटि जइतए।”

ओना, रघुनाथ काकाकेँ भनक लगि गेल रहैन जे जखन आततायिक

हुजुम चारू भागसँ घर-अँगना घेरए लगलैन तखन रीना कुमारी अपन जान बँचबए–जे पकैड़ ने लिअए–दोसर अँगना पहुँच गेल। जेतए नीक संरक्षण भेटलै, आ आततायिक हाथसँ जान बँचि गेलइ।

रघुनाथ काका बजला-

“भगवान केकरो अधला केलखिन हें जे रीनाक अधला करितथिन।”

‘भगवान’क नाओं सुनिते पत्नीक मनक बोझ जेना कमलैन तहिना मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते बजली-

“किछु छी तँ मनुखक बच्चा छी किने, बुधि-अकील तँ छइहे ने। अपन जान अपना बुधिये बँचा लेलक..!”

ओना, रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन जे पत्नीक ऐगला बात नहि सुनि पहिने पोतीक बात सुनब बेसी नीक हएत, मुदा लगले फेर भेलैन जे ने पोतिये आकि पत्नीए केतौ जेती आ ने अपने केतौ जाइक तैयारीमे छी जे धड़फड़ी रहत। परिवारमे जे घटना भेल ओ तँ पोखैरक हिलकोरक पानि जकाँ धीरे-धीरे असथिर हएत। ओना, पोखैरक हिलकोरक पानिकेँ पानियेँ रोकि-रोकि असथिर करैए, मुदा मनक हिलकोर तँ विचारेसँ ने असथिर हएत, तँए पत्नीक विचार रोकब नीक नहि। तहूमे परिवारक घटना छी मनक संग छातियो दहलिते हेतैन जे मनक विलाप निकलला पछातिये असथिर हएब सम्भव भऽ सकैए। परिवारक घटनाक विचार करए जखन बैसल छी, तखन एहनो तँ सम्भव भाइये सकैए जे पोतीक नजैर घटनाक सभ बिन्दुपर नहि अँटैक जघन्य दृश्यमे सटि गेल होइ, जइसँ छोट-छीन ओहन बिन्दु छुटि जाए, जे बिन्दु पत्नीक विचारसँ प्रगट भऽ जाए। तँए पत्नीक विचार सेहो अपन महत् रखिते अछि।

पत्नीक विचारसँ रीनाकेँ शान्ति आ शान्त्वना भेटबे करत। जेते शान्त्वना मनमे बसत तेते बेथा कमतै। जेते मनक बेथा कमतै तेते बुधि सर्ड़ास हेतइ। जखने बुधि सर्ड़ास हेतइ तखने विचारक विकार सेहो हटबे करतै। जइसँ मलिनता कमतै आ ललितमा बढ़तै...।

सह दैत रघुनाथ काका बजला-

“अहाँ सन दादीक पोती ने रीना छी, तोहूमे कौलेजमे पढ़ैए, आब कहिया बुधि-अकील हेतइ।”

अपन पोतीक बँचैत इज्जत आ अपन दायित्वक विचार सुदामा काकीक मनकेँ सकतबए लगलैन। मरुभूमिक मुइल धारमे जहिना एकाएक बाढ़ि आबि गेने मड़ाइन-सड़ाइन गन्ध नहि, कलियाएल-फुलियाएल सुगन्ध उठैए तहिना सुदामो काकीक आ रीनो कुमारीक मनमे उठए लगल।

सुदामा बजली-

“जहिना कुल-खनदानक इज्जत अखन धरि लहलहाइत आबि रहल अछि तेहने लहलही पोती रखि लेलक।”

दादीक बात सुनि रीनाक मन ओहिना जुड़ा गेल जहिना जुड़शीतलक नीर दादा-दादीक हाथे सिरपर चढ़ने जुड़ाइत अछि। अपन कएल कृत्तिपर रीना कुमारीक मन नाचए लगल। जइसँ मुहेँक रूखिटा नहि, चेहराक रूखि सेहो दमकए लगलै। नजैर उठा दादीपर दैत, आगू बढ़ा बाबापर सेहो रीना देलक। प्रसन्न चित्त बाबाकेँ देख रीनाक मन सेहो प्रसन्नसँ प्रशान्त दिस बढ़ए लगल...।

तैबीच रघुनाथ काका पत्नी दिस देख बजला-

“जे सीख-लीख अहाँक अछि, सएह ने पोतियोक हएत।”

पतिक विचार सुनि सुदामा काकीक मन फुदफुदेलैन। फुदफुदाइते बजली-

“साठि बर्खक जिनगीमे जहिना अनको बहु-बेटीकेँ अपन बहु-बेटी बुझि झाँपैन दैत रहलौं अछि तहिना ने भगवानो हमरा देलैन।”

पत्नीक खुशी मन देख रघुनाथ काका टुसकियबैत बजला-

“भगवान केकरो बेपाट भेलखिन अछि जे हमरा हेता।”

रघुनाथ कक्काक बातमे सुदामा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा चेहराक रूखि मलिन हुअ लगलैन। पत्नीक चेहराक रूखिसँ रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन जे जहिना कियो पहाड़क टुगनीपर सँ कोनो कारणे ओंघराइत समुद्रमे डुमि जाइए तहिना भरिसक आइ अपनो परिवारमे होएत। मनक मोनिमे जहिना रघुनाथ काका उग-डुम करैत रहैथ तहिना सुदामा काकी सेहो हुअ लगली। उग-डुम करैत बजली-

“आइ जँ आततायिक हाथ रीना पड़ि गेल रहैत तँ अखन केतए रहितए..?”

बजैत-बजैत सुदामा काकीक छाती चहकए लगलैन। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर बहए लगलैन। नोरो तँ नोर छी, एक जल स्वरूप असथिर नीर छी तँ दोसर जल प्लावित धार छी! सुदामा काकीक नोर जल-प्लावित धार जकाँ आगू बढ़लैन। दुनू गालपर बहैत नोरक धारकेँ जहिना रघुनाथ काका अपन धोतीक खूटसँ पोछलखिन तहिना रीना सेहो पोछलक, मुदा मन जिनगीक विशाल मोनिमे डुमए लगलै। डुमिते मन हुमरलै- जँ इज्जतखोर लूटेराक हाथ पड़ि गेल रहितौं तँ अखन केतए रहितौं..! हमर की गति होइत..! हे भगवान! अहीं हमर रक्षा केलौं जे ओहन बुधि ओइकाल जगेलौं जइसँ अपन रछिया अपने कऽ

लेलौं..!

गप-सप्प आगू बढ़बै दुआरे रघुनाथ काका पत्नीकेँ कहलखिन-

“एक गिलास पानि नेने आउ। कण्ठ सुखि रहल अछि।”

जहिना रघुनाथ कक्काक मुहसँ ‘एक गिलास पानि’ खसलैन तहिना सुदामा काकी उठि कऽ पानि आनए आँगन गेली। तैबीच रीनाक भव्य रूप देख रघुनाथ कक्काक मन पाछू घुमलैन। पाछू घुमिते मनमे उठलैन, समयक गतिकेँ कियो रोकि सकैए। जे परिवेश बनल जा रहल अछि ओइ परिवेशमे लड़का-लड़कीक प्रेम-सम्बन्धकेँ कियो रोकि थोड़े सकैए? तइले समाजकेँ विचार करए पड़तै। जँ से नहि करत तँ समाजमे सदिकाल अशान्ति उठिते रहत, जइसँ अशान्ते-अशान्त होइत रहत।

आदमी लाठी-ठेंगाक संग पहुँच घरकेँ घेरि समांग सभकेँ मारलक। जहिना पोता घरसँ चुपचाप चलि गेल, तहिना तँ लड़कीबलाक लड़कियो निकैल गेल, ऐमे परिवारक की दोख छइ। कोन नजरिये लोक ऐ समस्याकेँ देखए चाहैए..? पोतीकेँ पुछलैन-

“बुच्ची, अखन अपने दुनू गोरे छी, कियो ने तेसर अछि आ ने तेसर परिवारेक अछि तँए झूठ-फूस नहि, की भेलह?”

कनैत मनक हँसैत विचार रीना कुमारीक मनमे जगि गेल। बाजए लगल-

“बाबा, हम कलपर छेलौं। उत्तरबरिया रस्तासँ लोक सभकेँ अबैत देखलिऐ। कलपरसँ दच्छिनमुहेँ जहिना विदा भेलौं कि बीचला रस्तासँ सेहो ओहिना लोक सभकेँ अबैत देखलिऐ, मनमे भेल जे हमरा पकैड़ लेत! दौड़ गेलौं। दौड़ कऽ दोसर अँगना पहुँच गेलौं। जखने दोसर अँगना गेलौं कि मनमे उठल जे जँ कहीं अँगने–जइ अँगनामे पहुँचल रही–केँ चारू महरसँ घेरि लिअए तैयो तँ आततायिक हाथ पड़िये जाएब। जखने इज्जतखोर-आततायिक हाथ पड़ब तखने हमरो इज्जत लूटेबे करत।”

पोतीक बात सुनि रघुनाथ कक्काक मन विचलित हुअ लगलैन। ओना, सभ कथुक बाबजूद रीनाकेँ कुशक कलेप नहि लागल छल, तँए मनमे कोनो अथिरता नहियेँ रहैन। मुदा घटनाक जे रूप-रंग भेल ओ तँ मनकेँ हिलाइये देने छेलैन। जहिना पोखैरक असथिर पानिमे किछु पड़ने पानि डोलाइमान भऽ जाइत तहिना हवो-विहाड़िक झोंकमे सेहो हेबे करैत अछि। सएह रघुनाथ काकाकेँ सेहो भेल रहैन।

तैबीच सुदामा काकी सेहो गिलासमे पानि नेने पहुँच गेली। पत्नीपर नजैर पड़िते रघुनाथ काका बजला-

“रीना तँ कुल-खनदानक नाक बँचा लेलक।”

रघुनाथ कक्काक बात सुनि सुदामा काकी बिहुसली। रघुनाथ काका पानि पीबिते रहैथ कि बिच्चेमे सुदामा काकी बजली-

“जइ अँगनाक पुरुखो आ महिलो अपन परिवारक इज्जत बुझि अपन दायित्वकेँ भार बुझि निमाहत, वएह परिवार ने पुरुखाह परिवार बनत। आ जखने परिवार पुरुखाह बनत तखने ने जन-गणमे पुरुखपन औत आ पुरखाक इज्जत बनल रहत।”

पत्नीक बात सुनि रघुनाथ काका बजला-

“अखन अहाँ मुँह चुप रखू। रीनासँ आरो बात बुझए दिअ। तेकर पछाइत की भेल, रीना?”

रीना बाजल-

“एक तँ अँगनाक टाट-फरक टुटल, वेपर्द अँगना, तहूमे लूटिहाराक नजैर सेहो पड़ि चुकल छल। लगले हम ओइ अँगनासँ दौड़ कऽ तेसर अँगना चलि गेलौं। जइ अँगनामे नीक रक्षा कवच भेटल।”

रघुनाथ काका-

“की नीक रक्षा कवच?”

रीना-

“एक तँ अँगनामे आठ-दस गोरे रहइ, तैपर ईंटाक-घर सेहो। जाइते सभ हाँइ-हाँइ कऽ पकैड़ कोठरीमे लऽ जा बाहरक सभ केबाड़ बन्न कऽ देलक।”

रघुनाथ काका-

“इज्जतखोरक जे आक्रमण भेल, से नइ देखलहक?”

रीना-

“सभ किछु देखलिऐ।”

रघुनाथ काका-

“बन्न कोठरीसँ केना देखलह?”

रीना-

“बहराक ने दुनू फाटक बन्न भऽ गेल। मुदा भीतरक जे सीढ़ी रहइ, जे ऊपर छतपर जाइ छै, ओ खुलले रहइ। ओहीपर सँ चढ़ि छतक जे छोटकी कोठरी छै, तइमे पहुँच खिड़की देने देखए लगलिऐ।”

रघुनाथ काका-

“की सभ देखलहक?”

रीना-

“देखलिऐ जे पहिने छोटका बौआकेँ (जे बारह-तेरह बर्खक अछि) पान-सात आदमी ओकरा पकैड़ घिसियेबो करै छै आ लाते-मुक्के मारबो करै छइ। छाती फाटि गेल। जखन भाइए मरि जाएत तखन हमर दशा की हएत।”

धोतीक खूटसँ आँखि पोछैत रघुनाथ काका बजला-

“आरो की सभ देखलहक?”

दुनू हाथसँ दुनू आँखि पोछैत रीना बाजल-

“मझिला बौआकेँ जखन आठ-दस गोरे केश पकैड़ कऽ घिसियबैत रहै तखन लक्ष्मीवाइ मन पड़ल, मुदा कैये की सकै छेलौं। छतपर ईंटो ने रहै जे जुमा-जुमा फेंकतौं आ लूटिहाराक कपार फोड़ितौं।”

विह्वल होइत रघुनाथ काका बजला-

“और की सभ देखलहक?”

रीना-

“पापाकेँ पनरह-बीस गोरे चारूभर सँ घेर मारैत रहइ। मिथिलेश काकाकेँ सेहो पनरह-बीस गोरे पकैड़ कऽ घिसियबैत खून करैले लऽ जाइत रहइ।”

जहिना रघुनाथ कक्काक मन तहिना सुदामा काकीक मन छहोँ-छीत भऽ छिड़िया गेलैन। छिड़ियाइत मनकेँ समैट रघुनाथ काका बजला-

“जखने परिवारमे वीरत्वक आगमन हएत, जे कठिन लगनसँ होएत, तखने बीरांगनाक उद्भव हेबे करत। जखने बीरांगनाक उद्भव हएत, तखने ओ अपन इज्जत-आवरू बुझि अपन जिनगीक रक्षा करबे करत।”

❍

शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

स्मृति शेष

तीस दिसम्बर, शुक्र दिन। 2016 इस्वी। साँझक सात बजे ब्रह्मानन्द बाबा बीतैत दिनक साँझ आ ऐगला दिनक पैछला साँझमे अपन अराम-विश्राम करैबला जगहपर असगरे शोकाकुल बैसल छला। दिनुका पहिल उखड़ाहामे जे दूटा रोटी जलखैक रूपमे खेने छला, बस् ओतबे आइ दिन भरिक अहार भेटल छेलैन। नित्य एगारह बजेमे नहेनिहार आइ तीन बजेमे नहेला, जखन बच्चाक पार्थिव शरीरकेँ असमसान पहुँचौल गेल। ओना, दिनक भानस परिवारमे भऽ चुकल छेलैन, मुदा तेहेन बेर ओ घटना भेल जे ओ भानस कएल भोजन बरतनेमे पड़ल छल।

नहेला पछाइत खेबाक इच्छा ब्रह्मानन्द बाबाकेँ जरूर भेलैन मुदा भोजन रोकबा-ले तेतेक दूत-भूत मनक चारूकातसँ ऐ रूपे घेर लइ छेलैन जे मनक इच्छा मनेमे घुरिया-फिरिया जानि, मुदा मुहसँ निकालैक साहसे ने होइन। साहसो केना होइतैन, एक दिस परिवारमे सभसँ ऊपर–उमेरो आ खाढ़ियोमे– होइक नाते जँ वएह नइ सहि सकता तँ दोसर केना सहि सकत। मुदा सहबो तँ सहब छी, एक अन्न-पानिक सहब भेल, दोसर बात-विचारक संग सुख-दुखक। तहूमे परिवारक रूदन आ समाजक जिज्ञासु रूदनक धार बहिये रहल छेलैन।

चौकीपर बैसल ब्रह्मानन्द बाबा अपन बीतल, बीतैत आ अबैबला काल्हिक संध्या-बन्धन कऽ रहल छला, मुदा बान्हे कुबान्ह भऽ जाइन। कुबान्ह ई जे बीतल नअ घन्टा शोके-शोक, दुखे-दुखमे बीतल छेलैन आ अबैबला बीतैत रातिक भोजनक आशा सेहो नहियेँ छेलैन। काल्हिक एहेन कठिन समय पार कऽ सकब की नहि, से मने-मन ब्रह्मानन्द बाबा विचारि रहल छला। माने ई जे राति भरिक साहित्यिक कार्यक्रममे जवाबदेहक रूपमे पार करब छेलैन। जवाबदेही एहेन जे कहीं कार्यक्रमे ने भँसिया जाए। एहेन भार निमाहैले तँ कन्हो मजगूत चाही जे भोजनेसँ शरीरकेँ भेटत, सएह हेरा गेल अछि।

गणितीय दौड़मे दुनू दिस ब्रह्मानन्द बाबाकेँ बाधा बाधित कैये रहल छेलैन। तैपर मन कुदि-कुदि अपन स्मृति दिस दौड़-दौड़ जाइन। जेकरा ब्रह्मानन्द बाबा शरीरान्त बुझि टारि कऽ बहटारए चाहै छला, वएह छिड़िया-छिड़िया मनकेँ चारूभरसँ घेर लैत रहैन।

परिवारमे ओहन घटना भेल जइमे एकटा अचेत बाल-बोधक अन्त भेल।

चूक केतए भेल ई जँ परिवारक लोक नहि गुणि लेत तँ आगूक गुणाधीश गुणातीत केना भऽ सकैए। मुदा बाबाक मनमे ईहो नचैत रहैन जे अखन ऐ बातकेँ माने ऐ घटनाकेँ विचारबसँ नीक ई हएत जे तत्काल वातावरणकेँ पहिने असथिर कएल जाए। जँ विचार-विमर्शक क्रममे कोनो मारूख विचार सोझामे आबि जाए आ चामेक मुँह छी, कहीं ओ विचार मनमे छड़ैप कऽ मुँह होइत निकैल गेल, तखन तँ ओ आरो मारूख हएत! तँए नइ विचारबे बेसी नीक...।

मुदा लगले फेर बाबाक मनमे उठि गेलैन जे अनेको जिज्ञासु जिज्ञासा करए जइ घटनाक लेल आबि रहल छैथ आ घटनाक मर्म स्थलकेँ देखिए ने पाबि रहल छैथ, तखन तँ ओ अधे-छिधे जिज्ञासा ने भेल। ..असमंजसमे पड़ल ब्रह्मानन्द बाबा निश्चये ने कऽ पाबि रहल छला जे की नीक हएत। आँखिक सोझक जे घटना अछि ओकरा जेते नीक जकाँ अखन विचारि सकै छी, ओते बसियाएलमे थोड़े हएत। तहूमे कौल्हुका काज आरो जटिल अछि। एहनो तँ भाइये सकैए जे जहिना आइ परिवारक घटना भेल तहिना काल्हि समाजोमे भऽ सकैए, तखन तँ परिवारक विचारकेँ अगुयाएबो नीक नहियेँ हएत, तँए अखने विचारब बेसी नीक...।

तही बीच ब्रह्मानन्द बाबाकेँ समाजक सरोकारी बहिन, जिनकर घर बगलेमे छैन, पहुँचली। अगवास, बाड़ी-झाड़ी खेत-पथार सेहो दुनू गोरेक एक्केठाम छैन। दिन-राति पड़ोसीक रूपमे दुनू आइ सत्तैर बर्खसँ संगे जिनगी जीबैत आबि रहल छैथ। ओना बिन्दा चारि मास ब्रह्मानन्द बाबासँ जेठ छथिन, मुदा दुनूक बीच वएह 'रे-टे'बला सम्बन्ध तहियेसँ माने बच्चेसँ संगे आबि रहल छैन, जे अखनो पोता-पोतीसँ भरल घर रहितो, ओहने छैन।

अपना संग बिन्दा स्टीलक थारीमे दस-बारहटा रोटी आ बाटीमे तरकारी नेने, ई सोचि पहुँचली जे दिनुका भानस ब्रह्मानन्दक परिवारमे रान्हले रहि गेल, शोकाकुल परिवार रहने अखनो माने रातियोमे भानस नहियेँ हेतैन आ काल्हियो कखन हेतैन तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। सियान-चेतन सहियो सकैए मुदा परिवारमे जे दूटा बुढ़ आ तीनटा छोट-छोट बच्चा अछि ओ केना सहि सकत...।

ओना ब्रह्मानन्द बाबा अपन कोठरीक केबाड़ अड़का कऽ असगरे बैसल विचारि रहल छला। तहीकाल बिन्दा केबाड़ खोलि कोठरीमे पहुँचली।

अबिते बिन्दा परोसल थाड़ी आगू बढ़बैत बजली-

"जे दिनक दोख छल से भेल, चिन्ता छोड़ह, खा लएह।"

बिन्दाक मुहसँ खसिते ब्रह्मानन्द बाबा फफैक-फफैक कऽ कानए लगला-

"हमर बेल केतए गेल, हमर बेल की भेल..!"

ओना बिन्दो अनुमान केली जे 'बेल' पोताकेँ कहै छैथ।

बजली-

"किछ ने भेल, जहिना आएल तहिना गेल। ई दुनियाँक रीति छिऐ, सभकेँ होइत आएल अछि, आगुओ होइत चलैत रहत।"

एक बर्ख नअ मासक रोशनक प्राणान्त पानिमे कठुआ कऽ भेल। रातियेसँ चलि अबैत शीतलहरी अपन विकराल रूप पकैड़ नेने छल।

भिनसुरका पहर। श्रमशील परिवार रहने परिवारक सभ अपन-अपन काजमे लगि चुकल छला। कियो अँगना-घर काजमे तँ कियो माल-जालक पाछू। ओ बच्चा–बेल–जाड़क सभ वस्त्र पहीरने–माने जूत्ता-मौजा आ सूती कपड़ासँ लऽ कऽ ऊनी स्वीटर, कोट, टोपी सभ किछु पहीरने–हाथमे एकटा गिलास नेने चापाकलक आगू जे पानिक खाधि छै, तइमे गिलासमे पानि लिअ गेल। ओना जाड़ रहौ कि गरमी, थाल-पानिसँ ओइ बच्चाकेँ विशेष सिनेह छेलैहे। चंगला बच्चा तँए नजैरसँ ओझल होइते छल। गिलास नेने जे आँगनसँ निकलल, से दोसरो-तेसरो देखलक। मुदा सभ दिन कोनो-ने-कोनो वस्तु नेने निकैलते छल, तँए कियो किए ओहूपर विशेष नजैर दइत। पानि लिअ खाधिमे जखन गेल, भरिसक तहीकाल ओ पिछैड़ कऽ खाधिमे चलि गेल। ओना, खाधियोकेँ बहुत गहींर नहियेँ कहल जा सकैए, मुदा एक-डेढ़ हाथक बच्चाक लेल तँ गहींरगर छेलैहे। तहूमे जहिना बर्फ जकाँ समय तहिना पानि सेहो छेलैहे। परिवारजन रहितो कियो ओइ बच्चा दिस नइ तकलक। सदिकाल खुर-खुर करिते रहैत छल। तकैक कोनो शंको ने रहइ। दिन-दिनक वृत्ति छेलइ। किछुए कालमे बच्चा जाड़सँ तेना आक्रान्त भऽ गेल जे प्राणान्त भऽ गेलइ! जखन बच्चापर नजैर गेल आ ताक-हेर शुरू भेल तखनो ब्रह्मानन्द बाबाक मन गबाही दइते रहैन जे भरिसक कियो चोरा कऽ औनाबै दुआरे रखि नेने अछि। बच्चाक माइये खाधिसँ मुइल बच्चाकेँ निकालि आँगन आबि रखैत बजली-

"हमर रोशन..!"

ओना नीको समैमे आ अधलो समैमे तँ निसचिते मतो-पिता, भाइयो-बहिन आ ददो-दादीक नजैर ओइ बच्चापर रहिते छल मुदा पाँच दिन पहिने ब्रह्मानन्द बाबाक परिवारमे एहेन दुखद घटना भेल छेलैन जे खसैत-खसैत परिवार बँचलैन। मुदा घटनाक एहेन विकराल रूप छल जे मने नहि, केतेको गोरेक शरीरोकेँ नीक जकाँ आक्रान्त अखनो केनहि छल। होइतो अहिना छै जे परिवारे आकि समाजेमे जँ कोनो मारूख घटना घटैए तँ परिवारो आ परिवारजनकेँ सेहो झकझोरि दइते अछि। जइसँ परिवारक अनेको जरूरियात काज सभपर सँ नजैर हटिये जाइ छइ। तँए कहलो जाइ छै जे 'विपत्ति असगरे

नइ अबैए, एकक संग अनेको अबिते अछि।'

रोशन आ कृष्णा दुनू सहोदर भाए, ब्रह्मानन्द बाबाक तेसर बेटाक दुनू सन्तान। कृष्णा जेठ, जे साढ़े तीन बर्खक अछि आ रोशन छोट जे एक बर्ख नअ मासक छल। रोशनक मुँहमे ऊपर छह गोट दाँत आ निच्चाँ चारिटा दाँत सेहो जनैम गेल छल। दौड़ैत चलिते छल। बोली तँ साफ नइ भेल छेलै मुदा किछु शब्द साफ जरूर भाइये गेल छेलइ। कखनो 'बा' ब्रह्मानन्द बाबाकेँ कहै छेलैन, तँ कखनो सिखौलापर 'बबा' सेहो कहै छेलैन।

ब्रह्मानन्द बाबा कृष्णाकेँ सिनेहसँ 'बेल' नाओं रखने छैथ। मास दिनसँ रोशन सेहो अपनाकेँ बाबाक बेल बुझए लगल छल, तँए बाबाक मुहसँ 'बेल' निकैलते रोशन बाजि उठैत छल-

"ऐँ।"

'ऐँ' कहि दौड़ कऽ लगमे आबि हाथमे जे कोनो औजार वा खाइ-पीबैबला वौस देखै छल ओ छीन लइ छेलैन। खाली वौसेटा नइ छीनै छेलैन, संग लगि बाड़ी-झाड़ीक काज दिस सेहो विदा भऽ जाइ छेलैन।

बच्चा पेब ब्रह्मानन्द बाबाक मनमे अपन जिनगीक सार्थकता सेहो नचिते रहै छेलैन। जिनगीक सार्थकता ई जे एक समय माने एक क्षण-पल जँ एकसँ ऊपर अनेक क्रियाक संग चलए। से ब्रह्मानन्द बाबाकेँ 'बेल' पेब होइ छेलैन। कहलो जाइ छै जे उमरदारक माने बुढ़-बुढ़ानुसक प्रथम काज भेल बाल-बोधक संग रहि किछु सिखाएब। से भेटिये जाइ छेलैन।

ओना ब्रह्मानन्द बाबा खेत-पथारमे काज करैबला अपन हथियाएल औजार–हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कुड़हैर, हथौरी, बैसला, आड़ी इत्यादि जीवनोपयोगी औजार अपना-ले तँ रखनहि छैथ, मुदा तँए बेल-ले नइ रखने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भोथियाएलो आ आकारोमे छोट अनेको औजार बेल-ले सेहो रखने छैथ। बेल चलि गेल मुदा ओ औजार जे बेलक छल, ओ तँ छैन्हे। ओना किछु एहनो तँ ऐछे जे बेल अपन औजार बाबाक हाथमे धड़बैत हुनकर हाथक छीन लइ छेलैन। मुदा ओहन बाल-बोधसँ जँ काज बाधित होइक सम्भावना हएत, तखनो तँ दूटा उपाय अछिए, एकटा जे ओइ हाथियारसँ भरिगर काज धड़ा थका दिऐ वा मने फुसला कऽ बहका दिऐ। ..ब्रह्मानन्द बाबा सएह करै छला। जखने पोता हाथक औजार छीनै छेलैन कि आड़िपर बैस गमछामे बान्हल पानक पोटरी खोलि डकै छला-

"के पान खाएत?"

जहिना घर-परिवारसँ हटलो गीत-नाद वा अन्य कोनो अवाज बाल-बोध

जँ सुनैए तँ अपनो ओही अवाजक अनुकरण करए लगैए, तहिना बेलबो 'पान' सुनिते बाजि उठै छल-

"हम।"

बेलबाकेँ राजी होइते बाबा बजै छला-

"जे सभ पान खाएत ओ सभ एतए औत।"

'एतए औत' सुनिते बेलबा हाथक छीनल हथियार ओतै रखि दौड़ल आबि पानक वौसकेँ उनटबए-पुनटबए लगैत छल। जेना-जेना देखैत तेना-तेना करबो करैत तँए बाबा पहिने पानक पात फाड़ि एक-टुकड़ी दऽ दइ छेलखिन। जखन जरदा बेर अबै छल तखन मुन्ना लगले जर्दाक शीशी मुँहमे झाँड़ि कहै छेलखिन-

"आब चलै चलू।"

'चलै चलू' सुनिते बेलबा अपन औजार–खुरपी–पकैड़ आड़िपर खाधि खुनए लगै छल...।

ब्रह्मानन्द बाबा चौकी पर बैसल तेते जोड़सँ फफकला जे आँगन तक कानवक अवाज पहुँच गेल। ओसार पर बैसल महिला समुदाय, जे भरि दिनक कानवक विराम नेनहि छेली आ बेलबेक चर्च करै छेली। बाल-बोध बेलबा, अचेत बेलबा, ओ केना जिनगीक मर्मकेँ बुझैत ओ केना बुझैत जे आगि-पानि जीवन दइतो अछि आ लइतो अछि। ओ केना बुझैत जे जहिना बाल-बोध-ले शीतलहरीक शीताएल पानि जनमारा अछि तहिना तँ आगियो अछि किने...।

बाबाक कानवक अवाज सुनि महिला समूहसँ एक बजली-

"भरि दिन बुड़हा कनिते रहि गेला!"

दोसर बजली-

"कहुन जे पोते लागल अपनो चलि जेता! अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए। मेला-ठेलामे जहिना बाल-बोध खेलौना कीनैए आ खेलाइत-खेलाइत रस्तेमे फोड़ि लइए, सएह बुझथुन।"

मुदा बीचमे बैसल, जे क्षने किछ पहिने मुँह बन्न केने छेली, ओ फफैक उठली-

"आब, बाबाक कागत-पेन के छिनतै..!"

बेल सिर्फ ब्रह्मानन्दे बाबाक नइ छेलैन। परिवारक सबहक छल। माइक 'रोशन', बापक 'लल्ला', दादीक 'बौआ', बड़का भाइक 'वौका' इत्यादि सबहक अपन-अपन छल। सभ छल नहि, अखनो अछि। मालक घरमे दादीक बौआ ऐं-ऐं करैत गोबर-गोंत बुढ़िया माँकेँ देखैबते अछि, बिसरत ओइ दिन जइ दिन

दुनियाँकेँ बिसैर अपने विदा हेती...।

असमृतो तँ असमृति छी, ओ तँ कियो अपने जीता जिनगी धरिक ने गारंटी दऽ सकैए। हँ एहनो स्मृति तँ होइते अछि जे महाभारतक अभिमन्यु जकाँ बाल-बोधेक रूपमे ठाढ़ अछि। हमरो बेलक मृत्यु ओइ परिस्थितिमे भेल जइ परिस्थितिमे परिवार-समाजक बीच बेवस्थाक लड़ाइ फँसल छल। पोने दू बर्खक बेलबा किए माइक दुख बुझैत जे परिवारमे नारीक जिनगी अखन केते भुमकम जकाँ डोलि रहल अछि। मुदा बेलबो तँ बेलबा छी ओ तँ माएकेँ कहबे करत किने जे माए हम अचेत छेलौं जीवन-मरण नइ बुझलौं, तूँ सचेत हो जे भविसमे एहेन नइ हौउ।

विस्मित ब्रह्मानन्द बाबाकेँ देख बिन्दा बजली-

"खेलौना बनि आएल छल आ खेलौने जकाँ चलि गेल, तइले एते दुख-पीड़ा केलासँ की हेतह?"

चारि मास जेठ बहिनक बात सुनि ब्रह्मानन्द बाबा बजला-

"हमर बेलबा खेलौना नइ छल, ओ तँ दुनियाँक खेलक खेलाड़ी छल।"

तैबीच ब्रह्मानन्द बाबाक पत्नी कृष्णाकेँ हाथ पकड़ने पहुँचली। कृष्णाक मनमे अपन प्रश्न छल आ किशोरीक मनमे अपन विचार छेलैन। तैबीच बिन्दा तरकारी-रोटी सजल थारी किशोरी दिस बढ़ौली। किशोरी हाथसँ पकैड़ लेलैन। पकड़िते ब्रह्मानन्द बाबा बजला-

"पहिने बाल-बोधकेँ दियौ।"

निच्चाँमे थारी रखि किशोरी एकटा रोटी आ तरकारी कृष्णा दिस बढ़ौली। ओना देखा-देखी कृष्णो घटनाक पछाइत अन्न नइ खेने छल, माने भात-रोटी नै खेने छल। मुदा बिस्कुट आ दोकानक चटपटौआ विन्यास खा मनकेँ थीर तँ रखनहि छल। हाथमे रोटी लइसँ पहिने कृष्णा बाजल-

"बाबा, अपन रोशन बौआ झंझारपुर डॉक्टर ऐठाम गेल अछि किने?"

कृष्णाक बात सुनि ब्रह्मानन्द बाबाक छाती दहैल गेलैन। केना अबोध बच्चाक प्रश्नकेँ काटता! ओहो तँ बच्चाक ओ दृश्य–पिताक हाथमे झाँपल बच्चा मोटर साइकिलसँ डॉक्टर ऐठाम लऽ गेल छल–देखने रहए, तेकर पछाइत धिया-पुताक संग खेलेमे लगि गेल छल...।

ब्रह्मानन्द बाबाकेँ मनमे उठलैन- अपना संग बच्चोकेँ दुख-सन्ताप देब नीक नहि, बजला-

"हँ, रोशन बौआ झंझारपुर डॉक्टर ऐठाम गेल अछि। खाधिमे बौआ डुमि गेल छेलै किने..!"

अपन प्रश्नक उत्तर पेब बड़का बेलबा माने कृष्णा हाथमे रोटी लऽ खाए लगल। कृष्णाकेँ खाइत देख किशोरी ब्रह्मानन्द बाबाकेँ कहली-

“घरक गारजन भऽ अहीं कनबै तखन और लोक चुप रहत। अहाँ मन थीर करू।”

थीर होइते ब्रह्मानन्द बाबाक मनमे उठलैन- सुग्गा उड़ि गेल। आब केकरा पाकल लताम आ बैरक झाड़ परहक पाकल तिलकोर देब..!

❍

शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

बेटीक पैरुख

पचहत्तैर बर्खक फुलकुमारीक देहक पानि अखनो ओहिना जलजलाउ छैन जेना ढेरबामे रहैन, माने ढेरबामे जे चढ़लैन ओ अखनो चढ़ले छैन।

बैशाख मासक एगारह बजेमे मारन बाधसँ पुतोहुक संग घास नेने फुलकुमारी आँगन नहि जा सोझे मालक थैरक छाहैरमे आबि बैसली। छाहैरमे बैस अपन देहक थकानो हेट करए लगली आ गाइयो-बच्चाकेँ हिया-हिया देखए लगली। देखैत-देखैत जेना-जेना देहक थाकैन कमैत गेलैन तेना-तेना गाइक सिनेह मनमे उठैत गेलैन। उठैत सिनेहसँ सिनेहासिक्त होइत फुलकुमारी अपन दुनू हाथ जोड़ि आठ किलो दूधवाली गाएकेँ प्रणाम करैत पुतोहुकेँ कहलखिन-

"छोटकी, एक लोटा पानि नेने आबह।"

'छोटकी' माने भेल 'छोटकी पुतोहु', नाओं छिऐन जलेसरी। नि:सन्तान एवं बैधव्य जीवन-यापन करैत जलेसरी करीब चालीस बर्खक अछि। दुइए सासु-पुतोहुक परिवार छैन।

बच्चेसँ फुलकुमारी नैहरेमे रहल जइसँ सासुर बसैवाली औरतसँ बेसी बजैक संस्कार रहबे केलइ। ओना समाजमे बेटी-जातिक विचारकेँ कम आँकल जाइए जइसँ ओकर कटाहो बातकेँ तन्नुक बुझले जाइए। तन्नुक आँक रहने ने गड़ैक सम्भावना आ ने गड़ला पछाइत विसविसाइयेक।

फुलकुमारीकेँ दू सन्तान भेलैन, दुनू बेटे। जेठ जीबछ आ छोट राधेश्याम।

जीबछ नोकरी करए बम्बइ गेल। कपड़ाक एकटा कारखानामे नोकरी भेलै, तैबीच बिआहो भेलइ। बिआहक दू सालक पछाइत पत्नियोकेँ बम्बइये लऽ गेल। अखन जीबछकेँ चारिटा सन्तान–तीनटा बेटा आ एकटा बेटी–छइ। चारू हाइ स्कूल-सँ-कौलेज धरि पढ़ैए।

बम्बइ गेला पछाइत जीबछ चारि-पाँच साल तक गामकेँ बिसरल नहि। मासे-मास रूपैयो पठबै आ साले-साल एबो करइ। जीबछेक लाटमे राधेश्यामो बम्बइ गेल। ओकरो ओही कारखानामे नोकरी भेलइ। ओना, राधेश्यामकेँ बम्बइक पानि नइ पचलै, रसे-रसे रोगाए लगल। छह मास बम्बइमे इलाजो करौलक मुदा रोग कमलै नहि जे बढ़िते गेलइ। ओना, सेवो जइ रूपे हेबा चाही

से नै भेने निराश भऽ राधेश्याम गाम चलि आएल। जेहेन इलाजक आ पथ्य-पानिक जरूरत छेलै से गामोमे नइ भेने थोड़बे दिनक पछाइत रोधेश्याम मरि गेल।

राधेश्यामकेँ तीन साल पहिने बिआह भेले छेलइ। सन्तान-शखा एकोटा ने भेलै, तइ बिच्चेमे ई दुनियाँ छुटि गेलै, छुटि कि गेलै जे छोड़ि कऽ जाए पड़लै।

पतिकेँ मुइला पछाइत जलेसरी मनमे रोपि लेलक जे दोसर घर नइ जाएब। माने दोसर बिआह नइ करब। ओना समाजो तँ समाजे छी, जइमे सबहक अँटावेशो होइए आ सभ रंगक नियमो-बेवहार चलिते अछि। सभ नियम ई जे एहनो नियम ऐछे जे बिआहक पछाइत जँ पति मरि जाए तँ पत्नीकेँ दोसर बिआह वर्जित अछि। माने ई जे जीवन भरि विधवा बनि जीबह। ई भेल लड़की लेल नियम, मुदा ओहीठाम लड़का लेल एहेन नियम नहि अछि। ओ दोसर-तेसर कि जे दर्जनो बिआह कए सकैए।

तहिना समाजमे किछु जाति एहेन अछि जइमे लड़का-लड़की–माने बिआहक पछाइत पति-पत्नी–मे कियो मरौ, माने 'पत्नी' मरौ आकि 'पति', दुनूकेँ दोसर-तेसर बिआह करैक अधिकार अछिए। तैसंग ईहो होइते अछि जे जइ जातिमे दुनूकेँ माने जहिना लड़काकेँ तहिना लड़कीकेँ दोसर-तेसर बिआह करैक अधिकार रहितो जँ दोसर-तेसर नइ करए चाहैए तँ सेहो बड़बढ़ियाँ–माने नहियोँ कए सकैए। ओना चोरा-नुकी दुनूक संग चलिते अछि, माने जइ जातिमे लड़कीकेँ दोसर बिआह करैक अधिकार नइ छै, चोरा-छिपा कऽ ओहूमे कैये सकैए, मुदा से भेल समाजसँ छीप कऽ करब। हलाँकि समाजो तैपर सँ अपन नजैर छीपिये लइए आ छीपिते नहि अछि बल्कि छिपाएल धन जहिना लोक धीरे-धीरे बिसैर जाइए तहिना रसे-रसे बिसरियो जाइते अछि। मुदा तँए ई कहब जे नियम ढील भऽ बदैल गेल, सेहो नहियेँ भेल अछि। अखनो जीवित अछि आ कहिया तक जीवित रहत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

घास झाड़ब छोड़ि छोटकी पहिने सासुक आदेश पूरबए विदा भेली। कलपर पहुँच हाथ-पएर धोइ कऽ पहिने अपने भरि छाँक पानि पीब लेली। पछाइत, बैशाख मासक गरमाएल लोटा जे आँगनमे बैसल-बैसल तबि गेल छल, तेकरा कलपर आनि चिक्कनि माटि नहि छौरसँ मजली।

चिक्कनि माटिसँ नइ माजैक कारण भेलैन जे माटिक राखल ढेरी लग जलेसरी नइ गेली, कलक बगलमे राखल छौरक ढेरीपर नजैर पड़ि गेलैन, ओहीमे सँ एक मुट्ठी छौर लऽ लेली।

छौर-पानिसँ भीतर-बाहर रगैड़ते लोटाकेँ ताउ शान्त होइत-होइत सभ तामस मिझा गेल। तामस मिझाइते धुआइओ गेल। धुएला पछाइत कण्ठ

लगतक पानि भरि छोटकी सासुकेँ दइले बढ़ली, तैबीच शान्त भेल लोटा मने-मन छोटकीकेँ असीरवाद देलकैन जे ओ हमरा फुलकुमारी लग पहुँचबैत-पहुँचबैत कंचन बना देलक जइमे अमृत रूपी जल अछि। अमृतो तँ वएह ने छी जे जिनगी दइए। जखने मुहसँ प्रवेश करैत अमृत रूपी पानि नाभिकुण्ड लग पहुँचैए तखने ने शान्त-चित्तक किछु अवधि बढ़ि जाइ छै, जइसँ ऐगलो काजक मुहरी जागि-जागि जिनगीक संग चलैत रहैत अछि। सएह फुलकुमारियोक संग भेल। गाएपर नजैर अँटकौने फुलकुमारी मने-मन प्रणाम करैत बजली-

"हे लछमी माता! अहीं एहेन दाता छी जे अपने बच्चा जकाँ हमरो दुनू सासु-पुतोहुक रछिया करै छी।"

गाइक लक्ष्मी रूपकेँ देखते फुलकुमारी आराधना करए लगली, माने अपन कतर्व्य-कर्मकेँ अराधए लगली। तैबीच छोटकी पानि भरल लोटा नेने आबि लगमे ठाढ़ भऽ गेली। जेकरा फुलकुमारी नइ देख रहल छेली, किएक तँ आराधनामे नजैर तेना अँटैक गेल छेलैन जेना जीवन भेटला पछाइत एक संग मन-मस्तिष्क दुनू अँटैक जाइत अछि।

फुलकुमारीक बन्न आँखि देख छोटकीकेँ बुझि पड़लैन सासु ओंघा रहली अछि, सिनेह भरल स्वरमे बजली-

"माए, लगले आँखि लागि गेलैन?"

होइतो अहिना छै जे किछु भेटला पछाइत खुशीसँ आनन्दक ओंघी सेहो अबिते छइ।

निमग्न फुलकुमारी पुतोहुक बात सुनिते अकचका कऽ बजली-

"नहि! ओंघाइ नइ छी कनियाँ, गाइक रूइयाँपर नजैर पड़ि गेल छेलए।"

रूइयाँ देखब, माने दुधारू गाइक प्रमुख लक्षणकेँ देखब छी, ई बात छोटकीकेँ बुझले रहैन। बजली-

"घासो झाड़ब पछुआएले अछि।"

आशा भरल शब्दमे फुलकुमारी बजली-

"ऐठाम लोटा रखि दहक आ घास झाड़ए चलि जा।"

छोटकी सएह केलक।

पानि पीला पछाइत फुलकुमारीक नजैर फेर गाइयेपर जा कऽ अँटैक गेलैन। अँटैकते मन विस्मित हुअ लगलैन। विस्मित ई जे जहिना अपन जिनगी अछि तहिना ने गाइयोक अछि। ओना, दुनूमे ई अन्तर ऐछे जे धनक भण्डार रहितो गाएकेँ अपन जिनगीक रक्षा करैक लूरि-बुधि नइ छै तँए, ने अपने रक्षा

कऽ सकैए आ ने बच्चेक आ ने अपन दूधेक उपयोग अपनासँ कऽ सकैए। मुदा मनुख तँ से नहि छी। सभ किछु कऽ सकैए। तँए जँ दुनूक सम्बन्ध बनल रहत तँ एक-दोसरक आशापर असानीसँ जीवन-यापन कऽ सकै छी।

गामक बेटी फुलकुमारी। दू कट्ठा घराड़ी पिताकेँ रहैन। पिता–सिंहेश्वर–किसानी जिनगीसँ जुड़ल छला। खेत-बोनिहारक रूपमे जे सोल्हे बर्खक अवस्थामे सिंहेश्वर जीवन धारण केलैन ओ ता-जिनगी धारण केनहि रहला। किसानी जिनगीक अधिकांश लूरि सिंहेश्वरकेँ रहबे करैन। हर जोतब, रोपैन करब आ कमठौन करबक संग घर बन्हैक सभ लूरिसँ सम्पन्न छला।

सिंहेश्वरक पहिल पत्नी पहिल सन्ताने होनिहारिक समय मरि गेली, आ बच्चो माइये संग मरि गेल। परिवारमे दोसर-तेसर नइ रहने, असगरे सिंहेश्वर पेटक ओरियान करितैथ कि पत्नीक सेवा-टहल।

अपना आँखिसँ सिंहेश्वर पत्नीयोँ आ बच्चोकेँ मरैत देखने छला, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, सभकेँ जीबैक आशा रहिते अछि। ओना, समाजिक नियमो आ अपन टुटल मनोक चलैत सिंहेश्वर साल भरि तक उपारजनक संग अपने हाथे भानसो-भात करैत रहला। मुदा साल भरिक पछाइत समाजो दवाब दैत सिंहेश्वरकेँ कहलकैन-

"दुनियाँमे अहींटा केँ एहेन गति नहि भेल, बहुतोकेँ भेलैन। तँए जखन मनुखक जिनगी भेटल तखन मनुख जकाँ ने परिवार बना परिवारिक जिनगी जीब।"

समाजोक विचार आ अपनो जिनगीक खगता देख सिंहेश्वर दोसर बिआह केलैन। दू सालक पछाइत दोसर पत्नीसँ फुलकुमारीक जन्म भेल। तीन सालक जखन फुलकुमारी छल तखने मइटुग्गर भऽ गेल। माने सिंहेश्वरक दोसर पत्नी सेहो ऐ दुनियासँ चलि गेली।

दोसर पत्नीकेँ मुइला पछाइत सिंहेश्वर तेसर बिआह नहि केलैन। केतबो समाजक लोक रंग-रंगक तर्क दऽ बुझबैत रहलैन मुदा किनको बात नहि सुनला।

सिंहेश्वर दू-दूटा पत्नीक मृत्युक संग पहिल सन्तानक मृत्यु देख चुकल छला। दुनूक कष्ट-पीड़ा आँखिक सोझमे नचिते रहै छेलैन, तैसंग ईहो आशा मनमे जागिये गेल छेलैन जे जखन तीन बर्खक सन्तान ऐछे तखन वंशो तँ आगू बढ़बे करत। एकरे नीक जकाँ पोसब-पालब। पोसै-पालैमे चारि-पाँच बर्ख धरि किछु बेसी परेशानी हएत, सएह ने। हएत तँ हएत। जखन मनुख बनि धरतीपर जन्म लेलौं तखन जँ अपन भार अपने नइ उठा चलब, तँ जेकर आशा हम करब ओकरो तँ अपन जिनगी छै, अपन बाल-बच्चा छै, अपन परिवार छइ। सभ ने अपन-अपन परिवार चलबैमे लागल रहैए। आब तँ फुलकुमारी तीन बर्खक भेल,

छहमसिया बच्चा जकाँ तँ नहि अछि जे भरि दिन देह धरा राखए पड़त आ माइक दूधो दिऐ पड़त। अन्नो-पानिपर फुलकुमारी जीविये सकैए।

पाँच बर्ख टपला पछाइत फुलकुमारी आँगन-घरक किछु-किछु काज करए लगल। आठ बर्ख अबैत-अबैत भानसो-भात आ घरक आनो-आनो काज सम्हारए लगल। तैसंग सिंहेश्वर असगरूआ जिनगी जीबैक लूरिक अभ्यस्त सेहो होइत-होइत भाइये गेला।

बाल-विवाहक चलैन समाजमे सभ दिनसँ आबि रहल अछि। ओना, बाल-विवाहक प्रश्नपर समाजमे सभ दिनसँ विभाजन रहल आ अखनो अछि। बालो-विवाहक अपन उत्तर अछिए। उत्तर ई जे बेटा-बेटीक बिआह-दान करब माता-पिताक धार्मिक काजसँ जोड़ल अछि। धार्मिक काज भेल ओहन काज जे जिनगीसँ जुड़ल अनिवार्य काजक श्रेणीमे अबैत अछि। अनिवार्य तँ ऐछे जे वंशकेँ आगू बढ़ैक सीढ़ी छी। मुदा ओहन काज रहितो जँ माता-पिता बेटा-बेटीकेँ बीस-पच्चीस बर्खक जुआन बनबए चाहता आ बिच्चेमे अपने चलि जेता तखन जिनगीक काजक पूर्ति केना हेतैन। जँ पूर्ति नहि हेतैन तखन अधरमी तँ भेबे केला किने। जखन अधरमीक विचार मन मानि लेतैन तखन तँ नर्कक भागी भऽ गेला किने। एक तँ ओहुना कियो नर्क नहि जाए चाहैए, मुदा जँ कियो धोखा-धोखीमे चलि जाएत से आ बुझलमे जाएत से, दुनू एक रंग थोड़े हएत। जानि कऽ नर्क जाएब बेसी कष्टकर होइ छइ। तँए केकरो अपन मन जानि कऽ एहेन विचार देत? नहि देत।

ओना, समाजोक बन्धित चलैन आ आँखिक देखल अपन परिवारो तँ सिंहेश्वरकेँ छेलैन्हे, तँए सातमे बर्खमे बेटी–फुलकुमारी–क बिआह कऽ देलखिन।

आइये नहि पहिनौं लोक परदेश खटिते छला। कलकत्ताक पटुआक कारखानामे लड़काक पिता नोकरी करै छला आ बाल-बच्चाक संग पत्नी गामेमे रहै छेलैन। तँए ओहन परिवारकेँ परदेशी परिवार नहियेँ कहल जा सकै छल, तँए भीतर-बाहरक विचार नइ रहने सिंहेश्वरक कुटुमैती माने बेटीक बिआह ओइ परिवारमे भेलैन। ओना समाजक किछु विचारवानक विचार स्पष्ट रहैन जे ग्रामीण परिवेश आ शहरी परिवेशमे जिनगीक सभ कथुमे अन्तर आबिये जाइ छै, जइसँ केतौ-ने-केतौ जिनगीमे बेवधान उपस्थित होइते छइ।

ओना, आन कारण जे लड़काक पिताक रहल होनि मुदा मूल कारण छेलैन जे बारह घन्टा चटकलमे[42] काज केला पछाइत पान-सात गोरेक परिवार

---

[42] पटुआ-कारखानामे

शहरमे चलब कठिन भऽ जाइन। मुदा गाम तँ गाम छी, गाममे लोक नोनियोँ साग खा साए बर्खक जिनगी हँसैत-खेलैत काटिये लइए। मुदा जे हौउ, कलकतिया लोक तँ बरागत छेलाहे तँए आगू-पाछू किछु-ने-किछु जनिते छला।

फगुआमे लड़काक पिता–मोतीलाल–गाम एला। सिंहेश्वरक पिसियौत बहिन ओही गाममे बसैत, तँए हुनके अगुआइमे बिआहक गप-सप्प शुरू भेल। ओना, बहिनकेँ घटक नहियेँ कहि सकै छिऐन आ ने बिआह-दानक दलाल। ओ तँ घटकैतीक रस्ताक राही भेली। तहूमे ओहन राही जे राहगीर बनबैमे सहयोगी होइथ। ओना, एहेन सूत्र सूत जकाँ गाम-गाममे पसरल ऐछे आ कथा-कुटुमैतीमे सक्रिय रूपमे चलितो अछिए।

फुलकुमारीक बिआह नअ बर्खक विनाशक संग भऽ गेल। टुकधुम करैत विनाश गामक स्कूल धेने छल तँए नाम-गामसँ लऽ कऽ परगना तक बुझल रहइ।

सिंहेश्वर अपन बेटीक बिआह ओहन लड़कासँ करैक विचार मनमे रखने छला जेकर चमड़ी काज करै-जोकर होइ।

पाँच गोरेक संग सिंहेश्वर अपनो घर-वर देखए अन्तिम विचारक दिन मोतीलालक ऐठाम गेला। अखन तक पिसियौते बहिनक माध्यमसँ गप-सप्प होइत रहल छल। जइमे सहमतक झलकी तँ छेलैहे।

एक तँ ओहुना गामक ओहन बच्चा जेकर परिवारिक आमदनी कम छै, ओकर जिनगियो तेहने–माने वगे-वाणि आ रहन-सहन–रहल अछि। तहूमे कलकतिया परिवार तँ भाइये गेल छल तँए मनसँ सिंहेश्वर मानि लेलैन। ओना, ई प्रश्न पहिने उठि गेल छल जे लड़काकेँ जँ अपन नाम-गाम लिखल हेतै तँ कुटुमैती कैये लेब।

एक गोरे पितेक सोझमे लड़काकेँ नाओं-गाँओं लिखैले कहलैन, जे विनाशकेँ लिखल भऽ गेलैन। तैपर लड़काक पीठ ठोकैत हुनकर पिता ईहो आश्वासन दैत सभकेँ सुना देलखिन-

“बिआहक पराते लड़काकेँ कलकत्ता लऽ जाएब। ओतै पढ़ेबो-लिखेबो करबै आ चटकलमे काजो सिखेबै।”

विह्वल सिंहेश्वर आश्वासन दैत बजला-

“बैशाखमे काज[43] सम्हारि लेब।”

ओना मोतीलालक गीध-दृष्टि सिंहेश्वरक अढ़ाइ कट्ठा घराड़ी-बाड़ीपर

[43] वैवाहिक कार्य

अँटकल छेलैन, जेकरा ओ खुलि कऽ नहि बजै छला, तेकर कारणो छल जे चारि भाँइक भैयारीमे सतरह धूर घराड़ी अपना छेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ीकेँ घराड़ियो बास हएब कठिन छेलैन्हे। ओ समैयो नहियेँ छेलैन जे कलकत्तामे बासक चर्च-बिचर्च मनमे उठितैन। तँए सोलहन्नी गामेक आशा मनमे रहैन। ओना करवनोकाल खास कऽ जाड़क मासमे जखन चटकलसँ भरि देह पटुआक रूसी लगले डेरा अबैथ आ नहाइक समय रहै छेलैन, तखन मने-मन तामसो उठबे करै छेलैन जे जइ गाममे बसैयो-जोकर–ओना बसबक विराट रूप अछि, मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे रहै-जोकर जमीन घरक लेल–जमीन नहि अछि तइ गाममे रहिये केना सकै छी। ओना, तामस उठला पछाइत मोतीलालक मनमे ईहो एबे करै छेलैन जे जे भोज नइ खाइ ओइमे पारा मरौ आ जइ गाममे बसैयो-जोकर खेत नहि तइ गाममे साँझ-भोर नढ़िया-कुकुर भुकौ...। मुदा बेवस मनक बेवसी विचार कैये की सकैए। ओना करैले दुनियाँ बड़ीटा अछि, मुदा केनिहारो बड़ीटा हुअए तखन ने, से तँ बुझले बात अछि जे जँ कमेने होइत तँ गरिबोहोकेँ होइत जे भरि दिन कोदारि तमैए...।

बैशाख मास, फुलकुमारीक बिआह भेल। ओना गाम-घरमे–माने जैठाम फुइसिक घर अछि–बैशाखक लगन माने बैशाखमे बिआहक दिन खतरनाक अछिए। कखन हवा-बिहाड़ि उठि जाएत आ भानसेक आगिसँ घरो जरि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहियेँ अछि। मुदा फुलकुमारीक बिआहमे से नहि भेल। तीन दिन पहिने तेहेन निराउ बरखा भऽ गेल जे फागुनोक लगनक दिनसँ बेसी सोहनगर बना देलक।

एक तँ शहरी वातावरण दोसर पढ़ै-लिखैक सुविधा रहने मोतीलाल अपन बेटाकेँ मैट्रिक तक पढ़ा लेलैन। किछु-किछु अपन काजो, देखा-देखी सिखेबे केने छला तँए मनमे ईहो आशा रहबे करैन जे जखन चटकलक बिसवासू नोकर छीहे तखन धियो-पुताकेँ काज किए ने चटकलक मालिक देता। मुदा मनमे ईहो खरोंच उठबे करैन जे जखन अपने छेहा अनपढ़ छी तखन जँ लेबरक काज करै छी तँ बड़बढ़ियाँ, मुदा बेटा तँ पढ़ल-लिखल मैट्रिक पास अछि, ओकरा किए ने ऑफिसमे बाबूक काज हएत..?

विचार तँ मोतीलालक अनुकूले रहैन मुदा ई बात मनमे उठबे ने करैन जे जहिना घोंदा-घोंदे लेबरकेँ धिया-पुता सुतपुतिया भँट्टा जकाँ फड़ैए, तहिना जँ करखनो फड़ै तखन ने अँटावेश हएत, जँ से नइ फड़त तँ अपन मनक सपना सुतली रातिक सपना जकाँ फुइस हएत की नहि।

ओना, पेंशनक बेवस्था सेहो मोतीलालक मनकेँ भरने रहै छेलैन जे सेवा निवृत्तिक पछाइत जँ बेटा खाइयो-पीबैले नइ देत तैयो दुनू परानी ठाठसँ जिनगी

काटि लेब। तहूमे साठि बर्खक पछाइत ने रिटायर हएब। मुदा ई बात मोतीलाल बुझबे ने करैथ जे सेवा-निवृत्तिक पछाइत अदहा जिनगी आरो जीब, मुदा तइले ओहन काजो करैत देहक रक्षा केने रहब तखन ने, से तँ पटुआक रूस्सी रसे-रसे फेफड़ेमे बसि रहल अछि, तखन केतेटा औरुदा लऽ लऽ नाचब, से बुझबे ने वेचारा केलैन।

पचासे बर्खक अवस्थामे मोतीलाल मरि गेला, पेंशनसँ वंचित भाइये गेला। आजुक समय नहि छल जे अनुकम्पासँ दोसरो समांगकेँ नोकरी भेट जइतैन।

मुदा रच्छ रहलैन जे काजुल घरवाली रहैन जे अपन भार अपने उठौने छेली।

ओना विनाश सेहो उट्ठा काज शुरू कऽ नेने छल, जइसँ पिताक मृत्युक पछाइतो कलकत्तेमे रहल। मोतीलालकेँ मुइलाक साल भरिक पछाइत विनाशक दुरागमन भेल।

सासुरक परिवारिक स्थिति देख-बुझि विनाश अपने दिससँ दुरागमनक खर्च केलक। दुरागमनक पछाइत फुलकुमारी सासुर गेली, मुदा से वीध पुरबैले, मात्र सात दिन सासुरमे रहली।

सात दिनक पछाइत फुलकुमारी अपन पैत्रिक गाम चल एली। विनाश सेहो कलकत्ता गेला। खाली विनाशक माए–माने फुलकुमारीक सासु–अपन गाम धेने रहली।

सालमे एक मासक छुट्टीमे विनाश गाम अबै छला, जइमे दू-चारि दिन अपना गाममे रहै छला बाँकी समय सासुरेमे। कबैया-डोर रहने दू सालक पछाइत विनाश अपन गामक घराड़ी दियादक हाथे बेचि, माइयोकेँ सासुरे लऽ अनलैन।

दूटा बेटा विनाश-फुलकुमारीकेँ भेलैन। दुनूकेँ गामेक स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। दू सालक पछाइत विनाशक माए सेहो मरि गेली, जे सुख-सराध सासुरेमे विनाश केलकैन।

बाबन बर्खक अवस्थामे विनाशकेँ दमा रोग पकैड़ लेलकैन। एक तँ कलकत्ताक पानि जबदाह, दोसर दमा रोग, बेमारी बढ़िते गेलैन। अन्तो-अन्त चटकलक मालिक एक मासक दरमाहाक अतिरिक्त तीन हजार रूपैआ मिला अरतीस साए दऽ विनाशकेँ ताधरिक छुट्टी दऽ देलकैन जाधैर रोगमुक्त नहि भऽ जेता।

विनाशक रोग जड़ियाइते गेल, जइसँ कलकत्ता छोड़ि गामे आबि इलाज-

बात करए लगला आ आमदनी लेल एकटा लटखेनाक दोकान केलैन। मुदा से नइ चला सकला। नइ चलबैक कारण रहैन जे एक तँ शहरी वातावरणक अभ्यस्त, दोसर वेपार करैक लूरि नहि। ओना विनाश मैट्रिक पास रहबे करैथ, तँए मनमे भेलैन जे भलेँ कलकत्ता जकाँ कमाइ नइ हुअए मुदा ट्यूशन पढ़ा किछु कमा तँ लेबे करब।

दोकानक संग-संग विनाश आठ-दसटा बच्चाकेँ ट्यूशन सेहो पढ़बए लगला। वएह अधार आमदनीक अपन रहलैन, जइमे बेमारीक दवाइयो आ पथो-पानि चलब कठिन भाइये गेल रहैन। मुदा फुलकुमारी तँ मेहनती रहबे करैथ। एकटा निम्मन गाए सेहो पोसने छेली आ दू कट्ठा घरसँ बँचल जे वाड़ी रहैन तइमे तीमन-तरकारीक खेती तेना भऽ कऽ कऽ लइ छेली जइसँ खेनाइ-पीनाइक संग किछु-ने-किछु आमदनियोँ भाइये जाइत रहैन, जइसँ गुजर-बसरमे बेसी दिक्कत नहियेँ होइन।

गाममे रहलाक चारि सालक पछाइत विनाश मरि गेला। ओना फुलकुमारीकेँ सासुरक जे सुख होइ छै–माने परिवारसँ दियाद-वाद आ सर-समाजक–से नहियेँ भेटलैन। माने कहियो केकरो मुहेँ 'भौजी', 'काकी', 'दादी' नहि सुनि सकली। भौजी-काकी-दादी सासुर बसैवाली ने होइ छैथ, से तँ फुलकुमारी सासुरमे रहबे ने केलीह। ओना, परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिमे फुलकुमारी 'बहिन', 'दीदी' सभ दिन बनल रहबे केलीह।

जहिना जीवन चिन्हनिहार जिनगीक श्रमकेँ चिन्ह अपनाकेँ श्रमशील जिनगीमे पएर रोपि ठाढ़ होइत चलब सिखैए आ चलैत-चलैत डेगा-डेगी दौड़ए लगैए तहिना फुलकुमारी अपन जीवन-श्रमकेँ चिन्ह तहियेसँ दौड़ए लगली जहिया पति मरि गेलैन, एकटा बेटा मरि गेलैन आ दोसर बेटा अपन परिवार बम्बइये लऽ कऽ चलि गेलैन। ओना, फुलकुमारीक परिवार अखनो ओहिना भरल-पूरल छैन जेना पैछला पीढ़ीमे छेलैन। माने जहिना विनाशो भैयारीमे असगरे छला आ फुलकुमारियो असगरे...।

आइ भलेँ फुलकुमारी अपन विधवा पुतोहुक संग असगरे किएक ने जीवन-बसर कऽ रहली-हेँ मुदा बाप-पुरखाक घराड़ीपर तँ छैथे, तैसंग बम्बैयेमे किएन ने बसि गेलैन मुदा चारिगो पोता-पोतीक दादियो आ बेटा-पुतोहुक माइयो तँ वएह ने छैथ।

❍

शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

क्रान्तियोग

गामक हवा-पानि खा-पीब कऽ टहैल-बुलि जीवन काका दरबज्जापर अबिते पत्नीकेँ चौकैठ लागल ठाढ़ देखलैन। ओना मनमे पहिने ई उठलैन जे किछु बात परिवारक जरूर अछि जे पत्नी केबाड़क चौकैठ लागल ठाढ़ छैथ, नहि तँ अखन अँगना-घरक काजक बेर छी, कोनो काजमे लागल रहितैथ...।

मुदा लगले विचार बदैल गेलैन, बदैल ऐ दुआरे गेलैन जे जहिना कोनो नव चीज भेटलापर खुशी होइ छै जइसँ रंग-रंगक विचार मन: स्थितिकेँ सेहो खुशिया-खुशिया अपना रंगमे रँगैत रहैए, तहिना जीवन काकाकेँ भऽ गेलैन। दरबज्जाक ओसारपर चढ़िते बजला-

"पहिने एक गिलास पानि पिआउ, पछाइत चाह पीब। किछु विचार करबाक अछि।"

'विचार करबाक अछि' सुनि कामिनी काकीक मन पहिने ठमकलैन पाछू ठहकलैन, मुदा लगले पाछू उनैट तकली तँ बुझि पड़लैन जे किछु बात जरूर अछि। आन दिन अपना मने की विचार करै छला की नइ करै छला से कहाँ कहियो कहै छला। यहए ने हुकुम दइ छला जे अमुक काज करू वा अमुक काजक की भेल से कहू। मुदा 'विचार करबाक अछि' कहलैन हें..!

खुशीमे विनोद घोरि काकी बजली-

"हम कोन जोकरक छी जे विचार करब?"

पत्नीक बात सुनि जीवन कक्काक मनमे कनी कचोट जरूर भेलैन मुदा चोट लगलापर जेहेन मन चोटाइए से नहि भेलैन। अपनो मन गवाही देलकैन जे अखन तकक जिनगीमे पत्नीकेँ विचारवान बुझि विचारीए कहिया बुझि कोनो विचार केलौं? तँए पत्नी जे बजली से कोनो अनचितो तँ नहियेँ बजली अछि।

पत्नीक बातकेँ विचारमे विचरित करैत जीवन काका बजला-

"जइ-जोकर छी सएह ने दुनू परानी मीलि विचार करब।"

अपन उठैत जिनगीक रंग आ पतिक लबैत विचारक भंग देख कामिनी काकीक अन्तर्मन बिहुसि उठलैन। बिहुसिते आँखि उठा पतिक आँखिमे गाड़ैत मन मिलबैत बजली-

"चाहक ओरियान करि कऽ सभ किछु चुल्हि लग रखने छी। लोटामे

पानि सेहो आनि कऽ रखने छी। बैसू लगले नेने अबै छी। जाबे अहाँ पानि पीब ताबे चाहो बनि जाएत।"

नहलापर दहला जहिना फेकल जाइए तहिना सोलहन्नीपर बत्तीसअन्नी फेकैत जीवन काका बजला-

"शुभ काजमे बिलंम करब मूर्खता हएत। पहिने लोटा-गिलास नेने आउ, जाबे हम पानि पीब ओकर सुआद बुझब-परखब ताबे अहूँकें चाह बनि जाएत।"

अपन काजमे बिसवासक रंग चढ़बैत कामिनी काकी बजली-

"से किए ने बनत, भेल तँ दू गिलास दूध-पानि औटैक अछि।"

कहि कामिनी काकी आँगन दिस बढ़ली। चुल्हि लग लोटामे पानि रखले रहैन, लोटा-गिलास नेने काकी दरबज्जापर पहुँच पतिक आगूमे रखि देलखिन। ओना, मनमे नव-नव विचार जरूर उठैत रहैन मुदा चाह बनाएबकें जरूरी बुझि किछु ने बाजि चोटे आँगन घुमि गेली।

अदहा गिलास पानि पीबैत-पीबैत जीवन काकाकें विचारक तरंग तेना तरंगित कए देलकैन जे गिलास चौकीपर रखिते पैछला जिनगी दिस मन हुमैड़ कऽ घुमैड़ पड़लैन। मनमे उठलैन- अपन जिनगी आ अपना संग पत्नीक जिनगी आ तैसंग परिवारिक जिनगी...। मुदा अन्तहीन रस्ताक जहिना ओर-छोर नहि होइए तहिना जीवन कक्काक मनमे उठए लगलैन। दुनू परानीक बीच तीस बर्खक जिनगी छेलैन। मुदा अन्तहीनो रस्ताकें तँ लोक खँतिया कऽ खुटिया अपन-अपन रस्ताक सीमाकें तय कैये लइए।

अखन तक माने पचास बर्खक अवस्था धरि जीवन काका वएह जिनगी धारण केने आबि रहला अछि जे गाम-समाजक छेलैन। ओना, मनमे ई बात जरूर उठलैन जे अदहा जिनगी रीब-रीबे[44]मे चलि गेल। मिरचाइयेक गुण-सोभाव जकाँ ने मनुखोकें तँ अपन गुण-सोभाव होइते अछि। मुदा जे मनुख केलक-धेलक किछु ने आ खाइत-पीबैत, सुतैत-पड़ैत जिनगी बीता लेलक वएह जिनगी ने रीब-रीबाएले रहि गेल। जिनगी तँ ओ ने भेल जे अपन भरण-पोषण करैत किछु आगू धरि डेग उठबैत चलए। ओना डेगो-डेगोक अपन-अपन गुण अछि। जेना एक भेल आगू दिस उचित डेग बढ़ाएब आ दोसर भेल पाछू ससरब। मुदा बीचमे तेसरो तँ ऐछे जे ने आगू दिस बढ़ल आ ने पाछू दिस ससरल बीचमे ठमकल चलैत रहल। ओना, आगू दिस डेग बढ़ाएब आकि पाछू दिस ससरबक कारण अपन-अपन सेहो अछि, एके कारण दुनूक नहि अछि। आगू

---

[44] रीब-रीबक माने भेल- जहिना मिरचाइक गुण कड़ूपन होइ छै मुदा जँ ओइमे कड़ूपन नइ आएल रहल वा ओइमे कड़ूपन रहबे ने कएल सएह भेल रीब-रीब।

दिस बढ़ैक जहिना दुनू कारण अछि तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दूटा कारण तँ अछिए। माने ई जे जहिना आगू दिस उचित डेग बढ़बैक एक कारण भेल जे ओहन डेग जइमे अपना संग परिवारो-समाजक मंगल कामना निहित अछि आ दोसर अछि- जइमे केकरो मंगल कामना नहि भऽ अमंगले भेल। तहिना पाछू दिस ससरबक सेहो दू कारण अछिए। पहिल भेल बिना किछु केने-धेने ठाढ़ छी आ समय निकैल कऽ आगू दिस बढ़ि गेल आ अपने पछुआएल मुँह तकैत रहलौं। तहिना दोसर कारण ईहो तँ ऐछे जे समैक संग चलैमे पानि-पाथर आ बिहाड़िक एतेक चोट पड़ल जे लाखो चेष्टा केला पछाइतो जिनगीक डेग पाछूए मुहेँ घुसैक गेल। माने ई जे जइ साधनक संग डेग आगू बढ़ाएब ओ साधने छीना गेल आ समैक थपेर ओकरा थोपरा कऽ निच्चाँ उतारि देलक...। तही बीच चाह नेने कामिनी काकी पहुँचली। पहुँचते देखली जे पतिक मन उखड़ल-उखड़ल विरहीन जकाँ विरहाएल छैन।

मुदा लगले कामिनी काकीक मनमे एकटा नव विचार उठलैन। विचार उठलैन जे मारि खाएल वा चोटाएल पतिक पत्नीए एहेन औषधि अछि जे चोटक अनुरूप अपन भाव प्रदर्शित करैत ओइपर मलहम-पट्टी जेहेन कए सकैए, कियो दोसर तँ ओइ तरहक नहियेँ कए सकैए। कोखिक जनमौल माइयो तँ मात्र बेटाक बेथा देख अपन नयनधारमे मोनि फोड़ि बेथा बाँटै चाहै छैथ मुदा तीत रोगक दवाइ तीतेसँ छोड़ाएल जाए वा तीतक विपरीत मीठोसँ छोड़ाएल जाए ई तँ सोलहन्नी सम्बन्धपर निर्भर अछि।

चाहक गिलास जीवन काकाकेँ हाथमे पकड़बैत कामिनी काकी बजली-

"आन दिनसँ कनी बेसी चीनियोँ, चाहो पत्ती आ दूधो देल चाह अनलौं हेन, तँए कनी सुआदि-सुआदि पीबो करब आ रसिक जन जकाँ रसो ग्रहण करब।"

पत्नीक बात सुनि जीवन काका अपन मनक बेथाकेँ मनेक मनसँ मनबैत मुस्कियाइत बजला-

"अहाँ हाथक चाह जँ सुआदि-सुआदि नइ पीब तँ एहेन सुआदे केकरा हाथक चाहमे भेटत जे रस नइ बुझबै।"

अपन सुतरल विचारवाण देख कामिनी काकीक मन हलैस कऽ हरिया गेलैन, हरियाइते बजली-

"अपनो मन होइए जे जोड़ोजन एकठाम बैस संगे-संग चाह पीबितौं।"

विचरणक दुनियाँमे विचड़ैत जीवन कक्काक मन रहबे करैन, बजला-

"एहेन दिन कहिया पाएब जे जोड़जनक चाहो एकरंग रहत आ जोड़ी बनि

सुआदि-सुआदि चाहो पीब आ रसाएल गपो-सप्प करब।”

पाछू ससरैत माने विचारकेँ पाछू ससारैत कामिनी काकी बजली-

“अपना सोहंतगर बुझि पड़ैए?”

‘अपना सोहंतगर’ सुनि जीवन काकाकेँ विचारक बानि सुबानि बुझि पड़लैन। बजला-

“किए ने बुझि पड़त।”

नहलापर दहला फेकैत कामिनी काकी बजली-

“अपना जँ प्रेमवश कनी-मनी नीको लागत तँ परिवारो आ समाजो धुर-छी कहबे करत किने?”

डमहाएल-कोशाएल आम हौउ आकि लताम वा कोनो आने फल डमहेला पछाइत ओ पुन: खिच्चा नहि बनि आगू दिस बढ़ि बोनेबे-पकबे करैए। तैठाम जँ परिवारे माने परिवारेक लोक आकि समाजे जँ नेनमैत वा बलउमकी कहबे करत जे आगू खिच्चा बनत, आकि एहेन विचारकेँ जँ धुर-छीहे कहत तँ ओकरा मानबो तँ जीवन रेखकेँ पाछू दिस मोड़ब भेल किने..? परिपक्व होइत जीवन कक्काक विचार फुटि पड़लैन। फुटिते मुहसँ बहरेलैन-

“परिवारे आकि समाजे जेकरा धुर-छी कहि हँसैए, जँ ओकर गुण-दोषकेँ परखने कियो अपनाकेँ लोक-लाजसँ लज्जित बुझत तखन एको डेग आगू ससैर सकैए।”

ओना जेहेन विचार कामिनी काकीक मनमे तरंगित होइ छेलैन तेकर ठीक विपरीत पतिक बात सुनि मन डगमगेलैन। डगमगाइक कारण भेलैन- एक दिस पतिक विचार जे जीवन साथीक रूपमे हाथ पकैड़ माता-पिताक लगसँ अनने छैथ आ दोसर दिस अपन मनक विचार से उनैट रहल छेलैन जे माइयो-बाप तँ स्वेच्छासँ दान-सरूप जीवन दान देने छैथ, तैठाम पति छोड़ि दोसर के अछि, जिनकर विचार नहि मानि, दोसराक हँसी-चौलकेँ लोक-लाज माने अपन जिनगीक लाजकेँ अपने किछु विचारणे बिना मानि रूकबो तँ धोखा छी। हमर तँ सभ किछु यएह ने छैथ। निधोकसँ डेग उठाएब तखन ने हएत जखन अपन ऐगला समय लेल अपन आगूक ओहन डेग तेना उठाबी जे गछारल जिनगीकेँ ठेलैत-तोड़ैत वा कुदि कऽ टपि जाइ।

मनक कलशैत विचारमे विचड़ैत कामिनी काकी बजली-

“जखन एते प्रेमसँ चाह बनौने छी, तैबीच जँ कोनो कविकाठी फेक चाह पीबैक मनकेँ दुरि कए दिऐ, ई हमरा सन लोकक लेल केहेन हएत?”

कामिनी काकीक सहगर विचार देख जीवन काका बजला-

"जँ गपे-सप्पमे चाहक चाह आ ओकर गुण-सुआदकेँ पानि बना देब सेहो केहेन हएत?"

ओना कामिनी काकी आ जीवन कक्काक बीच अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओ ने तीते रहलैन आ ने मीठे बल्कि तीत-मीठ दुनू रहलैन जइसँ एक वस्तुक गुण जे हजारो-लाखोक संख्यामे किए ने हुअए मुदा ओकर रूपो, गुणो आ सुआदो तँ एके रंग ने होइए। जेना मालदह आम अछि। एक गाछक छी, संख्यामे पाँच अछि। ओइमे सँ एकटा मिथिलांचलमे खेलौं, दोसर असाममे खेलौं, तेसर मद्रास वा केरलमे खेलौं, चारिम गुजरात वा राजस्थानमे खेलौं आ पाँचम पंजाब वा कश्मीरमे खेलौं, की ओकर गुण-सुआद जगह बदलने बढ़ैत थोड़े जाएत आकि वएह रहत जे मिथिलांचलमे छल। एकर माने ईहो नहि जे मिथिलांचलेक मालदहमे ई गुण छइ। ई गुण सभ ठामक सभ वस्तुमे अछि...।

चाहक गिलास ठोरमे सटौने कामिनी काकी जीवन काका लग पहुँचली। ओना कामिनी काकीकेँ चाहक गिलासमे मुँह सटौने देख जीवन कक्काक मनमे थोड़ेक कुवाथ भेबे केलैन। कुवाथ ई जे चाह कि कोनो पानि छी जे चुल्हि लगसँ पीबैत-पीबैत दरबज्जा धरि भरि पोख पीब लेती। ई तँ चाह छी, एक घोंट पीलौं ओकर सुआद बुझलिऐ, ताबे चाह ससैर कऽ पेटमे गेल जइसँ मनमे फुहरामी जागए लगल। फुहरामीकेँ जगिते मनमे फरहर विचार उठए लगल।

ओना कनी-मनी जीवन कक्काक मन कड़ुएलैन जरूर जइसँ क्रोधक बिनबिनी जगलैन मुदा मन तँ फुहराम रहबे करैन। क्रोधकेँ घोपैक विचार करब मनमे फुटलैन। विचार फुटिते मन विचरण करए लगलैन जे क्रोध करब नीक कि अधला? क्रोध तँ केतौ बाहरसँ लोकमे नइ अबैए, ई तँ लोकक मनमे सदैत जगल रहैए जे सभमे रहबे करत आ रहिते अछिए। मुदा तैबीच एकटा विचारणीय प्रश्नो तँ ऐछे जे जँ क्रोध सोल्होअना अधले छी तखन लोक किए ने ओकरा सामुहिक रूपमे पानि बहैक नालीमे वा कचड़ामे फेक दइए? प्रश्न अछि क्रोधक रूपकेँ देखब। मनक विचार कहियौ आकि शरीरक ऊर्ज-शक्तिक उपज कहियौ मुदा क्रोध तँ छी जरूर। मुदा ओकर सीमा-सरहद की अछि आ केते अछि तेकरा तँ देखैये पड़त। एक दिस क्रोध मनक संकल्प शक्तिक प्रहरी छी तँ दोसर दिस पोखैर-झाँखैर आकि धार-समुद्रमे डुमबैबला सेहो तँ छीहे। तँए क्रोध अज्ञानीक अज्ञान पैदा करैबला छी आ ज्ञानीक ज्ञान संकल्पक संगी सेहो छीहे। तँए क्रोधसँ क्रोधी नहि बनि, क्रोधी जिनगी धारण करब, जे जिनगीक पथकेँ सेहो प्रदर्शित करैए।

रसे-रसे मनक कुवाथसँ जे क्रोध चढ़ि रहल छेलैन से समन हुअ लगलैन। समन होइते–माने क्रोध कमिते–कक्काक मनमे उठलैन जे जहिना जाँतमे, जइमे

तर-ऊपर दूटा चक्की होइ छै, दू चक्की रहितो बीचक जे कील होइए ओ एकटाकेँ सक्कतसँ पकड़ने रहैए आ दोसरकेँ ढील रखि फुह खेलाइ-ले छोड़ि दइए। तही बीचमे ने पीसनिहारि वा पीसनिहार बाम हाथसँ हथरा चलबैत दहिना हाथे ओइमे झीक दइए। मुदा ओ तँ रहैए अन्नक झीक तखन हमरा जे झीकैए, माने हाथसँ जे झीक कऽ हथराकेँ चलबै छी ओ की भेल? मुदा लगले जीवन कक्काक मन मानि लेलकैन जे एतेटा जिनगी-ले जँ जातक झीका-झिकीमे लगि जाएब तँ जिनगी ससैर कऽ पहाड़पर सँ निच्चाँ खाधिमे खसि पड़त। तँए दहिना हाथे झीक देलौं आकि बामा हाथे, माने जातमे अन्न देलौं, एहेन-एहेन खोंच-खाँचकेँ विचारेसँ सेरियबैत चलब नीक। जखने एहेन-एहेन विचारकेँ सेरियबैत चलब तखने भाकुर माछ जकाँ सुरकुनियाँ मारि चलि सकै छी, नहि तँ छोट-छीन रहितो इचना माछ जकाँ खढ़े-पातमे तेना ओझरा जाएब जे जेतए-सँ चललौं तेतइ रहि जाएब..!

मने-मन जीवन काका सामंजस करिते छला कि दुनू गोरेक गिलासक चाह सठि गेलैन। चाह सठिते जीवन काका कामिनी काकीक हाथमे खाली गिलास पकड़बैत बजला-

“अहींक लगाएल पानो खाएब।”

‘पानो खाएब’ सुनि कामिनी काकीकेँ सुतरलैन। बजली-

“सासुरमे नइ कहियो पान लगेलौं तँ की बुझै छी जे पान नइ लगबए अबैए।”

कामिनी काकीक बात तँ ओते कटुगर नइ रहैन मुदा मनक जे आवेग रहैन–माने बजैक जे प्रवाह रहैन–तइसँ बुझि पड़लैन जे प्रवाहित जरूर छैथ। तँए प्रवाहित प्रवाहकेँ अपना दिस मोड़ैत जीवन काका बजला-

“अनेरे ने अहाँ मीठोकेँ तीत बनबए लगै छी। हमर विचार अछि जे जहिना हम पान लगा खा मुँहकेँ लाल बना मुँहक लाली बनौने छी तहिना अहूँ जँ बना लेब तखने ने तोता-तोती जकाँ लाल-लाल लोलक मिलानी करैत ललका तिलकोर ताकबो करब आ देख-देख खेबो करब।”

ओना जीवन काका अपना सुढ़िये बजैत रहैथ मुदा कामिनी काकीक मन जीवन कक्काक ‘पान लगाएब’ सुनि मोरनी जकाँ मुड़ि गेल रहैन। तँए मने-मन सोचए लगली जे नैहरमे पान तँ जरूर लगबै छेलौं। देव स्वरूप पिताकेँ बुझै छेलिऐन, जन्मदाता सेहो छला, हुनका पान लगा खुअबै छेलिऐन, मुदा ऐठाम तँ दुनू परानी मीलि ने तेसरक जन्मदाता छी तैठाम तँ अनाड़ी छीहे। अनाड़ी ई जे ओहन पत्नी जे ने पान लगबै छैथ आ ने खाइ छैथ...।

बजली-

“किए ने पान लगा कऽ खुआएब। मुदा लगाएब सोझहामे। पहिने गिलास आँगनमे रखने अबै छी।”

ओना, जीवन कक्काक मनमे ठहकलैन जे पत्नी सोझहामे पान लगौती आ जँ एक्के खिल्ली हमरेटा-ले लगबैथ तखन की करब? ओ तँ पान नइ खाइ छैथ..! मन आगू बढ़ि अखाढ़ मासपर गेलैन। केना धु-धु जरल जेठक रौदमे तपल धरती अखाढ़क पानिक फुहार पड़िते फुहराम भऽ सृजन शक्ति सिरजबैत सृजन करए लगैए आ जरैत धरती हरियाए लगैए। ओना तीन मौसमक बीच धरतीकेँ छह रूपक रूपो आ रँगो बनैए, मुदा छबोक अपन-अपन गुण धरमो छै आ रूप धरमो छइहे। जइसँ रंग-रूप एक रहितो गुण-रूपमे अन्तर आबिये जाइ छइ। जहिना जाड़क मौसमसँ निर्मित गरमी मासक पहिल रूप आ अपन बितौल पछातिक जिनगीक रूपमे अन्तर आबिये जाइए, तहिना गरमीसँ बरसात आ गरमी-बरसातक बीचक जे मधुमास अछि, भलेँ ओ जाड़-गरमीक मधुरससँ भिन्न परिस्थितिमे किए ने पैदा भेल हुअए मुदा छी तँ ओहो मधुमासे। तहिना जाड़-बरसातक बीचक सेहो अछिए...।

गिलास धोइ कऽ रखि कामिनी काकी लफरल आँगनसँ दरबज्जापर आबि धमकली-

“लाउ कहाँ अछि पानक समचा।”

गमछाक खूटमे बान्हि जीवन काका पानक सभ समान रखने रहैथ, कन्हापर सँ गमछा उतारि, खूटमे बान्हल पोटरी खोलि आगूमे चौकीपर रखि देलखिन आ अपने कनी पाछू धुसैक देवालमे ओंगैठ गेला।

आगूमे पानक सभ समचा रखि सोझा-सोझी बैस कामिनी काकी पानक पन्नी खोलि पान निकालि एक खिल्ली पातक बैसार केलैन। ओना मनमे ई जरूर रहैन जे देखिऐ अपने की बाजि रहला अछि। तँए पानक खिल्ली माने पात बैसा कामिनी काकी जेना किछु बिसैर गेल होथि तहिना पान छोड़ि उठि कऽ आँगन दिस बढ़ली।

देवालमे ओंगठल जीवन काका आगूमे पसारल पानक पात देख मने-मन विचार करए लगला जे जखन पति-पत्नीक बीच विषमता रहत, जे जीवन संगिनी सेहो छैथ, तखन दोसर-तेसरक बीच केना नइ रहत। एहेन खाइ[45] तँ जिनगीक क्रियामे अनेको अछि। जाबे तक एहेन-एहेन खाइ बनल रहत ताबे तक चौमास खेत जकाँ समतल समभूम केना बनत? आ जाबे से नइ बनत ताबे समरूप

[45] खाधि

समउपज केना उपैज सकैए। माने ई जे जाबे तक एक-दोसराक बीचक विचार समतल नइ हएत, एक गहराइ नहि बनत, ताबे तक समरूप विचार मनमे केना उठत आ ओकर समरूप निर्णय करैत समतल बाट पकैड़ आगू केना बढ़ि सकब? संगे-संग आगू बढ़ैले तँ एकरूपताक खगता अछिए। जँ से नहि हएत तँ अनभुआर जगहमे आकि कोनो समस्या एलापर जँ एकरूप भाइयो सकै छी तँ ओहन अपरिचित जगहमे तँ एकरूपता भँग भाइये जाएत जइसँ संगपनामे विघ्न-बाधा उठबे करत। जखन चलैक बाटमे–माने जिनगीक संग चलैमे–विघ्न-बाधा उपस्थित हएत तखन चलब तँ दुष्कर भाइये जाएत। असकर चलब, दोसकर वा दसकर चलब आ दुष्कर चलबमे अन्तर अछिए...।

मुदा जीवन कक्काक मनमे लगले उठलैन जे अखन जे परिस्थिति आगूमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओकरा सोलहन्नी मानियोँ लेब धड़फड़ी हएत। जँ पानक पात पसारि चून लगौने रहितैथ तखन थोड़-थाड़ मानलो जा सकै छल मुदा अखन तँ पहिलुके डेग उठौलैन अछि, जइमे अवसरो अछि, माने दोसर खिल्ली पसारैक-बैसबैक, तखन किए ने पत्नियेँपर अखन रहए दिऐन जे आगू की कए रहली अछि। जँ सुहरदे गतिये दोसरो खिल्ली बैसौती तँ बड़बढ़ियाँ। जखन चाह संगे पीलौं तखन जँ पाने खाएब तँ ई कोन बड़का मतहानि भेल जे मनहानि हएत।

मने-मन जीवन काका अपन हारि-जीतक विचार करैत चुप-चाप आँखिकेँ अपन छोट करैत माने दुनू पीपनीकेँ तिरछियबैत चिन्तक रूप जकाँ देवालमे ओंगठल पत्नीक प्रतीक्षा करए लगला। तैबीच आँगनसँ कामिनी काकी सेहो पहुँचली। पहुँचते अपन जगह पकड़ली–माने पहिने जेना बैसल छेली तहिना बैसली। बैसते जेना सभ किछु बिसैर गेली तहिना पानक पन्नीकेँ हाँइ-हाँइ मोड़ए लगली। ओना, मनमे ई बात जरूर नचैत रहैन जे देखिऐ, अपना बेरमे पति केते इमानदार छैथ। अनका तँ सभकेँ सभ कहैए। कहलो गेल अछि जे 'पण्डित होई जो गाल बजाबा।' गाल बजाएब अलग भेल आ गाल भरब अलग भेल। पान लगा पतिकेँ देबैन, ओ हमरे लगौलहा पानसँ अपन गाल भरि लेता मुदा हमर गाल..?

ओना, जीवनो काका गबैद कऽ गबदियाइत गबदी भरि पत्नीक लीलाभूमि देखए चाहै छला मुदा कामिनियोँ काकी तेहने शिकारी जकाँ शिकार पसारली जे शिकार केकर छी आ शिकारी के अछि ई बुझब कठिन हुअ लगल। माने दूटा शिकारी जँ कोनो एकटा शिकारपर वाण फेकए आ दुनू तीरक बीच तिरियाइत शिकार खसए तँ ओइठाम निर्णय करब कठिन भाइये जाइए। जेना राणा प्रताप दुनू भाइक बीच भेल रहैन...। तैबीच कामिनी काकी दोसर वाण छोड़ैत बजली-

“पानमे दइले जे चून रखने छी, ओ तेहेन मरचून जकाँ बनि गेल अछि जे पातमे लागबो कठिन अछि तँए कनी पानि देने आँगनसँ अबै छी।”

पत्नीक बात सुनि जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे किछु बाजी। बाजी ई जे कहिऐन चाह भेल इच्छा आ पान भेल पेनाइ, माने इच्छाक पूर्ति। मुदा फेर लगले मन मनाही केलकैन जे अखन परीक्षाक घड़ी अछि तँए राजेन्द्र बाबू जकाँ रस्तामे नाच देखब समय नोकसान करब हएत। भाय जखन परीक्षा दइले विदा भेलौं तखन समैसँ पहिनहि जँ नहि पहुँचब तँ अपनकेँ तैयार केना बुझब। ई तँ नहि जे जेना लोक बजैए जे ‘भोजक बेर कुमहर रोपने काज थोड़े चलत।’ मुदा जँ अही विचारकेँ ऐ रूपे राखल जाए जे भोजमे कुमहरक तरकारी वा तीमन बनिते ने अछि। तखन ने कुमहरक संग न्याय भेल, से तँ नहियेँ अछि...। विचारक बोनमे तेना जीवन काका ओझरा गेल छला जे पत्नीक बात अनसुनियेँ रहि गेलैन। माने मने-मन जीवन काका विचारिये रहल छला तैबीच कामिनी काकी चूनमे पानि दइले आँगन चलि गेली।

कामिनी काकीकेँ परोछ भेने माने दरबज्जासँ आँगन दिस बढ़ने जीवन कक्काक मनमे दोसर विचार फुनफुना कऽ फुनकलैन। फुनैकते विचारए लगला जे पानक जे सरंजाम अछि–माने पात, चून, खएर, सुपारी, जर्दा इत्यादि–ओ तँ परिवारक आमदनीक खर्च भेल, जे दुनू परानीक भेल, मुदा खेबाकाल हम खाएब आ पत्नी नइ खेती, ई तँ सोझा-सोझी अनुचित भेल। पान कि कोनो दवाइ छी जे रोगी खाएत तँ रोग भगतै आ निरोग खाएत तँ रोग बढ़तै।

तैबीच कामिनी काकी चूनमे पानि देने दरबज्जापर पहुँचली। दरबज्जापर पहुँचते जीवन काका कनडेरिये आँखि पत्नीक मुँहक चुहचुहीपर देलखिन। ओना, कोनो काज करैक तीन अवस्था होइए आ तीनू अवस्थाक चुहचुही सेहो तीन रंगक होइए। पहिल जँ काज सफलपूर्वक होइक संभावना रहल तखुनका चुहचुही, दोसर काज सफल-असफल हेबाक संभावना जाबे नइ बनल रहल तखुनका चुहचुही आ जखन काज सफल नइ होइक संभावना स्पष्ट भऽ गेल रहल तखुनका चुहचुही...।

ओना, कामिनी काकीक चुहचुही देख जीवन काका बुझि गेला जे पत्नीक चुहचुहीसँ साफ झलैक रहल अछि जे शिकार हुनका हाथ छैन। माने पत्नीक सफल विचार छैन।

जीवन कक्काक मनमे लगले दोसर विचार जगलैन। विचार जगिते बिसवास सेहो जगलैन। बिसवास ई जगलैन जे जहिना चाहो पीबैकाल कहने छेलिऐन जे दुनू गोरे संगे-संग एकठाम बैस चाह पीब। जखन एकरूपताक प्रस्ताव रखि दुनू गोरे संगे चाह पीलौं, तखन चाहक पछातिक ने पान भेल।

जखन हुनको बुझले बात छैन तखन जँ पानमे कटौती करती, माने हमरा-ले लगौती आ अपना-ले नइ लगौती, तइमे हमर कोन दोख। किए ने हमहीं छातीपर चढ़ि फटकारि कऽ कहबैन जे 'यएह अहाँक इमान छी, जे अपनो हक हिस्सा छोड़ि कऽ भागि रहल छी। जखन अपने हक-हिस्सा छोड़ि कियो पड़ा जाएत तखन दोख केकर।

अपन सुतरल विचारक मथनसँ जीवन कक्काक मन कलिएलैन। कलियाइते मनक विचारकेँ मनेमे रससँ रसरसबैत गुड़-चाउर फाँकए लगला।

पानमे चून लगबैसँ पहिने कामिनी काकी जीवन काका दिस आँखि उठा कऽ तकला जे किछु बाजि रहला अछि कि नहि। ओना, जीवन कक्काक मन मनेमे मन्हुआ कऽ मुरझाए लगलैन। एकटा चूक अपनो जीवनमे जरूर भेल अछि। ओ ई जे अखन धरिक जिनगीमे आदेश दैत रहलयैन जे अमुक काज करू, अमुक काज नइ करू। मुदा अपना विचारमे केना एहेन विचार-विचरण अबितैन जे अपने ई बात बुझए लगितैथ जे अमुक काज करैक अछि आ अमुक काज नइ करैक अछि। ई तँ चिन्तनक अतल तल ने भेल जे अखन तक छुटल रहल! खाएर जे रहल, पाछू उनैट देखए लगब तँ फेर सम्बन्ध पछुआ जाएत। तँए नीक हएत जे विचारक उत्स केना पत्नीक मनमे रोपि दिऐन जे स्वयं ओ पत्नीक रूपमे ठाढ़ भऽ चलए लगती। अगर पति अपनाकेँ पतित्वक रूप धड़ि-पकैड़ चलैथ आ पत्नी जँ अपन पत्नीत्वक रूपक धड़ि-पकैड़ चलैथ तँ जिनगीमे दोषारोपण केतए हएत। जँ एक-दोसराक बीच दोषारोपण नइ हएत तखन दुषित मन केना बनत। आ जँ दुषित मन नहि बनत तँ जिनगी दूषित भऽ दुखित केना हएत..!

जीवन कक्काक मन कलशलैन, कलैशते बजला-

"चाहे-पानमे दिन बिता लेब तखन तँ भेल जिनगीक मोटा उठाएब आ मोटेक विचार करब। केतेकाल भऽ गेल कहना जे किछु विचार करब अछि।"

पतिक बात सुनि कामिनी काकी अपन देहक पानि जगबैत बजली-

"आब पानक खर्चा बढ़ि जाएत।"

पत्नीक बात सुनि जीवन काका बजला-

"जाबे पानक खर्च नहि बढ़ाएब ताबे मुँहमे लाली केना औत। आ जाबे मुँहमे लाली नइ औत ताबे जिनगीकेँ जिनगी केना बुझबै।"

ओना जीवन कक्काक विचार कामिनी काकी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा भगवानक मन्दिरक पुजारी जकाँ अपनाकेँ समर्पित करैत माने तियागक पराकाष्टा देखबैत बजली-

"अहीं ने हमर सभ किछु छी। अहींक आश्रयमे ने हमहूँ बसब।"

पत्नीक सिनेहसँ बोझिल बदलाएल बादल जकाँ विचारक रूप देख जीवन काका बजला-

"जाए दियौ, जहिना समैकेँ तीत-मीठ सुआद नहि बुझि गेमेलौं तहिना बुझियौ जे जिनगियो गेल। मुदा आब से नहि, आइ जिनगीमे किछु एहेन काजसँ संकल्पित हेबाक अछि जइसँ पति-पत्नीक पहचान बनए।"

हँसैत कामिनी काकी बजली-

"तइले कोनो हाथ थोड़े पकड़ै छी, सदिकाल तँ हाथ पकड़िये चलए चाहै छी किने, जहिना माता-पिता हाथ पकड़ा अपना घरसँ विदा केने छला तहिना पकड़नहि छी आ पकड़नहि रहब।"

❍

शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017

त्रिकालदर्शी

मौसम बदैलते मौनसुनक मन बगैद गेल। ओना अछैते आमक बगिया रहितो भूखले रहल। मुदा भूखो तँ भूख छी, जखने पेटमे लहैर पैसत कि बकबकी शुरू हएत। भलेँ बकैमे कियो बकैन जाइए आ कियो बक्ता बनि जाइए। बकनाइक माने भेल ऐ साल[46] आम नइ फड़ल। हजारो बीघाक उपज मारल गेल। उत्पादनक संग ओहन वस्तुक ह्रास भेल जेकरा फल कहै छिऐ आ ओ शरीरक मात्र पेटभरा भोजनेटा नहि, पौष्टिक आहार सेहो छी। मुदा तँए कि ओ फल नइ फड़ैक कारण कहत? नहि, ओ कहत जे लोक तेते ने पपीयाह भऽ गेल अछि जे सभटा अमृत फल नर्क दिस जा रहल अछि...। ओना, विचारकेँ रहस्यपूर्ण मानलो जा सकैए मुदा जखन लोक रहस्य गढ़ैक लूरि सीख लेत तखन ने रहस्यक रहस्य बुझत। से तँ अछि नहि, अछि तँ ओहन लोक बेसी जे खेत रहितो पड़ा कऽ नोकरी करए चलि गेल आ खेत रहि गेलै गाममे। जखन खेत छोड़ि पड़ा गेल तखन ओइ खेतक जे भवितव्य छै सहए ने हएत। तँए जिनगी भरिक एक्के बेर खेती करैक खियालसँ आम-कटहरक खेती कऽ लेलक। आम खाइले आ मचानपर बैस बरहमासा गबैले दस दिन गाम अबैए। मुदा गाममे ओहन लोकक कमियोँ तँ नहियेँ अछि जे गामक उन्नैत नइ चाहैए। भलेँ ओ ऐ बातकेँ बुझैत हुअए वा नहि बुझैत हुअए जे बेकतीक विकास मात्रसँ देश वा गामक विकास नहियेँ हएत, जाबे कि ओकरा सामुहिक-समाजिक रूपमे नइ आनल जाएत।

बरसाती मौसमक आगमन होइते बरसा तेना झड़झड़ा गेल जे बाढ़िक रूप पकैड़ लेलक। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन जे जँ अदरे नक्षत्रमे भूमि भरि जाए तँ ओ नीक भेल। मुदा ऐठाम प्रश्न उठैए जे भूमि भरैक की रूप। भूमि अनेको किस्मक अछि। केतौ पोखरिक रूपमे अछि तँ केतौ डोह-डाबर आ कोचाढ़िक रूपमे। केतौ चौरक रूपमे तँ केतौ नीचरस जमीनक रूपमे अछि। जँ चौर वा नीचरस जमीन अगते पानिसँ भरि जाएत तखन ओइ खेतकेँ अबादि केना सकै छी। जेकर अनेको कारणमे बीआक अभाव सेहो अछिए। ऊपरका भूमि जे खेतीक लेल अछि ओकरा अबादैले जँ भूमि भरत तँ नीचला खेत डुमि

---

[46] एक्के सीजन आम फड़ैए तँए साल

जेबे करत। मुदा जे हुअए आइ हम एकैसम सदीक किसान छी। हमरा बीच साइबेरियासँ लऽ कऽ आस्ट्रेलियाक सहारा तक आ जापानसँ लऽ कऽ चीन तकक खेतीक जानकारी अछि। तैठाम अपन स्थिति देखैत ने अपनो सभ करब।

अधिक बरखा भेने गाममे पानि जबैक गेल। पानिक निकासक समुचित बेवस्था नहि। तैसंग धार-धूर बीचक गाम छीहे। ओना हमरा गाममे नामित धार एकोटा ने अछि, खाली एकटा चरिमसिया सुपेन[47] अछि। मुदा ओहो कनियेँ-मनियेँ सीमाक भीतर घुसल अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे चारि कोस पूब कोसी आ दू कोस पच्छिम कमला बीचक गाम छीहे। तँए दुनूक भीतर जे जटा-जूट भेल भुतही बिहूल, गहुमा, बलान इत्यादि धार नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तँए सोलहन्नी धारक कातक गाम नहियोँ तँ धारक पेटक गाम कहले जा सकैए। ओना गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछिए। भिन्न ई अछि जे कोनो गाममे नीचरस जमीन कम अछि आ ऊचरस बेसी अछि। तैसंग उत्तरसँ दच्छिनक ढलान जमीनक अछिये जइसँ उत्तरमे नेपाल तकक पानिक बहाव भाइए जाइए। हमर गाम एक तँ सघन अवादीबला गाम छी जइ अनुपातमे जमीन कम अछि। तैसंग गामक जे बनाबट अछि ओ विचित्र अछि। गामक चारूकात चौर जमीन अछि, जे गामक कुल खेती-जोकर जमीनमे अदहासँ बेसी अछि। ऐ बेर अगते बरखा भेने गामे जलोदीप भऽ गेल। संगे बाहरी पानिक आमदनी सेहो भेबे कएल। जइ अनुपातमे पानिक आमदनी गाममे भेल तइ अनुपातमे निकास नइ अछि जइसँ पनरह दिनसँ गामक समुच्चा खेत डुमल अछि।

गामक दशा देख अपन बेथाकेँ सामुहिक बेथा मानि सवुर केनहि छी। ओना गामक खेत-पथार डुमने सबहक बेथा एके रंग नइ अछि। कम-बेसी तँ अछिए। माने ई जे जे परिवारक संग बाहर जा नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा, जे गामेमे रहि नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा आ जे सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीब रहला अछि हुनकर बेथामे अन्तर अछिए। एहने लोक–माने सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीनिहार–देवी काका सेहो छैथ।

ओना हमर घर दोसर टोलमे अछि आ देवी कक्काक घर दोसर टोलमे छैन, मुदा बातो-विचारमे आ जीविको रूपे गढ़गर सम्बन्ध दुनू गोरेक बीच अछिए। अपने छोट गिरहस्त छी तँए नोकसानो कम भेल मुदा देवी काका कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त छैथ तँए हुनका बेसी नोकसान भेबे केलैन अछि। कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त बनैक कारण देवी कक्काक छैन जे सदिकाल विचारोसँ आ काजोसँ गामक उन्नैतिक पाछू लागल रहै छैथ, तँए अनेको रंगक

[47] सुपर्णा

अन्नक खेतीक संग तीमनो-तरकारी, फलो-फलहरी आ मालो-जाल पोसनहि छैथ। जइसँ सदिकाल अपन जिनगीमे रमल रहै छैथ।

मनमे भेल जे खुशहालीक समैमे सभ दिन एक-आध घन्टा एकठाम बैस अपनो आ समाजोक विषयमे दुनू गोरे गप-सप्प करिते आबि रहल छी, अखन तँ सहजे कष्टहालीक समय आबि गेल अछि, तँए भेँट करैले जाइ।

एक तँ खेत-पथार पानिमे डुमने काजो पतराएले अछि जइसँ बेसी बैसारीए रहैए, दोसर बेर-बिपैत पड़ने भेँट करब सेहो जरूरी बुझि पड़ल। घर परक काज सम्हारि पत्नीकेँ कहलयैन-

“देवी काकासँ भेँट केने अबै छी।”

पत्नी कहलैन-

“पानि-बुन्नीक समय छी, बेसी देरी नइ लगाएब।”

पत्नीक विचार सुनि देवी काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। जूत्ता-चप्पल नइ पहिरलौं। तेकर कारण छल जे एक तँ रस्तामे थाल-खीच बेसी अछि, दोसर तीन ठाम रस्ता टुटल छै जइसँ पानिक रेत सेहो चलैए।

उदास भेल देवी काका दरबज्जापर बैसल मने-मन विचारि रहल छला जे बर्खोक मेहनत नष्ट भऽ गेल। खाली मेहनतेटा रहैत तखन संतोष होइमे बाधा नइ होइत। किएक तँ बुझितिऐ जे समैक संग मेहनत गेल तँ गेल, आगू समैक संग जिनगी चलबे करत। मुदा तेतबे नइ अछि। जखन घुमै-फिरैक उमेर छल तखन आन-आन गाम आ आन-आन जिलासँ लऽ कऽ आन-आन राज्य सभसँ तरकारियो आ फलोक गाछ आनि-आनि संग्रह केने छेलौं, ओ सभटा चल गेल। आब फेरसँ संग्रह करब से संभव नहि अछि। आब घुमै-फिरै-जोकर शरीरमे शक्ति कहाँ रहल..! ऐठाम आबि देवी कक्काक मन चहकए लगलैन। चहकए ई लगलैन जे जेकरा संग-संग जिनगी बीतबै छेलौं ओ संग छोड़ि चलि गेल जे पुन: आब नइ औत। संगी जकाँ जहिना ओकरा पाछू–माने फलक गाछ–अपने लगल रहै छेलौं, तहिना ओहो ने सदिकाल–अपन-अपन समयानुसार–पौष्टिकक संग स्वादिष्ट फलो दइ छल। जहिना ओकरा (माने गाछ-बिरीछक) संग अपन जिनगी बीतै छल तहिना ने ओकरो जिनगी अपना संग बीतैत रहइ। सहचर जकाँ दुनू छेलौं, मुदा आब ओहन सहचरी बना पएब? नहि बना पएब! जँ कनी संभव अछियो तँ बेसी नहियेँ अछि। माने संभव ई भेल जे जँ कोनो उपायसँ गाछो आ बीओ भाइयो जाएत तैयो तँ गामक खेत-पथारक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ तँ प्रतिकूल भाइए गेल अछि। प्रतिकूल ई जे पूर्ववर्त्ती सोचक जहिना सरकारी महकमा तहिना ने ठरो-ठीकेदार आ गामक कर्तो-धर्तो अछिए। जे गाम-समाजकेँ के कहए जे अपनो नीक-बेजाइक ने काज बुझैए आ ने बात-

विचार। जइसँ गाममे जे पानिसँ दुर्दशा हएब शुरू भेल अछि ओ लगले थोड़े मेटा जाएत..!

ऐठाम अबैत-अबैत देवी कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकतो फुरलैन जे तखन तँ गामक भविस अन्हरा जाएत! गामक भविस अन्हरा जाएत तखन अन्हारमे लोकक जिनगी आ जीवन की हएत? की मनुख विहीन धरती भऽ जाएत आकि धरती विहीन मनुख। जहिना मनुख बिना धरतीक कोनो मोल नहि तहिना ने धरतियोक बिना मनुखक कोनो मोल नहियेँ रहैए। ओना, जिनगीक अनुकूल अपन-अपन धरतियो होइए। मुदा ऐठाम किसानी जिनगीक प्रश्न अछि।

एकाएक देवी कक्काक मन ठहकलैन। ठहैकते विचार ठहकियेलैन। ठहकियेलैन ई जे जेकरा हम पूर्ववर्ती सोच-विचार कहि अपनाकेँ परवर्ती बुझै छी, ऐमे केतौ-ने-केतौ गुण छीपल अछि जेकरा हम या तँ बिसैर रहल छी वा दृष्टिहीन छी..!

दृष्टिहीन मनमे अबिते देवी कक्काक नजैर त्रिकाल दर्शन दिस बढ़लैन। त्रिकाल दर्शन दिस बढ़िते त्रिकाल जिनगीक इजोत भक-दे मनमे एलैन। अबिते विचार उठलैन जे ने आइये एहेन परिस्थितिसँ लोककेँ भेँट भेल अछि आ ने लोक अपन जिनगीक पाछू तकैत रहि गेल बल्कि आगू बढ़ैत गेल। भलेँ जिनगीए किए ने केतौ पछुआ गेल होनि, आकि जिनगी पछुएलासँ विचार-विवेक धकिया गेल होनि मुदा सोलहन्नी मरि गेलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए आ जँ से रहैत तँ हजारो बर्खक जिनगीक रूप-रंग आइ नइ देखतौं। से तँ देख रहल छी। एकाएक देवी कक्काक मनमे जिज्ञासा जगलैन।

जिज्ञासा जगिते जिज्ञासु जकाँ पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा केलैन। पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा करिते मनमे उठलैन- जे धरती साइयो-हजारो त्रिकालदर्शी पैदा केने अछि ओही धरतीपर ने आइ हमहूँ ठाढ़ छी! देवी काकाकेँ जेना हूबा जगलैन। हूबा जगिते त्रिकालदर्शीपर नजैर अँटकलैन। मनमे उठलैन- त्रिकालदर्शी की? भूत, वर्तमान आ भविसकेँ जननिहार। भूत तँ भूत भेल जेकर लिखित-अलिखित इतिहास छै, वर्तमान सोझामे अछि मुदा भविस तँ हेराएल अछि ओकरा केना बिसवासक संग ताकि लेब..!

ऐठाम आबि देवी कक्काक विचार महाभारतक साइयम श्लोक जकाँ चौमुड़िया गेलैन। चौमुड़ियाइते विचार पनपलैन। पनैपते मन कलशलैन। कलैशते बदलल विचार–माने परिमार्जित विचार–मनमे जगलैन। जगलैन ई जे जीता जिनगीमे त्रिकाल तँ अबिते अछि। माने ई जे कखनो कष्टकर समय अबैए तँ कखनो समगम आ कखनो नीकमे नीक। अही तीनू समैक बीच जिनगी चलैए। मुदा छी तँ तीनू जिनगीए, तँए तीनू जिनगी जीबैक लूरि चाही। जखने

जीबैक लूरि सीखब तँ नीक-बेजा समय अबैत-जाइत रहतै आ जिनगी अपना गतिये करवनो दौड़ कऽ तँ करवनो डेगे-डेगी तँ करवनो ठाढ़े-ठाढ़ चलबे करत। देवी कक्काक मनमे रसे-रसे उदपन उठए लगलैन...। तैबीच देवी कक्काक लगमे पहुँच पएर छुबि प्रणाम केलिऐन। ओना मने-मन काका पिताएल जकाँ रहबे करैथ मुदा सभ दिन नीक असीरवाद देनिहार आइ केना अपन दुख हमरेपर झाड़ि देता। हम कि कोनो आन गाम रहै छी जे ओ नइ जनै छैथ। पएर छुबि गोड़ लागि चानिपर हाथ लेलौं मुदा बजलौं किछु ने।

ओना प्रणाम करैक तीनू चलैन अछिए। केतौ पएर छुबि गोड़ लागि गोड़ लागब सेहो बाजल जाइए। मुदा क्रियागत जिनगी जननिहार बिनु बजनौं ओते बुझि कऽ मानि लइते छैथ। केतौ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम कहल जाइत आ केतौ खलिये मुहेँ सेहो प्रणाम कहले जाइए। मुदा जे अछि देवी काका हाथ उठा माथकेँ थपथपबैत बजला-

"भगवान सभकेँ इष्ट करथुन।"

कक्काक असीरवाद सुनि मन झुझुआए लगल जे अपना दिससँ काका किछु नहि कहि भगवानपर फेक देलैन। भगवान की इष्ट करता! ओ तँ अपने इष्ट-अनिष्ट दुनू छैथ। मनमे रंग-रंगक खटुका सभ उठए लगल जे देवी काका बुझि गेला। बजला-

"गौरी, मन किए खट-मधुर भेल छह?"

बजलौं-

"मन किए खट-मधुर हएत। अपनेक असीरवाद नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।"

देवी काका बजला-

"बौआ, दुनियाँमे बुझहक आकि गाम-समाजमे दू रंगक लोक अछि। ओना सगपतिया लोक सेहो बहुत रंगक अछि। सगपतिया लोकक माने भेल ओहन लोक जे कनी इष्टो केलैन आ कनी अनिष्टो केलैन। तहिना कियो अनिष्ट कम केलैन आ इष्ट बेसी केलैन, आ किछु एहनो लोक छैथ जे इष्ट कम आ अनिष्टे बेसी करै छैथ।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"केना बुझब जे बेसी इष्ट करैबला छैथ आकि बेसी अनिष्ट करैबला?"

हमर बात सुनिते, जेना चौरीमे केशौरक पन्ना भेटते उखारनिहारकेँ बिसवास जगि जाइए जे आब केशौर भेटबे करत आ उखड़बे करत, तहिना बिसवासक संग देवी काका बजला-

“जेकरा मनमे जेहेन अभिष्ट रहल से तेहेन इष्ट वा अनिष्ट करैए।”

देवी कक्काक कनी-मनी बात बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। मुदा मनमे खोंचार पड़ए लगल जे पनरह दिनक जिनगीक गप करए एलौं आ अनेरे कथा-पिहानीमे वौआ रहल छी..!

अपन विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

“काका, ऐ बेरक समय तँ अजीब भऽ गेल।”

‘अजीब’ सुनिते देवी कक्काक मन जेना हुरकलैन तहिना हुरकैत बजला-

“अजीब भेल कि सजीब से एना नइ बुझबहक।”

देवी कक्काक आत्मा जहिना परमात्म स्वरूप छैन तहिना बुधियो प्रवुद्ध छैन आ विचारो परम छैन्हे तँए मन सकपका गेल जे हिनका केना कहबैन जे काका अहाँक आगूक जिनगी गरथाहमे पड़ि गेल। जँ से कहबैन आ जँ ई कहि दैथ जे एके गाममे ने दुनू गोरे छी तखन जहिना तोहर चलतह तहिना ने हमरो चलत। तइसँ हुनकर बेथा-कथा थोड़े बुझि पएब। तखन तँ अपने विषयमे किए ने कहिऐन जे जे समस्या अपनो अछि सएह ने वृहत् रूपमे हुनको छैन। ऐसँ एते तँ विशेष लाभ हेबे करत जे जखने कोनो समस्याक समाधानक वृहद् रूप दृष्टिगोचर हएत तखने ओ समस्या बिच्चेमे दहलाए लगत। जखने दहलाए लगत तखने ओकरा या तँ हाथेसँ वा कोनो मेही वस्तुसँ छानि कऽ कातमे फेक देब। विचारमे मजगूती आएल।

बजलौं-

“काका, आब जीवन कठिन भऽ गेल, तँए जैठाम सुवन भेटत तैठाम चलि जाएब।”

जहिना देवी काका कान रोपि सुनलैन तहिना आँखि उठा देखबो केलैन। प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

“बौआ गौरी, जखन अपन एते गेल तैयो जी-रोपि अपनाकेँ ठाढ़ केने गाममे छी, मुदा तोहर तँ बड़ छोट समस्या छह, तूँ किए गामसँ पड़ेबह। हँ, सुवनक बात कहलह, ओ गामोमे बनि सकैए वशर्ते जँ जी-जान रोपि जीवनकेँ पकैड़ लेबह।”

ओना देवी कक्काक सभ गप सुनलौं मुदा बुझलौं अदहे-छिदहे। अदहा-छिदहा ई जे गामोमे सुवन बनि सकैए, एहेन विचार मनमे आइ धरि उठले ने छल जे एको-आध मिनट ऐ विषयक विषयमे विचारितौं। तँए नइ बुझल छल, जइसँ नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं। ओना, कक्को बुझि गेला जे गौरी नीक जकाँ हमर विचार नइ बुझि पौलक। तैबीच बजलौं-

"काका सुवन..?"

'सुवन' बाजि वाणीकेँ ऐ दुआरे रोकलौं जे जँ एहेन बात बजा जाइए जइसँ प्रश्ने खण्डित भऽ जाइए तखन तँ उत्तरो खण्डित हेबे करत। जखने उत्तर खण्डित हएत तखने किछु-ने-किछु विचारो आबिये सकैए जे उतारक हुअए। मुदा ऐठाम तँ प्रश्नकेँ उतारैक नहि बल्कि चढ़बैक अछि। जे विचार देवी कक्काक मनमे पहिनहि जगि चुकल छेलैन। बजला-

"बौआ गौरी, जहिना सरयुग नदीक तटपर बसल अयोध्या अछि, जे रामक जन्मभूमि रहल तहिना यमुना नदीक तटपर वृन्दावन सेहो अछि जे कृष्णक लीला-धाम रहलैन। तहिना गामोमे जखन सुविचार जगत तखन सुकर्म सेहो जगबे करत। जखने सुकर्म जगत तखने सुकृत्ति रूपक कर्मभूमि बनत। आ जेना-जेना सुकृत्ति सुवृत्ति बनैत जाएत तेना-तेना जीवन सुवन दिस बढ़ैत जाएत।"

ओना देवी काका तीन जुगक इतिहास सुना देलैन मुदा अपन मन तँ जबदाह भाइए गेल छल। जबदाहो केना ने होइत, जखन पानिमे डुमल गामे जबदाह भऽ गेल अछि तखन कि अपने गामसँ हटल थोड़े छी जे ओइसँ वंचित रहितौं। जबदाह मन रहने नीक जकाँ देवी कक्काक विचार नइ बुझि पेलौं।

मन घुरिया गेल जे अपन जिनगी जे जबदाहसँ जबदी दिस बढ़ि गेल अछि तेकर की उपाय हएत। तँए विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"काका, बड़ सेहन्तासँ पाँचटा केराक गाछ केरलसँ अनने छेलौं। पाँचो पानिमे डुमि कऽ नष्ट भऽ गेल!"

घावपर मलहम लगबैत देवी काका मुस्कियाइत बजला-

"तोरो अपना इलाकामे केराक गाछ नइ भेटलह जे देशक सीमापर सँ आनए गेलह।"

एक तँ मन केलहा काजपर–माने केरलसँ केरा गाछ आनि रोपैक प्रक्रिया तकमे–नचैत रहए तैपर तेहेन बात देवी काका कहि देलैन जे विचारे उनैट गेल। बजलौं-

"काका, सीमा-सुमीक बात नइ अछि, केरासँ सिनेह अछि। रामेश्वरम गेल रही। ओइठाम सौंसे बजारमे सभसँ ललिचगर केरे बुझि पड़ल।"

बिच्चेमे देवी काका टोकला-

"तखन तँ रामेश्वरम सोल्होअना फलहारे केने हेबह।"

हमरो मनमे रामेश्वरम् स्थान नचिते छल, तहूमे केराक बजारक बात, मन मिठाएल रहबे करए, बजलौं-

“काका सेहन्ते एक हत्था कीनलौं। हत्थो लोकक हाथ जकाँ पाँचे आँगुरक छल, बत्तीस छीमीक हत्था छल। ओ दन्तार छीमी। नीको आ सस्तो बुझि पड़ल। खूब खेलौं।”

बिच्चेमे टोकारा दैत देवी काका बजला-

“खेबे टा केलह आकि ओकर सुआदो पौलह?”

हमरो सुतरल। बजलौं-

“बिनु सुआद पौनहि एतेक दूरसँ बैजनाथ बाबाक कामौर जकाँ गाड़ीमे केराक गाछ टँगने एलौं।”

हमर बात सुनिते देवी काका आगू बढ़ि बजला-

“जखन रामेश्वरम्-सँ केराक गाछ अनलह तखन जँ कनियेँ आरो आगू बढ़ि लंका पहुँच जइतह तखन तँ हनुमानजी जकाँ आरो फल-फलहरी अनबे करितह किने?”

विचारक धारामे विचड़ैत रहबे करी, अनासुरतीए बजा गेल-

“तइमे कोन राहु-केतु बाधा होइत।”

तैबीच दुर्गा काकी चाह नेने पहुँचली। चाह देख मन हलैस गेल मुदा उदासीपन छाड़ने छल, जे दुर्गा काकी आँकि लेलैन। जहिना डॉक्टर ऐठाम आकि अस्पतालमे साधारण रोगबला रोगी पैघ रोगसँ रोगाएल रोगीकेँ देख मने-मन खुशी होइत जे जखन एहेन रोगी बँचि सकैए तखन तँ हम बँचले छी, तइले अनेरे मनकेँ खट्टा केने रहब नीक नहि, तहिना आश्वस्त करैत दुर्गा काकी बजली-

“बच्चा गौरी, हमर बड़का काका सदिकाल पोता सभकेँ कहैत रहथिन जे ‘नअ दहार तखनो ने किछु उघार’, तखन एक दहार की बिगार...।”

दुर्गा काकीक बातो सुनैत रही आ चाहो पीबैत रही। एक तँ सुअदगर चाह, तैपर दुर्गा काकीक मधुराएल विचार सुनि आरो मन मीठा गेल।

बजलौं-

“काकी, जखन नान्हि–नान्हिटा चुट्टी घोदा-माली भऽ आड़ि-धुरसँ निकैल बाढ़िक वेगमे हेलैत समुद्र तक पहुँच जाइए, तखन अपना सभ तँ कहुना मनुख भेलौं किने...।”

हमरा विचारमे दुर्गा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन हरियरीसँ भरि-पूरि जरूर गेलैन। जेकरा देख देवी काका विचार छिनैत बिच्चेमे बजला-

“बौआ गौरी, यएह विडम्बना अछि!”

देवी कक्काक आगूक विचार सुनैले अपनाकेँ साकांछ केलौं। साकांछ करैक कारण मनमे उठल जे नीक विचार सुनैले जहिना अपन कानकेँ कनखारऽ पड़ैए तहिना ने धियानकेँ धियानी सेहो बनबए पड़ैए। सएह करैत बजलौं-

"की विडम्बना काका?"

हमर बात सुनि देवी कक्काक मनक विचार जेना हुमैर कऽ कुदए चाहलकैन तहिना देवी कक्काक मुखड़ामे लौकलैन। लौकते बजला-

"बौआ, जहिना पवित्र लोकक देवालपर देवालय ठाढ़ अछि तहिना गुँहचोरा-ले सेहो अछिए ने।"

देवी कक्काक विचारकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पुछलयैन-

"से केना?"

बिहुसैत देवी काका बजला-

"ओना, बेकतीकेँ भीतर[48] सेहो सुकृत्ति कुकृत्ति अछि, मुदा ओ बेकतीकेँ प्रभावित करैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम समाजिक प्रश्न अछि। समाज सेहो नीक-अधला करैबलाक समूह छी जे किछु अज्ञानतासँ सेहो आ किछु ढीठपनासँ सेहो होइए। जैठाम अज्ञानता होइए ओ क्षम्य अछि ओना क्षम्योक सजाए चेतौनी रूपमे जरूरी अछिए। मुदा जैठाम ढीठपनासँ होइए तैठाम समूहकेँ जगि कऽ जगबए पड़त। आ जँ से नइ हएत तँ समाज जेते उठए चाहत ओते निच्चाँ खसि-खसि पड़त। तँए... ।"

किछु-किछु विचार देवी कक्काक बुझबो केलौं आ किछु-किछु नहियोँ बुझलौं। मुदा बिच्चेमे पत्नीक बात मन पड़ि गेल जे बेसी देरी नइ लगाएब। तँए मन कछमछा लगल। बजलौं-

"काका, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछिए। अखन छुट्टी दिअ।"

मुस्की दैत देवी काका बजला-

"छुट्टीए-छुट्टी छह। मुदा छुट्टीए-मे कहीं अपने ने जिनगीक धारमे छुटि जइहह।"

देवी कक्काक विचारकेँ जँ नीक जकाँ बुझैत जइतौं तब ने, से तँ बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए सिनेमाक कटल रील जकाँ विचार कटि-कटि जाइ छल। मुदा तैयो बजलौं-

"जीता-जिनगी जँ ई सभ नइ हएत तँ जिनगीक परीक्षा केना हएत।"

हमर विचार देवी कक्काक संग दुर्गा काकीकेँ सेहो नीक लगलैन। सह दैत

[48] जिनगीक क्रियाक बीच

दुर्गा काकी बजली-

“दुर्गा दुर्गत हारिणी छथिये किने।”

❍

शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाइ 2017

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

अदहा फागुन बीत गेल। परसू शिवराति छल। पनरहिया फगुआ शुरू भऽ गेल। पनरहिया फगुआ भेल, जे फगुआ, फगुआ पाबैनसँ पनरह दिन पहिनहिसँ गौल-बजौल जाइए।

बेरुका समय, शुभकान्त काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर ठकुआएल बैसल चिन्तामे डुमल छला। चिन्ताक कारण छेलैन जे शिवरातिये-शिवराति जँ साल जौड़ैथ तँ देखैथ जँ परसू शिवराति छल, पैछला साल बीत गेल आ ऐगला साल दू दिन अगुआ गेल।

फेर जखन फगुआकेँ अड्डा बना दोसर तारीखकेँ जोड़ैथ तँ देखैथ जे तेरह दिन अखन पैछला सालक बाँकी अछि आ ऐगलाकेँ चढ़ैमे तेरह दिन देरी अछि। मुदा फेर जखन तेसर तारीखपर नजैर दैथ, जइमे चैतसँ साल शुरू होइए आ फागुनमे विसरजन करैए, तँ लगले मनमे ईहो उठि जाइन जे अनेरे लोक थोड़े गबैए- 'जे जीबए से खेलए फॉगु..!'

मुदा शुभकान्त काकाकेँ तारीखक ओझरी तैयो ने सोझरेलैन। किएक तँ लगले मनमे उठि गेलैन जे फगुआकेँ ने तेरह दिन बाँकी अछि मुदा सकराँतिक हिसाबसँ तँ पचीस दिन बाँकी अछि। किएक तँ बारह दिन पाछू चलैए। जखने पचीस भेल, तखने मासमे पाँचे दिन ने कम भेल, महिना तँ भाइए गेल...।

शुभकान्त कक्काक मन जखन महिना दिस बढ़ैन आकि दोसर तारीख मनेमे हल्ला करए लगैन जे तखन तँ बैशाखसँ नवका साल आ चैत तक पुरना साल रहल...।

शुभकान्त काकाकेँ भाँजेपर ने चढ़ैन जे ऐ ओझरीकेँ केना सोझराएब। ओझराएल मनमे आरो ओझरी तखन लगि गेलैन जखन रूसक क्रान्ति मन पड़लैन। मन पड़िते मनमे ठहकलैन जे ओ क्रान्ति अक्टुबरमे भेल, जेकरा किताव पढ़निहार नवम्वर मानै छैथ। ओहूठाम पतरेक पेंच लागल अछि। तँए क्रान्तिक समय ओइठाम कोन तारीख चलै छल पहिने से ने बुझए पड़त।

आँगन बहारैत-बहारैत कल्यानी काकी जखन अँगनासँ बहराक मुँह लग पहुँचली आ दरबज्जाक मुँहक मिलानी भेलैन तखन नजैर शुभकान्त काकापर पड़लैन। हाथमे बाढ़ैन रखनहि हिया कऽ देखली तँ बुझि पड़लैन जे घटाएल घटा

जकाँ करियाएल घन पसैर रहल छैन। मुदा बजली किछु ने। चुपचाप आँगनक मुँहथैर होइत बहारैत दरबज्जाक मुँहथैर लग पहुँचली तँ अपन काजक हाजिरी पुरबैत आँखि उठा शुभकान्त काकापर देलैन। ओना शुभकान्त कक्काक आँखिमे नोर तेना डबकल रहैन जे कखनो धारक रूप धारण कऽ सकै छल। मुदा तेकरा ई सोचि शुभकान्त काका सम्हारि रखने छला जे संग मिलि दुनू परानी चाहे जेहेन जिनगी हुअए मुदा संगे-संग अखन धरि चलबो केलौं आ चलियो तँ रहले छी। तैठाम जँ अपन बेथेक कथा पत्नीकेँ सुनेबैन सेहो केहेन हएत। ओना, मनुखताक रूपमे देखल जाए तँ ओ नीक हएत। मुदा पत्नियोकेँ तँ अपन संसार छैन किने, जे दुनूक संजोगक परिवार ओइ संसारक संगम छी। तँए वैचारिक रूपमे अनिवार्य ऐछे, भलेँ बेवहारिक रूपमे अपन-अपन दुनियाँक पाछू घुमैत रही...।

ने शुभकान्ते काका कल्याणी काकीकेँ किछु कहलखिन आ ने कल्याणीए काकी किछु बजली। ओना, अपन ठकुआएल जिनगीक बीच शुभकान्त कक्काक मन वौआइत रहैन जे कल्याणी काकीक मन कहलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन विचारमे बिचैड़ रहला अछि जेकर कोनो रस्ते ने सुझि रहल छैन। तँए अन्हारकेँ आरो अन्हार बनबैसँ नीक जे भने ओहो अपन इजोत तकता आ हमहूँ अपन इजोत ताकब..! ई बात तँ कल्याणी काकीक मनमे उपकलैन तँ मुदा लगले दोसर मन धोपैत कहलकैन-

“जखन दुनू गोरे संगी छी, एकबट्टू रस्ता धेने चलि रहल छी तखन नहियोँ बुझब वा जानबकेँ तँ नीक नहियेँ कहल जा सकैए।”

मुदा तैयो सोझा-सोझी कल्याणी काकी किछु नहि बाजि मने-मन विचारली जे अपने नहि किछु बाजि गोपीलालक मुहसँ बजबाएब...।

कल्याणी काकी दरबज्जेपर बाढ़ैन रखि गोपीलालक आँगन एली। गोपीलाल अँगनेमे रहए, नजैर पड़िते कल्याणी काकी बजली-

“बौआ गोपी, बुड़हा ठकुआएल दरबज्जापर बैसल छैथ, से कनी भाँज बुझहक तँ, की बात छिऐ।”

गोपीलाल पकिया चेला शुभकान्त कक्काक। आन मानेमे पकिया कि कचिया से नहि कहै छी, मुदा आन गाम-गमाइत करैमे गोपीलाल संग पुरिते छैन। ओना दसअन्नी, बरहअन्नीसँ लऽ कऽ दुअन्नी-एकन्नी तकक सभ गप शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच चलिते अछि तँए गोपीलाल बजैमे निधोक अछिए।

गोपीलालक आँगनसँ अगुआ कऽ निकैल कल्याणी काकी अपन दरबज्जापर आबि बाढ़ैन पकैड़ बहारए लगली। पाछूसँ गोपियोलाल आबि बिनु प्रणाम केनहि शुभकान्त काका लग बैसल। ‘बिनु प्रणाम-पाती’क गलत अर्थ

नहि, एकठाम रहलाक पछाइत आ अलग-अलग रहने भेँट भेलापर दुनूक दू परिस्थिति अछि तँए प्रणामक दू रूप अछि। ..शुभकान्त काका लग बैसते गोपीलाल बाजल-

"काका, तमाकू खाइले एलौं हेन। ओना बेरूका चाहो पछुआएले अछि।"

कनखरल कल्याणी काकी रहबे करैथ, 'चाह' सुनि बजली-

"बौआ गोपी, तमाकुल पाछू खइहह, पहिने चाह पीब लएह।"

शुभकान्त काका एक-दोसरपर नजैर दौड़बैत टक-टक देख रहल छला, मुदा अखन तक किछु ने बाजल छला। बकारक हरण मरणसँ भेल छेलैन आकि मरमसँ से तँ ओ जानैथ मुदा छला चुपे। मने-मन अपनो जिनगी आ परिवारक संग समाजोक जिनगीकेँ देख रहल छला, देख रहल छला टुटैत जिनगी, देख रहल छला 'पछुआएल जिनगी', देख रहल छला 'खसैत जिनगी'।

मुदा अज्ञानतो तँ मुँह चुप रखैक पैघ शस्त्र छीहे। की गामक सभ समयकेँ एके रंग आँकि रहल छी? आँकबो तँ असान नहियेँ अछि, जेहेन जइ वेपारीकेँ पूजी रहत, से तेहने ने वेपारो करैए। मुदा आन बुझौ वा नहि बुझौ, आकि बुझि कऽ अनठाबौ वा नहि अनठाबौ, मुदा अपन तँ दायित्व ऐछे जे जे जानि रहल छी ओकरा मानि बना आनोकेँ मनाएब! मुदा कहबै केकरा, एहेन लोकक कानमे ने पड़ि जाए जे समस्याकेँ उनटा कऽ भगवानक दोख लगा अपनाकेँ ओइमे नुका लइए। तँए ओहन लोकक कानमे जरूर जेबा चाही जे समस्याकेँ समस्या बुझि समाधान करए।

ओना गोपीलालक मन चुप रहबकेँ नीक बुझैत मुदा कल्याणी काकीक मन भन-भनाए लगलैन। भन-भनाए ई लगलैन जे मालिक[49] मन्हुआएल छैथ आ अपने ओइ बातकेँ बुझबे ने करिऐ, ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। दुनियाँ जनैए जे झुटकोसँ घैल फुटै छइ। तँए जँ कोनो एहेन विचार मुहसँ खसि पड़ए जइसँ पतिक कष्टक हरण भऽ जाइन, तँ किए ने ओहन प्रतिकार करब। मुदा ईहो नीक केना हएत जे जखन गोपीलालकेँ विचार बुझैले बजा अनलौं तखन अपने जा बीचमे टभकए लगी।

मुदा लगले कल्याणी काकीक मनमे दोसर विचार उपैक गेलैन। उपैक ई गेलैन जे भोलो बाबा तँ असगरे धुनी रमा बैसल रहै छला मुदा फेर दरबार केना लगि जाइ छेलैन! दरबार तँ अहिना ने लगै छेलैन जे पार्वती छिपलीमे जलखै, गणेशजी हाथमे पानिक लोटा आ कार्तिक खलिया बाटी नेने पहुँचै छल आ गौंआँ-घरूआ सभ सेहो कियो भाँग, कियो चीलम, कियो गूलक डोरी आ कियो

---

[49] पति

गुलाब-तख्तीक संग प्रेमकटारी नेने पहुँचै छल। जखने दस गोरे एकठाम बैसलौं कि दरबार लागल।

चुपे-चुप रहने गोपीलालक मन औनाए लगलै। औनाए ई लगलै जे जखन कल्याणी काकी कक्काक मनक बात बुझैले बजा अनली तखन मुहोँ बन्न राखब, नीक नहियेँ भेल। शुभकान्त कक्काक आँखिपर गोपीलाल आँखि चढ़बैत बाजल-

“काका, एहेन समयसँ कहियो भेँट नहि भेल छल।”

जेना शुभकान्तो कक्काक नजैरमे यएह विचार नचै छेलैन कि की, अपन नजैरकेँ गोपीलालक नजैरसँ मिलबैत बजला-

“गोपी, तूँ तँ कौल्हुका छौड़ा छिअ, मुदा सत्तैर बर्खक जिनगीमे हमरो पहिल बेर एहेन समस्यासँ भेँट भेल अछि।”

शुभकान्त कक्काक विचारक सह गोपीलालकेँ भेटल। सह भेटिते गोपीलाल सहैट कऽ शुभकान्त कक्काक विचार लग पहुँच बाजल-

“से की काका?”

ओना गोपीलालकेँ लगक लोक शुभकान्त काका सेहो बुझै छला आ दूरक सेहो। मुदा जइ समस्याक जालमे शुभकान्त काका ओझराएल छला तही समस्याक जालमे गोपीलाल सेहो फँसल छल तँए लग मानए लगला।

तही बीच कल्याणी काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच जे टोका-टोकी भेल से कल्याणी काकी सेहो सुननहि छली। मुदा अँगनामे, चुल्हि लग, रहने नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ओना, मनमे तैयो बिसवास बनले रहैन जे गोपीलाल सभ गप कहबे करत।

चाहक चुस्की लइत शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, अपन आँखिक देखल अछि जे जेकरा तूँ रेडियो-अखबारमे सुनने-पढ़ने हेबह जे हिमाचल प्रदेशमे मेघ फाटि कऽ बरिसल ओहन अपनो ऐठाम गोटे साल भऽ जाइए। ऐ साल से नइ भेल। मुदा जेहेन माइरिक चोट ऐ साल लागल, तेहेन ओहू साल नइ लगै छल जइ साल मेघ फाटि कऽ बरिसै छल।”

मुड़ी डोलबैत गोपीलाल चाहक गिलास रखि बाजल-

“काकी, पानक सभ समचा एतै नेने आउ। गपो-सप्प सुनब आ पानो लगाएब।”

खग जानए खगक भाषा। भाय, भरल केना खगलक भाषा बुझत, ओ तँ सुनबो आकि देखबो करत तँ ओकरा खढ़िया जकाँ खेहारि देत। ओना

गोपीलालक भाषा शुभकान्तो काका बुझलैन, मुदा मनमे भेलैन जे मनुखकेँ तँ मनुखता पबैले मनुखाह बनइ पड़तै...।

जँ ओ मरखाह बनि जाएत तखन ओकर भरण-पोषण भारी भाइए जेतइ। तहिना कल्याणी काकीक अपनो मन सजैग गेलैन। किए तँ अझप्पे ने शुभकान्त कक्काक बात सुनने छेली तँए मनमे उपैक गेल छेलैन जे दुखीकेँ सुखीक सेवा आ दलितकेँ फलितक मेवा नइ भेटत तखन दुखताहक दल केना ठाढ़ भऽ सकैए? मुदा ऐठाम तँ पति-पत्नीक बीचक प्रश्न अछि, कोनो धरानी जँ हुनकर मनक पीड़ा नइ उतारबैन तँ ओ पीड़ाइत-पीड़ाइत पीड़ाइये जेता किने। पानक सभ समचा–माने पानक पात, चुनक कोही, खएर, सुपारी, जरदा इत्यादि पनडालीमे–नेने कल्याणी काकी एली। पानक डाली देख शुभकान्त काका बजला-

"लाउ, हम अपने हाथे पान लगाएब।"

'अपने हाथे पान लगाएब' सुनि बिच्चेमे गोपीलाल टभकल-

"काका, हमरो नीक जकाँ पान लगाएल होइए।"

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका मुस्किएला। शुभकान्त कक्काक मुस्की देख कल्याणियो काकी आ गोपीलालोक मनमे शंका भेलैन। शंकाक कारण ई जे सभ दिन जखन कल्याणी काकीक हाथक लगौल पान काका खाइ छला तँ नीक लगै छेलैन, मुदा आइ किए एना बजला? हमहूँ कि पान लगाएब नइ बुझै छी, केते भोजो-काज आ सतनारायण भगवानक पूजोमे पान लगैबते छी।

मुदा पानपर सँ धियान हटा शुभकान्त कक्काक मुस्कीपर धियान अँटकबैत गोपीलाल बाजल-

"काका, मुस्कियेलौं किए?"

ओना, चाह पीबिते आ पानक डाली आगूमे देख शुभकान्त कक्काक मनक पीड़ा पीड़ीपन नेने ठमैक गेल छेलैन तँए पानपर कम धियान रखैत मूल समस्यापर गम्भीर भऽ गेल छला। मुदा तैयो गोपीलालक पश्नकेँ जिज्ञासुक जिज्ञासा बुझि मुँह-छोहैन करैत बजला-

"गोपी, जहिना भोजन केनिहार जँ अपने भोजनक ओरियान करैत भोजन बनबए तँ ओकर मनक इच्छाक तृप्तक बीज-रोपण तखने भऽ जाइए। किएक तँ ओ अपन मनोनुकूल विन्यास बनबैए।"

गोपीलाल शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलक किएक तँ शुभकान्तो काका अदहा विचार अपना पेटेमे रखि नेने छला। ओना नीक

जकाँ नहियोँ बुझला पछाइत ने गोपीलालेक आ ने कल्याणीए काकीक मनमे कनियोँ खोंट भेलैन। किएक तँ दुनूक नजैर शुभकान्त कक्काक ठकुआएल मनपर छेलैन। तैबीच शुभकान्तो काका मुँहमे पान लऽ नेने रहैथ।

आ जरदा खाइते शुभकान्त कक्काक मन फुलाए लगलैन जे जरदाक सुगन्धक संग निकैल रहल छेलैन। तैबीच गोपीलाल बाजल-

"काका, की कहने छेलिऐ जे सत्तैर बर्खक जिनगीमे पहिल बेर देखलौं..?"

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे समस्याक ने फड़क कमी अछि आ ने सिरक। मुदा अपने ने ओकरा बिटिया कऽ बुटियाबए पड़त। जँ से नहि करब तँ अनेरे बजला साफल की हएत?

शुभकान्त काका बजला-

"बौआ गोपी, जइ चिन्ताक चिन्त करै छेलौं से पछाइत कहबह। ओना इशारामे कहि दइ छिअ जे तीस बर्खक किसानी जिनगी पछुआ गेल।"

एक संग अनेको प्रश्न शुभकान्त कक्काक मुहसँ खसैत देख गोपीलालक मन चौंकल। चौंकते चँकियाएल जे कल्याणी काकी बजौने किए छेली आ हम कऽ की रहल छी! मुदा जैठाम बड़क गाछ जकाँ अनेको जड़ि ऊपरे-ऊपर केतौ-सँ-केतौ सिर निकैल बनि गेल अछि तैठाम मूल-जड़िकेँ पकड़ब बाल-बोधक खेलो तँ नइ छी...।

बाजल-

"काका, अपन बातकेँ बुधिया-बुधिया सीटियबैत कहियौ।"

शुभकान्त काका बजला-

"बौआ, जे कहै छिअ तैपर सुरता रखिहह। जेते सुरता रखबह तेते सूरता औतह आ जेते सूरता औतह तेते सूर-वीरता जगतह, मुदा संगे असुरता सेहो माया जकाँ पछुऐबते औतह, तँए चाँकि राखह पड़तह।"

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जहिना कल्याणी काकी सहमली, तहिना गोपियोलाल सहमल।

सहैमते बाजल-

"हँ, से तँ ठीके कहै छिऐ काका।"

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त कक्काक मन जेना पाछूक विचार करैत अपन धियान मूल प्रश्नपर एकाग्र भेल। एकाग्र होइते शुभकान्त काका बजला-

"बौआ गोपी, समाजमे दू तरहेँ विचार चलैए, एकटा इष्ट होइत आ दोसर अनिष्ट होइत। इष्टसँ सुदृष्ट पनपैए आ अनिष्टसँ दुष्ट पनपैए जइसँ दुष्टताक प्रवृत्ति

जगैए।”

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ गोपीलाल बुझि नहि पेब रहल छल। तँए मुँह बबा गेल छेलइ। जे शुभकान्त काका बुझि गेला। तइ बिच्चेमे कल्याणी काकी बजली-

“अपन मन किए बेथाएल अछि?”

कल्याणी काकीक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका अपना दिस तकैत बजला-

“बड़ बढ़ियाँ बात बजलौं। मुदा पहिने ई बुझि लिअ जे दुनियाँमे जेते दुख वा कष्ट अछि ओइमे दूअना भगवानक देल अछि बाँकी चौदहअना मनुख मनुखकेँ दइए। अपन जे दुख वा कष्ट अछि ओ मनुखक देल अछि।”

कहि शुभकान्त काका चुप भऽ गेला।

उदास होइत शुभकान्त कक्काक चेहरा देख गोपीलाल बाजल-

“उपाय?”

बेथित मने शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, पैंतीस बर्खक जिनगी टुटने आइ औतइ पहुँच गेलौं जेतए पैंतीस बर्ख पहिने छेलौं।”

अचम्भित होइत गोपीलाल बाजल-

“पैंतीस बर्ख..?”

शुभकान्त काका बजला-

“हँ। अस्सीक दशक[50] किसानक लेल उठानक समय रहल। जेकरा हरित क्रान्तिक संग आंशिक स्वर्ण काल सेहो कहि सकै छिऐ। ओही उठाइनमे किछु किसान अपनाकेँ उठौलैन। ओही उठाइनिक रस्तासँ अपनाकेँ उठबैत एलौं। जइसँ बाड़ी-फुलवाड़ीक रोहैन सुधैर गेल छल। जे आइ बनौआ आफतमे[51] नाश भऽ गेल!”

अखन तक गोपीलाल मनुख निर्मित दुख वा कष्टकेँ नीक जकाँ नइ बुझै छल, तैसंग कृषि क्रान्तिक अर्थ सेहो फरिछा कऽ नइ बुझै छल, तँए दुनू प्रश्नक बीच ओझरा गेल छल। मुदा विषयक खोर-चाल भेने बुझैक जिज्ञासा मनमे जगि गेल छेलै, तँए सामंजस करैत बाजल-

“काका, अहाँ ते तेहेन पण्डितक गिरथानि पितिआइन जकाँ बजलौं जे...।”

---

[50] 1980

[51] मनुख निर्मित आफतमे

गोपीलालक विषयकेँ सम्हारैत शुभकान्त काका बजला-

“गोपी, तूँ ते वृन्दावनक गोपी जकाँ नचनाइयेटा[52] बुझै छह। नाचक तानी-भरनी तँ बुझै नइ छहक तँए तोरा बुझैमे कम एलह।”

चपाड़ा दैत गोपीलाल बाजल-

“काका, हमर मनक बात अहाँ बुझि गेलिऐ आब अहाँ कनी हमरा सन मुहसँ[53] बजियौ।”

हारल बाटमे हेराएल गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे पर्पनक संग अर्पण सेहो जगलैन। बजला-

“बौआ, बीसमी सदीक आठम दशकमे किसानक संग सरकार जुड़ल। जुड़िते किसानक जिनगीमे जीवनी शक्ति भरैक कार्यक्रम बनौलक।”

बिच्चेमे गोपीलाल बाजल-

“की जीवनी शक्ति?”

“बौआ गोपी, रामायणिक कथामे सुनने हेबह जे संजीवनी बुट्टीक पहाड़े हनुमानजी उठा लेलैन।”

सुनल कथा गोपीलालकेँ रहबे करइ, बिच्चेमे बाजल-

“हनुमानजी ठीके बज्र रंगमे रंगल महावीर छला, काका।”

गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक दुनू गोरे[54] जीवनी शक्ति बुझि गेल। विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

“बौआ गोपी, तीस सालक जिनगी टुटि कऽ निच्चाँ झड़ि गेल जइसँ आइ ओतइ पहुँच गेलौं जेतए तीस साल पहिने छेलौं।”

गोपीलाल बाजल-

“से केना काका?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका स्मृतिमे विस्मृति भऽ गेला। मन पड़लैन पूसा कृर्षि अनुसन्धानक आमक गाछ। बजला-

“बौआ, तीस बर्खक भीतर की अनलौं आ केतए-सँ अनलौं तेकर छोड़ह।”

ओझरीक डरे आकि की, गोपीलालोक मन जेना अकछाए लगलै तहिना

---

[52] मात्र काजमे लागल रहब

[53] भाषाक स्तरसँ

[54] कल्याणी काकी आ गोपीलाल

बाजल-

"हँ काका, ओकरा सभकेँ अखन छोड़िये दियौ। ने अहाँ केतौ भागल जाइ छी आ ने हमहीं। दोसर दिन बुझि लेब।"

तीस साल पूर्व आनल पाँचटा आमक गाछक संग पूसाक कृषि-मेलाक उछाही शुभकान्त कक्काक मनमे आबिये गेल रहैन, बजला-

"बौआ गोपी, पाँचटा आमक गाछ आइसँ चौंतीस बर्ख पूर्व पूसासँ अनने रही। जहिना जानकारी भेटल छल तहिना रोपलौं। ओना ओ गाछ साले भरिक पछाइत मोजैर गेल, मुदा पाँच बर्ख धरि मोजर तोड़ैत रहलिऐ। छठम सालसँ ओ पाँचो गाछ एतेक फड़ए लगल जे भरि मौसम[55] नीक जकाँ परिवारमे चलए लगल। मुदा ओ पाँचो गाछ ऐ बेर पानिक जमावसँ सुखि गेल।"

गोपीलालक मन गुलाबखासक सिनुरियाएल आमपर पहुँच गेल। बाजल-

"सुअदगर होइ छल किने?"

शुभकान्तो काका गोपीलालक सुआदमे भँसिया गेला। भँसियाइत बजला-

"ओह! कपूर जकाँ मुँहमे बिला जाइ छल।"

गोपीलाल विचारकेँ मोड़ैत बाजल-

"जाए दियौ! जहिया जे भोग-पारसमे छल से भेल।"

शुभकान्त काका बजला-

"दसम बर्खसँ ओ आमदनीक जड़ि बनि गेल। जे साले-साल बढ़ैत-बढ़ैत किसानी जिनगीक जीवनी शक्ति बनि गेल छल।"

गोपीलाल-

"काका, दुनियाँमे केकरो आशा नइ करी ओ तँ आमक गाछे छल, लोको की ओइसँ कम अछि।"

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका किछु ने बजला। मनमे उठलैन- अस्सी बर्खक आन्हर बुढ़ जखन भदबरिया अन्हार टपि जाइए तखन...।

❍

शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

---

[55] अगाइत-पछाइत आमक किस्मक हिसाबे पूर्ण मौसम

दोहरी हाक

महिना दिनसँ बुझि पड़ैए जे भरिसक आब चेतन भऽ गेलौं किएक तँ पहिलुका जकाँ भोरेसँ पत्नीक संग झगड़ा नइ लधाइए। पैछला मास तक एको दिन एहेन नइ होइ छल जे सुति कऽ उठैये बेरसँ झगड़ा नइ लधाइ छल। ओना झगड़बकेँ सेहो सोल्होअना अधले नहियेँ कहल जा सकैए मुदा झगड़बो तँ एके रंगक नइ होइए, तँए झगड़ब-झगड़बमे सेहो भेद होइते अछि जइसँ किछु नीको अछि आ किछु अधलो तँ अछिए। खाएर जेतए जे अछि मुदा अपना संग से बात नइ छल, अनुचित झगड़ा छल जइसँ मुक्ति भेटल, तँए मनमे खुशी अछि आ अपनाकेँ चेतन बुझए लगलौं। मुदा चेतन-अचेतनक बीच मन अखनो ई मानैले तैयार नइ अछि जे पहिने गलत छेलौं आ आब सही भऽ गेलौं। किएक तँ पहिने जे छेलौं सएह ने अखनो छी। दिन-दिनकेँ जोड़ब तँ कनी-कनी बेशियाइत जरूर गेलौं मुदा खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ देहो-हाथ ओहिना अछि जेहेन मास दिन पूर्व छल। खाएर जे छल कि अछि, सएह छल आ सएह अइछो। मुदा बीचमे एकटा जरूर भेल जे काजमे थोड़ेक संशोधन कऽ लेलौं। माने काजक प्रक्रियाकेँ थोड़ेक सुधारि लेलौं।

बचपनक बचकानी विचार जँ पहिने नहि कहि देब तखन अहूँ केना बिसवास करब जे फल्लाँ ठीके आब चेतन आकि सियान भऽ गेला। जेना-जहिना कोनो काज करैमे नीकक सुधार भेने काज सुधरैत जाइए, जइसँ सुधरल काज बनैत जाइए, तहिना जिनगीक क्रिया सुधरने बालपन चेतनपन दिस बढ़ैत चेतन सियान बनैए। सएह भेल। लेधे-गोधे आठटा बेटा-बेटी अछि। नवम पत्नी आ दसम अपने छी, तँए दस गोरेक परिवार अछि। दस गोरेक परिवारमे अपन सिरक संग देहो-हाथ बेसी धुनाइते अछि मुदा एहेन खुशी तँ हुनकेटा ने हेतैन जे दस गोरेक परिवारमे बास करै छैथ। असगर-दुसगरकेँ आकि निवंशाकेँ ई खुशी थोड़े हेतैन, नहियेँ हेतैन। तँए हरदम मन दुखसँ दुखीए रहैए सेहो बात नहियेँ अछि। धान दौन करैबला खरिहाँनक मेह जकाँ ठाढ़ जरूर छी। असगर देहो रगड़ौने तँ काज गड़बड़ेबे करत जइसँ परिवारमे अनेको अनसून-मनसून आपैत-बिपैत नइ औत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जखन पैछला पीढ़ीक अन्त भेल–माने माइयो आ बाबूओ मरि गेला, बाबा-दादी तँ पहिनहि मरि चुकल छला, जइसँ परिवारक भारो पड़ल आ गारजनी सेहो अनायासे भेटल–तखन अपन

गारजनीमे परिवारक देख-रेखपर नजैर रखइ पड़त किने। परिवारो तँ परिवार छी, एक दिस बाल-बोध सुर्ज सदृश उदय होइत रहैए तँ दोसर दिस सुरूजे जकाँ अस्त होइत अस्तांचलगामी नइ होइत रहैए सेहो नहियेँ कहल जाएत। मुदा जेतए जे हुअए अपन तँ पैछला पीढ़ीक अन्त भाइए गेल।

ओना माइए-बाबूक अभिभावकत्वमे अपन बिआहो-दुरागमन भेल आ चारिटा धियो-पुता भेल, मुदा तहिया अपन महत परिवारमे ने कमाइबलामे छल आ ने विचारबला विचारकमे। बुझै छेलिऐ जे मनुख अपन परिवारक गाड़ीकेँ जोति अपने कन्हेठ चलबै छैथ, तँए मनुखकेँ अनेरे कोनो चिन्ता-फिकिर नइ करक चाही। बुझले बात आ देखले आँखि छल। ओना, बीच-बीचमे पत्नी जोर दैत एतेक जरूर कहैत रहली-

"ई जे चारिटा धिया-पुता अछि से अनकर छिऐ, ओकरा जँ खुएबै-पीएबै नहि तखन ओ जीयत केना..?"

ओना कहैत रहली नीक बात, से मने-मन अपनो बुझैत रहलौं। मुदा भगवानपर अटूट श्रद्धा आ बिसवास नइ रहए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। श्रद्धाक संग बिसवासो रहबे करए। भाय! बिसवासेक गाछमे मेवा फड़ैए किने, अपनो तँ बिसवास ऐछे जे फड़बे करत...। तँए चिन्ता-फिकीर करैक खगते की। ओना गोटे-गोटे दिन पत्नी रबाड़ैत ईहो कहिते छेली-

"घरमे कमाइ नइ होइए ते परदेश जाउ।"

मुदा उपाइयो तँ दोसर नहियेँ छल, सिवा पत्नीक बातक सहाज करब छोड़ि कऽ, तँए सुनियोँ कऽ अनठबैत रहलौं। ओना, कहियो-कहियो मनमे उठै छल जे आब की कोनो माए-बाबू छैथ दोकानो-दौरीसँ उधार-पुधार नून-तेल आनि, कि अनकासँ पैंचो-पालट करि आकि कमाइये-खटा कऽ परिवारक खर्चा पुरौता। आब तँ अपने दुनू परानीपर परिवारक भार अछि, हमरे ने सभकेँ पुरबए पड़त। आब माए-बापक राज थोड़े रहल, आब तँ अप्पन भेल...। तैसंग लगले मनमे ईहो उठि जाए जे जे भगवान खाइक मुँह बनौलैन वएह ने खाइक ओरियानो करता। तइले अपन कोन काज।

..अही असमनजसमे समय बीतैत गेल आ परिवार बढ़ैत-बढ़ैत दस गोरेक भऽ गेल। माने चारिटा धिया-पुता आरो भऽ गेल। अखन तक ओही बचकानी मतिक-गतिक रीति पकड़ने चलि आबि रहल छेलौं। मुदा तइमे एकटा मोड़

आएल। मोड़ ई आएल जे अभावक जिनगीकेँ जहिना रंग-रंगक भूत-प्रेतसँ लऽ कऽ राक्षस-दैत्य धरि दतिया कऽ धेने रहैए तहिना अपनो धेनहि छल। तँए दुनू परानीक बीच कहा-कही होइते छल।

घरक बगलेमे मरनी दादीक घर छैन। अस्सी बर्खक मरनी दादी चारि बजे भोरे उठि आँगन-घर बहारि, दुआर-दरबज्जा बाहरैत मालक घरक थैर-गोबर करैत, पथियामे छाउरक संग करसी-मरसी उठा घरक बगलेक चौमासमे फेक, बाड़ी-झाड़ीसँ तीमन-साजन नेने आँगन अबैत-अबैत भिनसुरका पहरक बिसरजन करै छैथ। मुदा हमरा दुनू परानीमे सुति कऽ उठैये बेरमे जे झगड़ा लधाइए ओ भरि दिन लधले रहैए। भैंसा-भैंसीक कनारि जकाँ जहिना अपने पत्नीपर कनखरल रहै छी तहिना पत्नियोँ भरि दिन हमरापर कनखरले रहै छैथ, जइसँ बेर-बेर किछु-ने-किछु कहा-कही होइते रहैए। जुति-भाँति-ले होइए आकि की से बुझबे ने करै छेलौं। तेना भऽ कऽ अखनो नहियेँ बुझै छी। कियो अपना अँगनामे भरि दिन गीते गौत आकि झगड़े करत तइसँ अनका की। जखन अनकासँ अनका मतलबे नइ रहत तखन समाजे की? मुदा से बात मरनी दादीमे नहि छैन। दुनू परानीक बीचक झगड़ाकेँ केता दिन मान-मनोबैल करैत पहिनौं फरिछौने छैथ। मुदा फेर ओहिना-क-ओहिना रमा-खटोला शुरू भाइये जाइए।

ओइ दिन सेहो तहिना भेल जइ दिनक बात कहै छी। मरनीए दादी जकाँ अपनो ओहिना अखनो उठै छी आ सभकेँ–माने परिवारक आन-आन सभ सदस्यकेँ–सुतले छोड़ि अपने दिन-दिनक काजमे लगि जाइ छी। माने उठि कऽ माल-जालकेँ घरसँ निकालि खाइले दऽ दइ छिऐ, दुआर-दरबज्जाकेँ बहारि-सोहारि पर-पैखानासँ निवृत्ति होइत मुँह-हाथ धोला पछाइत एक तोरक काजकेँ जखन सम्हाइर लइ छी तखन टिफीन होइए, माने चाह-पानक बेर होइए। तखन परिवारक आन-आन सदस्यकेँ उठबए जाइ छी। आइयो तहिना उठबए गेलौं। चारि-पाँच हाक जेठका बेटाकेँ देलिऐ। जहिना गहुमन साँप हनहनाइत निकलैए तहिना भोरक हल्ला सुनि पत्नी घरसँ हनहनाइत निकलली, निकैलते हल्ला करए लगली।

जहिना गाम-समाजमे कहियो घरमे आगि लगलापर तँ कहियो घरमे चोर पैसलापर रंग-रंगक हल्ला होइए तहिना ने घरो-परिवारमे होइते अछि। मुदा दुनू हल्लाक दू रूप अछि। आगिक हल्लामे लोक घैल-डोलमे पानि भरने दौड़ैए तँ चोरक हल्लामे लाठी-ठेंगा नेने दौड़ैए। तहिना परिवारोमे भेल।

धिया-पुताक नाओं लऽ लऽ जगैले शोर पाड़लिऐ। किए ने शोर पाड़बै। परिवारक जवाबदेही जखन कन्हापर अछि तखन ओकरा सम्हारि लऽ चलबो तँ अपन दायित्व भेल किने। परिवारजनकेँ अपन दायित्वक संगे ने अधिकारो होइते

अछि। मुदा जे अछि आ जेते अछि से तेते अछिए। बजैकालमे कौआसँ मेना तक कि नइ बजैए जे 'भाय प्रकृत्तिसँ मिलि-जुलि कऽ चललापर जहिना भगवान जकाँ प्रकृत्ति मनुखक मददगार होइए, तहिना ओइसँ हटि कऽ चलब तँ ओ दानव-दैत्य जकाँ भक्षक सेहो भऽ जाइए। मुदा ईहो तँ झूठ नहियेँ अछि किने जे रातिकेँ ढलानपर ढलिते, अढ़ाइ बजे भोरे परबा-पौरकीक संग मुर्गा-मुर्गीक माध्यमसँ प्रकृत्ति जगैक आवाहन करैए। तखन जँ अपने आठ बजेमे ओछाइन छोड़ि दुनियाँ दिस ताकि अपनाकेँ जगबए लगब तखन कोन रूपक जगान हएत? नीक हएत कि अधला तहू दिस ने देखए पड़त? खाएर...।

ओछाइनसँ उठि ललकैत पत्नी घरक चौकैठ टपि आगूमे आबि ठाढ़ होइत बजली-

"अखन सुतै बेर छै, खुट्टा जकाँ बाप-माए जीबै छै, तैबीच जँ सुख-मौज अखन नइ करत तँ कहिया करत।"

पत्नीक बात जेना-जेना कानमे पैसल जाए तेना-तेना मनमे लहैर उठल जाए। कोन हाथी चढ़ि गौड़ पुजने छी जे एहेन हथियाह मनुख जिनगीक संगी बनि संग पूरत। मुदा लगले मनक विचार तर-मुहेँ ससरल। ससरल ई जे जखन शरीरक भीतर सेहो प्रकृत्ति अनुकूल आ प्रतिकूल विचारक संग चलैत प्रकृतस्थ होइते अछि तखन अनेरे...। जहिना पुरुखक सोभाव तहिना ने नारियोक अछि। सभ ने अपन वचस्व चाहैए। तैठाम तँ पुरुख-नारी कहियौ आकि पति-पत्नी, अपन-अपन विचारानुकूल दुनूकेँ परिवारमे नव पीढ़ीक सृजन करब अछिए...।

रंग-रंगक विचार मनमे बर्खाक बुन्नक बुलबुला जकाँ उठितो रहल आ फुटितो रहल आ गोटे-गोटे आगूओ पानिक धारक संग चलितो-बहितो रहबे कएल।

समय आ स्थिति जेहेन छल, तइमे की नीक हएत आ की अधला हएत, ई विचार जँ परिवारक सिरजन नहि करैथ तँ बिनु सीरबला वा कम सीरबला वा जलियाएल सीरबला कोनो विचारमे की गति देत से तँ विचारणीय अछि किने, जे विचारए पड़त। पति-पत्नीक बीच जखन परिवारक कोनो काज सृजित हएत तखन जे सृजनकर्ता छैथ–माने माता-पिता–ओ सृजनक सीर तक नहि पहुँच अल्हुआ[56] वा पोरो सागक लत्ती जकाँ जँ ऊपरेसँ काटि रोपि कऽ नव सृजन चाहता तँ ओहो एक क्रिया भेल। मुदा किछु भेल, भेल तँ बिनु सीरेक। तैठाम दोसर-तेसर आकि चारिमजन जँ कम्मो सीरगर हुअए वा एकसिरे हुअए आकि सघने सीरबला होथि, होइ तँ अछिए। मुदा सघन सीरबला गाछकेँ जँ अल्हुआ

[56] शकरकन्द

वा पोरो जकाँ ऊपरसँ काटि कऽ रोपब, तँ ओ थोड़े सृजित भऽ सकैए। मनुखोक वंश-वृक्ष तँ तेहने अछि। तँए, पति-पत्नीक बीचक जे विचार अछि तइ अनुकूल बजलौं-

"बाल-बोधकेँ ताधैर उठबैये पड़त जाधैर ओ ओछाइनसँ उठि ठाढ़ भऽ आगू बढ़ै दिस डेग नइ उठौत।"

हमर विचारक वाण पत्नीकेँ जइ रूपे लगल होनि से ओ जानैथ, मुदा बिलसँ निकलल गहुमन साँप जकाँ आरो हनहन करैत बजली-

"आध पहर रातिसँ जहिना अहाँ अपन जान गमबैत रहै छी तहिना दोसरोक जान लेबइ..!"

पत्नीक बात सुनि मनमे उठल जे कहिऐन-

"उठि कऽ चलैले जँ दिनक सुर्जक इजोते भरोसे रहब आ जँ कहीं दिनमे कुहेस लगि जाइ, तखन तँ अशे-अशीमे रातिये जकाँ दिनो सुतले-सुतल बहि जाएत। जाबे अचेतन चेतनक बाट पकैड़ सुरूजे जकाँ रातिक अन्तिम पहर–जे राति-दिनक संक्रमणकालक पहर छी–तइमे अपनो रातिक वृत्तिकेँ[57] दिनक वृत्तिक[58] बीच संक्रमण नइ करब तखन संक्रमित केना हएब? आ जँ संक्रमित नइ हएब तखन केहेन जिनगी पेब पएब?"

तरेतर मन कड़ुआए लगल। कड़ुआइते उठल- कहू! जे जेकरा-ले चोरि करौं सएह कहए चोरा! एक दिस हम अपना संग पत्नियोँ आ परिवारक बालो-बच्चाकेँ धार सिरैज धाराक रूपमे धराधाम दिस बढ़ैक विचार कऽ रहलौं अछि, मुदा दोसर दिस परिवारक कियो सुतले अछि आ कियो झगैड़ते अछि तखन ओ प्रवाहित केना हएत..?

कड़ुआएल आँखि ललिया गेल, पत्नीकेँ पुछलयैन-

"दोसरक जान लिअ चाहै छिऐ आकि दिअ चाहै छिऐ?"

हमर बात पत्नी की बुझली, केना बुझली कि सुनबे-बुझबे ने केली आकि सुनि कऽ मतसून जकाँ मठैर देली से तँ ओ जानैथ, मुदा मनक विचार फाड़ि बजली-

"जहियासँ ऐ घरमे पएर देलौं तहियासँ एक्को दिन सुख नइ भेल..!"

पत्नीक बात सुनि मन बेसम्हार हुअ लगल। ई तँ नमहर उपराग भेल! आइ जँ अपने सीमा तकक–अपन सीमाक माने भेल जहियासँ गारजनी भेल तेतबे

---

[57] काजकेँ

[58] चेतन वृत्ति

तकक–उपराग रहैत तँ पति-पत्नीक बीचक बात बुझि छोड़लो जा सकै छल, मुदा जैठाम पैछला पीढ़ीक उपराग अछि तैठाम तँ पत्नीक मुँहमे लगाम लगौने बिना कियो चेतनशील केना भऽ सकैए। जिनगी जिनगी छी, ठट्ठा नहि। किछु सीखए पड़ै छै, किछु बिसरए पड़ै छै, किछु जोड़ए पड़ै छै आ छोड़ौ पड़िते छइ। आ जँ से नहि हएत तँ हीर-मति लाल-जवाहरक संग अमृतसँ भरल ई दुनियाँ खढ़-पातसँ तेना ढकि कऽ झँपा जाएत जे चीन-पहचीन सभटा लोप भऽ जाएत! जखन नीक-अधलाक विचारे लोप भऽ जाएत तखन जिनगीए की आ जीवने केहेन रहत?

मन तेते गरमा गेल जे अपन विचार जोर-जोरसँ पत्नीपर लादए लगलौं। मुदा ओहो उतारामे की कहली, नइ कहली, से सुनि अखनो कान ओहिना बहीर अछि जेना सुनसान असमसान हुअए। मुदा चुपचाप सुनि कऽ बरदासो करब, केतौसँ उचित नहि बुझि पड़ल। बेतुकार मुहसँ निकलए लगल। जइसँ दुइये गोरेक बीचक बात अनघोल जकाँ भऽ गेल। तहीकाल मरनी दादी घर बहारि आँगन बहारै छेली आ सुनबो करै छेली। जखन अनसोहाँत लगलैन तखन डेढ़ियापर बाढ़ैन रखि पहुँचली।

अखन तक दादी दुनू गोरेक बाते अकानैत, बाजैत किछु नहि। मुदा विवादक जड़ि जखन नजैरमे नइ एलैन तखन अनधुन बजली-

"की जोलहा-धुनियाँक घर जकाँ झूठ-फूसकेँ धुनकीमे धुनबो करै छह आ तानी-भरनी तानि अनेरे खटखुट करै छह।"

ओना दादी हमरा दिस ताकि बजै छेली, तँए पत्नीकेँ अपन पछपात बुझि पड़लैन, जइसँ मुँह सुपुट लेलकैन। दू गोरेक बीच अपने फँसि गेलौं। एक दिस पत्नीक नजैर तेज होइत उठैत देखिऐन तँ दोसर दिस मरनी दादीक विचारकेँ आइ धरि कहियो सोझा-सोझी कटने नइ छी तँए किछु करैत किछु-ने बनैत रहए। मुदा रच्छ रहल जे आगू भऽ कऽ पत्नियेँ, दादी दिस नजैर उठा बजली-

"दादी, भिनसरू पहरकेँ लोक राम-राम करैत नीन तोड़ैए आ ई सभकेँ तेना हकबाहि करै छैथ जे गाम-समाजक लोको सुनि की कहैत हेता!"

ओना मरनी दादी पत्नियोकेँ आ अपनो ठेहुन लगसँ के कहए जे छाती धरि नीक जकाँ चिन्है छैथ। जे दुनू परानीक जिनगीमे की अन्तर अछि। ओना कोनो झगड़ाक पनचैती दू रूपक पंच दू रूपे करै छैथ। एक करै छैथ जे झगड़ाक गहींर पानिक पता नइ पौनिहार जकाँ आ दोसर करै छैथ झगड़ाक जड़िक पताल तक जानि कऽ। मरनी दादी दोसर श्रेणीक पंच छैथ। मुदा जेहेन ललका-ललकी दुनू परानीक बीच भेल छल सेहो तँ अपने काने सुनने छेली, केकरो कहलाहा नइ सुनने छेली, तँए घरमे लगल आगिकेँ पहिने जलक बूनसँ नहि घैल वा बाल्टीनक

पानियेसँ ने तोपि कऽ शान्त कएल जा सकैए...।

सामंजस करैत दादी बजली-

“तोरा सबहक दुआरे होइए ऐ टोलकेँ के कहए जे गामेसँ पड़ा जाइ। ने रहब एहेन टोल आ ने सुनब एहेन लोकक बोल।”

ओना अपना बुझबामे आबि गेल जे मरनी दादी एकभग्गू पनचैती कऽ रहली अछि, मुदा दुनू परानी जैठाम आमने-सामने दू पार्टी बनल छी, तैठाम जँ किछु बाजब तँ सोल्होअना दोखी हमहीं हएब किने। तँए मुँहकेँ बरैज लेलौं। मुदा दादीक बात सुनि पत्नीकेँ बुझि पड़लैन जे दादी हमरा विचार दिस भऽ गेली। माने हमर विचारकेँ मानि लेली। मुस्की दैत पत्नी बजली-

“दादी, गाममे ई सभसँ सिरिस[59] छैथ, हिनकर बात जहिना ने कहियो कटलयैन हेन तहिना ने कहियो कटबैन।”

ओना जहिना अपने बुझै छेलौं तहिना मरनी दादी सेहो पत्नीक घटी-कुघटी जनिते छैथ, मुदा ईहो तँ जनबे करै छैथ जे दुनू परानीक बीचक झगड़ा छी। ओना, जँ समतल जगहपर आनि कोनो घुरछीकेँ छोड़ौल जाए तँ ओ असानीसँ छुटि जाइए। मने-मन दादी ईहो देखबो आ सुनबो करैथ जे सभ दिन भोरे-भोर ओछाइन छोड़ि उठैले कहा-कही होइए। जखन चेतनो-सियान से नइ बुझत तखन की हएत..!

हाथ पकैड़ आँगनसँ निकलैत मरनी दादी आँखिक इशारा देलैन। बुझि गेलौं जे किछु कहती, मुदा तइसँ पहिने पत्नीकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, घर-दुआर आकि बाल-बच्चा केकरो अनकर छिऐ, कि अपने छी। जाउ, अँगना-घरक काज सम्हारू।”

हाथ पकड़ने मरनी दादी अपना अँगना आनि ओसारपर बैसा कहली-

“बौआ, किछु भेलह ते पुरुख-पात्र भेलह किने। नारीमे नारीत्व आबि सकैए मुदा पुरख-ले ते दुनियाँ पसरल अछि। तहूमे अखन जुआन-जहान छह, अखन नमहर जिनगी जीबैक छह, तँए मिलि-जुलि कऽ रहह।”

पत्नीक सोझमे मरनी दादीसँ जे विचार-विनिमय केलौं ओ एक रंगक अछि। माने जैठाम दू धारक मुँहक बीचक घाटक मिलानी होइए आ जखन पत्नी नइ रहै छैथ तखन एक घाटक मुँह जकाँ धारक गहींरपन दिस होइए। अखन दुइए गोरे छी, माने हमहीं छी आ मरनीए दादी छैथ। तँए मुर्दघटक अपन-अपन

[59] श्रेष्ठ

सीमा छै, जे मरनियोँ दादी बुझै छैथ आ अपनो बुझै छी। तैठाम जँ मरनी दादी दुनू परानीकेँ मिलि-जुलि रहैक बात कहलैन से केना सम्भव हएत। ओना दुनियाँमे किछु असम्भवो नहियेँ अछि, मुदा तैबीच अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति नइ अछि सेहो केना कहल जाएत। मुदा शंको तँ शंका छी, पत्नीक संग सामंजस करैत जिनगी चलि सकैए मुदा ओते बिसवासू नहियेँ हएत जेते हेबा चाही। मुहसँ खसि पड़ल-

"दादी, जैठाम कर्मक जिनगी आ अकर्मक जिनगीक झगड़ा हएत तैठाम मिलान केना हएत जे मिलि-जुलि रहब?"

ओना अपन मन गरमाएल जकाँ बाजल मुदा मरनी दादी-ले घैनसन। मुस्की दैत बजली-

"बौआ, सब दिन कोरा-काँखमे लऽ खेलबैत एलियह से कि मनसँ हेरा गेल जे विचार बदैल जाएत। दुनू गोरेक बीच छेलौं तँए एहेन बात बाजब उचित छल।"

ओना मरनी दादी खोलि कऽ नहि बाजल छेली, मुदा इशारामे ओ यएह बाजल छेली जे जहिना काजक जिनगी–माने कर्मशीलक जिनगीक अनुभवात्मक बोध–आ अकाजकक जिनगी, जे मात्र विचारक सीमाक भीतर रहैए, दुनूमे की दूरी छै तइ ठिकिया कऽ इशारा केने छेली। ओना, मरनी दादीक बात सुनि कनी-मनी मन नरमा जरूर गेल मुदा सोलहन्नी ठण्ढाएल नहि, तँए बजा गेल-

"दादी, मुँह देख मुँगबा परसबकेँ अहाँ केना उचित कहै छिऐ?"

जहिना अकासमे उड़ल बैलून, जे जेते नमहर रहल, धरतीपर उतरैकाल ओ ओते असानीसँ पकड़ाइए, तहिना मरनी दादी पकड़ैत बजली-

"बौआ, चौमैतपर चारिटा मति एकठाम भऽ ओझराइए वा लड़ै-झगड़ैए, तैठाम केना कएल जाएत। कनी-कनीकेँ घटा-बढ़ा, घीच-तीर कऽ ने एकठाम साटल जाएत। एकर माने ई नहि ने भेल जे पाछूसँ अबैत मति चौमुहानीक पछाइत अपन रूपे बदैल लेत। ओकर तँ स्पष्ट दिशा छै जे पूबसँ आएल रस्ता जखन चौमैतमे मिलि चबुतरा निरमबैत आगू दिस बढ़ि जाइए। जे पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन सभ दिस बढ़ैए। तैठाम तँ कहले ने जाएत जे पच्छिम-मुहेँ जाएत किने ओ पुबरिया रस्ता भेल आ जे दच्छिन-मुहेँ जाएत ओ उत्तरबरिया भेल। जे दुनू दिससँ माने सभ दिससँ भेल।"

ओना मरनी दादीक बात कनी-कनी बुझबो केलौं आ कनी-कनी नहियोँ बुझलौं। मुदा भिनसुरका समय गप-सप्पक तँ छी नहि। बजलौं-

“दादी, अखन काज सभ अछि काजसँ जखन निचेन हएब तखन आगूक गप-सप्प करब।”

मास दिनक बीच अपन विचारक संग काजमे संशोधन केलौं। जइसँ काजक रूप रूपायित भऽ बदैल गेल। भोरक झगड़ा मेटा गेल। काजक रूप ई बदलल जे जैठाम जेठका बेटाक नाओं लऽ लऽ शोर पाड़ै छेलिऐ जे अवाज सुनि सभ उठत। ओ छोड़ि देलौं। आठटा धिया-पुता रहने पत्नीकेँ सेहो टोकब छोड़ि देलिऐन। माने सुति कऽ उठैबेर, आठो धिया-पुताकेँ एक-एक बेर नाओं लऽ लऽ जोर-जोरसँ बजै छी, जइसँ आठ अवाजमे धिया-पुताक कोन गप जे बिनु टोकल पत्नियोँक नीन टुटि जाइ छैन। मुदा दोहरा-दोहरा बजितौं तखन ने ओहो सोन्हिमे सुइया तकितैथ, से तँ रहलैन नहि। तँए चुपे-चाप गबदी मारि ओछाइन छोड़ि उठि जाइ छैथ।

❍

शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017

सुभिमानी जिनगी

भोरे सुति-उठि जीवन काका दरबज्जासँ गाम दिसक रस्ता जे फुटल अछि तैठाम अपन डेढ़हत्थी ठेंगासँ डाँरि खिंचैत बुदबुदेला-

“परिवार आकि समाज एक दिस जुटि आगूमे किए ने ठाढ़ हुअए मुदा एको इंच पाछू अपन विचारसँ नइ घुसकब।”

ओना, जहिना आन दिन तीन बजे भोरे नीन तोड़ि ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल जीवन काका अपन बीतल दिनक हिसाब जोड़ि अबैबला दिनक मुँह-मिलानी करैत भरि दिनक हिसाब लगा लइ छला तहिना आइयो केलैन। मुदा आन दिनक हिसाब आ औझुका हिसाबमे किछु अन्तर आबि गेल छैन। माने ई जे आन दिन जीवन काका अपन भरि दिनक हिसाब परिवारक लीलामे रखै छला मुदा आइ से नइ केलैन। परिवारक संग समाजोक चलैक रस्तापर ठाढ़ भऽ अपन विचारक लकीर खिंचलैन। ओना, जीवन कक्काक अपन विचार ई छैन जे जहिना सभ दिन नव सुर्जक उदय होइए तहिना अपनो जिनगीमे सभ दिन हुअए। जखने दूध नवनीत[60] बनि घृत बनैक दिशामे ऐ आशाक संग बढ़ैए जे अपनो जिनगी घीवाह बनत आ जखन जिनगी घीवाह बनत तखने ने ओकर सार्थकता हएत।

अपन संकल्पक विचार मनमे रोपि जीवन काका डेढ़ियापर डेढ़हत्थी ठेंगासँ डाँरि खींचि दरबज्जाक चौकीपर आबि बैसला। बैसते व्रती जकाँ अपन व्रत मनमे रोपि दृढ़ हुअ लगला जे दुनियाँ किए ने एकभाग भऽ जाए मुदा पर्वतेश्वर[61] जकाँ एक्को डेग पाछू नइ घुसकब। पाछू नइ घुसकैक दृढ़ विचार मनमे रोपाइते जीवन कक्काक नजैर अपन तेसर सन्तान- श्यामापर गेलैन। श्यामा..! श्यामा मनमे अबिते विचड़लैन- ‘श्यामो तँ हमरे सन्तान छी..!’

श्यामाक प्रति विचार मनमे जगिते जीवन कक्काक देहमे जेना उमंगक फुनफुनी जगलैन। फुनफुनी जगिते देह कँप-कँपा उठलैन जइसँ एक दिस दुनियाँ[62]क भय आगूमे ठाढ़ भेलैन तँ दोसर दिस अपन दृढ़ संकल्प सेहो समकक्ष

---

[60] मक्खन

[61] चन्द्रगुप्त नाटक- जयशंकर प्रसाद

[62] परिवार-समाजक

भऽ जिनगीक सोझमे ठाढ़ भेलैन।

जीवन कक्काक तेसर सन्तान 'श्यामा'क लिंग परिचय अखन धरि स्पष्ट नहि भेल छल। बालपनक जिनगी रहने श्यामाकेँ ने खाइ-पीबैमे कोनो तरहक असोकर्ज आ ने मल-मूत्र तियाग करैमे। बच्चा सबहक संग खेलबो करैए आ पढ़ैले स्कूलो जाइते अछि। ओना, रंग-रंगक समाचार अखबार-रेडियोमे अबिते रहैए जे अमुख डॉक्टर ऐठाम लड़का-लड़की भऽ गेल आ लड़की लड़का...।

दस बर्ख बीतला पछाइत आने बाल-बच्चा जकाँ श्यामाक शरीरमे सेहो किशोरी-रूप झलकी दिअ लगल। शरीरो फौदाए लगलै आ मनक झुकाव सेहो लड़की सभ दिस झुकए लगलै। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, प्रश्न अछि जे बच्चा बाल-बुधि धरि लड़का-लड़की संग-संग संगी जकाँ खेलबो-धुपबो करैए आ खाइतो-पीबितो अछिए। ओकरा सभमे लिंग-भेदक कोनो आशंका मनमे रहिते ने छइ। तत्पश्चात लड़काक झुकाव लड़का दिस आ लड़कीक झुकाव लड़की दिस हुअ लगै छइ। ई अवस्था लड़का-लड़कीक प्रेम-मिलनक अवस्थासँ पूर्वक छी। ओना, श्यामाक शरीर-गठनमे नवपन आएल मुदा आनसँ भिन्न रूपमे। अखनो ई स्पष्ट नहि भेल जे श्यामा लड़का छी आकि लड़की। ओना, श्यामाक अपन उमेरक आकर्षण लड़की दिस बढ़ि रहल छल जइसँ केश बढ़ाएब, कनियाँ-पुतराक खेल-खेलाएब इत्यादि-इत्यादि श्यामाक मनक संग बेवहारमे आबए लगलै। अखन धरि परिवारोक नजैरमे श्यामाक असल रूप आ गामो-समाजक नजैरमे झँपाएल छल।

आइ आठ दिनसँ जीवन काकाकेँ हुनक पत्नियोँ आ दुनू बेटो मुँह फोरि कऽ तँ नहि, मुदा कात-करोटसँ सुना-सुना बाजए लगलैन-

'श्यामा हमरा परिवारक नहि, हिजरा परिवारक भेल..!'

मंगली काकी–माने श्यामाक माए–जखन असगरमे बैस विचारै छेली तँ देखै छेली जे जहिना जेठ दुनू सन्तानकेँ पेटमे नअ मास सेवलौं तहिना ने श्यामाकेँ सेहो सेवने छी। मुदा..!, ऐमे हमर कोन दोख अछि..? सभ लीला तँ भगवानक छिऐन..!

मुदा लगले जखन बेटा-पुतोहु वा सर-समाज श्यामाक प्रति कहैन जे ई अपना सबहक सन्तान नहि, तखन मंगली काकी सेहो ओही विचारमे भँसिया समाज दिस तकैत श्यामाकेँ अपन नहि बुझि तियाग करैले तैयार भऽ जाइथ..! 'माइक दिल', 'माइक दिल' तँ दिन-राति अनघोल होइते अछि, मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि से के देखत..!

श्यामाक प्रति अखन धरि समाजक अधिकांश लोकक यएह धारणा बनल रहल छल जे श्यामा लड़का छी। ओना दुनू परानी जीवन काकाक मनमे बच्चेसँ

शंका उठलैन जइसँ केतेको डॉक्टर आ केतेको ओझा-गुनीसँ श्यामाकेँ देखा-सुना चुकल छला। ओझा-गुनी तँ घरक देवताक दोख लगा अपन-अपन पल्ला झाड़लक। मुदा डॉक्टरी जाँच-परताल करौला पछाइत अपन हारि कबुल कऽ डॉक्टर सभ जीवन काकाकेँ कहि देलकैन जे हमरा साधसँ बाहर अछि मुदा अहाँक तँ सन्तान छी, अहाँकेँ ते केतौ भगैक रस्ता नहि...।

डॉक्टरी विचारक पछाइत जीवन काका लड़का-लड़कीकेँ मनसँ हटा सन्तानक सीमापर ठाढ़ भऽ गेला। मनमे कखनो काल किन्नर परिवारक रूप-रेखा अबैन। किन्नर परिवारक रूप-रेखा देख मनक संग देहो काँपि उठैन जे ओ परिवार तँ समाजक हँसियापर अछि! अपना परिवारमे बाप-पुरखाक देल बीस बीघा जमीन अछि, किसान परिवार छी, किसानी जीवन अछि। जेकर धर्म रहलै जे अपन परिवारक भरण-पोषणक कोन बात जे दरबज्जापर आएल आनो-आन खगलोकेँ आ बाटो-बटोहीकेँ खाइ-पीबैक परहेज नहि अछि। धार्मिक वृत्ति समाजक परिवारमे रहबे कएल अछि जे जिनका जएह विभव छैन ओ ओहीमे परिवारक सभ मीलि-बैस खाइ-पीबी। व्यास बाबाक समाज तँ आइ अछि नहि, जे बुझत- लूटि लाउ, कुटि खाउ, प्रात भने फेर जाउ...।'

अप्पन आइ धरिक परिवारक जिनगीक धाराकेँ देख जीवन कक्काक मनमे भोरेसँ जहिना दृढ़ता उठलैन जे अपन आँखिक सोझमे अपन सन्तानकेँ भिखमंगा परिवारमे किन्नौं नइ जाए देब, चाहे ऐ खातिर जे हुअए। परिवारे आकि समाजे की कहत। की समाज ई नइ जनैए जे श्यामा हमर तेसर सन्तान छी..?

दरबज्जाक ओसारक चौकीपर जीवन काकाकेँ अकलवेरा[63]मे उमंगित बैसल देख मंगली काकीक मनमे ओहिना हुमरलैन जहिना जेठ मासक रौदक जरल मेघमे हनहनाइत तूफानी दौड़मे करिया मेघ ऊपर चढ़ए लगैए जइसँ धरतियोपर हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथर अबैक सम्भावना बनियेँ जाइए तहिना भेलैन। मुदा लगले मन थीर भऽ गेलैन। तैबीच दरबज्जापर पहुँच मंगली काकी जीवन काकाकेँ पुछलकैन-

"चाहे पीब आकि पानियोँ पीब?"

ओना आजुक परिवेशमे एहेन विचार मनुखाह बनि मरखाह बनि सकैए। किएक तँ पानि नहि, पीबैक माने किछु खेलाक पछाइत पानि पीबसँ अछि। मुदा से नहि, कृषक बीच अखनो एहेन चलैन अछि जे सभसँ पहिने मुँह-कान धोनौं वा बिनु धोनौं खाली पानि पीबाक चलैन अछि। बिनु मुँह धोनेक माने भेल बाइसे मुहेँ बसिया पानि पीब। तँए हुनकर खतियान एहेन बनि गेल छैन जे भोरमे

---

[63] अकलबेराक माने ऐठाम भेल, भिनसुरका समैयक जे क्रिया-कलाप अछि, तइसँ भिन्न

सभसँ पहिने मन भरि पानि पीबी। पछाइत चाह-पान चलत। तैठाम चाहक संग पानिक चलैन किए रहत? मुदा से नहि, मंगली काकीक मन जीवन कक्काक रूप देख थरथरा गेल रहैन तँए बाजल छेली।

जीवन काका मंगली काकी दिस टकटक देखए लगला जे यएह माए अपन कोखिक सन्तानकेँ भिखमंगाक सन्तान बनबए चाहि रहली अछि। मुदा मनक विचारकेँ मनेमे अरोपि बजला-

"चाहो पीब आ किछु गपो-सप्प करब। तँए अपनो चाह एतै नेने आउ। संगे-संग पीबो करब आ... ।"

ओना संगे-संग चाह पीबैक साहस मंगली काकीक मनमे घटि रहल छेलैन। तँए बहन्ना बनबैत पहिने हिनकेटा-ले गिलासमे चाह नेने पहुँचली।

पतिक हाथमे गिलास पकड़ा मंगली काकी अपने चोटे घुमि आँगन आबि गेली। आँगन आबि चाह तँ पीबए लगली मुदा मन थरथराइते रहैन। मन थरथराइक कारण रहैन दुनू गोरेक बीचक ने परिवार छी, तखन चाहमे किए..?

मंगली काकी घोंटे-घोंटे चाहो पीबैथ आ मनकेँ घटे-घट सकतेबो करैथ। चाह पीला पछाइत दरबज्जापर आबि जीवन कक्काक आगूमे ठाढ़ भेली। ओना, तैबीच काकीक मनमे ईहो जगि चुकल छेलैन जे जहिना पति छैथ तहिना ने बेटो अछि। जहिना पतिकेँ खुश राखब अप्पन दायित्व छी तहिना ने बेटोकेँ राखए पड़त। तँए निर्भिक रूपमे मंगली काकी जीवन कक्काक आगूमे ठाढ़ भेली।

पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देख जीवन कक्काक मन चकभौर लिअ लगलैन। जहिना धारक मोनिक चकभौरमे कियो-कियो डुमबो करैए, तहिना अकासमे गीध चकभौर लैत चारू दिशा देखबो करैए आ पाहि लगा पहियेबो करिते अछि। जीवन कक्काक मनमे पहिल दिशाक चकभौरमे जगलैन जे पति-पत्नीक बीचक ने परिवारो छी आ सन्तानो छी। मुदा तँए सोभावमे अन्तर नहि अछि सेहो केना मानल जाएत। पुरुखक सोभाव होइए जे जँ अपने वा परिवारक सन्तानेक आगू अबैत बाधा[64]मे सन्तानकेँ संरक्षण दैत अपने आगूमे ठाढ़ भऽ सामना करब, भलेँ परिणाम जेहेन होइ, मुदा पत्नीक की ई सोभाव नइ अछि जे आक्रमिक आगूमे ठाढ़ भऽ सन्तानकेँ दुनू हाथे दुनू हाथ पकैड़ मारि खुआ दइए। ओना, ऐठाम एहेन प्रश्न अछिए जे संरक्षणक रूप केहेन अछि?

फेर दोसर चकभौर जीवन कक्काक मनमे उठलैन। उठलैन ई जे श्यामाक जहिना 'पिता' भेलिऐ तहिना ने पत्नियोँ 'माए' भेलखिन। तैठाम अप्पन चाह की अछि आ पत्नीक चाह की छैन? केकरो बात सुनला पछाइत ओइपर नीक जकाँ

---

[64] सन्ताप

विचारबो तँ जरूरी अछिए। विचारक पछाइत हँ-नइक ने निर्णय करब। आकि कियो बाजल जे 'कौआ कान नेने जाइए' आ ओकरा सुनि अपन कान बिनु देखनहि जँ कौआक पाछू-पाछू दौगब, ई केहेन हएत..?

दू भौक टपैत-टपैत जीवन कक्काक मन कनी थमलैन। ओना, ने जीवन काका किछु बजै छला आ ने मंगलीए काकी किछु बजै छेली। मुदा भीतरे-भीतर दुनू बेकतीक मनमे समुद्री तूफान चलिये रहल छेलैन। पत्नीक अलिसाएल-मलिसाएल चेहराक रंग देख जीवन कक्काक मन सेहो पसीज रहल छेलैन। जे एकाएक मन बिहुसि उठलैन। जीवन काका बजला-

"एकटा पनचैती अहाँसँ कराएब अछि, घरक बात छी तँए पहिने घरेक लोक ने ओइपर विचार करत। जँ घरमे नइ फरिछाएत तखन ने समाज आकि संसार देखब।"

पतिक विचार सुनि मंगली काकीक मनमे एकाएक चमक एलैन। चमक अबिते मनमे उठलैन जे परिवारेक विषयमे ने पतियो विचार करए कहि रहल छैथ। जखने परिवारमे पति-पत्नी मिलि, वैचारिक एकरूपता आनि परिवार चलौत तखने ने ओ परिवार अपना बले ठाढ़ हएत। जइसँ जिनगीक धारा एकबट्ट होइत आगू बढ़ैत चलत। ओना, तैबीच परिस्थितिवश तोड़-जोड़ सेहो चलिते रहत। परिस्थितिक अर्थ भेल- 'परि+स्थिति', तँए, जखने परक स्थिति आगूमे औत तखने कनी-मनी डोल-पात हेबे करत...।

मंगली काकी बजली-

"बाजू, की कहै छी?"

मंगली काकीक विचार सुनि जीवन काका समधानल प्रश्न रखैत बजला-

"अपना दुनू गोरेक बीच केते सन्तान अछि?"

मंगली काकी बजली-

"तीन।"

बजैक क्रममे तँ मंगली काकी बाजि गेली मुदा लगले मन बेटाक संग समाज दिस बढ़ि गेने तत-मत करए लगली।

पत्नीक ततमती देख जीवन काका बुझि गेला जे पछुआ दाबि रहल छैन। ठिकिया कऽ जीवन काका दोसर प्रश्न रखला-

"एतेटा दुनियाँमे अहाँकेँ सभसँ लग के अछि?"

अतीतोमे जे अतीत अछि। जेकर जेहेन परतीत तेकर तेहने ने अतीतो। किए कियो अपन छोड़ि अनका-ले मरैए आ किए कियो अनका छोड़ि अपना-ले

मरैए..? धरती-अकासक बीचक क्षितिजमे जहिना केहनो-केहनो उड़न-चिड़ैया फँसि जाइए तहिना मंगली काकीक मन एकाएक फँसि गेलैन। दुनियाँमे सभसँ लग के? अतीतमे वौआइत मंगली काकीकेँ बिआहक अपन मरबा मन पड़ि गेलैन। मन पड़लैन जे ओही मरबापर ने माए-बापक संग समाजो पतिक हाथ पकड़ा कहलैन जे दुनियाँ मेटि जाए मुदा पतिक संग नइ छोड़ब...।

मंगली काकी बजली-

“बुझलो बात अनठा किए बजै छी। हमरा बकलेल-ढहलेल बुझै छी?”

मंगली काकीक चपचपाएल बोल सुनि अपन चपचपी मिलबैत जीवन काका बजला-

“अहाँ केना बुझि गेलिऐ जे हम अनठा कऽ बजलौं हेन। जे कहैक अछि से पहिने चेतौनी दैत चेता देब।”

जीवन कक्काक वाणीमे जेहेन ओज छेलैन तेहने मनो ओजस्वी छेलैन्हे जइसँ मंगली काकीक मनमे भय सेहो जगलैन। भयकेँ जगिते ज्वर-बुखार नपैबला थर्मामीटरक पारा जहिना गरमी पेब चढ़ैए आ ठण्ढी पेब उतैरतो अछि तहिना मंगली काकीकेँ भेलैन। बजली-

“अहाँसँ हम कोनो हटल छी। जे कहै छी, जेना कहै छी तहिना ने सुनबो करै छी आ करबो करै छी।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे आइ जे समस्या परिवारक सोझामे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ नान्हिटा नहि अछि। पत्नीसँ परिवार होइत समाज धरिक बीचक समस्या छी, तँए नान्हि-नान्हिटा विचारमे ओझराएब उचित नहि...।

जीवन काका बजला-

“सुनबामे आएल अछि जे अहूँ श्यामाकेँ अपन सन्तान नहि बुझि तियाग करैले तैयार छी?”

पतिक बात सुनि मंगली काकी सहैम गेली। करेजक संग विचारो डोलायमान हुअ लगलैन। की बाजब आ की नइ बाजब तैबीच मंगली काकीक विचार ओझराए लगलैन। किछु बजैक साहसे ने भऽ रहल छेलैन।

मंगली काकीकेँ चुपी साधल देख जीवन काका बजला-

“चुप रहने काज चलत! मुँह खोलि बाजू जे अहाँ की चाहै छी। कियो अपने विचारक ने मालिक अछि।”

थरथराइत मने मंगली काकी बजली-

"अपन बेटो आ समाजोक लोक श्यामाकेँ अपन नहि बुझि दोसराक कहि रहल अछि! तैबीच..?"

पत्नीक झूकैत विचार सुनि जीवन काका दृढ़ भऽ बजला-

"चाहे ओ बेटा हुअए वा समाज, कान खोलि कऽ सभ सुनि लिअ जे श्यामा हमर सन्तान छी, सन्तान बनि रहत। ई हमहूँ बुझै छिऐ जे श्यामा नि:सन्तान रहत, मुदा तँए ओ मनुख नहि छी आ मनुखक जिनगी नहि जीब सकैए, हम तेकरा मानैले तैयार नहि छी।"

पतिक दृढ़ विचार सुनि मंगली काकीक मनमे सेहो दृढ़ता आबए लगलैन, एकाएक अपन कोखिक संतप्त श्यामापर मन एकाग्र हुअ लगलैन। एकाग्र होइते मनमे उठलैन- श्यामेटा एहेन सन्तान थोड़े छी, दुनियाँमे एहेन बहुत लोक अछि जेकरा प्रकृत्ति प्रकोपसँ सन्तानोत्पतिक शक्ति नइ छइ। तँए ओकरा परिवार वा समाजसँ वहिष्कृत करब कहाँ धरि उचित हएत...।

तैबीच जीवन काका बजला-

"पहिने अहाँ ई कहू जे अहाँक मनमे की अछि। की श्यामाकेँ अपन सन्तान नइ बुझि छोड़ैले तैयार छी?"

पतिक दृढ़ विचार पेब बिना किछु आगू-पाछू तकने मंगली काकी बजली-

"श्यामा की कोनो हमरेटा सन्तान छी आ अहाँक नहि छी।"

ढलानपर सँ टघरैत पानिक रोकाबतेँ देख जीवनानुभवी लोक जहिना छील-छील कऽ चिक्कन बना-बना एकबट्ट करैत छिड़ियाएल पानिकेँ धरिया धाराक रूपमे आगू बढ़बै छैथ तहिना जीवन काका मंगली काकीक छिड़ियाएल विचारकेँ समेट बजला-

"पूबक सूर्ज पच्छिम किए ने उगइ, जमीनक पानि अकास सिर किए ने चढ़इ मुदा श्यामाकेँ अपन सन्तान छोड़ि ने अनकर बुझब आ ने अनका हाथ जाए देब।"

विस्मित होइत मंगली काकी बजली-

"लोक की कहत..!"

मंगली काकीक विचार सुनि जीवन कक्काक अन्तरात्मा जेना ओहन बिजलोका जकाँ चमकलैन जेहेनमे ठनका खसैए। बजला-

"लोक की कहत! लोक पहिने अपन ठेकान करह। जेकरा अपन ठेकान नइ से अनकर ठनका रोकि सकैए आकि अपनाकेँ बँचा सकैए।"

पतिक विचार सुनि मंगली काकी सिरसिराए लगली। एकाएक देहमे

सिरसिराएल कँपन हुअ लगलैन। कँप-कँपाइत पुछलखिन-

“की लोकक ठेकान?”

पत्नीक जलियाएल विचार सुनि जीवन कक्काक मनमे कुवाथ नहि भेलैन। तेकर कारण अछि जे जीवन कक्काक विचार सागरमे लहैर जकाँ उठि गेल छेलैन। लहराइत विचारमे आबि रहल छेलैन जे जँ मनुख छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ अपन जिनगीक रस्ताक बाधाकेँ अपना आँखिये ठिकिया मनसँ हटबए चाहत तँ ओ जरूर हटा जिनगीकेँ बाधामुक्त कऽ सकैए। जखने जिनगी बाधामुक्त भेल तखने ने ओ जिनगी घोड़ाक चालिमे सरपट दौड़ लगौत...।

जीवन काका बजला-

“जे समस्या अपना परिवारमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ खाली अपने परिवार-टा मे भेल आकि आइये भेल अछि आ पहिने नइ भेल हएत से केना बुझै छिऐ? सभ दिन होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। महादेवकेँ सेहो अर्द्धनारीश्वर कहल जाइ छैन। जखने अर्द्धनारीश्वर तखने ने सन्तान विहीन! कार्तिक आ गणेश तँ तखन भेलैन जखन महादेव आ पार्वती दुनू दू छला। मुदा जखन दुनू सटि एक भेला तखन कोनो सन्तान नइ ने भेलैन। तँए की हुनका देववंशसँ कियो हटा देलकैन आकि हटा देतैन?”

ओना, मंगली काकीकेँ महादेव-पार्वतीक ओ कथा (माने अर्द्धनारीश्वरबला कथा सुनल रहैन मुदा एना भऽ कऽ नहि, ई नइ बुझल रहैन जे अर्द्धनारीश्वर की। तँए, धार-कातक पँकियाएल चपचपीमे जहिना चँङ्गुराएल चिड़ौयो आ पैरबला जानवरक संग लोको चपि कऽ गड़ि जाइए, तहिना मंगली काकी सेहो चपि कऽ गड़ि मुँहपर हाथ लैत बजली-

“ऐँ.अ..अ..!”

जीवन काकाकेँ जेना सहगर खेतक लभगर हाल भेटलैन तहिना बजला-

“ऐँ-टेँ नइ करू! वएह शिवजी महादेव छैथ जे देखलखिन जे जे कृष्णजी महिला संगठनक नेता छैथ ओ महिला छोड़ि पुरुखक प्रवेश रोकने छैथ, तखन ओ की केलैन से बुझल अछि?”

विचारक बोनमे हेराएल-भोथियाएल बेटोही जकाँ मंगली काकी बजली-

“नइ! अहूँ ने तँ कहियो कहने छेलौं।”

जीवन काका बजला-

“कोनो कि एकेटा गप अछि जे ओ छुटि गेल ते बड़ जुलुम भऽ गेल। जखने जागी तखने परात..!”

उत्सुकाएल मंगली काकी बजली-

“पहिने शिवशंकर दानीक कथा कहि दिअ।”

पत्नीक चपचपी देख चपचपाइत जीवन काका बजला-

“शिवसँ शिबानी बनि कृष्णजीक महिला संगठनमे शामिल भऽ गेला..!”

मंगली काकीकेँ जेना एकाएक भक् खुजलैन तहिना बजली-

“एहेन बात जे अहाँ पेटमे रखने छेलौं आ कहियो एतबो सिनेह नइ भेल जे हमरो कहितौं..!”

पत्नीक झुझुआइत मनकेँ जीवन काका पकैड़ बिच्चेमे बजला-

“पेटमे कि एतबे अछि। अच्छा जखन अहाँ पेटक बात लिअ चाहै छी ते सुनू। ई तँ शिवशंकर महादेवक विषयमे कहलौं। आब सुनू महाभारतक विषय।”

‘महाभारत’क नाओं मंगली काकी सुनने जरूर छैथ आ द्रौपदीक चिरहरणक सिनेमो देखने छैथ। तँए, महाभारतक नओं सुनि आरो जिज्ञासा बढ़ि गेलैन। बजली-

“सुनाइये दिअ। जिनगीक कोनो ठेकान अछि, जँ मन लगले चलि जाएत तखन तँ अनेरे ने भूत बनि लपकबै।”

मुस्की दैत जीवन काका बजला-

“जखन महाभारत होइत रहै ने, तइमे एकटा वीर रहै शिखंडी, ओहो अपने श्यामा जकाँ छल। ओ की केलकै से बुझल अछि?”

मुड़ी डोलबैत मंगली काकी बजली-

“नइ..!”

जीवन काका बजला-

“कृपाचार्योकेँ आ कृतवर्मोकेँ छेरा-छेरा भरौलक!”

मंगली काकीक मनमे जेना आत्मबल फुलाए लगलैन तहिना बिहुसैत बजली-

“अरे वा..!”

जीवन काका मंगली काकीक मनमे पसि बजला-

“ऐँ., एतबेमे हदिआइ छी! भगवान राम जखन बोन जाए लगला तँ अन्तिम विदाइ अयोध्यावासी लैत-दैत पुरुख-नारी कहि तँ सभकेँ विदा कऽ देलखिन आ अपने दच्छिन मुहेँक रस्ता धेलैन, आ बीचमे किछु गोरे ओहिना ठाढ़े

रहि गेल, ओ की केलक से बुझल अछि?"

मंगली काकी बजली-

"नइ..!"

जीवन काका बजला-

"ओ सभ–जे ठाढ़ छल से–के सभ छल? जे पुरुख-नारीक बीचक अछि। जेकरा शखा-सन्तान नइ हएत। जखन रामचन्द्रजी, लक्ष्मण आ सीताक संग घुमि कऽ अयोध्याक आड़िपर पहुँचला तखन वएह सभ दुनू भाँइक गट्टा पकैड़ कहलकैन जे 'अहाँ हमरा किए ने विदाइ देलौं? जइ आशामे अहीं जकाँ चौदह बर्ख हमहूँ सभ टपला खेलौं?"

मंगली काकीक मनो आ शरीरो जेना शान्त भऽ गेलैन। बजली-

"जे अहाँ करबै सएह ने हमहूँ करब।"

रणभूमिक संगी पेब जीवन काका बजला-

"श्यामा हमर सन्तान छी। अपना जीबैत ओकरा भीख माँगैत देखब, की ओहन लाजक विचार लोक अपने नइ करत। दुनियाँ एक दिस भऽ जाए, मुदा...। जाबे धरि श्यामा पढ़ए चाहत, समांग बुझि सहयोग देबइ। जहिया ओ पढ़ाइ छोड़त तहिया अपना आँखिक सोझमे ओकरा मनोनुकूल जीबैक साधन बना देबइ। अपना पैरपर ठाढ़ कऽ समाजक ओहन मनुख बना देबै जे अपन श्रमसँ अपन सुभिमानी जिनगी बना जीबत आ ओकर रक्षा करैत रहत।"

❍

शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018